व्यापार-चिन्तामणि

अर्थात्

सोलह प्रकार के निर्णयात्मक-क्रम से ३००० वस्तुओं की तेजी मन्दी का विवेचन

(तेजी मन्दी का अद्भुत ग्रन्थ)

रचयिता—

गणक-भास्कर पं० गंगाप्रसादजी ज्योतिषाचार्य,

मुरार (मध्य प्रदेश)

※ विषयानुक्रमणिका ※

प्रस्तावना

मनुष्य मात्र की यह प्रबल आकांक्षा रहती है कि वह सुख समृद्ध एवं सम्पन्न रहे किन्तु मूलाधार धन है अतः जब तक धन प्राप्ति के साधन उपलब्ध नहीं होते तब तक मनुष्य मात्र की उपरोक्त आकांक्षाओं की पूर्ति भली-भांति नहीं हो सकती है। वैसे तो यह निर्विवाद सिद्ध ही है कि "व्यापारे वसति लक्ष्मी:"। किन्तु जिसे व्यापार करने का सही ढंग हीं ज्ञात न हो उसके लिये व्यापार में लक्ष्मी कहां ? यों तो अचानक लक्ष्मी लॉटरी या रेस से भी प्राप्त हो सकती है परन्तु यह तो किसी भाग्यवान के ही भाग्य की साधनापूर्ति है न कि सर्व साधारण की । हां व्यापार में वायदा-व्यापार एकमात्र ऐसा साधन है यदि इसका सदुपयोग किया जाय तो सर्व साधारण भी धन प्राप्त कर सुख समृद्ध एवं सम्पन्नता की आकांक्षाओं की पूर्ति कर सकता है।

वायदा-व्यापार की यह विशेषता है कि इससे जितने कम समय में थोड़ी पूंजी द्वारा ही विश्वासपूर्वक अधिक से अधिक धन कमाया जा सकता है उतना किसी अन्य साधन द्वारा उपार्जित नहीं किया जा सकता । मुझे दुःख है कि बहुत से व्यापारी इसका सही रूप से उपयोग न करके अपने को अंधकार के गर्त में ढकेल लेते हैं, ऐसे व्यापारियों के रहस्य के मनन करने के भी मुझे अवसर

मिले, उनके असफल होने के बहुत से कारण विदित हुए—कुछ व्यापारियों का असफल होने का कारण था कि उन्होंने सौदा करने से पूर्व भली-भांति विचार न करके अपने यहां की स्थानिक परिस्थितियों एवं स्थानीय बाजार के रुख को देखकर ही सौदा कर लिया और अन्य देशी-विदेशी मण्डियों की तथा राजनैतिक परिस्थितियों की ओर तनिक भी ध्यान नहीं दिया और कुछ व्यापारियों के असफल होने का कारण था कि वे किसी अचूक चांस के चक्कर के भूत के शिकार हुए जो उन्हें ऐसे अल्पज्ञ ज्योतिषियों द्वारा प्राप्त हुए थे जिन्हें स्वयं ही आकाशस्थ ग्रह, नक्षत्र और उनके देवादि का कुछ भी ज्ञान नहीं था तथा वे अपने को दूसरा वाराहमिहिर या देवी-देवताओं के सिद्धक अथवा ईष्टक घोषित करते थे और वे अचूक चांस उन्हें इन्हीं देवी-देवताओं के द्वारा स्वप्न या वर से प्राप्त हुए थे तथा कुछ व्यापारियों के असफल होने के कारणों पर अति आश्चर्य होता है कि वे अपनी पूंजी को व्यय करने में अपनी बुद्धि से भी काम नहीं लेते बल्कि दूसरों की ममभाइश को सही मानकर अथवा दूसरों को सौदा करते देखकर उससे दूना स्वयं का सौदा कर बैठते हैं आदि अनेकों कारण हैं जिनका यहां लिखना असम्भव सा प्रतीत होता है।

उपरोक्त कारणों को देखकर मेरी यह अति अभिलाषा हुई कि मैं उन असफल व नए ढंग से व्यापार करनेवाले तथा नवीन व्यापारियों के लिए ऐसे विषय प्रस्तुत करूं जिनसे वे अपने भविष्य को उज्ज्वलमय बना सकें। इसी उद्देश्य को लेकर आज मैं आपके समक्ष इसे पुस्तकाकार रूप में प्रस्तुत कर रहा हूँ जो आपके समक्ष है, परन्तु मेरे हृदय को उल्लास उसी समय होगा जब कि इससे आप सबका तथा सर्वसाधारण का लाभ हो और आप सभी इसका स्वागत करें।

इस पुस्तक में वायदा-व्यापार क्या है ? क्यों इसका चलन हुआ ? वायदा-व्यापार करने से पूर्व किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ? वायदा-व्यापार और समाचार तथा समाचार के साधन क्या-क्या हैं ? आदि विषयों को बताते हुए मैंने सरल ढंग से ज्योतिष शास्त्र का विवेचन किया है जिसमें पंचांग देखने की विधि से वायदा-व्यापार में किस-किस का कैसा-कैसा प्रभाव पड़ता है तक समस्त सामग्री दी है, इनके साथ-साथ ऐसे भी योग दिए हैं जिनके परीक्षण करने के मुझे अवसर मिले हैं अथवा जो ज्योतिष शास्त्र के ग्रन्थों में मेरे मतानुसार सही हैं साथ ही कुछ व्यापारिक वस्तुओं के नाम देकर उनके तेजी-मंदी के अलग-अलग योग दिए हैं। अन्त में तंत्र-मंत्र आदि के अनुभव उनके सिद्ध प्रयोगादि उन व्यापारियों के लिए जो घाटे में रहते हों अथवा गरीबी से पीड़ित हों, के हितार्थ इस पुस्तक में समावेश कर दिए हैं जिन्हें वे स्वयं करके अथवा सिद्धपीठों में सुशील व सच्चरित्र विद्वानों द्वारा कराकर अपनी बिगड़ी स्थिति का सुधार कर सकें। इसके अतिरिक्त कुलपरम्परागत दारिद्रय के निवारण का भी गुप्त रहस्य दे दिया है जिसे अभी तक सिद्धपीठों द्वारा गुप्त रखा जा रहा था।

इस पुस्तक में तेजी-मंदी से सम्बन्धित राशि, ग्रह, तिथि, वार, नक्षत्र, योग, मास, चन्द्रदर्शन, सर्वतो भद्र चक्र, नवमांश, ग्रहों के उदयास्त, वक्री-मार्गी, सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु केतु, तिथि के क्षय-वृद्धि, ग्रहों के शर, पाश्चात्य त्रयोदश योग, चन्द्र-सूर्य ग्रहण, अमावस्या व पूर्णिमा, ग्रहों के अंश आदि सभी विषय हैं जिनके द्वारा तेजी-मंदी का विचार किया जाता है एवं इनके

द्वारा तेजी-मंदी कैसे ज्ञात की जाती है इसका भी विवेचन किया है तथा अचूक चांस कैसे निकाला जाता है उसकी भी विधि दी है।

तेजी-मंदी के निकालने में प्रजातन्त्र प्रणाली को महत्व दिया है जैसे प्रजा अपने प्रधान एवं उसके सहायकों का चयन करके शासन की बागडोर उनके सुपुर्द करती है वैसे ही किसी वस्तु के प्रधान ग्रहों एवं उनके सहायकों तथा उपसहायकों का चयन करके उन्हीं के द्वारा उस वस्तु की तेजी-मंदी का दिग्दर्शन कराया है। आशा है कि मेरे इस मत से सभी ज्योतिषी एवं व्यापारी सहमत होंगे।

ज्योतिष शास्त्र का यह अर्थकाण्ड बहुत ही दुरूह है जिसका बड़े-बड़े दूरदर्शी विद्वान भी पार नहीं पा सके हैं फिर मुझ जैसे अल्पज्ञ की तो बात ही क्या ? यदि इस पुस्तक से सर्वसाधारण को लाभ हुआ तो मैं अपने इस परिश्रम को सफल समझूंगा। अन्त में मैं यह नम्र निवेदन करूंगा कि यदि इस पुस्तक में कोई त्रुटि देखें तथा अन्य व नवीन विषयों की जिनका कि मुझे इस पुस्तक के लिखते समय ध्यान न रहा हो अथवा जिनका मेरे मतानुसार इस पुस्तक में देना उचित न था परन्तु आप सभी उन विषयों की उपयोगिता समझते हों, तो मनुष्य धर्मानुसार सहृदय विज्ञजन इसमें सुधारकर मुझे सूचित करने की कृपा करेंगे। सर्व साधारणके लाभार्थ प्रेषित आपके सुझावों को मैं अगले संस्करण में प्रस्तुत करने का प्रयास करूंगा।

मार्गशीर्ष शुक्ला १५ — लेखक:—

सं. २०१४ विक्रमी — गणक-भास्कर; 'ज्योतिर्विद्यारत्न'

स्थान—मुरार, (मध्यप्रदेश) — पं० गङ्गाप्रसाद, 'ज्योतिषाचार्य'

❀ श्रीगणेशायनमः ❀

प्रणम्यशिरसादेवं गौरीपुत्रंविनयाकम् ।
शिवगौरीस्मरेन्नित्यमायुः कामार्थसिद्धये ॥१॥

नानाग्रन्थमतंविलोक्य ग्रहणाश्चानुकूलता ।
सर्वंविलोक्यमेधावी फलंगार्ग्यंविनिर्दिशेत् ॥२॥

इष्टदेवंनमस्कृत्य गोपालंकुलदैवतम् ।
विज्ञगङ्गाप्रसादेन क्रियतेग्रन्थसंग्रहः ॥३॥

नवग्रहान्नमस्कृत्य देवींसरस्वतींतथा ।
प्रणिपत्यगुरुंविष्णुः रचितेव्यागारचन्द्रिका ॥४॥

विद्वानेवहिजानाति विद्वज्जनपरिश्रमम् ।
नहिवन्ध्याविजानाति गुर्वीप्रसववेदनाम् ॥५॥

❀ ज्योतिष का प्रारम्भिक विचार ❀

मेषोवृषोऽथमिथुनो कर्कटःसिंहकन्यके ।
तुलाऽथवृश्चिकोधन्वी मकरः कुंभमीनकौ ॥

ग्रह गति विचार—

ग्रहों की गति का विशेष विचार आवश्यक हो जाता है सूर्य और चन्द्र हमेशा ही शीघ्र गति के होते है और उनकी गति में एकंदर स्थूल मान से कोई परिवर्तन नहीं होता हैं। उसी तरह राहु, केतु की हमेशा एक ही गति और वक्र अवस्था में उल्टे चलते रहते हैं।

बाकी के पांच ग्रह—मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि की गति में हमेशा फेर फार होती हैं। इनकी गति कभी सम, कभी शीघ्र और कभी अतिशीघ्र हो जाती हैं। अति शीघ्र गति वाले ग्रह को अतिचारी भी कहते हैं दिवरण व ग्रहों की गति कर, कोष्टक निम्न हैं:—

(१) समगति—इन ग्रहों की दृष्टि सामने की ओर रहती हैं इसलिये इनका वेध भी सन्मुख होता हैं। समगति वाले ग्रहों को समचारी, मध्यम गामी भी कहते हैं।

(२) शीघ्रगति—शीघ्र गति वाले ग्रह बायीं ओर को वेध करते हैं निम्न कोष्ठक की कला त्रिकला तक शीघ्र गति या शीघ्र ग्रामी वाला ग्रह कहलाता हैं।

(३) परम शीघ्रगति

इस गति के ग्रहों को अतिचारी ग्रह भी कहते हैं। ये ग्रह बायीं ओर को वेध करते हैं।

नाम ग्रह	मंगल		गुरु	शुक्र	शनि	विशेष विवरण
समगति	क. ३१	५९	५	५९	२	इतनी गति या इससे
	वि. २६	८	०	८	०	अधिक
शीघ्रगति	क. ३९	१०४	१२	७३	७	इतनी गति या इससे
	वि. १	४६	२२	४३	२७	अधिक
परम शीघ्रगति	क. ४६	११३	१४	७५	७	इतनी गति या इससे
(अतिचारी)	वि. ११	३२	४	४२	४५	अधिक

समगति से कमगति हो तो मंदगति कहलाती है। शीघ्रगति से कम, समगति और परम शीघ्रगति से कम शीघ्रगति कहलाती है। मंद गति के ग्रह सामने वेध करते हैं परन्तु ग्रहों का बल गति अनुसार ही समझना चाहिये।

ग्रह स्वभाव विचार—

शनि, सूर्य, राहु, केतु तथा मंगल क्रूर और चन्द्र, बुध, गुरु तथा शुक्र सौम्य ग्रह है। यद्यपि बुध व चन्द्रमा सौम्य ग्रह है फिर भी बुध तो क्रूर ग्रह से युक्त होने से और चन्द्र क्षीण होने से क्रूर

हो जाता है। शुक्ल पक्ष ५ से कृष्ण पक्ष १०वीं तक चन्द्र पूर्ण माना गया है, इसे सौम्य समझना चाहिये, कृष्ण पक्ष ११ से शुक्ल पक्ष की ५वीं तक चन्द्र क्षीण रहता है इसे क्रूर समझना चाहिये।

क्रूर ग्रह, नक्षत्र के जिस चरण पर हो उसी चरण पर बुध भी हो अर्थात् एक नवांश पर हो तो बुध भी क्रूर हो जाता है।

यदि क्रूर ग्रह वक्री हो तो महाक्रूर, सौम्यग्रह वक्री हो तो महाशुभ और सौम्य या क्रूर ग्रह शीघ्रगति हो तो सहज स्वभाव वाले समझना चाहिये।

ग्रह दृष्टि विचार

वक्री ग्रह की दृष्टि हमेशा दाहिनी ओर रहती है। मंगल, बुध, शुक्र और शनि जब-जब वक्री होते हैं दाहिनी ओर की राशियों की जो वस्तुएं हैं उनको देखते हैं।

राहु, केतु सदैव ही वक्र अवस्था में रहते हैं परन्तु इन दोनों ग्रहों की दृष्टि सदैव ही तीनों ओर रहती है।

वक्री से मार्गी होते ही ग्रह की दृष्टि दाहिनी ओर से हट कर बायीं ओर हो जाती है इसीलिए बायीं ओर को देखने लगता है लेकिन ऐसी दृष्टि कुछ ही दिनों तक रहती है। मंगल ग्रह वक्री से मार्गी होते ही ४ दिन, बुध ३ दिन, गुरु ८ दिन, शुक्र ५ दिन, और शनि १० दिन बायें देखता है।

कोष्टक स्वग्रह, उच्च, नीच, बलहीन ग्रह विचार

राशि	स्वग्रह	उच्च	नीच	बलहीन
मेष	मंगल	रवि १० अं. प्लूटो	शनि १० अं.	शुक्र
वृषभ	शुक्र	चन्द्र ३ अं.	हर्शल	मंगल
मिथुन	बुध			गुरु
कर्क	चन्द्र	गुरु ५ अं. नेपच्यून	मंगल २८ अं.	शनि
सिंह	रवि			शनि
कन्या	बुध	बुध १५ अं.	शुक्र २७ अं.	गुरु
तुला	शुक्र	शनि २० अं.	रवि १० अं. प्लूटो	मंगल
वृश्चिक	मंगल, प्लूटो	हर्शल	चन्द्र ३ अं.	शुक्र
धनु	गुरु			बुध
मकर	शनि	मंगल २८ अं.	गुरु ५ अं. नेपच्यून	चन्द्र
कुंभ	शनि, हर्शल			रवि
मीन	गुरु, नेपच्यून	शुक्र ५७ अं.	बुध १५ अं.	बुध

कोष्टक मैत्री ग्रह विचार

ग्रह	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
मित्र	चं. मं. गु.	र. बु.	र. चं. गु.	र. शु.	र. चं. मं.	बु. श.	बु. शु.
सम	बु.	मं. गु. शु. श.	शु. श.	मं. गु. श.	श.	मं. गु.	गु.
शत्रु	शु. श.		बु.	चं.	बु. शु.	र. चं.	र. चं. मं.

कोष्टक स्वक्षेत्रादि विचार

स्थान	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
स्वक्षेत्र	५	४	१।८	३।६	९।१२	२।७	१०।११
मित्र क्षेत्र	४ १।८ ९।१२	५ ३।६	५ ४ ९।१२	५ २।७	५ ४ १।८	३।६ १०।११	३।६ २।७
सम क्षेत्र	३।५	१।८ २।७ ९।१२ १०।११	२।७ १०।११	१।८ ९।१२ १०।११	१० ११	१।८ ९।१२	६ १२
शत्रु क्षेत्र	२।७ १०।११		३।६	४	३।६ २।७	५ ४	५ ४ १।८

साधारण पञ्चांग विचार—

पञ्चांग भारतीय सामाजिक जीवन का एक प्रधान अंग है। हिन्दू जीवन के सभी सामाजिक अनुष्ठान इस पञ्चांग के अनुसार ही किए जाते हैं। केवल इतना ही नहीं इसी पंचांग के अनुसार ही हम लोग अपने दैनिक आचार-व्यवहार, खाद्य यहां तक कि दैनिक जीवन के छोटे-छोटे विचार भी मानकर चलते है। सभी ओर से विचार करने पर यह देखा गया है कि पंचांग भारतीय समाज का एक आवश्यक अंग है।

प्रश्न यहाँ पर उपस्थित हो सकता है पंचाग है क्या ? पंचांग ज्योतिष के ५ विषयों का समावेश है—१. तिथि (१६), २.वार (७), ३.—नक्षत्र (२८), ४.—योग (२८) और ५.—करण (११),

सम्वतसर विचार—

विक्रमादित्य के वर्तमान सम्वत् में से १३५ निकाल लेने से शालिवाहन का शक निकल जाता है। यह शक चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से जानना चाहिये।

अयन विचार—

मकर से लेके छः राशियों पर सूर्य होने से उत्तरायण कहलाता है और कर्कादि छः राशियों पर सूर्य होने से दक्षिणायण जानना चाहिये।

ऋतु विचार—

मीन १२, मेष १ का सूर्य होने से वसन्त ऋतु, वृष २, मिथुन ३, के सूर्य से ग्रीष्म ऋतु और कर्क ४, सिंह ५ के सूर्य से वर्षा ऋतु होती है, कन्या ६, तुला ७ के सूर्य से शरद-ऋतु, वृश्चिक ८,

धन ९ के सूर्य से हेमन्त ऋतु और मकर १०, कुम्भ ११ के सूर्य होने से शिशिर ऋतु कहते हैं।

मास विचार—

१—चैत्र, २—वैशाख, ३—ज्येष्ठ, ४—आषाढ़, ५—श्रावण, ६—भाद्र, ७—आश्विन, ८—कार्त्तिक, ९—मार्गशीर्ष, १०—पौष, ११—माघ एवं १२—फाल्गुन यह बारह मास हैं।

चन्द्र से नक्षत्र का विचार होता है। चान्द्र मास भी दो प्रकार के हैं—एक तो अमावस्या अन्त का, दूसरा पूर्णिमा के अन्त का।

तिथि विचार—

१—प्रतिपदा, २—द्वितीया, ३—तृतीया, ४—चतुर्थी, ५—पंचमी, ६—षष्ठी, ७—सप्तमी, ८—अष्ठमी, ९—नवमी, १०—दशमी ११—एकादशी, १२—द्वादशी १३—त्रयोदशी, १४—चतुर्दशी, शुक्ल पक्ष के अन्त में १५—पूर्णिमा एवं कृष्ण पक्ष के अन्त में ३०—अमावस्या होती है।

नन्दादि विचार—

प्रतिपदा से लेके तीन वेर गिनने से नन्दादि तिथियों की संचार होती है, जिसे १-६-११ नन्दा, २-७-१२ भद्रा, ३-८-१३ जया, ४-९-१४ रिक्ता ५-१०-१५ पूर्णा जानना।

वार विचार—

१—रविवार, २—सोम, ३—मंगल, ४—बुध, ५—गुरु, ६—शुक्र, ७—शनि, यह सात वार हैं।

शुभाशुभ विचार—

शुक्र ,गुरु, बुध, चन्द्र, यह शुभ कर्म के योग्य शुभ वार हैं और मंगल, रवि, शनि क्रूर काम के योग्य क्रूर वार हैं।

स्थिरचर विचार—

सूर्य स्थिर संज्ञक हैं, चन्द्र चर, मंगल उग्र, बुध सम, गुरु लघु-संज्ञक, शुक्र मृदु, शनि तीक्ष्ण संज्ञावाले हैं।

नक्षत्र विचार—

अश्विनी, भरणी, कृतिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा, अभिजित, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपदा, उत्तराभाद्रपदा, रेवती, यह अट्ठाइस नक्षत्र हैं।

नक्षत्र स्वामी—

अश्विनी का अश्विनी कुमार, भरणी का यमराज, कृतिका का अग्नि, रोहिणी का ब्रह्मा, मृगशिरा का चन्द्र, आर्द्रा का शिव, पुनर्वसु का अदिति, पुष्य का अङ्गिरा, आश्लेषा का सर्प, मघा का पितर, पूर्वा फाल्गुनी का भग, उत्तरा फाल्गुनी का अर्यमा, हस्त का रवि, चित्रा का त्वष्ठा, स्वाती का वायु, बिशाखा का इन्द्राग्नि, अनुराधा का मित्र, ज्येष्ठा का इन्द्र, मूलका निऋति, पूर्वाषाढ़ा का जल, उत्तराषाढ़ा, का विश्वदेवा, अभिजित का विधि, श्रवण का विष्णु, धनिष्ठा का वसु, शतभिषा का वरुण, पूर्वा भाद्रपदा का अजैकपाद, उत्तरा भाद्रपदा का अहिर्बुध्न और रेवती का पूषा स्वामी जानना।

ध्रुव स्थिरादि विचार—

रोहिणी, तीनों उत्तरा ध्रुव स्थिर संज्ञक हैं, मृगशिर, चित्रा, अनुराधा, रेवती, मृदु मैत्र संज्ञक हैं। पुष्य, अश्विनी, अभिजित् हस्त यह लघु क्षिप्र संज्ञक हैं और ज्येष्ठा, आर्द्रा, मूल, आश्लेषा, ये तीक्ष्न

संज्ञक हैं। श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, स्वाती, पुनर्वसु ये चर चल हैं। भरणी मघा. पूर्वा तीनों ये क्रूर तथा उग्र संज्ञक हैं । विशाखा, कृत्तिका ये मिश्र साधारण संज्ञावाले हैं।

योग विचार—

१. विष्कुम्भ, २. प्रीति, ३. आयुष्मान, ४. सौभाग्य, ५. शोभन ६. अतिगण्ड, ७. सुकर्मा, ८. धृति, ९. शूल, १०. गण्ड, ११. वृद्धि, १२. ध्रुव, १३. व्याघात, १४. हर्षण, १५. बज्र, १६. सिद्धि, १७. व्यतीपात, १८. वरीयान, १९. परिघ, २०. शिव, २१. सिद्धि, २२. साध्य, २३- शुभः, २४. शुक्लः, २५. ब्रह्मा, २६. ऐन्द्रः, २७. वैधृति, ये सत्ताइस योगों के नाम हैं।

करण विचार—

वर्तमान तिथि को दूना करके एक एक कमती करे और सात का भाग देवे शेष बचे सो करण क्रम से जानो, १. बव, २. बालव, ३. कौलव, ४. तैतिल, ५. गर, ६. वणिज, ७. विष्टि (भद्रा) ये सात करण हैं इनकी चर संज्ञा है । कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी के पश्चात भाग में अर्थात पीछे की ३० घड़ियों में शकुनि नामकरण रहता है और अमावस्या के दोनों भाग में १. चतुष्पाद, २. नाग नामक करण रहते हैं । शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा के प्रथम भाग में किन्तुघ्न और द्वितीय भाग में बव करण होते हैं । ये चार करण स्थिर संज्ञक हैं और पूर्व कहे हुए ७ चर संज्ञक मिलकर कुल ११ करण होते हैं ।

आनन्दा योग विचार—

१. आनन्द, २. कालदण्ड, ३. धूम्र, ४. धाता, ५. सौम्य, ६. ध्वांक्ष ७. केतु, ८. श्रीवत्स, ९. बज्र, १०. मुद्गर, ११. छत्र, १२. मित्र १३. मानस, १४. पद्म, १५. लुम्ब, १६. उत्पात, १७. मृत्यु, १८. काण १९. सिद्धि, २०. शुभ, २१. अमृत, २२. मुसल, २३. गद, २४ मातङ्ग, २५. रक्षः, २६, चर, २७. सुस्थिर, और २८. प्रवर्द्धमान ये अट्ठाइस योग हैं।

आनन्द योग—

रविवार को अश्विनी नक्षत्र होने से आनन्द योग होता है और चन्द्रवार को मृगशिरा हो, मंगलवार को आश्लेषा हो, बुध को हस्त, गुरु को अनुराधा हो तो आनन्द योग समझना। शुक्रवार को उत्तराषाढ़ा हो और शनिवार को शतभिषा होने से भी आनन्द योग होता है और इसी तरह क्रम से काल दण्डादि योग समझना चाहिए।

अमृतसिद्धि योग—

रविवार को हस्त नक्षत्र हो, सोमवार को मृगशिरा हो, मंगलवार को अश्विनी हो बुधवार को अनुराधा हो, गुरुवार को पुष्य हो, शुक्रवार को रेवती हो, शनिवार को रोहिणी हो, तब सर्वसिद्धि देने वाला अमृतसिद्धि योग होता है।

उत्पात मृत्यु काण सिद्ध योग—

रविवार को विशाखा नक्षत्र हो तो उत्पात योग होता है और अनुराधा हो तो मृत्यु योग, ज्येष्ठा हो तो काण योग और मूल हो तो सिद्ध योग समझना।

क्रकच योग—

तिथि की संख्या के साथ वार की संख्या मिलाके १३ हो जावें तब क्रकच योग शुभ कार्य में निंदित होता है।

यम घण्ट—

रविवार को मघा नक्षत्र हो, सोमवार को विशाखा हो, मंगलवार को आर्द्रा हो, बुध को मूल हो, गुरु को कृत्तिका हो, शुक्र को रोहिणी हो, शनिवार को हस्त हो तब यम घण्ट योग होता है।

रवि योग—

सूर्य जिस नक्षत्र में हो उस नक्षत्र से वर्तमान चन्द्र नक्षत्र चौथा, नवां, छटां, दसवां तेरहवां, बीसवां हो तो रवि योग होता है ये सम्पूर्ण दोषों का नाश करने वाला होता है।

सर्वार्थ सिद्धि योग—

रविवार को हस्त, मूल, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तरा भाद्रपद, पुष्य, अश्विनी, सोमवार को श्रवण, रोहिणी, मृगशिरा पुष्य, अनुराधा, मंगल को अश्विनी, उत्तराभाद्रपदा, कृत्तिका, आश्लेषा, बुधवार को रोहिणी, अनुराधा, हस्त, कृत्तिका, गुरुवार को रेवती, अनुराधा, अश्विनी, पुर्नवसु, पुष्य, शुक्रवार को रेवती, अनुराधा, अश्विनी, पुर्नवसु श्रवण, शनिवार को श्रवण, रोहिणी और स्वाती हो तो सर्वार्थ सिद्धि योग होता है। इस योग में जो कार्य किया जाता है वह सिद्ध होता है।

मन्वादि और युगादि तिथियां—

चैत्रशुक्ल तीज और पूर्णमासी, कार्त्तिक शुक्ल पूर्णमासी और द्वादशी, आषाढ़ शुक्ल दशमी और पूर्णमासी, ज्येष्ठ और फाल्गुन

की पूर्णमासी, आश्विन शुक्ल नवमी, माघ शुक्ल सप्तमी, पौष शुक्ल एकादशी, भाद्रपद शुक्ल तृतीया श्रावण की अमावस और अष्ठमी ये मन्वाद्य तिथियां है इनमें विवाहादि शुभकार्य न करना चाहिये और स्नान, दान श्राद्ध इत्यादि करना चाहिये इससे अत्यन्त पुण्य होता है। कार्तिक शुक्ल नवमी, वैशाख शुक्ल तृतीया, भाद्रपद कृष्ण त्रयोदशी और माघ कृष्ण अमावस ये युगादि तिथियां हैं इसमें भी विवाहादि शुभ कार्य न करें।

नक्षत्र राशि भोग विचार—

१. अश्विनी भरणी सम्पूर्ण और कृतिका के प्रथम चरण तक मेष राशि है, २. कृतिका के तृतीय चरण रोहिणी सम्पूर्ण मृगशिरा के द्वितीय चरण तक वृष, ३. मृगशिरा के द्वितीय चरण आर्द्रा सम्पूर्ण पुनर्वसु के तृतीय चरण तक मिथुन राशि, ४. पुनर्वसु का अन्तिम चरण और पुष्य, आश्लेषा के संपूर्ण तक कर्क राशि, ५. मघा, पूर्वाफाल्गुनी सम्पूर्ण और उत्तराफाल्गुनी के प्रथम चरण तक सिंह राशि, ६. उत्तरा का तृतीय चरण हस्त सम्पूर्ण चित्रा के द्वितीय चरण तक कन्या राशि, ७. चित्रा के द्वितीय चरण स्वाती सम्पूर्ण विशाखा के तृतीय चरण तक तुला राशि, ८. विशाखा के अन्तिम चरण और अनुराधा ज्येष्ठा संपूर्ण तक वृश्चिक राशि, ९. मूल पूर्वाषाढ़ा सम्पूर्ण उत्त रा षाढ़ा के प्रथम चरण तक धनु राशि, १०. उत्तरा के तृतीय चरण श्रवण सम्पूर्ण धनिष्ठा के द्वितीय चरण तक मकर राशि, ११. धनिष्ठा का उत्तरार्द्ध शतभिषा सम्पूर्ण पूर्वाभाद्रपदा के तृतीय चरण तक कुम्भ राशि एवं, १२. पूर्वाभाद्रपदा का अन्तिम चरण और उत्तराभाद्रपदा, रेवती सम्पूर्ण तक मीन राशि होती है।

कोष्ठक नाम से राशि विचार—

नक्षत्र	प्रथम शब्द	नक्षत्र	प्रथम शब्द	नक्षत्र	प्रथम शब्द
अश्विनी	चु, चे, चो, ला	मघा	मा, मी, मू, मे	मूल	ये, यो, भा, भी
भरणी	ली, लू, ले, लो	पूर्वा फाल्गुनी	मो, टा, टी, टू	पूर्वाषाढ़ा	भु, धा, फ, ढा
कृत्तिका	आ, इ, उ, ए,	उत्तराफागुनी	टे, टो, पा, पी	उत्तराषाढ़ा	भ, भो, जा, जी
रोहिणी	व, वा, वी, वू,	हस्त	पू, ष, णा, ठा	अभिजित	जू, जे, जो, खा
मृगशिरा	वे, वो, का, की	चित्रा	पे, पो, रा, री	श्रवण	खी, खू, खे, खो
आर्द्रा	कू, घ, ङ, छ	स्वाती	रु, रे, रो, ता	धनिष्ठा	गा, गी, गू, गे
पुनर्वसु	के, को, हा, ही	विशाखा	ति, तू, ते, तो	शतभिषा	गो, सा, सी, सू
पुष्य	हु, हे, हो, डा	अनुराधा	ना, नी, नू, ने	पूर्वाभाद्रपदा	से, सो, दा, दी
आश्लेषा	डी, डू, डे, डो	ज्येष्ठा	नो, या, यी यू	उत्तराभाद्रपदा	दू, थ, झ, ञ
				रेवती	दे, दो, चा, ची

राशि स्वामी—

मेष, वृश्चिक का मंगल; वृष, तुला का शुक्र; कन्या मिथुन का बुध; कर्क का चंद्र; धन, मीन का गुरु; मकर, कुम्भ का शनि; और सिंह का सूर्य स्वामी है।

पृष्ठोदयादि विचार—

धन ९, मेष १, मकर १०, वृषभ २, कर्क ४ यह राशियां पृष्ठोदय संज्ञक हैं अर्थात पृष्ठ भाग से उदय होतीं हैं और मीन १२ राशि उभयोदवान अर्थात पृष्ठ तथा मस्तक दोनों अंग प्रथम उदय

करती है और शेष राशियां अर्थात मिथुन ३, सिंह ५, कन्या ६, तुला ७, वृश्चिक ८, कुम्भ ११ राशि के प्रथम मस्तक उदय होता है। मेष १, वृषभ २, मिथुन ३, कर्क ४, धनु ९, मकर १० राशियां लग्न रात्रि में बलवान हैं एवं सिंह ५, कन्या ६, तुला ७, वृश्चिक ८, कुम्भ ११, मीन १२, राशियां लग्न दिन में बलवान हैं।

ग्रहों की उच्च विचार—

सूर्य की मेष १ उच्च राशि है, चन्द्रमा की वृष २, मंगल की मकर १०, बुध की कन्या ६, गुरु की कर्क ४, शुक्र की मीन १२, शनि की तुला ७ राशि उच्च की है और सूर्य १० अंश तक परम उच्च का है। चंद्र ३ अंश तक, मंगल २८ अंश तक, बुध १५ अंश तक, गुरु ५ अंश तक, शुक्र २७ अंश तक और शनि २० अंश तक परम उच्च का होता है।

नीच विचार—

सूर्यादि ग्रहों के पूर्व कहे उच्च स्थानों से सातवां स्थान क्रम से नीच का स्थान जानना चाहिये।

मूल त्रिकोण विचार—

सूर्य सिंह का मूल त्रिकोणी है और चंद्र वृष का, मंगल मेष का, बुध कन्या का, गुरु धन का, शुक्र, तुला का, शनि कुंभ का मूल त्रिकोणी होता है।

तिथ्यादि बल—

तिथि में १ गुण है वार में २ गुण, नक्षत्र में ३ गुण, योग में ४ गुण, करण में ५ गुण हैं और करण से पूर्वोक्त मुहुर्त बलवान हैं,

उससे लग्न बलवान है तथा ग्रहों के बलवीर्य सहित लग्न होवे तो करोड़ गुण समझना, इस कारण संपूर्ण कार्यों में लग्न का बल देखना चाहिये।

षड्वर्ग विचार—

लग्न १, होरा २, द्रेष्काण ३, नवांशक ४, द्वादशांक ५, त्रिशांशक ६, यह षडवर्ग हैं सो शुभ ग्रह का शुभ जानना चाहिये।

लग्न आदि का लक्षण—

३० अंश का लग्न होता है और १५ अंश का होरा, १० अंश का द्रेष्काण होता है और लग्न के नौवे भाग को नवांशक कहते हैं। लग्न के बारहवें भाग को द्वादशांक और तीसवें भाग को त्रिशांशक समझना चाहिये और लग्न की राशि के स्वामी को गृहेश कहते हैं।

लग्न विचार—

१. मेष, २. वृष, ३. मिथुन, ४. कर्क, ५. सिंह, ६. कन्या ७. तुला, ८. वृश्चिक, ९. धनु, १०. मकर ११. कुम्भ और १२. मीन ये १२ लग्न हैं।

जिस राशि पर सूर्य होवे सोही लग्न सूर्योदय के समय आता है और उसी लग्न से सातवें लग्न में सूर्यास्त होता है।

तन्वादिद्वादश भाग—

१. तनु, २. धन, ३. सहज, ४. सुहृत, ५. सुत, ६. रिपु, ७. जाया, ८. मृत्यु, ९. धर्म, १०. कर्म, ११. आय और १२. व्यय ये १२ भागों के नाम हैं।

केन्द्रादि विचार—

लग्न १, चतुर्थ ४, सप्तम ७, दशम् १०, इनकी केन्द्र संज्ञा है और दूसरे २, पांचवें ५, आठवें ८, ग्यारहवें ११, की पणकर संज्ञा है तीसरे ३, छठे ६, नौवें ९, बारहवें १२, की आपोक्लीम संज्ञा है और नौवें ९, पांचवें ५ की त्रिकोण संज्ञा है। तीसरे ३, दशवें १०, ग्यारहवें ११, छठे ६ स्थान की उपचय संज्ञा है और जामित्र, द्युन, द्युत, मदन यह ४ नाम सातवें स्थान के हैं।

ग्रह दृष्टि विचार—

यामित्र नाम सातवें स्थान में सम्पूर्ण ग्रहों की पूर्ण दृष्टि होती है और चौथे, आठवें त्रिपाद दृष्टि है। नौवें, पांचवें द्विपाद दृष्टि और तीसरे, दसवें एकपाद दृष्टि समझना चाहिये।

विशेष दृष्टि विचार—

चौथे, आठवें मंगल की पूर्ण दृष्टि; नौवें, पांचवें गुरु की पूर्ण दृष्टि होती है। तीसरे, दशवें शनि की पूर्ण दृष्टि समझनी चाहिये और अपने स्थित हुए स्थान से सातवें सम्पूर्ण ग्रहों की पूर्ण दृष्टि होती है।

वस्तु क्रय-विक्रय मुहुर्त्त—

पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपदा २, स्वा, ध, अश्वि, ह, उ ३, मृ, अनु, आश्ले, रेवती इन नक्षत्रों में; चन्द्र, गुरु, शुक्र वारों में एवं शुभ शकुन में क्रय-विक्रय करना श्रेष्ठ है।

दुकान खुलने का मुर्त्त—

अनु, उत्तरा ३, पुष्य, रे, रो, मृ, ह, चि, अश्वि, इन नक्षत्रों में तथा शुभ वारों में और कुम्भ राशि के बिना शुक्र, चंद्र, सहित लग्न

में तथा दूसरे, दशवें ग्यारहवें लग्न में शुभ ग्रह होने से दुकान खोलना श्रेष्ठ है परन्तु बारहवें स्थान पर अशुभ ग्रह नहीं होना चाहिए।

ऋण दान मुहूर्त—

संक्रांति वृद्धियोग में तथा हस्त नक्षत्र रवि, मंगलवार में किसी का ऋण नहीं करना, कारण कि उसका ऋण वंश स्थिर हो जाता है और मंगल को किसी का द्रव्य उधार नहीं लेना तथा बुधवार को किसी का पीछा नहीं देना चाहिये अर्थात् मंगलवार को करजा उतारना और बुधवार को धन संचय करना श्रेष्ठ है।

कोठी आदि में धान्य रखने का मुहूर्त—

पुन, मू, रे, अनु, श्र, ध, श, चि, स्वा, अश्वि, पुष्य, रो, उ ३ यह नक्षत्र तथा गुरु, शुक्र, चन्द्र, रविवार को कोठे आदि में धान्य रखना शुभ है।

पंचाङ्ग कैसा हो—

आज कल बहुत से पंचांग प्रचलित हैं परन्तु मेरे विचार से उसी ही पंचांग को उपयोग में लाना चाहिए जो दृश्य गणनानुसार बनाया गया हो जैसे व्यापारिक महालक्ष्मी पंचांग और जन्म भूमि पंचाग आदि।

वायदा-व्यापार की रूप रेखा

प्रत्येक मनुष्य की यह इच्छा बलवती होती है कि वह किसी प्रकार भी उन्नति की ओर अग्रसर हो जिसके लिये वह नाना प्रकार की कार्यवाही करता है। उनहीं में एक वायदा-व्यापार है इस व्यापार में प्रवेश होने के उपरान्त उसे अनायास ही निष्फलता की

भावी आशंका से उसका अस्थिर हृदय तुरन्त ही सिहर उठता है। उस समय उसकी परिस्थिति उस नौका के समान हो जाती है जो अथाह सागर के बीच में पहुँच कर अपने खिवैया को खो बैठी हो। नौका स्वयं पार लगना चाहती हो किन्तु उसे तनिक भी साहस नहीं स्वयं पर ही नियंत्रण नहीं।

वर्तमान के वैज्ञानिक युग ने सट्टे को पिघला कर व्यापार के ढांचे में ढाल दिया है. अतः वायदा-व्यापार एक विज्ञान है और विज्ञानों की भांति उसके भी दो पार्श्व हैं—सैद्धान्तिक और क्रियात्मक। किसी भी व्यापार में सफलता प्राप्त करने के लिये उसके दोनों ही पार्श्वों से परिचित होना अनिवार्य है। वायदा-व्यापार के फलाफल का सीधा और पूर्ण उत्तरदायी स्वयं होना पड़ता है अतः वायदा-व्यापार की सम्यक् जानकारी हमारे लिये जितनी आवश्यक है उतनी आवश्यकता हमें अपने आपको समझने की है। अपनी योग्यता क्षमता तथा कार्य विशेष के बारे में अपनी जानकारी और अनुभव का विचार रखे बिना यदि वायदा-व्यापार में हाथ डाल दिया जाय तो उसका परिणाम हमारे जीवन के प्रवाह को ही बदल सकता है। हमारी स्थितियों में इतना उलट-फेर हो सकता है कि हमें अपने जीवन का उद्देश्य तक बदलना पड़ जाय तो कोई आश्चर्य नहीं।

स्मरण रखो वायदा-व्यापार में प्रवेश होने का उद्देश्य उन पूंजी-पतियों या सटोरियों से टक्कर लेना है जिनके पास बड़ी पूंजी, पता लगाने के बड़े-बड़े उपाय और राज्याधिकारियों तक पहुंच है, जो आपकी किंचितमात्र पूंजी हड़पने पर उतारू रहते हैं; परन्तु आप

इस आशा पर इधर प्रवेश करते हों कि अपनी पूंजी को अधिक करके अपनी आवश्यकता पूर्ति करें। स्मरण रखो सटोरियों के पास मोटी पूंजी के कारण अधिक उलट-फेर देखने की सामर्थ्य होती है। भावों में परिवर्तन करने वाले राजनैतिक प्रभावों का पता लगाने के उपाय प्राप्त होते हैं, उपज और उत्पादन आदि के नियमों को समझने वाले बड़े-से-बड़े जानकार की सेवा इनके पास होती है, उच्चकोटि के अनुभवी ज्योतिर्विदों की भविष्यवाणी प्राप्त करने की सामर्थ्य इनमें होती है। सब से बड़े बाजार में होने वाले परिवर्तन को सर्व-प्रथम पता करने के उपाय इनके पास होते हैं, और अधिक हानि उठाने के कारण दिवाला निकालने, बाजार बन्द करने और हेर-फेर के अन्य उपाय वर्तने की शक्ति भी इनमें होती है। इन सटोरियों की पैंतरादार चालों में हेर-फेर के जाल के अन्दर प्रवेश कर अपनी किंचितमात्र पूंजी से रुपये प्राप्त करने का प्रयत्न करना है अतः आवश्यक बातों का ध्यान रख कर इस मार्ग में जाने के लिये पाँव रखोगे तो आप अपने मंतव्य में सफल होने की सामर्थ्य प्राप्त कर सकते हैं। आप अपने विरोधी को इतना शक्ति-शाली देख कर डर न जायं अपितु इसके साथ यह भी स्मरण रखें कि सटोरिये कई होते हैं और आपस में एक दूसरे के साथ मिलकर इस वास्ते टक्कर लेते रहते हैं कि दूसरे की पूंजी को अपने अधीन कर सकें। सबसे बड़ा सटोरिया—छोटे सटोरियों की पूंजी को अपने अधीन करना चाहता है, छोटे सटोरिये अपने से निचलों को दिवा-लिया बनाना चाहते हैं, वह इसी प्रकार अपने से थोड़ा सौदा करने की सामर्थ्य रखने वालों की जेबें खाली कराने की टोह में रहते हैं;

कारण यह कि पूंजी-पति पूंजी से टक्कर लेता रहता है और इनकी आपस की टक्कर के समय आप अपना मंतव्य पूरा कर सकते हैं जब प्राकृतिक, राजनैतिक और आर्थिक व संवाद विवादादि की घटनाएं अचानक घटती हैं उस समय सटोरिये मिल जाते हैं और घबड़ाहट में इकट्ठे ही एक मार्ग से चल निकलते हैं, यह दूसरा समय आपके लाभ प्राप्त करने का है, जब एक बड़ा सटोरिया अपने विरोधी शक्तिशाली सटोरिये को परास्त करने में सफल हो जाता है तब मुँह की खाकर एक को अपने अस्त्र फेंकने पड़ते हैं, यह तीसरा समय आपके लाभ प्राप्त करने का है। इसके साथ ही सरकार और सटोरियों की आपस में टक्कर चलती है सटोरिया समय आने पर एकदम माल अपने आधीन करना चाहता है कि भावों में तेजी आ जाय और सस्ते भाव का लिया हुआ माल तेज भावों में बेचा जा सके जिससे लाभ प्राप्त किया जा सके। किन्तु सरकार यह प्रयत्न करती है कि देश में गड़-बड़ व अराजकता को रोकने के लिये वस्तुओं के मूल्य अधिक तेज न हों, क्योंकि मंहगाई बढने से प्रजा में अशान्ति उत्पन्न होती है अशांति उत्पन्न होने से सरकार खतरे में पड़ जाती है, तब राज्याधिकारी वर्ग के लोग अपने पदों को बनाए रखने के लिए इस प्रकार के कई प्रयत्न करते हैं कि मूल्य ऊँचे भावों पर न रह सकें या मूल्य अधिक गिर न जायं, जिससे औद्योगिक विकास में बाधा उपस्थित हो जाय। इसलिये सरकार और सटोरियों की आपसी टक्कर से उत्पन्न स्थिति से लाभ उठाने का चौथा समय आपको मिल सकता है; इसलिये अपने से कहीं अधिक शक्तिशाली विरोधी के होते हुए वायदा-व्यापार के

द्वारा रुपया प्राप्त किया जा सकता है; यदि इसके हर प्रकार के सिद्धान्तों पर दृष्टि रखी जाय और अपने आपके अधीन रखकर अच्छे मंतव्य के लिये लाभ प्राप्त करने का सत्प्रयत्न किया जाय न कि रुपया कमाने का मंतव्य लेकर अमीर बन कर स्वयं सटोरिया बनना हो, जिससे दूसरों की जेबें खाली कराई जायं, तब थोड़ी पूंजी वालों के लिये अपनी पूंजी से हाथ धोने के अतिरिक्त और कोई अन्तिम निर्णय नहीं निकलेगा।

लोभ की कोई सीमा नहीं होती, अधिक से अधिक लाभ प्राप्त करने का लोभ अपने हाथ से थोड़े लाभ को भी खो देना है और अपने ऊपर अंकुश न रहने के कारण अपनी शक्ति से अधिक सौदा हो जाता है जिसका प्रभाव यह होता है कि वक्र (रीएक्सन) को उलट न देख सकने के कारण से सौदा पड़ा रखने की शक्ति में कमी के कारण से हानि में ही सौदा काटना पड़ता है। इसलिये यदि वायदा-व्यापार को रोजगार के रूप में या अपना और अपने कुटुम्ब का पेट पालने के रूप में या सच्चाई से किसी शुभ काम में रुपया लगाने के मंतव्य से किया जायगा तो आज इस पूंजीवादी समय में इस व्यापार से सुन्दर और सरल कोई दूसरा साधन नहीं है, यदि इसके सभी उपयोगी सिद्धान्तों को समझ कर इसमें पाँव रखा जावे। केवल तेजी-मंदी लगाकर व्यापार करना या शक्ति से अधिक सौदा करना व्यापार नहीं है, जिसका अन्त सदा बुरा होता है। परन्तु अपनी शक्ति के अनुसार समय पड़ने पर सौदा करना और अपने अनुकूल बाजार चलने पर सौदा बढ़ाते जाना और लाईन बदलने पर सौदा बराबर करके फिर अपनी शक्ति के अनुसार समय

पड़ने पर सौदा करना और अपने अनुकूल बाजार चलने पर सौदा बढ़ाते जाना और लाईन बदलने पर सौदा बराबर करके फिर अपनी शक्ति के अनुसार सौदा प्रारम्भ करना ही इसका ठीक प्रकार है। उलट समय पर सौदा होने से यदि बाजार भी उलट चलने लगे तो अपनी शक्ति से सौदा खड़ा रखा जा सकता है, और वक्र (रीएक्सन) आने पर बाजार से निकल सकते हैं या सौदा डबल किया जा सकता है, इस प्रकार से अपनी पूंजी सुरक्षित रह सकती है। नित्य प्रति सौदे की उलट-फेर करना या बाजार का किंचितमात्र अपने अनुकूल चलने पर एकदम सौदे को बढ़ा देना या लाभ प्राप्त कर जाना अधिक नासमझी है। अपितु साप्ताहिक औसत रख कर अपने सौदे का लाभ लेना या लाभ का किंचितमात्र हिस्सा लेना अधिक उपयोगी है। इसलिये इस व्यापार का सबसे प्रथम और उपयोगी सिद्धान्त यह है कि अपनी शक्ति के अनुसार खुला सौदा किया जावे। मंदी-तेजी की उलझन में फंसने से और लाईन या बाजार का अपने अनुकूल चलने का शत-प्रतिशत विश्वास होने पर भी अपनी शक्ति से अधिक सौदा करने से सर्वदा परे ही रहना चाहिये। क्योंकि इस प्रकार से एक बार में कमाया हुआ अधिक रुपया मन को अपने अधीन रखने की शक्ति क्षीण कर देता है और इस व्यापार के उपयोगी सिद्धान्तों से नीचे गिरा देता है जिसका अन्तिम परिणाम सर्वदा ही अधिक हानि के रूप में निकलता है। दूसरे यह ख्याल मत रखो कि जिस दिन मार्केट में जाओ उस दिन सौदा अवश्य ही करना है। अपितु बाजार की चाल को भली-भाँति समझ कर जिस दिन आपको लाइन पलटने का वक्र पड़ने का पूर्ण

विश्वास हो जाय उस दिन ही सौदा प्रारम्भ करना चाहिये। थोड़ा सा लाभ प्राप्त कर सौदा बराबर करने का स्वभाव नहीं डालना चाहिये, इस प्रकार सौदा करने पर अपने कुटुम्ब के पालनार्थ लाभ हो सकता है। मुख्य बात यह भी स्मरण रखनी चाहिये कि बाजार में अच्छी घटा-बढ़ी नित्य प्रति नहीं चला करती, अपितु कई दिनों तक या सप्ताहों या कई महीनों तक भाव एक सीमा के अन्दर घूमते रहते हैं, अतः यदि दस या पन्द्रह दिन में आप पांच सात सौ रुपया लाभ प्राप्त कर लेते हैं, तो उसका उद्देश्य यह न निकालें कि आपकी आमदनी का औसत इसी प्रकार रहा करेगा; इसलिए अपने रहन सहन के ढंग में बढ़ोत्तरी न करें और न ही फिजूल खर्ची में पड़ जाएं, नहीं तो बाद में पछताना पड़ेगा। क्यों कि यह हो सकता है कि मार्केट पन्द्रह बीस दिन एक महीना खूब चले और इस में हजार पांच सौ रुपया प्राप्त कर लेवें, फिर दो-तीन मास तक बाजार पड़ा रहे या आप बाजार की चाल को न समझ सकें और इस वास्ते आमदनी न हो सके, इसलिए रुपया प्राप्त करने पर अपने मन को अधीन रखना अहंकार को अपने पास फटकने नहीं देना, फिर आवश्यकता पूर्ति के लिए अत्यावश्यक खर्च करके अपने जीवन के मंतव्य को पूरा करने के मार्ग पर चलना ही इस व्यापार से सर्वदा लाभ प्राप्त करने का श्रेष्ठ मार्ग है। बाजार के चलने के बारे में दूसरों की राय पर ध्यान नहीं देना चाहिये अपितु अपनी राय पर पक्का रहना चाहिए। यदि बाजार अपने विचार के उलट चले तो अपने विचार को फिर दो बारा ठीक करना चाहिए, किसी बड़े सटोरिये की लिवाली या बिकवाली की ओर ध्यान देना किसी

की सर्वदा ठीक निकलने वाली सुघाई से अपने विचार बदलना सर्वदा हानि देने वाला होता है, इससे बाजार को समझने की स्वयं की समझदारी उत्पन्न नहीं होती, अपितु दूसरों के आधिन होकर हानि उठानी पड़ती है, अन्त में आम लोगों की तरह यही कहना पड़ता है कि वायदा-व्यापार बुरी वस्तु है, इससे दूर रहना ही अच्छा है।

वायदा-व्यापार में मन्दी या तेजी चलने के सिद्धान्तों के बारे में लिखने से पहिले एक बात भली प्रकार समझ लेनी चाहिये कि आज के समय में लाभ प्राप्त करने के दो ही बड़े साधन हैं। एक है— सांसारिक वस्तुओं का उत्पन्न करना जिनसे सांसारिक लोगों की आवश्यकता पूर्ति होती है या इन वस्तुओं को उत्पन्न करने वालों की सहायता करना। दूसरा प्रकार है दूसरों की विवशता से लाभ उठाना, इसी में व्यापार भी सम्मिलित है, क्योंकि व्यापार से लाभ दूसरों की विवशता से ही मिला करता है। यदि वस्तु की मांग होगी तो उस वस्तु को प्राप्त करने वाला अपनी विवशता के कारण ही अधिक मूल्य देने पर विवश होगा। यदि मांग नहीं होगी तो मन्दे भाव पर भी खरीदने को कोई उद्यत नहीं होगा। इसलिये वस्तुओं के मूल्य अधिक या कम होते रहते हैं यदि व्यापारी लोग दूसरे की विवशता से लाभ न उठाएं तो वह लाभ प्राप्त नहीं कर सकते। आवश्यकता वालों को आवश्यक वस्तुयें न देकर उनको नाश कर देना ही व्यापार का वर्तमान युग में सुवर्ण सिद्धान्त है। अमेरिका में गेहूँ इसलिये इंजिनों में कोयले के स्थान पर फूंक दिया जाता है कि संग्रह अधिक न होकर भाव गिर न जायें, ब्राजील में कई बार कपास की फसल खड़ी इसलिये जला दी गई कि रुई के

भाव गिरने से बचाए जा सकें । अतः मंतव्य यह है कि व्यापार करने के लिये सबसे सुन्दर प्रकार वायदा-व्यापार का है, इसमें न तो वस्तुओं में मिलावट करने की आवश्यकता है न झूठ बोलने की, न थोड़ा तौलने की आवश्यकता है न किसी को उत्कोच(रिश्वत) देने की आवश्यकता है अपितु एक बार इसके मन्दी-तेजी चलने के सिद्धान्तों को सन्मुख रखकर समझ कर हृदयंगम करने की है जिससे मामूली पूंजीवाला साधारण पढ़ा लिखा व्यक्ति अपना और अपने कुटुम्ब का पालन कर दूसरों की सेवा करने के लिए अधिक समय निकाल सकता है । परन्तु यह तभी हो सकता है जब कि वायदा-व्यापार को व्यापार समझा जाए । किसी भी श्रेष्ठ से श्रेष्ठ वस्तु का दुरुपयोग होने पर वह अधिक हानिकर सिद्ध हो सकती है, अच्छाई बुराई किसी वस्तु या सिद्धान्त में नहीं है अपितु उसके उपयोग करने के ढंग में है, अतः वायदा-व्यापार का सदुपयोग किए जाने पर यह कभी बुरा नहीं हो सकता ।

प्रत्येक व्यापार का आधार पूंजी है, किस प्रकार लगाना चाहिये, यदि वायदा-व्यापार से आनन्द प्राप्त करना है तब आप स्मरण रखिये जितनी पूंजी आपने वायदा-व्यापार के लिए सुरक्षित रखी है उसके पांच बराबर विभाग कर लीजिये और एकबार में एक विभाग की सीमा से अधिक का व्यापार भूलकर भी न करिये । चाहे आपको ब्रह्मा ने ही स्वप्न में क्यों न कोई चांस बता दिया हो । स्मरण रखिये जितनी भी असामियां फैल हुई या जितने भी अधिक हानि होने से दिवाला घोषित किया, वे ऐसे ही व्यक्ति थे जिन्होंने इस पांचवे भाग की परिधि से अधिक का सौदा किया । एक ही दिन में लक्षाधीश होने की मत सोचिये । सावधानी पूर्वक पांव रखिये ।

बाजार को भली प्रकार समझ बूझकर सौदा करिये और उसके निपटाने के लिये सतर्क होकर बैठ जाइये । वायदा-व्यापार के द्वारा लाभ प्राप्त करने का एक मात्र मंत्र है सतर्कता । जो आलसी और ढीले होते हैं और भाग्य को प्रधान मानकर इस ओर बिल्कुल ध्यान नहीं देते, वे सदा खोते ही देखे गए हैं । अतः सदैव सावधान रहिए । अफवाहों से अपना बिचार मत बिगाड़िये । शान्त मस्तिष्क से बाजार के रुख का अध्ययन करते रहिये । कुछ व्यक्ति अपने मित्र की राय से व्यापार करते हैं । उन्हें यह जांच करना आवश्यक है कि उनके मित्र इकतर्फा दिमाग के तो नहीं हैं ? यदि मित्र इकतर्फा दिमाग के होंगे तो अनेक प्रकार की दलीलें देकर आपके मस्तिष्क में वही विचार कूटकर भर देंगे, अतः अपना सलाहकार चुनने में भूलकर भी धोखा मत खाइये। ऐसा सलाहकार चुनिये जो सामयिक घटनाओं का निष्पक्ष निचोड़ दे सके । यदि आपको मित्र से नहीं ज्योतिषी से सलाह लेनी है तो एक दो विश्वास पात्र उच्च-श्रेणी के अनुभवी विद्वान् ज्योतिषी चुनिये और पहली रिपोर्ट हर नये ज्योतिर्विद की केवल मिलाकर ही देखिये । उससे पत्र-व्यवहार कर उसकी विद्वत्ता की थाह ले लेना आवश्यक हैं। क्योंकि यह क्षेत्र भी इस समय अधिक ही संकीर्ण हो चुका है, जिसे देखो दे रहा है स्वर्ण-चांस, अचूक चांस ।

व्यापारी केलिए एक समाचार-पत्र अत्यावश्यक साधन है, जो उसकी प्रवृत्तियों पर नियंत्रण करता रहे, और उसे भविष्य के लिए मार्ग सुझाता रहे । पत्र ऐसा हो जिसमें दो मंडियो के एक ही समय के भाव अवश्य हों और उन पर आवश्यक टिप्पणी हो; साथ ही

उसमें सच्चे समाचार हों । उपरोक्त सभी बातों के सम्मिश्रण से अपना एक स्वतन्त्र मत बना लीजिए । अपना मत दूसरों पर अभिव्यक्त करने की आवश्यकता नहीं । इस विषय में शान्त मस्तिष्क और कल्पनाशील बनकर खूब सोचिये । यह बात तो सत्य है कि जब किसी वस्तु का उत्पादन कम है और मांग अधिक होती है, तब उसका भाव तेज होता है । जब पैसा असुरक्षित घोषित हो जाता है तब भी वस्तु महंगी होती है । जब पैसे का मूल्य वस्तु के मूल्य से कम हो जाता है तब हर वस्तु तेज हो जाती है । जब किसी वस्तु की मांग कम होगी तथा मांग की अपेक्षा माल अधिक होने पर वस्तु का भाव गिर जाता है । पैसा सुरक्षित हो जाने पर मन्दे के धमाके होते हैं । जब पैसे का मूल्य वस्तु के मूल्य से अधिक हो जाता है तब वस्तु मात्र में मन्दी का वेग चालू हो जाता है । अभी तक भारत की उपज वर्षा पर अवलम्बित है, यहां कपास, अरण्डी, अलसी, गेहूँ आदि सभी फसलें होती हैं । उचित समय पर यदि वर्षा नहीं हुई या होने के चिन्ह दृष्टिगोचर न हुए तो भाव एक दम तेजी की ओर अग्रसर होने लगते हैं ।

यदि उसी समय वर्षा हो जाय तो भाव गिरने भी लगते हैं । जब नई फसलें बाजार में आने लगती हैं तब बाजारों पर उनके दबाव का प्रत्यक्ष प्रभाव दिखाई देने लगता है, यदि कच्चे माल के निर्यातक कोटे फसलों से कम या अधिक होंगे तो उनका प्रभाव भी प्रत्यक्ष रूप से बाजारों पर पड़े बिना नहीं रहेगा । अतः उपरोक्त रहस्यों को हृदयंगम कर लेने से आप वायदा-व्यापार में कभी हानि नहीं उठा सकते ।

मंदी-तेजी

किसी वस्तु के वायदा-व्यापार में तीन बातें होती है। प्रथम तेजी चलेगी, द्वितीय मंदा चलेगा, तृतीय घटा-वढ़ी होती रहेगी और किसी एक सीमा के अन्दर ऊपर या नीचे भाव अधिक दिनों तक घूमते रहेंगे। घटा-वढ़ी के दिनों में अधिक लाभ प्राप्त करना बहुत कठिन होता है; आम लोगों को मंदा आने पर मंदे की लाईन का विचार होता है और तेजी आने पर तेजी की लाईन का विश्वास हो जाता है, फिर घटा-वढ़ी से सौदे की काट-छांट करने पर हानि में रहना पड़ता है, इस समय में विशेष वही व्यापारी कमा सकते हैं जो उस भाव पर ध्यान रखकर सौदा करते हैं, जिसके पास भाव चक्कर काटते हैं घटा-वढ़ी विशेषतया उसी समय पर चलती है जब एक लाईन चलकर ठहर जाती है। इसमें आम तौर पर मध्यस्थ अन्तर निकालने का 'प्रकार यह है कि यदि तेजी चली है तो किस भाव तक तेजी गई है, वहां से यहां तक वक्र (रीएक्सन) आया है, इन दोनों भावों की औसत निकाल लेवें तो आपको उस भाव का पता चल जायेगा जिसके ऊपर या नीचे बाजार घूमता रहेगा मंदे की लाईन जब चलती है, लाभ प्राप्त करने का सबसे श्रेष्ठ समय यह होता है। लाईन कब चलती हैं इसका ज्ञान होना आवश्यक है। विशेषतया लाईन चलने के दो समय होते हैं, एक वह जब बाजार में दोनों ओर खूब झटके आते है, जिस ओर लाइन चलनी होती है उस ओर बाजार एकदम तेज गति से जाता है और फिर एक-दो दिन भाव रुक कर भाव उल्टी ओर को जोरदार तेजी से जाकर चलने वाले भावों को स्पर्श कर एकदम अपनी लाइन की सीध में

चल निकलते हैं लाइन चलने पर पहिले एक इङ्गित (ईशारा)
दृष्टिगोचर होता है कि सावधान हो जाओ मैं चलने वाली हूँ।
यदि आपने लाइन के उलट सौदा किया है तो आप घबराएं नहीं
अपितु प्रतीक्षा करें और जब वक्र (रीऐक्सन) आने लगे तो उतना
ही सौदा लाइन के उलट और करके अपना दड़ा मिलायें, यदि बाजार
उस सौदे से उलट जाने लगे तो शीघ्र ही उस सौदे को काट दें।
वक्र (रीएक्सन ठीक अन्दाजा होने पर यह आपको उलट देखनी
पड़ेगी) और वक्रांक (रीएक्सन प्वाइण्ट) का ठीक हिसाब देखें इस
वक्र (रीएक्सन) में दड़ा मिलाकर जब फिर वक्र (रीएक्शन) आए
तब आप बिना हानि उठाए अपना सौदा बराबर कर सकते हैं और
फिर चलती लाइन के अनुकूल सौदा कर सकते हैं, यदि आपका
सौदा लाइन के अनुकूल में किया हुआ है तो वक्रांक (रीएक्शन
प्वाइण्ट) की प्रतीक्षा करके लाभ प्राप्त करें, भाव एक बार हानि
किए हुए सौदे को बराबर करने का समय अवश्य देते हैं, उस समय
की सीमा की प्रतीक्षा में रहो और वहां से जो सौदा करो उसको
खड़ा रहने देना चाहिए। फिर आगे सौदा बढ़ाते जाओ, लाइन मंदे
की हो या तेजी की दोनों स्थितियों में प्रथम आगाही होगी, फिर
जोरदार वक्र (रीऐक्सन) आकर लाइन प्रारम्भ हो जायगी। इसकी
पूरी जानकारी पिछली चली हुई लाइनों को देखकर सुगमता से
हो सकती है।

लाइन चलने का दूसरा प्रकार यह है कि बाजार में
घटा-बढ़ी बहुत कम हो जाती है, ऊपर और नीचे दोनों ओर के
भावों को छोड़कर इसकी सीमा बहुत कम हो जाती है और कई

दिनों तक बाजार कतई सुप्तावस्था में पड़ा सा ही दृष्टि-गोचर होता है, ऐसे समय पर बाजार एकदम झटका मारता है, जिस ओर को जाना होता है उस ओर को एकदम खिच जाता है एक दो दिन या कम समय वहां भाव पड़े रहकर फिर एक लाइन प्रारम्भ हो जाती है, ऐसी स्थिति में भी उलट सौदा किये हुए व्यापारी को समय मिलता है कि वह अपना सौदा हानि से काटकर डबल कर सके और लाइन के अनुकूल अपना सौदा बढाता जावे।

लाइन समाप्त होने का समय

लाइन प्रारम्भ होने पर लाभ प्राप्त करने की ओर उतना अधिक ध्यान नहीं देना चाहिये, जितना अपना सौदा बढाने की ओर। ज्यों ज्यों लाइन आगे की ओर बढती जाय उतना सौदा बढाते जाओ, इस बात का विचार मत करो कि आपका सौदा अधिक होता जा रहा है, केवल इस बात का ध्यान रखो कि भाव जिस तीसरे भाव को छोडकर आए हैं आपके सौदे का कुल दडा इस सीमा के अन्दर तक रहना चाहिये, इसका खास चिन्ह यह है कि जिस सीमा पर जाकर लाइन ने रुकना है वहां से एक जोरदार वक्र (रियेक्शन) आवेगा। परन्तु आपके कुल सौदे को हानि नहीं पहुंचायगा, केवल आपके अन्तिम सौदे को हानि दिखा सकता है, किंतु यहां आपको घबराना नहीं चाहिये, अपितु सौदा बढाने को छोड़कर सारे सौदे का लाभ प्राप्त करने के लिये उद्यत हो जाना चाहिये, भाव एक बार उस लाइन के अंतिम भाव के आस-पास इस दिन या दूसरे-तीसरे दिन अवश्य टक्कर मारेंगे, यही समय अपना

सौदा बराबर करने का है, बाजार के भाव सर्वदा राजपथ (सड़क) या मार्ग बनाकर चलते हैं, और जब केवल मात्र घटा-बढ़ी चलती है तब भाव अपना घर बना लेते हैं, उसी सीमा के अन्दर घूमते रहते हैं, राज पथ (सड़क) या मार्ग के दोनों छोर का ठीक ठीक ज्ञान होने पर आपको बड़ी सुगमता से एक आते तफ लाइन के ऊंचे निचले भाव का सम्यकतया पता लग सकता है, और इसक पूरी जानकारी उस समय आ सकती है, जब पिछली लाइनों की हिसाब को समझकर बाजार में चलने वाली थोड़ी या अधिक घटा-बढ़ी या लाइन का अध्ययन किया जाय क्योंकि लाइन चाहे छोटी हो चाहे बड़ी, सर्वदा कुछ नियमित सिद्धान्तो के अनुसार ही चल करती है और इसकी पूरी जानकारी बाजार में बैठकर हो सीखी जा सकती है,

व्यापार में समाचार पत्रों का महत्व

व्यापारियों को किसी वस्तु के भावों का रुख अपने नगर या प्रांत के बाजारों की हालत, उत्पादन, खपत वेलेन्स आदि को आधार मानकर निश्चित नहीं कर लेना चाहिये, अपितु देश व्यापी धन्धो के सम्बन्ध में विचार करते हुए विदेशिक बाजारों की अवस्था का ध्यान रखकर ही उस वस्तु के भावों का रुख बनाना चाहिये। वर्तमान समय में भारत अभी व्यापारिक स्थिति में इतना आत्म-निर्भर नहीं हुआ है वह व्यापारिक स्थिति में अमेरिका. यूरोप आदि देशों के पीछे चलने वाला है। इसलिए जिस प्रकार आस-पास के बाजारों की अवस्था का ज्ञान आवश्यक है उसी प्रकार देश तथा

विदेश के बाजारों की अवस्था का ज्ञान रखना महत्वपूर्ण है, परन्तु दुख है कि हमारे लाखों की हानि उठाने वाले व्यापारी इस बात की महत्ता नहीं मानते या इस ओर कतई भी ध्यान नहीं देते केवल स्थानिक सूचना को आधार मानकर ही वायदा-व्यापार करते हैं जिससे वह प्रायः हानि ही उठाते हैं। प्राचीन काल में अपने देश के बाजारों पर अन्य देशों के व्यापार का इतना प्रभाव नहीं पड़ता था उस समय थोड़ी सी जानकारी से भी कार्य चल जाता था पर अब बाहर के देशों की अवस्था जाने बिना व्यापार करना हानि से रहित नहीं है। अतः प्रत्येक व्यापारी को व्यापारिक सूचनाओं से परिचित रहने के लिये मुख्य उद्योग करना चाहिये व्यापार की सफलता का मुख्य मूल मंत्र यह है "अपने व्यापार की सूचनाओं से भलीभांति परिचित रहना।" विदेशिक व्यापारी इसके लिये बड़ा उद्योग करते हैं, और केवल व्यापारिक सूचनाओं की जानकारी की प्राप्ति के लिये हजारों रुपये व्यय करते हैं जिससे उनके समक्ष व्यापार में हानि की ओर का प्रश्न ही नहीं उठता है। अतः व्यापारियों को इस ओर भी विशेष ध्यान देना चाहिये।

आजकल अपने देश से प्रकाशित होनेवाले समाचार पत्रों ने भी इस ओर विशेष ध्यान दिया है जितने भी बड़े-बड़े समाचार-पत्र प्रकाशित होते हैं अब तो वे अपना पूर्ण पृष्ठ ही व्यापारिक समाचार के लिये देने लगे हैं इसके अतिरिक्त कुछ समाचार-पत्र व्यापारिक दृष्टि से ही प्रकाशित होते हैं जिनमें कुछ समाचार-पत्र देश की ही व्यापारिक-समीक्षा व भाव देते हैं कुछ विदेश को व्यापारिक-समीक्षा व भाव भी देते हैं। इसके अतिरिक्त बड़े,बड़े

व्यापारिक केन्द्रो में ऐसी कम्पनिया या कार्यालय हैं जो तार या टेलीफोन द्वारा विदेशिक एवं विदेशिक व्यापार-समाचार देते हैं तथा शासकीय गजट से भी उत्पादन खपत एव संग्रह के आंकड़े ज्ञात हसकते हैं। यू. पी. आई तथा पी. टी, आई, ये दो संस्थाएँ ऐंसी हैं जो व्यापारिक सूचनाए देशिक एव विदेशिक टेलिप्रिंटर द्वारा भेजती हैं।

वायदा-व्यापार में सफलता

वायदा व्यापार में सफलता प्राप्त करने के लिए, वैज्ञानिक ढंग से, भावों को चाल ज्ञात करना आवश्यक है। सट्टा (Speculation) का अर्थ है आगे से धारणा बांधना।

किसी वस्तु के व्यापार में धारणा (रुख) प्राप्त करने के लिए निम्न विषयों की जानकारी आवश्यक है। यों त भारत सरकार ने प्रत्येक वस्तु के ऊँचे-नीचे भाव बांध दिए हैं तो भी घट-बढ़ का प्रमाण उस बीच रहता ही है—

(१) वस्तु की आंकड़ा स्थिति।

(२) वस्तु का व्यापार और उसका संचालन।

ज्योतिषियों एवं ज्योतिष प्रेमिय को सुझाव—

ज्योतिषी क्यों कलंकित होते हैं और ज्योतिष के भरसे व्यापार करने वाले क्यों हानि उठाते हैं। इसके निम्न प्रकार हैं—

(१) शुद्ध असली पंचांगों की कमी है। वर्तमान समय में अब कुछ पंचांग शुद्ध एवं सही गणित के छपने लगे हैं जिनका अन्यत्र वर्णन किया जा चुका है।

(२) तेजी कर्ता एवं मंदी कर्ता सब योगों का संग्रह नहीं करते, यदि किया भी होगा तो सच्चे एवं झूठे सभी पर विश्वास किया होगा। योग सच्चा उसी को समझना चाहिए जो हर समय सच्चा मिला हो और चमत्कार की तरह प्रभाव बतलाया हो।

(३) तेजी योग हो, उस समय कोई मन्दी योग तो नहीं है कोई भूल तो नहीं कर रहे हैं, कौनसा योग कितना प्रबल है, कितना निर्बल, अर्थात् कितने टके की मन्दी या तेजी करने की शक्ति है। बाजार की घट-बढ़ कितने अन्दाज की चल रही है। माल के भाव ऊंचे लेवल पर है या घटे हुए लेवल पर।

(४) ज्योतिष विद्या एक अमूल्य रत्न है इसको सत्यता, बुद्धिमानी, चतुराई एवं परिश्रम से उपयोग करें तो मान, प्रतिष्ठा के साथ-साथ लक्ष्मी भी प्राप्त होगी।

व्यापारियों को चेतावनी—

यदि आपको वायदा-व्यापार में धन कमाना है तो निम्न बातें स्मरण रखें—

१. अपनी हैसियत से अधिक (तृष्णा अर्थात् लोभ में आकर, दूना धन अवश्य मिलेगा भरोसा जान कर) धंधा मत करो। जितनी पूंजी बिना किसी दुःख के हानि में दे सकते हो उतना ही लाभ लेने की आशा से व्यापार करो। एक बार में जितना लाभ हुआ हो तो उसकी आधी पूंजी को इस धंधे में सम्मिलित कर उसी प्रकार व्यापार चालू रखो। कभी लाभ होगा तो कभी हानि। लेकिन आप कभी हताश नहीं होंगे।

२. १२ महीनों में १०० व्यापार नहीं करना चाहिए बल्कि १४ ही व्यापार करें। यदि आपकी सरढ़ी में व्यापार का सांधन है तो जैसे-जैसे आपकी ले-बेच सीधी चले उस प्रकार करें। ज्योतिष योग का (छोटी व बड़ी) घट-बढ़ का आपको अनुभव हों तो अधिक ले-बेच भी कर सकते हैं। तेजी-मंदी के योग हों तो वो एक दिन, सप्ताह, महीने या तीन चार महीनों के दोनों ओर के लिख कर विचार करें कि तेजी के योग प्रबल हैं या मंदी के। जिस ओर के प्रबल हों उस लाइन का व्यापार करें और स्मरण रखो कि कोई योग भूल में तो नहीं रह गया है और तेजी योग रहा हो वो समाप्ति होनेवाला हो तो एक दिन पहिले व्यापार बराबर करलो क्योंकि योग समाप्त होने पर बाजार उल्टा जायगा।

३. मंदी या तेजी के भावों के लेवल का भी पूर्ण ध्यान रखें, तेजी में लेनेवाले तथा मंदी में बेचनेवाले हानि उठाते हैं।

४. बहुत दिनों से छोटी घट-बढ़ चलती हो तब तेजी-मंदी के पैसे कम लगते हों तो लगाना अच्छा है।

५. विशेष प्रतिदिन की जानकारी के लिए श्री व्यापारिक महालक्ष्मी पंचाग देखें।

सर्वतो भद्रचक्र विचार—

१ सर्वतो भद्र चक्र को सहायता से किसी भी व्यक्ति, वस्तु, देश, गाँव आदि का शुभ-शुभ जाना जा सकता है ऐसे व्यक्ति, वस्तु या देश आदि का जन्म नाम मालूम कर लेना चाहिये, जन्म नाम का पहिला अक्षर, अक्षर से उसका नक्षत्र, नक्षत्र से उसकी जो राशि हो वह राशि

और अक्षर से उसका स्वर वर्ण एवं तिथि मालूम कर लेना चाहिये । जन्म नाम विदित न हो तो प्रचलित नाम से ही अक्षर, नक्षत्र राशि आदि का ज्ञान कर लेना चाहिये । परन्तु प्रचलित नाम के फलादेश में संदेह रहेगा । अक्षर, नक्षत्र, राशि आदि ज्ञात कर लेने के बाद इन पांचों की कल्पित मूर्तियां चक्र के कोठे में अपने-अपने स्थान पर रख देना चाहिए और फिर आगे बताये नियमों के अनुसार नवग्रहों में से किस ग्रह का कहां वेध होता है सो देखना चाहिए ।

सर्वतो भद्रचक्र निर्माण—

दस रेखा खड़ी और दस रेखा आड़ी खींचने में ८१ कोठों का चक्र बनाने के उपरान्त ईशानादि चारों कोण दिशाओं के (१६) कोठों में अकारादि १६ स्वर सीधे क्रम से एक-एक करके चार फेरे में इस प्रकर लिखें अ, उ, लृ, ओ ये ४ ईशान में, आ ऊ, लॄ, औ ये ४ अग्नि में, इ, ऋ, ए, अं ये ४ नैऋत्य में और ई, ॠ, ऐ, अः ये ४ वायव्य में लिखें जावेंगे । इसके बाद नक्षत्र इस प्रकार भरें कृत्तिकादि ७ पूर्व में, मघादि ७ दक्षिण में, अनुराधादि ७ पश्चिम में और धनिष्ठादि ७ उत्तर में लिखें । अ, व, क, ह, ड ये ५ पूर्व में, म, ट, प, र, त ये ५ दक्षिण में, न, य, भ, ज, ख ये ५ पश्चिम में और ग, स, द, च, ल ये ५ उत्तर में लिखें । राशियों में से वृष, मिथुन, कर्क ये ३ पूर्व में, सिंह, कन्या, तुला ये ३ दक्षिण में, वृश्चिक, धन, मकर ये ३ पश्चिम में और कुंभ, मीन, मेष ये ३ उत्तर में लिखें । शेष बचे कोठों में नन्दादि पांच प्रकार की तिथिओं को लिखे अर्थात् नन्दा को पूर्व में, भद्रा को

दक्षिण में, जया को पश्चिम में, रिक्ता को उत्तर में और पूर्णा को मध्य में लिखे और इन तिथियों के साथ में भौम तथा आदित्य को नन्दा के, बुद्ध तथा सोम को भद्रा के, गुरु को जया के, शुक्र को रिक्ता के और शनिवार को पूर्णा के कोठे में लिखें।

॥ कोष्ठक सर्वतो भद्र चक्र ॥

॥ सर्व तो भद्र चक्रम् ॥								
अ	कृ	रो	मृ	आ	पु	पु:	श्ले	आ
भ	उ	अ	व	क	ह	ड	ऊ	म
अ	ल	लृ	वृ	मि	क	लॄ	म	पू
रे	च	मे.	ओ	१ रि. ६ मं. ११	औ	सिं.	ट	उ
उ.षा.	द	मी.	४ बु ९ १४	५ शो. १० १५	२ चं. ७ १२ अं	क.	प	ह
पू.भा.	स	कुं.	अः	३ गु ८ १३	अं	ङ	र	चि
श	ग	ऐ	म.	ध.	वृ.	ए	न	स्वा
ध	ऋ	ख	ज	भ	य	न	ॠ	वि
ई	श्र	अभि.	उ.षा.	पू.षा.	मू	ओ	अ	इ

वेध विचार—

वेध देखने की आवश्यक बातों को जानने के पूर्व सुगमता की दृष्टि से यह इच्छनीय है कि चक्र में दिये (१) अक्षर (२) स्वर (३) तिथि (४) नक्षत्र और (५) राशि को किन ग्रहों का वेध है, देखने के लिए ग्रहों की कल्पित नव मूर्तियां लकड़ी या मिट्टी आदि की शतरंज के प्यादे के आकार जैसी बना ली जावे और पहचानने में भूल न हो उसके लिए उन मूर्तियों को अलग-अलग रंग से रंग देना चाहिए । तब ही ग्रहों की मूर्तियों को उनके अपने अपने विशिष्ठ रंग से रंग देने से पहिचानने में भूल होने की सम्भावना नहीं होगी और वे दिखेंगी भी सुन्दर एवं आकर्षक। मूर्ति ग्रहों की आकृति और रंगादि कई पंचागों में रहती हैं । जैसी आप मुनासिब (पहचानने के लिये) समझें बनवाकर नाम लिख लें। अब वेध कैसे होता है और कैसे देखना चाहिए इसको यहाँ समझाते हैं—

इस चक्र में ग्रह जिस नक्षत्र पर स्थिति हो, उस नक्षत्र से तीन ओर को वह ग्रह वेध कर सकता है । सामने, बायीं और दाहिनी ओर, सामने वेध होने की हालत में सिर्फ सामने जो नक्षत्र है उसी को वेध होता है जब कि बायीं ओर और दाहिनी ओर, वेध होने में जो अक्षर, तिथि, स्वर, नक्षत्र और राशि वेध के मार्ग में आते हैं उन सभी को वेध होता है ।

उदाहरण—रेवती पर स्थित ग्रह का जब सम्मुख वेध होगा तो सिर्फ उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र को होगा, लेकिन जब दाहिनी ओर वेध होगा तो मूल नक्षत्र को तो वेध होगा ही, साथ में द

अक्षर एवं कुम्भ और मकर राशि को और भ अक्षर को भी वेध होगा। इसी तरह बायीं ओर के वेध में मृगशीर्ष नक्षत्र के साथ भ और अ अक्षर को भी वेध होगा।

अब खास समझने की बात यह है कि किस हालत में एक ही ग्रह का वेध एक ही साथ तीनों ओर को होता है और किस हालत में दाहिनी या बायीं या सिर्फ सामने की ओर होता है इसमें हमेशा इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि वेध कर्त्ता ग्रह की दृष्टि किस ओर है और ग्रह की जिस ओर की दृष्टि होती है उस ओर को वेध होता है। जिस ओर को दृष्टि नहीं होगी उस ओर को वेध नहीं होता है, अगर दृष्टि सम्मुख होगी तो सामने के नक्षत्र को वेध होगा। यदि दृष्टि दाहिनी ओर हुई तो दाहिनी ओर के अक्षरादि को वेध होगा बायीं ओर दृष्टि हुई तो बायीं ओर के अक्षरादि (अक्षर, नक्षत्र, राशि, तिथि और स्वर) को वेध होगा।

अब इस बात का निर्णय करना है कि कब किस ग्रह की दृष्टि सम्मुख, बायीं या दाहिनी ओर होती है।

ग्रहों का वेध—

(१) सूर्य, चन्द्र, राहु, केतु इन चारों ग्रहों का वेध सदैव ही तीनों ओर को एकसा होता है शेष ग्रह अपनी गति व गति अनुसार, वक्री, मार्गी जिस अवस्था में होते हैं उस प्रकार वेध होता है।

(२) वक्री ग्रह की दृष्टि सदैव दाहिनी ओर रहती है, मंगल, बुध, शुक्र एवं शनि जब-जब वक्र अवस्था में होते हैं दाहिनी ओर को वेध करते हैं।

(३) राहु, केतु सदैव ही वक्र अवस्था में रहते हैं परन्तु इन दोनों ग्रहों की दृष्टि सदैव ही तीनों ओर को रहती है इस कारण इनका वेध भी तीनों ओर रहता है।

(४) वक्री से मार्गी होते ही ग्रह की दृष्टि दाहिनी ओर से हटकर बायीं ओर को हो जाती है और इसलिए वेध भी बायीं ओर को होने लगता है लेकिन ऐसा वेध कुछ ही दिनों तक रहता है, मंगल ग्रह वक्री से मार्गी होते ही ४ दिन तक बायें वेध करता है और इसी प्रकार बुध ३ दिन, गुरु ८ दिन, शुक्र ५ दिन और शनि १० दिन बायें वेध करते हैं उसके पश्चात् गति के अनुसार वेध होता है।

नक्षत्र वेध—

सर्वतो भद्र चक्र में दिये गये एक नक्षत्र से दूसरे नक्षत्र को जो वेध होता है उसे नक्षत्र वेध कहते हैं। एक नक्षत्र से दाहिनी बायीं या सम्मुख दिशा जानने के लिए चक्र की पूर्व दिशा को सामने रख कर देखना चाहिए।

उदाहरण—मूल नक्षत्र ऊपर के स्थित गृह का दाहिनी वेध चित्रा नक्षत्र को, सम्मुख वेध पुनर्वसु को, बाये वेध रेवती नक्षत्र को समझना चाहिए, मृग शीर्ष नक्षत्र पर स्थिति गृह का दाहिनी ओर रेवती, बायीं ओर चित्रा को, सम्मुख उत्तराषाढा को वेध होता है, पूर्वा भाद्रपदा पर स्थिति ग्रह का दाहिने उत्तराषाढा नक्षत्र को, बायीं ओर पुनर्वसु नक्षत्र को और सम्मुख चित्रा नक्षत्र को वेध होता है। उसी प्रकार उत्तरा फाल्गुनी पर स्थिति

मुह का बायीं ओर उत्तराषाढा को, दाहिनी ओर पुनर्वसु को सम्मुख रेवती को वेध होता है। यह वेध नक्षत्र का होता है।

चरणात्मक वेध—

एक नक्षत्र के चार भाग होते हैं प्रत्येक को चरण या पाद कहते है, जब ग्रह एक नक्षत्र से दूसरे नक्षत्र को वेध करता है तो वह नक्षत्र वेध कहलाता है परन्तु एक नक्षत्र के जिस चरण पर ग्रह हो और दूसरे नक्षत्र के जिस चरण को वेध करता हो तो वह चरणात्मक वेध कहलाता है। नक्षत्र वेध से चरणात्मक ग्रह विशेष बलवान असर करनेवाला होता है। उदाहरणार्थ—

(१) अश्विनी के प्रथम चरण पर स्थित ग्रह बायीं ओर रोहिणी के चतुर्थ चरण को; दाहिनी ओर ज्येष्ठा के चतुर्थ चरण को और सम्मुख पूर्वा फाल्गुनी के चतुर्थ चरण को वेध करता है।

(२) वैसे ही उत्तराषाढ़ा के द्वितीय चरण पर स्थित ग्रह बायीं ओर पूर्वाभाद्रपदा के तीसरे चरण को; दाहिनी ओर उत्तराफाल्गुनी के तीसरे चरण को व सम्मुख मृगशिर के तीसरे चरण को वेध करता है।

(३) मूल के तीसरे चरण पर स्थित ग्रह बायीं ओर रेवती के दूसरे चरण को, सम्मुख पुनर्वसु के दूसरे चरण को और दाहिनी ओर चित्रा के दूसरे चरण को वेध करता है।

डबल वेध—

जहां दो ग्रह परस्पर एक दूसरे को वेध करते हैं वहां डबल वेध बनता है, जैसे—मृगशीर्ष पर शनी वक्री है और मंगल रेवती पर मार्गी हुआ ही हो या शीघ्रगति का हो जब शनी भी मंगल को वेध करता है और मंगल भी शनी को; ऐसे वेध बलवान और पूरा असर करनेवाले होते हैं।

प्रबल वेध—

जहां दोनों वेधकर्ता ग्रह बलवान हों वहां उनके वेघ से जो प्रबल योग बनता है उसका फल निश्चय ही जोरदार होता है। उदाहरणार्थ—चन्द्र और मंगल का वेध होता हो और दोनों एक दूसरे को परस्पर वेघ करते हों तो बलवान होते ही हैं यदि साथ में चन्द्र पूर्णकला का हो और मंगल भी उदित व आकाश में देदीप्यमान चमकीला हो और दोनों में से किसी को भी सूर्य का वेघ नहीं हो रहा हो तो प्रबल वेधकर्ता योग बनता है।

निर्बल वेध—

जब चन्द्र कम कला का हो या चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि को सूर्य ग्रह का वेध हो तो ग्रह कमजोर होता है और जब ग्रह अस्त या कम गति का हो तो न्यून (कम) फल दायक होता है।

वेध फल—

(१) जिस वस्तु के अक्षर, राशि, स्वर या तिथि, वार को शुभ ग्रह का वेध होगा उस वस्तु की वृद्धि होगी या भाव मंदा होगा। जिस वस्तु के अक्षर, नक्षत्र आदि को अशुभ ग्रह का वेध होगा उस वस्तु की हानि होगी अर्थात् उस वस्तु के भावों में तेजी आवेगी।

(२) चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्र-ये चार ग्रह शुभ या सौम्य हैं इनके वेध से मंदी होती है। सूर्य, मंगल, शनि, राहु एवं केतु—ये पांच ग्रह अशुभ या क्रूर है इनके वेध से तेजी होती है।

(३) चन्द्र वैसे सौम्य ग्रह है लेकिन कृष्ण पक्ष की ग्यारस से लेकर शुक्ल पक्ष की पंचमी तक क्षीण कला होने से अशुभ या क्रूर हो जाता है।

(४) चन्द्र और बुध ग्रह शुभ होते हुए भी हमेशा शुभ फल नहीं देते हैं बुध ग्रह यों सौम्य है किन्तु क्रूर ग्रह के साथ ही एक चरण नक्षत्र पर इकट्ठे होने पर अथवा बुध ग्रह को क्रूर ग्रह का वेध हो तो वह क्रूर हो जाता है वैसे ही चन्द्र के साथ क्रूर ग्रह आने से उसका फल क्रूर होता है।

उदाहरणार्थ—मंगल बुध साथ व मंगल बुध का वेध, का असर क्रूर ग्रह का फलदायक है वैसे ही मंगल चन्द्र साथ, शनि चन्द्र, राहु चन्द्र, केतु चन्द्र साथ अथवा मंगल चन्द्र, शनि चन्द्र, राहु चन्द्र या केतु चन्द्र, का वेध क्रूर ग्रह का फलदायक है। कोई सौम्य ग्रह के साथ क्रूर ग्रह साथ या वेध होने से क्रूर ग्रह भी सौम्य हो जाता है। जैसे शुक्र राहु, सूर्य राहु सौम्य फलदायक है इसका इसी पुस्तक में अन्यत्र विस्तृत वर्णन है कृपया पाठक उसको ध्यान में रखें।

(५) परम शीघ्रगामी अथवा अतिचारी ग्रह द्वारा किए गए वेध का फल रूई, कपास पर विपरीत होता है।

(६) सौम्य ग्रह जिस नक्षत्र पर वेध करता हो उस नक्षत्र को छोड़ कर दूसरे नक्षत्र पर चला जावे अर्थात् उसका वेध निकल जावे उस समय उस ग्रह के प्रभाव की मंदी समाप्त हो जाती है अर्थात् वह तेजी का प्रभाव करता है।

(७) क्रूर ग्रह जिस नक्षत्र पर से वेध करता हो उस नक्षत्र को छोड़कर दूसरे नक्षत्र पर चला जावे अर्थात् उसका वेध निकल जावे उस समय उस ग्रह के असर की तेजी खतम हो जाती है यानि इसका अर्थ मन्दी का हुआ।

(८) हर ग्रह की गति के अनुसार, उस ग्रह का असर होता है पाठक समय-समय पर ग्रहों की गति के फेर फार का पूरा ध्यान रखें ग्रह की गति सम गति से शीघ्र गति अथवा शीघ्र गति से चरम गामी कब हुआ यह ध्यान रखना आवश्यक है, इससे इनके दे। फल भी न्यूनाधिक प्रभाव डालते हैं।

नवमांश

चरण, जिसको नवमांश भी कहते हैं, १०८ हैं अर्थात् एक नक्षत्र के चार चरण होते हैं, चरण को पाद भी कहते हैं।

सब ग्रह—

बारह राशि, २७ नक्षत्र, १०८ चरण (नवमांश) में भुगतते हैं कहने का तात्पर्य यह है कि २। सवा दो नक्षत्र या ९ चरण १ राशि में रहते हैं।

जो ग्रह जिस राशि में तेजी मन्दी करते हैं वह ही अपने नवमांश (राशि) में भी तेजी मंदी करते हैं जैसे-गुरु ग्रह मिथुन राशि में रूई मंदी करता है तो यह भी स्मरण रखना चाहिए कि जब नवमांश में मिथुन राशि का आवेगा रूई मन्दी करेगा कभी-कभी ऐसा भी होता है कि राशि में ग्रह हो उसी राशि के नवमांश में भी वही ग्रह होता है। जैसे मकर राशि में ग्रह आता है तो पहिले मकर नवमांश में होता है। मिथुन राशि में ग्रह उतरता है तो अन्तिम नवमांश में मिथुन में होता है। अगर तेजी करता राशि में है और उसी नवमांश में हो तो जोरदार होगी। इसी प्रकार मन्दी समझना।

अभिजित नक्षत्र के बाबत जब तेजी मन्दी के लिए वेध देखना हो तो उत्तराषाढ़ा के २ चरण के बाद कुछ भाग और ३ चरण

(ग्रह तीसरे चरण से चौथे चरण पर आवे) बाद अभिजीत पर समझना चाहिए जैसे-उत्तराषाढ़ा के चौथे चरण पर ग्रह है तो संमुख वेध रोहिणी को, दाहिनी वेध पूर्वा फाल्गुनी को बायें वेध शतभिषा को समझना। इसी प्रकार जब श्रवण के प्रथम चरण पर व द्वितीय चरण पर ग्रह हो तो उसको अभिजीत पर समझ रोहिणी, पूर्वा फाल्गुनी, शतभिषा पर, इस प्रकार तीनों ओर वेध समझना। पंचांग में नवमांश इस प्रकार लिखे होंगे—

मेष राशि में	०।३।२० तक	मेष नवमांश में	
,,	०।६।४०	वृषभ	,,
,,	०।१०।०	मिथुन	,,
,,	०।१३।२०	कर्क	,,
,,	०।१६।४०	सिंह	,,
,,	०।२०।०	कन्या	,,
,,	०।२३।२०	तुला	,,
,,	०।२६।४०	वृश्चिक	,,
,,	०।३०।०	धन	,,

वृषभ राशि में आयगा जब १।३।२० ऐसा समझना। प्रथम राशि लिखी जाती है एक राशि में ३० अंश १ अंश की ६० कला-एक कला की ६० विकला होती हैं। यहां राशि अंश कला लिखी हैं। मीन राशि के प्रारम्भ में आवेगा जब ११।३।२० और मीन राशि का अन्तिम नवमांश मीन पर आवेगा जब ११।२६।४० और मीन राशि का व नवमांश में मीन उतरेगा जब १२ समझना।

एक ही राशि में सम्मिलित ग्रह जो फल (तेजी या मन्दी) करते हैं वो ही ग्रह एक ही नवमांश में सम्मिलित आने से वो ही फल (तेजी या मन्दी) करेंगे—जैसे शुक्र राहु एक साथ होने पर मन्दी करता है इसी प्रकार एक ही नवमांश में हो तो मन्दी करेगा।

नवमांश देखने की आवश्यकता क्यों हुई—

एक राशि पर शनि ३० मास, राहु १८ मास, गुरु १३ मास चलता है यदि एक ही राशि पर एक फल (तेजी) लिखा हो तो आप स्वयं बुद्धि से विचार करें कि कन्या राशि का शनि तेजी कर्ता ढाई वर्ष कैसे तेजी चल सकती है। बीच-बीच में मन्दी आई व आती है उसका यही कारण है कि इसी तरह एक लाइन एक योग मन्दी की जनरल चाल चल रही है परन्तु जब जब तेजी के योग आते रहेंगे तेजी आवेगी। इसके लिए प्रथम आप नवांश का विचार करें कि किस राशि में कौनसा नवांश किस राशि का होगा।

प्रत्येक राशि के नवमांश की जानकारी—

(१) प्रत्येक नवांश ३°२०′ का होता है। जब ग्रह मेष—राशि पर आता है तो-प्रथम मेष, द्वितीय वृषभ, तृतीय मिथुन, चतुर्थ कर्क, पंचम सिंह, षष्ठ कन्या, सप्तम तुला, अष्ठम वृश्चिक, नवम धन (राशि) नवमांशा में ग्रह समझना।

(२) इसी प्रकार जब ग्रह वृषभ—राशि में आवे तो प्रथम मकर कुंभ, मीन, मेष, वृषभ, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या—नवमांश में समझना।

(३) मिथुन—राशि में आवे तो–तुला वृश्चिक, धन, मकर, कुंभ, मीन, मेष, वृषभ, मिथुन–ऐसे नव, नवमांश राशि में समझना ।

(४) कर्क—राशि में ग्रह आवे तो प्रथम नवमांश कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुंभ, मीन, नवमांशा (राशि) में कर्क राशि समाप्त हुई समझना ।

(५) सिंह—राशि में ग्रह आवे तो मेष, वृषभ, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, नवमांशा के समाप्ती से सिंह राशि समाप्त हुई समझना ।

(६) कन्या—राशि में ग्रह आवे तो मकर, कुंभ, मीन, मेष, वृषभ मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, नवमांश में समझना ।

(७) तुला राशि में तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुंभ, मीन, मेष, वृषभ, मिथुन ।

(८) वृश्चिक में—कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुंभ, मीन, ।

(९) धन में—मेष, वृषभ, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन ।

(१०) मकर में—मकर, कुंभ, मीन, मेष, वृषभ, मिथुन, कर्क सिंह, कन्या ।

(११) कुंभ में—तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुंभ, मीन, मेष, वृषभ, मिथुन ।

(१२) मीन में—कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुंभ मीन—नवमांशा (राशि) और मीन राशि की समाप्त ऐसा

समझना। मेष राशि पर आते ही मेष नवमांश में और अंतिम (बारहवी) राशि से उतरते मीन नवांश समाप्त हुआ समझना। राशि मेष प्रथम और मीन अंतिम राशि है।

नक्षत्र—प्रथम अश्वनी और रेवती अंतिम नक्षत्र है।

चंद्र–नक्षत्र प्रति दिन पलटता है। कभी न्यून समय (घटी) या घन्टा मिनट), कभी पूरा समय २४ घंटा अर्थात् ६० घड़ी का होता है।

सूर्य–एक नक्षत्र पर १३॥ दिन रहता है यानि एक साल (३६५ दिन) में २७ नक्षत्र, बारह राशि पर भ्रमण (फिरता) करता है। हिंदी तिथि महीनों में तिथि की घट-बढ़ और तीसरे साल एक एक महीने की बढ़ोत्तरी से हर वर्ष एक निश्चित तिथि पर नहीं मिलेगा। अंग्रेजी (ईस्वी, सन् महीनों की) तारीखों पर हर साल (कुछ घन्टों के हेर फेर से) मिलेगा। जैसे पुष्य नक्षत्र पर सूर्य १९ जौलाई को आता है। यह १२ घन्टे आगे या पीछे १८ और २० जौलाई के बीच आयेगा।

जब ग्रह वक्री या उल्टा चलता (राहू केतु) हो तो राशि और राशि का नवमांश भी उल्टा चलेगा। जैसे कर्क राशि पर गुरु वक्री हुआ। अगर कर्क के प्रथम चरण से वक्री हुआ तो ऐसा समझो कि कर्क नवमांश से वक्री है कर्क राशि से उल्टा (वक्री) चला तो मिथुन राशि के अंतिम नवमांश (मिथुन) पर आया।

वस्तुओं के राशि विचार

किस राशि के अंतर्गत कौन सी वस्तु है—

प्राचीन मतानुसार

मेष—सोना, मसूर, कम्बल, गेहूँ, पीतल, तांबा, राल, जल और यव।

वृषभ—वस्त्र, पुष्प, सरस, गेहूँ, जौ, चावल, बैल और महिष।

मिथुन—बाजरा, रूई, कपास, कमल, कन्द, गुआर, ज्वार, और मक्का।

कर्क—कोदों, केला, दूर्वा, जायफल, तम्बाकू और दाल चीनी।

सिंह—शाली, षटरस, मृगछाला, गुड़, खांड।

कन्या—जवासा, कुलथी, मूंग, सफेदा गेहूँ, अलसी।

तुला—उर्द, लाल गेहूँ, मलिका, मटर, अंडी और सरसों।

वृश्चिक—गुड़, खांड, नागरपान, शक्कर, लोहा और मेढ़ा।

धनु—घोड़ा, हाथी, रस, लवण, चित्रण, आयुध, तेल, धानी और मूल।

मकर—कनेर, कूट, मजीठ, कुलथी, जमीकन्द।

कुम्भ—रस, पोस्ता, रत्न, अमोलिक, चित्र और विचित्र वस्तु

मीन—सीप, मोती, समुद्रसोख, हीरा और मत्स्य।

आधुनिक मतानुसार

मेष—लोहा, फौलाद, मशीनरी, गेहूँ, सोना, मसूर और तांबा आदि।

वृषभ—रूई, जूट, सर्व प्रकार श्वेत वस्त्र, धातु-पदार्थ, कम्पनी के शेअर्स, चावल, गेहूँ, शक्कर, चल सम्पत्ति आदि।

मिथुन—रूई, ज्वार, घी, बाजरा, रेलवे, प्रकाशन, कागज आदि।

कर्क—चांदी, चाय, जायदाद (अचल सम्पत्ति) घास, नारीयल आदि ।

सिंह—सोना, शासकीय मुद्रा, चावल, चना, गुड़, चमड़ा

कन्या—मटर, ग्वार,पीली राई, गेहूँ, मूंग, चावल, अनाज एवं फलों की साधारण वस्तुऐं, कत्थील, कत्था, गोंद कतीरा आदि ।

तुला—रूई, सिल्क, अरहर, गेहूँ, चावल, सर्व प्रकार के रंगीन वस्त्र आदि

वृश्चिक—केमीकल्स, गुड़, शकर, लोहा, चमड़ा, लाख, ऊन, अलसी मूंगफली, पीली सरसों, कांगनी आदि ।

धन—घोड़ा, हाथी व हाथी दांत का सामान, जानवर, नमक, शेअर्स, आलू, रबड़, हल्दी पीले वस्त्र, अस्त्र, समुद्री यातायात, विदेशी बाउण्ड, बीमा कम्पनी आदि ।

मकर—वृक्ष, सोना, तांबा, कोयला, मिलों के शेअर्स, लोहे के शेअर्स, शीशा, जस्ता, टीन, रांगा, गन्ना, तिली, काली सरसों, काली मिर्च आदि ।

कुम्भ—बिजली का सामान, चित्र, रंग, लकड़ी का सामान, उच्च किस्म की सिल्क, कोयला व कोयला के शेअर्स, तेल, अलसी, लोहा, लोहा का सामान, पुष्प, नीलम, आयरन शेअर्स, अरंडी तेल सरसों तिली अरंडी मूंगफली आदि ।

मीन—मछली, सीप, मोम, सुगन्धित पदार्थ, हीरा, मोती, औषधि आदि ।

निज मतानुसार

(यहां केवल उन्हीं वस्तुओं का उल्लेख किया गया है जो उपरोक्त राशियों के अन्तर्गत नहीं दी गई है)

मेष—लाल मिर्च, मूंगा, पेटरोल आदि ।

वृषभ—कपूर, इलायची, काजू, विनोला, मेनसल आदि ।

मिथुन—सोंफ, जीरा, जायफल, तूंतिया, अजवायन आदि ।

कर्क—सेंदा नमक, फिटकरी, अवरक भोडर, सज्जी आदि ।

सिंह—सोंठ, अदरक, केसर, आलू बुखारा आदि ।

कन्या—धनियां, पन्ना, मेंहदी के फूल, पिस्ता आदि ।

तुला—साबूदाना, खोपरा, पोस्त दाना आदि ।

वृश्चिक—कत्था, पारा, तेजाब, सुपारी आदि ।

धन—हींग, जावित्री, पीतल, गंधक बादाम, रवड़ आदि ।

मकर—दालचीनी, लोंग, पीपर, काला नमक, मुनक्का, किसमिश काडीशोल्ड आदि ।

कुम्भ—कस्तूरी, निगर शोल्ड, अमचूर, चिलगोजे आदि ।

मीन—गोटा या गोटे की बनी वस्तुयें ।

वस्तुओं का ग्रह विचार

सूर्य—शासकीय मुद्रा, जवाहरात, गिलट या गिलट की बनी वस्तुएँ, वाउन्ड, चावल, शहद, जड़ी-बूटियां आदि ।

चन्द्र—चांदी, दूध, पट्रोलियम के शेअर्स, होटल, जौ, साधारण आयल शेअर्स, द्रव्य, शराब, मछली, नेवीगेशन, कांच का सामान, घी आदि ।

मंगल—सोना, चावल, तिलहन, रेलवे शेअर्स, धातु पदार्थ उद्योग, मशीनरी, जायदाद, लोहा, ईंट, काफी चाय आदि ।

बुध—गेहूँ, अनाज खाद्य पदार्थ, सिल्क टेक्स टाइल, शक्कर, रूई तांबा, अर्थ सम्बन्धी सामान आदि ।

गुरु—टीन, रबड, चांदी, जस्ता, चना, जूट, तम्बाकू, शेअर्स बेंक, बैंकर्स और बीमा कम्पनी, क्लोथ मिल्स, विलासता का सामान आदि।

शुक्र—रूई, जूट का सामान, टेक्स टाइल, शकर, गेहूँ, चावल, चांदी, लेशियन सिल्क, शकर के शेअर्स, मिष्ठान्न, मोती कांच का उद्योग, पुष्प, तांबा, सुगन्धित पदार्थ एवं, नासपाती शराब आदि।

शनि—कोयला, सीमेंट, सीमेंट का सामान, तांबा, अलसी, तिलहन, काली मिर्च, मीठा तेल, मूंगफली, ऊन, लोहा, जूट, जौ, अचल सम्पत्ति, जूते रील, कृषि सम्बन्धी यन्त्र, संगमरमर, वनास्पति आदि।

राहु एवं केतु—बिजली का सामान, यंत्र आदि।

हर्शल—बिजली, वायुयान, मिट्टी की वस्तुएं, टेलीग्राम, वायरलेस, नेवीगेसन, कार, मोटर, रेल, ट्राम्बे, बस, गवर्न. पेपर, ज्वाइन्ट कम्पनी, फिल्म उद्योग, वाटर उद्योग एलमूनियम उद्योग आदि।

नेपच्यून—चाय, कपास, औषधि, मिष्ठान्न, तैल, मत्स्य उद्योग, तम्बाकू, सिंडी केट आदि।

प्लूटो—रबड़ का सामान, टीन, आर्डनरी शेअर्स, चमड़ा, घड़ियां, मशीनरी, तांबा, जस्ता आदि।

तेजी–मन्दी का विधान

(१) राशियों से–

मेष—यह राशि तेजी का द्योतक है यदि इस पर सूर्य, मंगल, शनि और राहू सहित हों तो अति तेजी और गुरु, शुक्र एवं बुध सहित हो तो मन्दी का संकेत करती है।

वृषभ—यह राशि विशेष तेजी का संकेत करती है। इस पर शुक्र वक्री मंगल, शनि, राहू और प्लूटो सहित हों तो अधिक तेजी और गुरु मार्गी, चन्द्र, नेपच्यून, केतु सहित हों तो अति मन्दी।

मियुन—यह राशि मन्दी की द्योतक है। यदि इस पर शनि वक्री, बुध वक्री, मंगल, राहू, सूर्य सहित हो तो अति तेजी और बुध गुरु, शुक्र, नेपच्यून सहित हो तो अति मन्दी।

कर्क—यह राशि मन्दी का द्योतक है। इस पर मंगल वक्री, शनि वक्री, बुध वक्री, राहू हर्शल से युक्ति हो तो तेजी, और गुरु शुक्र, बुध, नेपच्यून सहित हो तो विशेष मन्दी।

सिंह—यह राशि तेजी का द्योतक है। इस पर शुक्र वक्री, सूर्य शनि, हर्शल सहित हो तो अति तेजी और बुध मार्गी, गुरु चन्द्र, नेपच्यून सहित हो तो मन्दी।

कन्या—यह राशि मन्दी की द्योतक है। इस पर शनि, राहू, सूर्य, मंगल, हर्शल एक साथ हों तो अति तेजी और बुध मार्गी गुरु, शुक्र और केतु एक साथ हों तो अति मन्दी दिखाती है।

तुला—यह भी मन्दी की द्योतक है। इस पर शुक्र वक्री, शनि वक्री सूर्य, मंगल एक साथ हों तो अति तेजी और गुरु, बुध,पूर्ण चन्द्र युक्त हों तो अति मन्दी दिखाती है।

वृश्चिक—यह राशि तेजी का संकेत करती है। इस पर मंगल वक्री, शनि वक्री, सूर्य, राहू और सूर्य ग्रहण हो तो तहलका मचा देने वाली तेजी करती है और गुरु, बुध, चान्द्र, केतु सहित हो तो अति मन्दी लाती है।

धनु—यह राशि मन्दी की द्योतक है। इस पर गुरु वक्री, शुक्र वक्री, शनि वक्री, राहू, सूर्य के सहित हो तो अति तेजी और गुरु, शुक्र, बुध, चन्द्र सहित हो तो अति मन्दी।

मकर—यह एक तरफा तेजी की द्योतक है। यदि इस पर मंगल वक्री, शनि वक्री, सूर्य, राहू, हर्शल और प्लूटो सहित हो तो भारी तेजी और यदि केवल बुध, चन्द्र सहित हो तो मामूली मन्दी दिखाती है।

कुंभ—यह राशि मन्दी की द्योतक है। यदि इस पर मंगल वक्री शुक्र वक्री, राहू, सूर्य से युक्त हो तो तेजी और यदि शनि, गुरु, बुध एक साथ हों तो अति मन्दी।

मीन—यह भी राशि मन्दी का संकेत करती है। यदि इस पर गुरु वक्री, शनि वक्री मंगल, राहू से युक्त हो तो बाजारों में उथल पुथल करने वाली तेजी आती है और यदि बुध, चन्द्र, नेपच्यून, गुरु एक साथ हों तो अति मन्दी की सूचक है।

(२) ग्रहों से—

सूर्य—यह अति तेजी कारक ग्रह है। यदि यह मेष, वृषभ वृश्चिक और मकर राशि में भ्रमण करता हो तो विशेष तेजी लाता है और यदि मिथुन, कर्क, मीन राशि पर हो तो मन्दी करता है। यदि शनि, मंगल राहू के साथ तेजी कारक राशियों में हो तो एक तरफा लम्बी रुख की तेजी लाता है और यदि मन्दी कारक राशियों में गुरु, बुध और नेपच्यून के साथ हों तो अति मन्दी करता है।

चन्द्र—यह क्षणिक तेजी-मन्दी कारक ग्रह है। यह यदि मेष, वृषभ, सिंह, तुला, वृश्चिक, मकर, कुंभ राशियों में तेजी और यदि

मिथुन, कर्क, कन्या, धनु, मीन राशियों में हो तो मन्दी करता है। सूर्य मंगल, शुक्र, शनि, राहू, हर्शल, प्लूटो किसी के साथ हो तो तेजी और गुरु, नेपच्यून, बुध, और केतु में किसी एक के साथ हो तो मन्दी करता है।

मंगल—यह अति तेजी कारक ग्रह है। यदि यह मेष, वृषभ, वृश्चिक, मकर, कुंभ राशियों में हो तो अति तेजी और मिथुन, कन्या, तुला, मीन राशियों में मन्दी करता है। और यदि शनि राहू सूर्य के साथ तेजी कारक राशियों में हो तो एक तरफा लम्बी रुख की तेजी करता है और यदि गुरु, चन्द्र, नेपच्यून के साथ मंदी कारक राशियों में हो तो मंदी करता है।

बुध—यह भी चन्द्र के समान क्षणिक तेजी-मंदी कारक ग्रह है यह मेष, वृषभ, सिंह, तुला, वृश्चिक, मकर और कुंभ राशियों में मंदी बताता है। सूर्य, मंगल, शुक्र, शनि, राहु, हर्शल और प्लूटो किसी एक के साथ युक्त हो तो तेजी और गुरु, नेपच्यून, चन्द्र एवं केतु में किसी एक के साथ युक्त हो तो मंदी करता है।

गुरु—यह मंदी कारक ग्रह है। यदि यह मेष, सिंह, तुला, वृश्चिक, मकर, कुंभ राशि में हो तो तेजी करता है और यदि मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, धनु और मीन राशियों में हो तो अधिक मंदी करता है। यदि सूर्य, मंगल, शुक्र, शनि, राहु किसी एक साथ में हो तो तेजी और बुध, नेपच्यून, केतु चंद्र किसी के साथ हो तो अति मंदी करता है। विशेषः—वक्री हो तो विशेष तेजी, मार्गी हो तो विशेष मंदी करता है।

शुक्र—यह अति तेजी कारक ग्रह है। यदि मेष, वृषभ, सिंह, तुला, वृश्चिक, मकर, कुंभ राशियों में हो तो विशेष तेजी करता है

और यदि मिथुन, कर्क, कन्या धनु मीन राशियों में हो तो मंदी करता है। यदि सूर्य, वक्री मंगल, वक्री शनि, राहु हर्शल, के साथ तेजी कारक राशियों में हो तो एक तरफा लम्बी रुख की भारी तेजी करता है। यदि बुध, गुरु, चंद्र, नेपच्यून के साथ में मंदी कारक राशियों में हो तो मंदी करता है।

शनि--यह अस्थिर तेजी-मंदी कारक ग्रह है। यदि मेष, सिंह तुला, वृश्चिक, मकर, कुंभ राशियों में हो तो अति तेजी और मिथुन कर्क, धनु, मीन राशियों में मंदी करता है यदि वक्री मंगल सूर्य राहु शुक्र हर्शल के साथ में अति तेजी और बुध, गुरु, चंद्र, नेपच्यून के साथ अति मंदी करता है विशेष वक्री मार्गी होने के समय अधिक तेजी मंदी करता है।

राहु व केतु—यह ग्रह एक तरफा तेजी का द्योतक है। यदि सूर्य, क्षीणचन्द्र, वक्री मंगल, वक्री शनि, वक्री शुक्र, हर्शल, प्लूटो के साथ अति एक तरफा तेजी और बुध, शुक्र, नेपच्यून के साथ मंदी करता है। यदि मिथुन, सिंह, तुला, वृश्चिक, मकर राशियों में वक्री तेजी कारक ग्रहों के साथ हो तो तूफानी तेजी और यदि कर्क, कन्या, धनु, मीन राशियों में मंदी कारक ग्रहों के साथ हो तो मंदी करता है।

हर्शल—यह ग्रह अति तेजी कारक है। यदि यह मेष, वृषभ, वृश्चिक, मकर, कुंभ राशियों में हो तो अति तेजी और मिथुन, कन्या, तुला और मीन राशियों में हो तो मंदी करता है। यदि शनि, राहु, सूर्य के साथ तेजी कारक राशियों में हो तो एक तरफा

लम्बी एख की तेजी करता है। और यदि गुरु, चन्द्र, नेपच्यून के साथ मंदी कारक राशियों में हो तो मंदी करता है।

नेपच्यून—यह मंदी कारक ग्रह है। यदि यह मेष, सिंह, तुला, वृश्चिक, मकर, कुम्भ राशियों में हो तो तेजी करता है और मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, धनु, एवं मीन राशियों में हो तो अधिक मंदी करता है। यदि सूर्य, मंगल, शुक्र, शनि और राहु किसी एक साथ युक्त हो तो तेजी और बुध, गुरु, केतु, चन्द्र में से किसी एक साथ युक्त हो तो अति मंदी करता है विशेष—वक्री हो तो अति तेजी और मार्गी हो तो अति मंदी करता है।

प्लूटो—यह ग्रह तेजी कारक है। यदि मेष, सिंह, तुला, वृश्चिक, मकर, कुंभ, राशियों में हो तो अति तेजी करता है और मिथुन, कर्क, धन, मीन राशियों में हो तो मंदी करता है। यदि वक्री मंगल. सूर्य, राहु, शुक्र, हर्शल, के साथ में हो तो अति तेजी करता है और यदि बुध, गुरु, चन्द्र, नेपच्यून के साथ हों तो मंदी करता है। विशेष—वक्री, मार्गी होने के समय अति तेजी–मंदी करता है।

सूचना—जब ग्रह वक्री तथा अस्त हो तो तेजी करेगा और मार्गी एवं उदय हो तो मन्दी करेगा। उपरोक्त राशि एवं ग्रहों में जो तेजी-मन्दी का विवरण है उससे उस राशि एवं ग्रह के अन्तर्गत वस्तुओं की तेजी-मन्दी जाने नकी सम्पूर्ण बाजार की। यह भी स्मरण रक्खो किसी भी राशि में कोई ग्रह तेजी करने वाला हो और उसी समय यदि कोई शुभ ग्रह बलवान् (उच्च स्व-राशि, राशि, मूल त्रिकोण, स्वनवांश में) होकर उस राशि पर दृष्टि रखता हो तो तेजी न होगी। यदि कोई अशुभ ग्रह बलवान होकर उस पर दृष्टि रखता हो तो उस वस्तु की अवश्य तेजी होती है।

चन्द्र या सूर्य जिस राशि में जावे उसी काल में देखो कि उसी राशि में कोई मित्र ग्रह बैठा है कि नहीं, अथवा मित्र ग्रह की सूर्य या चन्द्र पर पूर्ण दृष्टि पड़ती है कि नहीं ? यदि वहां मित्र ग्रह बैठा होगा तो तेजी की बजाय उस वस्तु को मंदी करेगा, मित्र की दृष्टि भी पूर्ण हो तो तेजी स्थान में मन्दी पूर्ण करेगा। ऐसे ही सूर्य-चन्द्र जिस-जिस राशि में जावे उस-उस राशि में यदि उस समय शनि-राहु-केतु बैठे हो या इनकी पूर्ण दृष्टि पड़ती हो तो मन्दी की जगह तेजी के सूचक हो जाते हैं।

(३) तिथियों से—

प्रतिपदा—तेजी सूचक तिथि है। यदि प्रतिपदा क्षय हो तो अति तेजी, वृद्धि हो तो मंदी।

द्वितीय—मंदी सूचक है, यदि शनि, मंगलवार युक्त हो तो अति तेजा, वृद्धि हो तो मंदी।

तृतीया—मंदी सूचक है। मंगलवार, चतुर्थी युक्त हो तो अति तेजी, वृद्धि हो तो अति मंदी।

चतुर्थी—तेजी सूचक है। शनि, मंगलवार युक्त हो तो अति तेजी, क्षय एवं वृदि हो तो अति तेजी।

पंचमी—मंदी सूचक है। मंगल, शुक्रवार युक्त हो तो तेजी, वृद्धि एवं गुरुवार युक्त हो तो अति मंदी।

षष्ठी—तेजी सूचक है। शनि, मंगलवार, युक्त तथा क्षय हो तो तूफानी तेजी. सोम गुरु युक्त हो तो मंदी।

सप्तमी—मंदी सूचक है। मंगलवार युक्त एवं क्षय हो तो अति तेजी. गुरुवार युक्त एवं वृद्धि हो तो मंदी।

अष्टमी—तेजी सूचक है। क्षय हो तो अति तेजी, वृद्धि हो तो मंदी।

नवमी—मंदी सूचक है, यदि शनि मंगलवार युक्त हो तो अति तेजी वृद्धि हो तो मंदी।

दशमी—मंदी सूचक है। मंगलवार चतुर्थी युक्त हो तो अति मंदी।

एकादशी—तेजी सूचक है। शनि, मंगलवार युक्त हो तो अति तेजी, क्षय एवं वृद्धि हो तो तूफानी तेजी।

द्वादशी—मंदी सूचक है मंगल शुक्रवार युक्त हो तो तेजी, वृद्धि एवं गुरुवार युक्त हो तो अति मंदी।

त्रयोदशी—तेजी सूचक है। शनि, मंगलवार युक्त तथा क्षय हो तो तूफानी तेजी, सोम गुरुवार युक्त हो तो मंदी।

चतुर्दशी—मंदी सूचक है। मंगलवार युक्त एवं क्षय हो तो अति तेजी, गुरुवार युक्त एवं वृद्धि हो तो अति मंदी।

पूर्णिमा—मंदी सूचक है। शनि, मंगलवार युक्त हो तो तेजी सोम व गुरुवार युक्त हो तो अति मंदी।

अमावस्या—तेजी सूचक है। शनि, मंगलवार युक्त हो तो तेजी सोम व गुरुवार युक्त हो तो अति मंदी।

(४) वारों से—

रविवार—भारतीय शासन विधान से प्राय: छुट्टी रहती है।

सोमवार—तेजी सूचक है। इस दिन मंदी के रियक्शनों में खरीदना अच्छा होता है।

मंगलवार—तेजी सूचक है। यदि सोमवार को मंदी हो तो मंगलवार को निश्चित तेजी होती है।

बुधवार—तेजी मन्दी सूचक है। यदि मंगल को तेजी आवे तो इस दिन दो बजे तक तेजी रहती है।

गुरुवार—मन्दी सूचक है। बुधवार को तेजी रहे तो इस दिन भी तेजी रहती है।

शुक्रवार—तेजी सूचक है इस दिन एक तरफा तेजी आती है।

शनिवार—तेजी-मन्दी दोनों का सूचक है। शुक्रवार को तेजी आवे तो इस दिन २॥ बजे तक तेजी रहेगी।

(५) नक्षत्रों से—

अश्विनी—तेजी सूचक है। शनि व मंगलवार युक्त हो तो अति तेजी, चन्द्र व गुरुवार युक्त हो तो मन्दी।

भरणी—तेजी सूचक है। मंगल व शनिवार युक्त हो तो अति तेजी, चंद्र व गुरुवार युक्त ो तो मन्दी।

कृत्तिका—तेजी सूचक है। रवि व शनिवार युक्त हो तो अति तेजी, चन्द्र व बुधवार युक्त हो तो मन्दी।

रोहिणी—मन्दी सूचक है। चन्द्र, गुरुवार युक्त हो तो अति मन्दी, शनि मंगलवार युक्त हो तो तेजी।

मृगशिरा—तेजी सूचक है। शुक्र, शनिवार युक्त हो तो अति तेजी, चंद्र गुरुवार युक्त हो तो मन्दी।

आर्द्रा—तेजी सूचक है। शुक्र, शनिवार युक्त हो तो अति तेजी, चन्द्र, गुरुवार युक्त हो तो मन्दी।

पुनर्वसु—मन्दी सूचक है। चन्द्र, गुरुवार युक्त हो तो अति मंदी मंगल शुक्रवार युक्त हो तो तेजी।

पुष्य—मन्दी सूचक है। चंद्र, गुरुवार युक्त हो तो अति मंदी, मंगल, शुक्रवार युक्त हो तो तेजी।

आश्लेषा–तेजी सूचक है। मंगल, शुक्रवार युक्त हो तो अति तेजी, चन्द्र, गुरुवार युक्त हो तो मंदी।

मघा–तेजी सूचक है। मंगल, शुक्रवार युक्त हो अति तेजी, चन्द्र, गुरुवार युक्त हो तो मंदी।

पूर्वा फाल्गुनी–मन्दी सूचक है। चन्द्र, गुरुवार युक्त हो तो अति मन्दी, मंगल शुक्रवार युक्त हो तो तेजी।

उत्तरा फाल्गुनी–तेजी सूचक है। मंगल, शनिवार युक्त हो तो अति तेजी, चन्द्र, गुरुवार युक्त हो तो मन्दी।

हस्त–मन्दी सूचक है। चन्द्र गुरुवार युक्त हो तो अति मंदी मंगल, शनिवार युक्त हो तो तेजी।

चित्रा–तेजी सूचक है। मंगल, शुक्रवार युक्त हो तो अति तेजी चन्द्र बुधवार युक्त हो तो मंदी।

स्वाती–तेजी सूचक है। मंगल, शनिवार युक्त हो तो अति तेजी, चंद्र, गुरुवार युक्त हो तो मंदी।

विशाखा–मंदी सूचक है। चंद्र, गुरुवार युक्त हो तो अति मंदी, मंगल शनिवार युक्त हो तो तेजी।

अनुराधा—तेजी सूचक है। मंगल, शनिवार युक्त हो तो अति तेजी, चन्द्र, बुधवार युक्त हो तो मंदी।

ज्येष्ठा–तेजी सूचक है। मंगल, शुक्रवार युक्त हो तो अति तेजी चन्द्र, गुरुवार युक्त हो तो मंदी।

मूल—मंदी सूचक है। चन्द्र, बुधवार युक्त हो तो अति मंदी, मंगल शनिवार युक्त हो तो तेजी।

पूर्वाषाढ़ा—मंदी सूचक है। चन्द्र, गुरुवार युक्त हो तो अति मंदी, मंगल शुक्रवार युक्त हो तो तेजी।

उत्तराषाढ़ा—तेजी सूचक है। मंगल शनिवार युक्त हो तो अति तेजी, चन्द्र गुरुवार युक्त हो तो मंदी।

अभिजित—मंदी सूचक है। चन्द्र गुरुवार युक्त हो तो अति मंदी मंगल, शुक्रवार युक्त हो तो तेजी।

श्रवण—तेजी सूचक है। मंगल, शनिवार युक्त हो तो अति तेजी, चन्द्र, बुधवार युक्त हो तो मंदी।

धनिष्ठा—मंदी सूचक है। चन्द्र, गुरुवार युक्त हो तो अति मंदी मंगल शुक्रवार युक्त हों तो तेजी।

शतभिषा—तेजी सूचक है। मंगल, शनिवार युक्त हों तो अति तेजी, चन्द्र, गुरुवार युक्त हों तो मंदी।

पूर्वाभाद्रपदा—मंदी सूचक है। चन्द्र, बुधवार युक्त हो तो अति मंदी, मंगल, शनिवार युक्त हो तो तेजी।

उत्तरा भाद्रपदा—तेजी सूचक है। मंगल, शुक्रवार युक्त हो तो अति तेजी, चन्द्र गुरुवार युक्त हो तो मंदी।

रेवती—मंदी सूचक है। चन्द्र, गुरुवार युक्त हो तो अति मंदी मंगल शुक्रवार युक्त हो तो तेजी।

(६) योगों से—

विष्कुंभ—तेजी सूचक है। मंगल, शनिवार युक्त हो तो अति तेजी, चन्द्र, गुरुवार युक्त हो तो मंदी।

प्रीति—मंदी सूचक है। चन्द्र, गुरुवार सहित हो तो अति मंदी, मंगल शनिवार सहित हो तो तेजी।

आयुष्मान–तेजी सूचक है। मंगल, शनिवार सहित हो तो अति तेजी, चन्द्र, गुरुवार सहित हो तो मन्दी।

सौभाग्य–मन्दी सूचक है। चन्द्र, गुरुवार सहित हो तो अति मन्दी, मंगल शनिवार सहित हो तो तेजी।

शोभन–मन्दी सूचक है। चन्द्र, गुरुवार सहित हो तो अति मंदी, मंगल शुक्रवार सहित हो तो तेजी।

अतिगण्ड–तेजी सूचक है। मंगल, शनिवार सहित हो तो अति तेजी, चन्द्र, गुरुवार युक्त हो तो मंदी।

सुकर्मा–मंदी सूचक है। चन्द्र गुरुवार सहित हों तो अति मंदी, मंगल, शनिवार सहित हो तो तेजी।

धृति—मंदी सूचक है। चन्द्र, गुरुवार सहित हो तो अति मंदी मंगल, शनिवार सहित हो तो तेजी।

शूल–तेजी सूचक है। मंगल, शनिवार सहित हो तो अति तेजी गुरु, चन्द्र वार सहित हों तो मंदी।

गण्ड—तेजी सूचक है। मंगल, शुक्रवार सहित हो तो अति तेजी, चन्द्र, गुरुवार सहित हो तो मन्दी।

वृद्धि–मन्दी सूचक है। चन्द्र गुरुवार सहित हो तो अति मन्दी, मंगल, शनिवार सहित हो तो तेजी।

ध्रुव–तेजी सूचक है। मंगल शनिवार सहित हो तो अति तेजी चन्द्र गुरुवार सहित हो तो मन्दी।

व्याघात—तेजी सूचक है। मंगल शनिवार सहित हो तो अति तेजी, चन्द्र गुरुवार सहित हो तो मन्दी।

हर्षण–मन्दी सूचक है। चन्द्र गुरुवार सहित हो तो अति मन्दी, मंगल शनिवार सहित हो तो तेजी।

वज्र—अति तेजी सूचक है। मंगल शनिवार सहित हो तो तूफानी तेजी, चन्द्र गुरुवार सहित हो तो मन्दी।

सिद्ध—मंदी सूचक है। चन्द्र गुरुवार युक्त हो तो अति मंदी मंगल, शनिवार युक्त हो तो तेजी।

व्यतीपात—तेजी सूचक है। मंगल शनिवार युक्त हो तो अति तेजी, चन्द्र गुरुवार युक्त हो तो मंदी।

वरीयान—तेजी सूचक है। मंगल शनिवार सहित हो तो अति तेजी, चद्र गुरुवार सहित हो तो मन्दी।

परिघ—तेजी सूचक है। मंगल शनिवार सहित हो तो अति तेजी, चन्द्र गुरुवार सहित हो तो मन्दी।

शिव—मन्दी सूचक है। चन्द्र गुरुवार सहित हो तो अति मन्दी मंगल शनिवार सहित हो तो तेजी।

सिद्ध—तेजी सूचक है। मंगल शनि सहित हो तो अति तेजी, चन्द्र, गुरुवार सहित हो तो मन्दी।

साध्य—मन्दी सूचक है। चन्द्र गुरुवार सहित हो तो अति मन्द मंगल शनिवार सहित हो तो तेजी।

शुभ—तेजी सूचक है। मंगल शनिवार सहित हो तो अति तेजी चन्द्र गुरुवार सहित हो तो मन्दी।

शुक्ल—मन्दी सूचक है। चन्द्र गुरुवार सहित हो तो अति मंदी मंगल, शनिवार सहित हो तो तेजी।

ब्रह्मा—मन्दी सूचक है। चंद्र गुरुवार सहित हो तो अति मन्दी, मंगल, शनिवार सहित हो अति तेजी।

ऐन्द्र—तेजी सूचक है। मंगल, शनिवार सहित हो तो अति तेजी चन्द्र, गुरुवार सहित हो तो मन्दी।

वैधृति–तेजी सूचक है। मंगल, शनिवार सहित हो तो अति तेजी, चन्द्र गुरुवार सहित हो तो मन्दी।

(७) महीनों से–

चैत्र–तेजी कारक है। यदि पांच रवि, मंगल, शुक्र या शनिवार हो तो अति तेजी हो और यदि पांच, चंद्र, बुध या गुरुवार हो तो मन्दी।

बैशाख–तेजी कारक है। यदि पांच रवि, मंगल, शुक्र या शनि-वार हों तो अति तेजी और यदि पांच चंद्र, बुध या गुरुवार हों तो मन्दी हो।

ज्येष्ठ–तेजी मन्दी कारक है-यदि पांच रवि, मंगल, शुक्र या शनिवार हों तो तेजी और यदि पांच, चंद्र, बुध या गुरुवार हो तो मन्दी।

आषाढ़—मन्दी कारक है। यदि पांच चंद्र, बुध या गुरुवार हो तो अति मन्दी और यदि पांच रवि, मंगल, शुक्र या शनिवार हों तो तेजी।

श्रावण–तेजी कारक है। यदि पांच रवि, मंगल, शुक्र या शनि-वार हों तो अति तेजी और यदि पांच चंद्र, बुध, या गुरुवार हों तो मन्दी।

भाद्रपद—मन्दी कारक है यदि पांच चंद्र, बुध या गुरुवार हों तो अति मन्दी और यदि मंगल, रवि, शुक्र या शनिवार हों तो तेजी।

आश्विन–तेजी-मन्दी कारक है। यदि पांच, रवि मंगल, शुक्र या शनिवार हों तो तेजी और यदि पांच चन्द्र, बुध, गुरुवार हों तो मन्दी।

कार्तिक–तेजी कारक है यदि पांच रवि, मंगल, शुक्र या शनिवार हो तो अति तेजी और यदि पांच चन्द्र, बुध या गुरुवार हों तो मन्दी।

मार्गशीर्ष–तेजी-मन्दी कारक है यदि पांच रवि, मंगल, शुक्र या शनिवार हो तो तेजी और पांच चन्द्र बुध या गुरु हो तो मंदी।

पौष—तेजी कारक है यदि पांच रवि मंगल, शुक्र या शनिवार हो तो अति तेजी और पांच चंद्र, बुध या गुरुवार हो तो मंदी।

माघ–तेजी-मन्दी कारक है यदि पांच रवि, मंगल, शुक्र या शनिवार हो तो तेजी, और यदि पांच चन्द्र, बुध या गुरुवार हो तो मन्दी।

फाल्गुन—मन्दी कारक है यदि पांच चन्द्र, बुध या गुरुवार हो तो अति मन्दी और यदि पांच रवि, मंगल, शुक्र या शनिवार हो तो तेजी।

(८) चन्द्रदर्शन से–

प्रत्येक मास की शुक्ल पक्ष को चन्द्र दर्शन प्रतिपदा, द्वितीया या तृतीया को होता है।

प्रतिपदा को यदि चन्द्र दर्शन हो और रवि, मंगल, शुक्र या शनिवार हो तो १५ दिन तक एक तरफा तेजी आती है और यदि सोम, बुध या गुरुवार हो तो साधारण तेजी या साधारण मन्दी आती है।

द्वितीया को यदि चन्द्र दर्शन हो और रवि, मंगल, शुक्र या शनिवार हो तो साधारण तेजी और यदि चन्द्र, बुध या गुरुवार हो तो साधारण मन्दी आती है,

तृतीया को यदि चन्द्र दर्शन हो और रवि, मंगल, शुक्र या शनिवार हो तो बाजार स्थिर रह कर साधारण तेजी मंदी होती है और यदि चंद्र, बुध या गुरुवार हो तो एक तरफा मंदी आवेगी

(६) सर्वतो भद्रचक्र से–

४ अश्विननी के चरण, ४ भरणी के और १ कृतिका का चरणे को यदि क्रूर और पाप ग्रह वेध करते हों तो मेष राशि के अन्तर्गत एवं मंगल ग्रह के अन्तर्गत जो वस्तुएं हैं वे तेज होंगी और यदि शुभ ग्रह वेध करते हो तो वही वस्तुएं मंदी होंगी (क्रूर व पाप ग्रह-रवि व मंगल, शनि, राहु, केतू, हर्शल और प्लूटों, सौम्य या शुभ ग्रह-बुध, गुरु, शुक्र और नेपच्यून तथा चन्द्र)

३ कृतिका के, ४ रोहणी के और २ मृगशिर के चरण को यदि क्रूर पाप ग्रह वेध करते हों तो बृषभ राशि एवं शुक्र ग्रह के अन्तर्गत की वस्तुएं तेज होंगी और शुभ ग्रह वेध करें तो वही वस्तुएं मंदी होंगी।

२ मृगशिर के, ४ आर्द्रा के, ३ पुनर्वसु के चरण को यदि क्रूर पाप ग्रह वेध करते हों तो मिथुन राशि ऐवं बुध ग्रह के अन्तर्गत की वस्तुएँ तेज होंगी और यदि शुभ ग्रह वेध करते हों तो वे ही वस्तुएं मंदी होंगी।

१ पुनूर्वसु का, ४ पुष्य के, ४ आश्लेषा के चरण को यदि क्रूर पाप ग्रह वेध करें तो कर्क राशि एवं चन्द्र ग्रह के अन्तर्गत की वस्तुएं तेज होंगी और यदि शुभ ग्रह वेध करते हों तो वे ही वस्तुएं मंदी होंगी।

४ मघा के, ४ पूर्वा फाल्गुनी के, १ उत्तरा फाल्गुनी का चरण को यदि क्रूर ग्रह वेध करते हों तो सिंह राशि एवं सूर्य ग्रह के अन्तर्गत की वस्तुएं तेज होंगी और शुभ ग्रह वेध करते हों तो वे ही वस्तुएं मंदी होंगी।

३उत्तरा के, ४ हस्त के, २ चित्रा के चरण को यदि क्रूर पाप ग्रेह वेध करते हों तो कन्या राशि एवं बुध व राहु ग्रह के अन्तर्गत की सभी वस्तुएं तेज होंगी और यदि शुभ ग्रह वेध करते हों तो वही वस्तुएं मंदी होंगी।

२ चित्रा के, ४ स्वाती के, ३ विशाखा के चरण को यदि क्रूर पाप ग्रह वेध करते हों तो तुला राशि एवं शुक्र ग्रह के अन्तर्गत की सभी वस्तुएं तेज होगी और यदि शुभ ग्रह वेध करते हों तो मंदी होगी।

१ विशाखा का, ४ अनुराधा के, ४ ज्येष्ठा के चरण को यदि क्रूर ग्रह वेध करते हों तो वृश्चिक राशि एवं मंगल व प्लूटो ग्रह के अन्तर्गत की वस्तुएं तेज होती हैं और यदि शुभ ग्रह वेध करते हों तो वही वस्तुएं मंदी होंगी।

४ मूल के, ४ पूर्वाषाढ़ा के, १ उत्तरा षाढ़ा का चरण को यदि क्रूर पाप ग्रह वेध करते हों तो धनु राशि एवं गुरु व केतु राशि के अन्तर्गत की वस्तुएं तेज होगीं एवं यदि शुभ ग्रह वेध करते हों तो वे ही वस्तुएं मंदी होंगी।

३ उत्तराषाढ़ा के, ४ श्रवण के, २ धनिष्ठा के चरण को यदि क्रूर पाप ग्रह वेध करते हो तो मकर राशि एवं शनि ग्रह के अन्त-

र्गत की सभी वस्तुएं तेज होंगी और यदि शुभ ग्रह वेध करते हों तो वे ही वस्तुएं मंदी होंगी ।

२ धनिष्ठा के, ४ शतभिषा के, ३ पूर्वा भाद्र पदा के चरण को यदि क्रूर पाप ग्रह वेध करते हों तो कुम्भ राशि एवं शनि व हर्शलग्रह के अन्तर्गत की सब वस्तुएं तेज होगी और यदि शुभ ग्रह वेध करते हों तो वे ही वस्तुएं मंदी होंगी।

१ पूर्वा भाद्रपदा का, ४ उत्तरा भाद्र पदा के, ४ रेवती के चरण को यदि क्रूर पाप ग्रह वेध करते हों तो मीन राशि एवं गुरु व नेपच्यून ग्रह के अन्तर्गत की सभी वस्तुएं तेज होंगी और यदि शुभ ग्रह वेध करते हों तो वही वस्तुएं मंदी होंगी।

प्रत्येक ग्रह जब किसी राशि पर भ्रमण करता है तो उस ग्रह की नौ स्थितियां होती हैं जिसे कि हम नवमांश कहते हैं प्रत्येक नवमांश ३° २०′ का होता है इस प्रकार यह एक राशि के ३०° मानते हैं जिसकी स्थितियां हम पूर्व में ही दे चुके हैं।

मेष—जब ग्रह मेष राशि में आता है तो प्रथम मेष नवमांश में रहता है अतः वह तेजी कारक पूर्ण योग बनाता है। द्वितीय वृषभ का है वह भी तेजी का द्योतक है अतः यह भी तेजी का संकेत करता है। मिथुन मन्दी कारक, कर्क तेजी कारक, सिंह तेजी कारक, है, कन्या मन्दी कारक, तुला तेजी कारक, वृश्चिक तेजी कारक धनु मंदी कारक होता है।

वृषभ—प्रथम मकर तेजी कारक कुंभ तेजी कारक मीन मन्दी कारक मेष तेजी कारक वृषभ तेजी कारक मिथुन मंदी कारक कर्क तेजी कारक सिंह तेजी कारक कन्या मंदी कारक होता है।

मिथुन–प्रथम तुला तेजी कारक वृश्चिक तेजी कारक धनु मंदी कारक मकर तेजी कारक कुंभ तेजी कारक मीन मंदी कारक मेष तेजी कारक वृषभ तेजी कारक मिथुन मंदी कारक होता है।

कर्क–कर्क तेजी कारक सिंह तेजी कारक कन्या मंदी कारक तुला तेजी कारक वृश्चिक तेजी कारक धनु मंदी कारक मकर तेजी कारक कुंभ तेजी कारक मीन मंदी कारक होता है।

सिंह–मेष तेजी कारक वृषभ तेजी कारक मिथुन मंदी कारक कर्क तेजी कारक सिंह तेजी कारक कन्या मंदी कारक तुला तेजी कारक वृश्चिक तेजी कारक धनु मंदी कारक होता है।

कन्या–मकर तेजी कारक कुंभ तेजी कारक मीन मंदी कारक मेष तेजी कारक वृषभ तेजी कारक मिथुन मंदी कारक कर्क तेजी कारक सिंह तेजी कारक कन्या मंदी कारक होता है।

तुला–तुला तेजी कारक वृश्चिक तेजी कारक धनु मंदी कारक मकर तेजी कारक कुंभ तेजी कारक मीन मंदी कारक मेष तेजी वृषभ तेंजी कारक मिथुन मंदी कारक होता है।

वृश्चिक–कर्क तेजी कारक सिंह तेजी कारक कन्या मंदी कारक तुला तेजी कारक वृश्चिक तेजी कारक धनु मंदी कारक मकर तेजी कारक कुंभ तेजी कारक मीन मंदी कारक होता है।

धनु–मेष तेजी कारक वृषभ तेजी कारक मिथुन मंदी कारक तुला तेजी कारक वृश्चिक तेजी कारक धनु मंदी कारक होता है।

मकर—मकर तेजी कारक कुंभ तेजी कारक मीन मंदी कारक मेष तेजी कारक वृषभ तेजी कारक मिथुन मंदी कारक कर्क तेजी कारक सिंह तेजी कारक कन्या मंदी कारक होता है।

कुम्भ—तुला तेजी कारक वृश्चिक तेजी कारक धनु मंदी कारक मकर तेजी कारक कुंभ तेजी कारक मीन मंदी कारक मेष तेजी कारक वृषभ तेजी कारक मिथुन मंदी कारक होता है।

मीन–कर्क तेजी कारक सिंह तेजी कारक कन्या मंदी कारक तुला तेजी कारक वृश्चिक तेजी कारक धनु मंदी कारक मकर तेजी कारक कुंभ तेजी कारक मीन मंदी कारक होता है।

मंगल–इसका पूर्व दिशा में उदय होना मंदी का द्योतक है परन्तु यदि सिंह, वृश्चिक राशि में उदय हो तो क्षणिक तेजी, कन्या और मीन राशि में उदय हो तो अति मंदी कारक और शेष राशियों में उदय हो तो सामान्य मंदी कारक होता है।

पश्चिम दिशा में अस्त हो तो तेजी कारक है यदि मेष, वृश्चिक मकर, कुंभ राशि में अस्त हो तो विशेष तेजी करता है मिथुन, कन्या, तुला और मीन राशियों में अस्त हो तो घट-बढ़ करके मन्दी करता है।

बुध—पूर्व दिशा में उदय हो तो तेजी कारक होता है यदि तुला, वृश्चिक, मकर, कुंभ राशियों में उदय हो तो विशेष तेजी करता है और यदि मिथुन, कन्या, धन, मीन राशियों में उदय हो तो क्षणिक तेजी करके बाद मन्दी करता है। शेष राशियों में मन्दी करता है।

पूर्व में अस्त हो तो तेजी करता है। मेष, सिंह, तुला, वृश्चिक और मकर राशियों में अस्त हो तो अति तेजी करता है और शेष राशियों में अस्त हो तो मंदी करता है।

पश्चिम दिशा में अस्त हो तो मंदी कारक माना गया है यदि मेष, वृषभ, मकर, कुंभ राशियों में तथा पाप ग्रहों से सहित हों तो तेजी करता है शेष राशियों में मंदी करता है।

गुरु–पूर्व में उदय हो तो तेजी कारक होता है। यदि मेष, वृषभ, तुला, मकर, कुंभ राशि में उदय हो तो अति तेजी और शेष राशियों में मंदी करता है। यदि पश्चिम में उदय हो तो मंदी का संकेत करता है यदि मिथुन, कर्क, कन्या, मीन राशियों में हो तो अति मंदी और शेष राशियों में क्षणिक मंदी करके तेजी करता है।

पश्चिम में अस्त हो तो तेजी कारक माना गया है यदि शेष, सिंह, तुला, वृश्चिक, मकर, कुंभ राशियों में अति तेजी और शेष राशियों क्षणिक तेजी करके मंदी करता है। पूर्व में अस्त हो तो मंदी कारक होता है। यदि मिथुन, सिंह, तुला मीन राशियों में अस्त हो तो अति मंदी और शेष राशियों में क्षणिक मंदी करके तेजी करता है।

शुक्र–पूर्व में उदय हो तो तेजी कारक है। यदि मेष, वृषभ, कर्क, तुला, वृश्चिक, मकर, कुंभ राशियों में सूर्य, मंगल, शनि राहु ग्रह के साथ उदय हो तो तूफानी तेजी करता है और शेष राशि में शेष ग्रह के साथ क्षणिक तेजी करके मंदी करता है। पश्चिम में उदय हो तो मंदी कारक है यदि मेष, सिंह, तुला, मकर कुंभ राशियों में हो और शनि, मंगल, सूर्य, राहु ग्रहों से युक्त हो तो क्षणिक मंदी करके तेजी करता है और शेष राशियों में घट बढ़ करता है। यदि देव गण के नक्षत्र (अश्विनी, मृगशीर्ष, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, स्वाती, अनुराधा, श्रवण और रेवती) में उदय हो तो

देश विप्लाव एवं अति तेजी करता है। यदि मनुष्य गण के नक्षत्रों (भरणी, रोहिणी, आर्द्रा, उत्तारा फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा पूर्वा भाद्रपद, उत्तरा भाद्रपद) में उदय हो तो देश विग्रह एवं तेजी कारक है। यदि राक्षस गण के नक्षत्रों (कृतिका, अश्लेषा, मघा, चित्रा, विशाखा, ज्येष्ठा, मूल, धनिष्ठा, शतवेषा) में उदय हो तो तेजी करता है।

पूर्व में अस्त हो तो तेजी कारक होता है यदि मेष, वृषभ, सिंह, तुला, वृश्चिक, मकर, कुंभ, राशियों में अस्त हो तो और सूर्य, राहु मंगल, शनि ग्रहों के साथ में हो तो अति तेजी करता है और यदि गुरु, बुध, चन्द्र ग्रहों के साथ शेष राशियों में मंदी करता है। देव गण नक्षत्रों में अति तेजी, मनुष्य गण नक्षत्रों में घटा-बड़ी और राक्षस गण नक्षत्रों में तूफानी तेजी करता है।

पश्चिम में अस्त हो तो अति तेजी कारक होता है। यदि पाप क्रूर ग्रहों से युक्त मेष, वृषभ, कर्क, सिंह, तुला, वृश्चिक, मकर कुंभ राशियों में हो तो तूफानी तेजी, सौम्य ग्रहों से युक्त शेष राशियों में क्षणिक तेजी करके मंदी करता है। यदि देव गण नक्षणों में हो तो अति तेजी, मनुष्य गण नक्षणों में हो तो मंदी और यदि राक्षस गण नक्षत्रों में हो तो तूफानी तेजी करता है।

शनि—पूर्व में उदय हो तो साधारण तेजी कारक है यदि राहु, मंगल सूर्य, शुक्र के साथ हो और मेष, वृषभ, कर्क, सिंह, तुला, वृश्चिक, मकर राशियों में हो तो अति तेजी करता और यदि सौम्य ग्रह के साथ शेष राशियों में हो तो मंदी करता है।

पश्चिम में उदय हो तो तेजी कारक है यदि राहु, मंगल, सूर्य, शुक्र से युक्त मेष, वृषभ, कर्क, सिंह, तुला, वृश्चिक, मकर राशियों में हो तो तूफानी तेजी करता है और यदि सौम्य ग्रहों से युक्त शेष राशियों में हो तो साधारण तेजी करता है।

पूर्व में अस्त हो तो तेजी कारक है यदि उपरोक्त ग्रहों से युक्त उन्हीं राशियों में हो तो तूफानी तेजी और सौम्य ग्रहों से युक्त शेष राशियों में हों तो साधारण तेजी करता है। पश्चिम में अस्त हो तो अति तेजी कारक होता है यदि उपरोक्त ग्रहों के साथ उन्हीं ही राशियों में हो तो उथल-पुथल मचा देने वाली तेजी करता है और सौम्य ग्रहों के साथ शेष राशियों में घट-बढ़ करके तेजी करता है।

(१२) वक्री मार्गी से–

मंगल—मार्गी हो तो तेजी कारक है यदि मेष, बृषभ, सिंह तुला, वृश्चिक, मकर, कुंभ राशियों में हो और सूर्य, राहु, शनि ग्रहों के साथ में हो तो क्षणिक तेजी करके मंदी करता है।

मंगल वक्री हो तो अति तेजी कारक है यदि मेष, वृषभ, सिंह, तुला, वृश्चिक, मकर, कुंभ राशियों में सूर्य, राहु शनि ग्रहों के साथ हो तो आश्चर्य जनक तेजी करता है और सौम्य ग्रहों के साथ शेष राशियों पर हो तो साधारण तेजी करता है।

बुध—मार्गी हो तो मंदी कारक होता है यदि मेष, सिंह, तुला वृश्चिक मकर राशियों में पाप क्रूर ग्रहों के साथ हो तो क्षणिक मंदी के बाद तेजी करता है शेष राशियों में शेष ग्रहों के साथ साधारतय: मंदी करता है।

यदि वक्री हो तो तेजी कारक होता है यदि मेष, सिंह, तुला, वृश्चिक, मकर राशियों में क्रूर पाप ग्रहों से युक्त हो तो अति तेजी और यदि तीन या चार वक्री ग्रहों के साथ हो तो आश्चर्य जनक तेजी तथा शेष ग्रहों के साथ शेष राशियों में साधारण तेजी करता है।

गुरु—मार्गी हो तो मंदी कारक होता है यदि मिथुन, कन्या, धन, मीन राशियों में सौम्य ग्रहों के साथ हो तो अति मंदी और शेष राशियों में पाप क्रूर ग्रहों के साथ हो तो क्षणिक मंदी करके तेजी करता है।

वक्री हो तो तेजी कारक होता है यदि मेष, वृषभ, सिंह, तुला वृश्चिक, मकर, कुंभ राशियों में हो और रवि, मंगल, शनि, हर्शल, राहू ग्रहों के साथ में हो तो अति तेजी करता है और शेष राशियों में शेष ग्रहों के साथ क्षणिक तेजी करके मंदी करता है।

शुक्र—मार्गी हो तो मंदी करता है यदि वृषभ, मिथुन, कन्या, तुला और मीन, राशियों में चन्द्र, गुरु, बुध, के साथ हो तो अति मंदी करता है और यदि मेष, सिंह, तुला, वृश्चिक, मकर कुंभ राशियों में रवि, राहु मंगल, शनि हर्शल के साथ हो तो अति तेजी करता है।

वक्री हो तो अति तेजी करता है यदि वृषभ, मिथुन कन्या, तुला, मीन राशियों में चन्द्र, गुरु, बुध के साथ हो तो साधारण तेजी और यदि मेष, सिंह, तुला, वृश्चिक, मकर और कुंभ राशियों में रवि, राहु, मंगल, शनि, हर्शल के साथ हो तो तूफानी तेजी करता है।

शनि—मार्गी हो तो मंदी करता है यदि मेष, वृषभ, सिंह तुला, वृश्चिक, मकर, कुंभ राशियों में सूर्य, राहू, मंगल, हर्शल के साथ में हो तो तेजी करता है और यदि शेष ग्रहो के साथ शेष राशियों में हो तो अति मंदी करता हैं।

वक्री हो तो अति तेजी कारक होता है यदि उपरोक्त ग्रहों के साथ उन्हीं ही राशियों में हो तो आश्चर्य जनक तेजी करता है और यदि शेष ग्रह के साथ शेष राशियों में हो तो क्षणिक तेजी करके, मंदी करता है।

हर्शल—मार्गी हो तो मंदी करता है यदि मेष, वृषभ, सिंह, तुला, वृश्चिक, मकर, कुंभ राशियों में सूर्य, राहु, मंगल, शनि के साथ में हो तो तेजी करता है और यदि शे। ग्रह के साथ शेष राशियों में हो तो अति मंदी करता है।

वक्री हो तो अति तेजी कारक होता है यदि उपरोक्त ग्रहों के साथ उन्हीं राशियों में हो तो आश्चर्य जनक तेजी करता है और यदि शेष ग्रह के साथ मेष राशियों पर हो तो मन्दी करता है।

नेपच्यून—मार्गी हो तो मन्दी कारक होता है यदि मिथुन, कन्या, धन, मीन राशियों में सौम्य ग्रहों के साथ हो तो अति मन्दी करता है और यदि पाप क्रूर ग्रहों के साथ शेष राशियों पर हो तो क्षणिक मन्दी करके तेजी करता है।

वक्री हो तो तेजी कारक होता है यदि मेष, वृषभ, सिंह, तुला, वृश्चिक, मकर, कुंभ राशियों में रवि, मंगल, शनि, हर्शल, राहु ग्रहों के साथ में हो तो अति तेजी करता है और मेष राशियों में शेष ग्रहों के साथ हो तो क्षणिक तेजी करके मन्दी करता है।

प्लूटो—मार्गी हो तो तेजी कारक होता है यदि मेष, वृषभ, सिंह तुला, वृश्चिक, मकर कुंभ राशियों में सूर्य, राहु शनि, मंगल ग्रहों के साथ में हो तो अति तेजी करता है और सौम्य ग्रहों के साथ अन्य राशियों में हो तो क्षणिक तेजी करके मन्दी करता है।

वक्री हो तो अति तेजी कारक है यदि मेष, वृषभ, सिंह तुला, वृश्चिक, मकर कुंभ राशियों में सूर्य राहु, मंगल शनि ग्रहों के साथ हो तो आश्चर्य जनक तेजी करता है और सौम्य ग्रहों के साथ शेष राशियों में हो तो साधारण तेजी करता है।

शनि, मंगल एक साथ वक्री हो तो अति तेजी कारक होता है इस प्रकार शनि, बुध तथा शनि, शुक्र एक साथ वक्री होते हैं तो भी अति तेजी आती है।

शनि, शुक्र, मंगल एक साथ वक्री हों तो अति तेजी का संकेत करता है और यदि शनि, मंगल, बुध, गुरु एक साथ वक्री हों तो आश्चर्य जनक तेजी होती है तथा शनि मंगल, गुरु एक साथ वक्री हों तो भी आश्चर्य जनक तेजी आती है।

गुरु, बुध एक साथ वक्री हो तो मन्दी कारक होता है और यदि बुध, गुरु, शुक्र एक साथ वक्री हो तो अति मन्दी कारक होता है

बुध, शुक्र एक साथ वक्री हो तो क्षणिक तेजी कारक होता है।

वस्तुओं पर ग्रहों का प्रभाव (लम्बी रुख की तेजी मन्दी)—

(१३) सूर्य राशि से —

मेष—लोहा, फौलाद, मशीनरी, सोना, गेहूँ, मसूर, तांबा, मूंगा, पैटरोल, लाल मिर्च आदि सर्व वस्तु तेज हों।

वृषभ—रूई, जूट, सर्व प्रकार के श्वेत वस्त्र, धातु पदार्थ कम्पनी के शेअर्स, चावल गेहूँ, शक्कर, कपूर, इलायची, काजू, बिनौला, मेनसल आदि तेज, जनता सुखी, कहीं वर्षा की अधिकता, पीड़ा क्लेश आदि हो।

मिथुन—कपास, ग्वार, घी, बाजरा, रेलवे शेअर्स, प्रकाशन, कागज, सौंफ, जीरा, जायफल, तूतिया अजवायन आदि तेज हों। एक मास में मिथुन में सूर्य, कन्या का राहु हो तो सर्व धान्य व खेतियां रूई, तेल,जौ, पीले रंग की वस्तुऐं तेज हो व धान्यों में कुछ मन्दी का वातावरण रहे।

कर्क—एक मास में जनता सुखी, चांदी, चाय, घास, नारियल सेंधा नमक, फिटकरी, अवरक, भोडर, सज्जी, आदि वस्तुयें साधारण मन्दी तथा अश्लेखा में वर्षा, धान्यों में जहां कहीं साधारण तेजी हो।

सिंह—सोना, चावल, चना, गुड़, चमड़ा, सौंठ, अदरक, केसर, आलू बुखारा आदि वस्तुएं तेज हों धान्य मन्दा रहे।

कन्या—मटर, ग्वार, पीली राई, गेहूँ, मूंग, चावल, अनाज, फलों की साधारण वस्तुयें, कत्थील, कत्था, गोंद, कतीरा, धनियां, पन्ना, मंहदी के फूल, पिस्ता आदि वस्तुऐं तेज हों।

तुला—रूई, सिल्क, अरहर गेहूँ, चावल, सर्व प्रकार के रंगीन वस्त्र, साबूदाना, खोपरा, पोस्त दाना आदि वस्तुयें साधारण तेज हों हाथियों का नाश, कहीं-कहीं टिड्डी का उपद्रव, युद्ध प्रसंग रहे।

वृश्चिक—केमीकल्स, गुड़, शक्कर, लोहा, चमड़ा, लाख, ऊन, अलसी, मूंगफली, पीली सरसों, कांगनी, पारा, तेजाब, सुपारी आदि साधारण तेज हों। धान्य में कुछ मन्दी आवे।

धनु—घोड़ा, हाथी व हाथी दांत का सामान, जानवर, नमक, शेअर्स, आलू, रबड़ हल्दी, पीले वस्त्र, अस्त्र, गंधक, बादाम आदि वस्तुयें तेज हों।

मकर—वृक्ष, सोना, तांबा, कोयला, मिलों के शेअर्स, लोहे के शेअर्स, शीशा, जस्ता, टीन, राँगा, गन्ना, तिली, काली सरसों, दाल चीनी, लौंग, पीपर, काला नमक, मुनक्का, किसमिश अदि वस्तुएं आदि तेज हों।

कुंभ—विजली का सामान, रंग, चित्र, लकड़ी का सामान, उच्च किस्म की सिल्क, कोयला व कोयला खदान के शेअर्स, तेल अलसी, लोहा, लोहा का सामान, पुष्प, नीलम, आयरन शेअर्स, अरंडी, तेल सरसों-तिली-अरंडी-मूंगफली आदि, कस्तूरी, अमचूर, चिलगोजे आदि तेज हों, गुड़ व लाल वस्तु की वृद्धि।

मीन—मछली, सीप, मोती, मोम, सुगन्धित पदार्थ, हीरा, औषधि गोटा, गोटा से बनी वस्तुयें अदि तेज हों।

सूर्य नक्षत्र से—

अश्विनी—का सूर्य १३ दिन के अन्तर्गत सर्व धान्य, सर्व रस, सर्व धातु, ऊन, वस्त्र अलसी, एरंड आदि तिल, मेथी, आल, लाल चन्दन, इलायची, लोंग, सुपारी, नारियल, कपूर, हींग, हिंगुल आदि तेज हों।

भरणी—का सूर्य १५ दिन के अन्तर्गत चावल, जव, चने, मोठ, तुअर, अलसी, घृत, अफीम, मूंगा धातु तेज हों एवं मनुष्यों को पीड़ा हो।

कृतिका—का सूर्य १५ दिन के अन्तर्गत श्वेत पुष्प, अग्नि होत्री मंत्र शास्त्री, व्याकरणी, ज्योतिषी, राज, कुंभकार, खदानों के दरोगे

बारबर इनको कष्ट होवे तथा जौ, चावल, गेंहू, मूंग, मोठ, राई सरसों तेज हो।

रोहणी—का सूर्य १५ दिन के अन्तर्गत चावल आदि सर्व धान्य, अलसी, सरसों, राई, तेल, दाख, गुड़, खांड सुपारी, रूई, सूत, सन, तेज हो, धनवान, योगी, उत्तम वृत पालन कर्त्ता, गाड़ीवान, कृषि कर्त्ता, चतुष्पद व जलचरों को कष्ट हों।

मृगशिर—का सूर्य १४ दिन के अन्तर्गत सर्व धातु, जलोत्पन्न पदार्थ नारियल, सर्व फल, रूई, घृत, रेशम, कपड़ा, कपूर, चन्दन आदि, सुगन्धित पदार्थ, चने आदि, तुष धान्य तेज हो, सर्व चतुष्पद हानि हो, वायु अधिक चले तो समय श्रेष्ठ होगा।

आद्रा—का सूर्य कहीं अधिक कहीं कम वर्षा हो, १४ दिन के अन्तर्गत, घृत, गुड़, खांड, खल, चावल, मणि, मोती, तुष धान्य, गेहूँ, सुरमा, कपूर, चन्दन आदि सुगन्धित वस्तु, लाल वस्त्र, कपास, रूई, हल्दी, सोंठ, लोहा, चांदी, तेज हो, वकील, चौरादि को पीड़ा होगी।

पुनर्वसु—का सूर्य १४ दिन के अन्तर्गत उड़द, मूंग, मोठ, चावल मसूर, लवण, सज्जी, लाख, नील, तिल, एरंड बीज, मजीठ, मांजु फल, केशर, कुसूंब, कपूर, चन्दन, देवदारू, लवंग, नारियल, श्वेत वस्त्र अदि तेज हो, इंजीनियर, दास, धनी, सुरूपवानों को पीड़ा कहीं वर्षा अच्छी होगी।

पुष्य—का सूर्य १४ दिन के अन्तर्गत तिल, तेल, मद्य, गुड़, ख्वार, गूगल, सुपारी, सोंठ, मोम, हींग, हल्दी, लाख, सन, ऊनी वस्त्र शीशा, चांदी की वस्तु तेज हो एवं ईरान देश की जनता, साधुओं तथा जल जीवियों को पीड़ा हो।

अश्लेशा—का सूर्य १४ दिन के अन्तर्गत चना, अलसी, तिल, तेल, गुड़, प्रोमिसरी नोट, नील, मालवे का अफीम तेज हो एवं पूर्व उत्तर दिशा में विघ्न हो।

मघा—का सूर्य १५ दिन के अन्तर्गत ज्वार, मूंग, एरंड बीज दाख, मिरची तेज हो तथा वर्षा हो।

पूर्वा फाल्गुनी—का सूर्य १४ दिन के अन्तर्गत १४ दिन में चांदी तथा उसकी बनी हुई वस्तुयें, कपास, कपड़ा, चावल, गेहूँ, सरसों तिल ज्वार, जीरा, घृत, तेज हो तथा आवरेज मन्दा हो।

उत्तरा फालगुनी—का सूर्य १४ दिन के अन्तर्गत सोना, चांदी, लोहा तेल, घृत, सरसों, एरन्ड के बीज, सुपारी, मूंज, बांस, नील, अफीम, पट्ट सूत्र, कपास आदि वस्तुयें तेज हों एवं चतुष्पादों को पीड़ा हो।

हस्त—का सूर्य १५ दिन के अन्तर्गत गेहूँ, ज्वार, जव, गुड़ खांड सन, कपास, हल्दी, हरड़ा हींग, क्षार, कथीर तेज हो।

चित्रा—का सूर्य १५ दिन के अन्तर्गत धान्य, गेहूँ, चने, कपास अरहर, सूत, केशर, लाख, चपड़ी, तेज हो।

स्वाती—का सूर्य १४ दिन में सर्व धातु, गुड़, खांड, तेल, हींग, कपूर, लाख, गुगल, हल्दी, रूई, और सन तेज हो।

विशाखा—का सूर्य १४ दिन के अन्तर्गत चांदी, नोट, चावल, सर्व रस, सूत तेज हो तथा दक्षिण में साधारण उपद्रव हो।

अनुराधा—का सूर्य १४ दिन के अन्तर्गत गेंहू, नोट तेज हो।

ज्येष्ठा—सूर्य १५ दिन के अन्तर्गत सोना, चांदी, धान्य चावल सरसों वस्त्र आदि तेज हो।

मूला—का सूर्य १५ दिन में धान्य रूई तेज हो।

पूर्वाषाढ़ा—का सूर्य चौदह दिन के अन्तर्गत तिल, तेल, गुड़, गूगल, हल्दी चपड़ी, कपूर, ऊनी वस्त्र, सन, चांदी तेज हो ।

उत्तराषाढ़ा—का सूर्य १४ दिन के अन्तर्गत उड़द, मूंग, चावल पट्ट सूत्र, गुड़, कपास, पीपला मूल, लाख, चपड़ी, मूंज, बांस, सरसों तेज हो ।

△ **श्रवण**—का सूर्य १४ दिन के अन्तर्गत गेहूँ, जव, चावल, चांदी आदि सर्व धातु नोट अलसी आदि तेज हो ।

धनिष्ठा—का सूर्य १४ दिन के अन्तर्गत मूंग, मसूर, नील आदि तेज ।

शतभिषा—का सूर्य चौदह दिन के अन्तर्गत चांदी, सरसों, सन, वस्त्र, नील, तेल, हींग, जायफल, दाख, खारक सोंठ तेज करे ।

पूर्वा भाद्रपदा—का सूर्य चौदह दिन के अन्तर्गत सोना, चाँदी, गेहूँ, चना, उड़द, घृत, रूई, रेशम, गूगल, पीपला मूल आदि तेज हो ।

उत्तरा भाद्रपदा—का सूर्य चौदह दिन के अन्तर्गत सर्व रस, धान्य तेल आदि वस्तुऐं तेज हों ।

रेवती—का सूर्य चौदह दिन के अन्तर्गत जलज पदार्थ, मोती रत्न, फूल, फल, लवण सुगन्धित पदार्थ नष्ट हो, चतुष्पद तूअर, मूंग उड़द, चावल, लहसन, लाख, सज्जी, रूई का भाव तेज हो तथा व्यापारियों को कष्ट हो ।

सूर्य संक्रांति से—

अ मेष—सोना, चावल, तिलहन, रेलवे शेअर्स, धातु-पदार्थ उद्योग की वस्तुएं, मशीनरी, लोहा, ईंट, काफी चाय आदि तेज हो ।

यदि रवि, मंगल, शनिवार को मेष संक्रांति प्रवेश हो तो चना गेहूँ तेज हो, सोमवार को प्रवेश करे तो घृत, तेल, कपास, गुड़ तेज हो, यदि गुरुवार को प्रवेश हो तो अनाज मन्दा हो और यदि बुधवार को प्रवेश हो तो जनता में आनन्द, सुखो हो एवं सर्व वस्तु मन्दो हो।

यदि मेष संक्रांति प्रवेश के दिन तुला राशि का चन्द्र हो तो सर्व धान्य तेज हो, थोड़ी वर्षा भी हो छठे मास धान्य से लाभ भी हो।

वृषभ—रूई, जूट का सामान, टेक्स टाइल, शकर, गेहूँ, चावल चांदी, लेशियन सिल्क, शकर के शेअर्स, मिष्ठान्न, मोती, कांच की वस्तुएं पुष्प, तांबा, सुगन्धित-पदार्थ, सेव, नासपाती, शराब आदि तेज हो।

रवि, मंगल, शनिवार को वृषभ संक्रांति प्रवेश करे तो गेहूँ, चना, मसूर, कपास, मजीठ, कसूब, शकर आदि सर्व किराना तेज हो, चन्द्रवार को प्रवेश हो तो सर्व धान्य, रस तेज हो, शुक्र बुधवार और गुरुवार को प्रवेश हो तो घृत, गुड़, तेल तेज हो और अनाज मन्दा हो एवं जनता सुखी हो!

मिथुन—गेहूँ, अनाज, खाद्य-पदार्थ, सिल्क, सूत, शकर, रूई, तांबा आदि में साधारण मन्दी हो।

मंगल, शनि, रविवार को मिथुन संक्रांति प्रवेश हो तो रोग पीड़ा व अग्नि भय हो एवं धान्य में साधारण तेजी हो बुधवार को प्रवेश करे तो अनाज मन्दा हो और यदि चन्द्र, गुरु, शुक्रवार को प्रवेश हो तो सर्व सुख हो एवं सूत तेज हो।

मिथुन संक्रांति प्रवेश के दिन यदि धनु राशि का चन्द्र हो तो सर्व धान्य व तिल तैल का संग्रह करके एक मास से ४ मास तक द्विगुण तक लाभ उठाया जासकता है किंतु यदि क्रूर पाप ग्रहों से युक्त हो तो ऐसी आशा पूर्ण न हो सकेगी।

कर्क—चांदी, दूध, पेट्रोलियम के शेयर्स, जव, साधारण आयल शेयर्स, द्रव्य, शराब, मछली, नेवी गेशन, कांच का सामान, धृत आदि मंदी हो।

यदि शनि, रवि, मंगलवार को कर्क संक्राति प्रवेश हो तो अति वर्षा, रोग अधिक, अनाज की पैदावार कम, उपरोक्त वस्तुओं में साधारण तेजी हो और यदि चन्द्र, बुध, गुरू, शुक्रवार को प्रवेश करें तो वर्षा हो, आनन्द हो, वर्षा से एक खण्ड में धान्य की पैदावार अति उत्तम हो तथा वायु चले।

कर्क संक्रांति प्रवेश के दिन यदि मकर का चन्द्र हो तो धान्य का संग्रह करने से छठे मास तक लाभ उठाया जा सकता है तद्उपरान्त लाभ की सम्भावना नहीं रहती।

सिंह—जवाहारात, गिलट या गिलट की बनी हुई वस्तुएं, पाउण्ड, चावल, शहद, जड़ी-बूटियां, रूई, सोना, चांदी रक्त वस्तुए आदि तेज हो।

यदि सिंह संक्रांति मंगल, शनिवार को प्रवेश हो तो पूर्वार्द्ध में अति वर्षा, सुकाल, तिल धान्य विनाश, वायु पीड़ा हो उत्तरार्द्ध में वर्षा न हो अनाज की पैदावार कम, कृषकों को पीड़ा हो, रविवार को प्रवेश करे तो नेष्ट है यदि चन्द्र, बुध, शुक्रवार को प्रवेश करे तो श्रेष्ठ है जनता सुखी हो और यदि गुरुवार को प्रवेश हो तो धृत मंदा एवं गुड़, तैल तेज हो।

सिंह संक्रांति प्रवेश के दिन यदि कुंभ का चन्द्र हो तो सर्व धान्य संग्रह करने से पांच मास तक लाभ की सम्भावना है।

कन्या—गेहूं, अनाज, सिल्क, सूत, शकर, रूई, तांबा, बिजली का सामान व यंत्र आदि मंदे हों।

रवि शनिवार को कन्या संक्रांति प्रवेश हो तो सर्व धान्य नष्ट व वायु प्रकोप हो, मंगलवार को प्रवेश करे तो अति भय, अल्प वर्षा अनाज तेज हो एवं चन्द्र, बुध, गुरू, शुक्रवार को प्रवेश हो तो जनता सुखी रहे।

कन्या संक्रांति प्रवेश के दिन मीन का चन्द्र हो तो धान्य का संग्रह चार मास तक कभी भी लाभ दायक सिद्ध होगा बाद को उतने लाभ की सम्भावना न होगी।

तुला—रूई, जूट का सामान, सूत, शकर गेहूं, चावल, चांदी, लेशियन, सिल्क, शकर मिल्स के शेअर्स, मिष्ठान्न, मोती, कांच का सामान, पुष्प, तांबा, सुगन्धित पदार्थ, सेव, नासपाती, शराब आदि तेज हों।

यदि तुला संक्रांति रवि व मंगलवार को प्रवेश हो तो नेष्ट कारक है यदि चन्द्र व शुक्रवार को प्रवेश करे तो अनाज मंदा हो बुधवार को प्रवेश हो तो ज्वार की खेती नष्ट हो वर्षा अति हो, गुरूवार को प्रवेश हो तो धान्य गुड़, तेल तेज हों और यदि शनि-वार को प्रवेश हो तो घृत, धान्य तेज हों एवं राज विग्रह हो।

वृश्चिक—सोना, चावल, तिलहन, धातु, मशीनरी, लोहा, ईंट काफी, चाय, रवड़ का सामान, टीन, आर्डनरी शेअर्स, चमड़ा, घड़ियां तांबा, जस्ता आदि तेज हों।

रविवार को वृश्चिक संक्रांति प्रवेश हो तो धान निपजे, सफेद धातु तेज, ज्वार, उडद सर्व धान भविष्य में तेज हों, चन्द्रवार को प्रवेश करे तो साधारण जनता सुखी हो, बुध, गुरु, शुक्रवार को प्रवेश हो तो तिल, तेल, सूत, कपास, तेज हों, जनता सुखी हो शनिवार को प्रवेश हो तो दुष्ट प्रकृति के लोगों को रोग हो और मंगलवार को प्रवेश करे तो धान्य, रस, कस तेज हो, इनके संग्रह से तीन मास तक लाभ की आशा है।

वृश्चिक संक्रांति प्रवेश के दिन यदि मेष का चन्द्र हो तो धान्य संग्रह से दूसरे माह में अति लाभ की आशा की सम्भावना है।

धनु—टीन, रबड़, चांदी, जस्ता, चना, जूट, तम्बाकू, शेअर्स, विलासता की सामग्री, बिजली के यंत्र मंदा हो।

रवि, मंगल, शनिवार को धनु संक्रांति प्रवेश हो तो उपरोक्त वस्तुएं तेज हों एवं धान्य अति उत्पन्न हो राज विग्रह घृत, तिल, तेल, कपास, सूत में साधारण तेजी हो, चन्द्रवार को प्रवेश करे तो सर्दी अधिक पडे, धान्य की कृषि नष्ट हो, एवं वर्षा भी हो, बुध, गुरुवार को प्रवेश हो तो धान्य मंदा हो और शुक्रवार को प्रवेश हो तो प्रजा सुखी हो।

धनु संक्रांति प्रवेश के दिन मिथुन का चन्द्र हो तो सर्व धान्य संग्रह से एक मास तक लाभ की सम्भावना दूसरे मास से हानि की सम्भावना हो और घृत, कपास, सूत में पांच मास तक लाभ की सम्भावना हो।

मकर—कोयला, सीमेंट व सीमेंट का सामान, तांबा अलसी तिलहन, मीठा तेल, मूंगफली, ऊन, लोहा, जूट, जौ, जूते, रील,

कृषि संबन्धी यंत्र, संगमरमर, वनास्पति, जवाहारात, गिल्ट, गिल्ट का सामान, चावल, शहद, जड़ी-बूटियां तेज हों।

शनिवार को कुंभ संक्रांति प्रवेश हो तो जनता दुखी हो, मंगलवार को प्रवेश करे तो रस, कस तेज हो, चन्द्रवार को प्रवेश हो तो तुषार पडे जिससे दो मास में ज्वार, मसूर, चावल, चने का नाश हो एवं धान नष्ट हो, बुधवार को प्रवेश करे तो रोग, पीड़ा, युद्ध, भय हों, शुक्रवार को प्रवेश हो तो जनता सुखी और गुरुवार को प्रवेश हो तो आंतरिक कलह हो।

यदि मकर संक्रांति के दिन कर्क राशि का चन्द्र हो तो धान्य संग्रह में ६ मास तक लाभ की सम्भावना बाद असम्भावना हो।

कुम्भ—कोयला, सीमेंट व सीमेंट की वस्तुएं, तांबा, अलसी, तिलहन, मीठा तेल, मूंगफली, ऊन, लोहा, जूट, जव, जूते, रील कृषि सम्बंधी यंत्र, संगमरमर, वनास्पति, बिजली का सामान, मिट्टी की वस्तुएं, टेली ग्राम, वायर लेस, नेवी गेशन का सामान, कार, मोटर, ट्रामवे, बस, गवर्नमेंट पेपर, ज्वाइन्ट कम्पनी के शेअर्स, एलमूनियम आदि तेज हों।

शनिवार को कुंभ संक्रांति प्रवेश हो तो पशु पीडा हो, मंगलवार को प्रवेश हो तो जनता को कष्ट हो चन्द्र, बुध, शुक्रवार को प्रवेश हो तो जनता सुखी एवं खडी व शकर में लाभ की सम्भावना हो और रवि व गुरु को प्रवेश हो तो भूचाल व भूकम्प, घोर विग्रह चतुष्पदों को अतिशय कष्ट हो।

मीन—टीन, रबड, चांदी, जस्ता, चना, जूट, तम्बाकू, विलासता की सामग्री, चाय, कपास औषधि, मिष्ठान्न, तेल, मत्स्य आदि मंदा हो।

यदि शनिवार को मीन संक्रांति प्रवेश हो तो विग्रह हो, मंगलवार को प्रवेश करे तो सामुद्रिक मार्ग की वस्तुऐं नष्ट हो व सोना तेज तथा अनाज मंदा हो, रविवार को प्रवेश हो तो युद्ध की सम्भावना, तैल, घृत, रस, गुड़, शक्कर तेज हो, चन्द्रवार को प्रवेश हो तो जनता सुखी, बुध व शुक्रवार को प्रवेश हो तो सर्व साधारण जनता अति सुखी और गुरुवार को प्रवेश हो तो सर्व धान्य में घट-वढ़ व जनता में रोग व दुखी हो ।

यदि मीन संक्रांति प्रवेश के दिन कन्या राशि का चन्द्र हो तो धान्य संग्रह से चार मास तक लाभ होने की सम्भावना ।

जिस दिन जिस राशि की संक्रांति प्रवेश हो और उस दिन उस राशि का चन्द्र भी हो तो जन्म वेध होता है इसे नेष्ट समझना चाहिए, स्व राशि या मित्र की राशि का चन्द्र हो तो उसे श्रेष्ठ समझना चाहिए।

सूर्य संक्रांति वारों से—

रविवार को संक्रांति प्रवेश हो तो राज विग्रह, धान्य तेज हो एवं तैल, घृत, तिल का संग्रह करने से ज्येष्ठ मास के अतिरिक्त अन्य मासों में लाभ हो ।

चन्द्रवार को संक्रांति प्रवेश हो तो धान्य मन्दा, जनता सुखी, रस, कस, घृत, तैल का संग्रह करने से तीसरे महीने में लाभ की सम्भावना है ।

मंगलवार को संक्रांति प्रवेश हो तो घी, तेल, धान्य तेज हो रक्त वस्तु तेज हो सर्व वस्तु संग्रह करने से दूसरे महीने में लाभ हो।

बुधवार को संक्रांति प्रवेश हो तो सफेद कपड़ा, नारियल, किराना तेज हो, लाल-नीली स्याम वस्तु संग्रह करने से दूसरे मास में लाभ हो।

गुरुवार को संक्रांति प्रवेश हो तो जनता सुखी धान्य मन्दा हो, गुड़ खांड के संग्रह से दो मास में लाभ की सम्भावना हो।

शुक्रवार को संक्रांति प्रवेश हो तो सर्व वस्तु मंदी हो, जनता सुखी हो, अनाज अति उत्पन्न हो, पीली वस्तु व श्वेत वस्त्र तेज हो, तेल, गुड़ का संग्रह करने से चौथे मास में लाभ की सम्भावना हो।

शनिवार को संक्रांति प्रवेश हो तो धान्य तेज हो जनता दुखी, राज विरोध, चतुष्पद पीड़ा, अन्न नाश, अन्न के लिए परदेशी मनुष्यों का आगवन हो।

सूचना—(१) जिस बार के दिन संक्रांति प्रवेश हो उसी बार की उस मास में अमावश्या हो तो विनाशकारी योग होता है जीवों का एवं धान्य का नाश होता है।

(२) वर्ष की प्रथम संक्रांति शनिवार को प्रवेश करे और उसके आगे की दूसरी संक्रांति रविवार को प्रवेश हो उसके उपरान्त की तृतीय संक्रांति मंगलवार को प्रवेश हो तो अति विनाशकारी योग बनता है जिसमें सर्व जनता एवं पशु-पक्षी, जीव धान्य एवं सर्व वस्तुओं को कष्ट दायक है।

(३) पौष महीने में मकर संक्रांति रविवार को प्रवेश हो तो धान्य के भाव तेज होंगे, शनिवार को प्रवेश करे तो उससे भी तेज हो और मंगलवार को प्रवेश हो तो अति तेज भाव होंगे। बुध व शुक्रवार को प्रवेश हो तो समान्य भाव रहे तथा चन्द्र व गुरुवार को प्रवेश हो तो मन्दा हो।

(४) कार्तिक तथा मार्ग शीर्ष की संक्रांति के दिन जलवृष्टी हो तो पौष में अन्न मन्दा हो उत्पादन में साधारण वृद्धि हो ।

(५) प्रथम संक्रांति प्रवेश नक्षत्र से दूसरी संक्रांति प्रवेश का नक्षत्र दूसरा या तीसरा हो तो धान्य मन्दा हो और चौथे या पांचवें नक्षत्र पर प्रवेश हो तो धान्य तेज हो तथा छठे नक्षत्र पर प्रवेश हो तो भयंकर दुर्भिक्ष पड़े अर्थात धान्य में बड़ी भारी तेजी हो ।

(६) यदि सूर्य की संक्रांति अपनी राशि से सातवी राशि का चन्द्र जिस दिन हो उस दिन प्रवेश हो तो सर्व धान्य तेज हो एवं युद्ध की सम्भावना भी हो । यदि मीन मेष संक्रांति प्रवेश हो तो दो मास सिंह संक्रांति प्रवेश हो तो तीन मास, मिथुन संक्रांति प्रवेश हो तो एक मास, वृषभ, कुंभ संक्रांति प्रवेश हो तो दो मास, और कर्क मकर संक्रांति अपने सातवें चन्द्र में प्रवेश हो तो छः मास पर्यंत धान्य तेज हो ।

(७) संक्रांति जिस दिन प्रवेश हो उस दिन जो नक्षत्र हो उसको संख्या में तिथि और वार की संख्या जो उस दिन की हों वह जोड़ दो और धान्य के नाम के अक्षर की संख्या उसमें मिलाकर तीन का भाग दें तो यदि १ शेष बचे तो वह धान्य उस संक्रांति के मास में मन्दा हो, यदि २ शेष रहे तो सामान्य भाव रहे और यदि शून्य शेष हो तो वह धान्य तेज हो ।

(१४) चन्द्र राशि से—

मेष—का चन्द्र वर्षा काल में भी वर्षा को क्षीण करता है, मेष राशि के अन्तर्गत की सर्व वस्तुएं तेज हों एवं धान्य के भाव चढ़ें ।

वृषभ—का चन्द्र वर्षा काल में वर्षा अवश्य हो जानवर मन्दे हों मेष राशि के अन्तर्गत की वस्तुऐं तेज हों।

मिथुन—का चन्द्र वर्षा काल में वर्षा हो एवं मिथुन राशि के अन्तर्गत की वस्तुऐं मंदी हों।

कर्क—का चन्द्र वर्षा काल में वर्षा करता है एवं कर्क राशि के अन्तर्गत की सर्व वस्तुऐं मंदी हों एवं धान्य के भाव तेज हों।

सिंह—का चन्द्र वर्षा का अभाव हो चौपायों का नाश हो, सिंह राशि के अन्तर्गत की सर्व वस्तुएं तेज हों।

कन्या—का चन्द्र वर्षा काल में अवश्य वर्षा हो, ओद मंजीठ, राई आदि ६ दिन तक तेज रहे एवं कन्या राशि के अन्तर्गत की वस्तुएं मंदी हों।

तुला—का चन्द्र वर्षा काल में वायु का वेग विशेष, घृत, चावल मंदा एवं तुला राशि के अन्तर्गत की वस्तुयें तेज हों।

वृश्चिक—का चन्द्र साधारण वर्षा, वृश्चिक राशि के अन्तर्गत की वस्तुएं तेज हों।

धनु—का चन्द्र वर्षा के लिए अच्छा है धनु राशि के अन्तर्गत की वस्तुऐं मंदी हों।

मकर—का चन्द्र वर्षा के लिए उत्तम है मकर राशि के अन्तर्गत की वस्तुऐं अति तेज हों।

कुंभ—का चन्द्र साधारण वृष्टि, कुंभ राशि के अन्तर्गत की वस्तुएं मंदी हों एवं तिल, तेल में साधारण तेजी हों।

मीन—का चन्द्र वर्षा का योग बनाता है एवं मीन राशि के अन्तर्गत की सर्व वस्तुयें मंदी हों।

सूचना—चन्द्र जिस राशि पर होता है वह उस राशि पर केवल २। दिन तक प्रभाव रखता है।

(१५) मंगल राशियों से—

मेष—राशि का मंगल हो तो सर्व धान्य मंदी एवं मेष राशि के अन्तर्गत की वस्तुयें तेज हों और यदि मेष का मंगल तथा कर्क चन्द्र हो तो तीन दिन में अफीम में रु. १५ से २० तक की तेजी हो।

वृषभ—का मंगल हो तो सर्व धान्य, चंदन, केशर, वस्त्र, कपास एवं वृषभ राशि के अंतर्गत की सर्व वस्तुयें तेज हों, धान्य तेज हो कर मंदा हो।

मिथुन—का मंगल हो तो वृष्टि अच्छी हो, डेढ़ मास में सर्व धान्य तेज हो रूई में साधारण मंदी होकर फिर तेजी हो मिथुन राशि के अंतर्गत की वस्तुएँ में घट-बढ़ हो।

कर्क—का मंगल हो तो सर्व धान्य, ईख तेज हो ४५ दिन में गुड़ खांड, धान रूई तेज हों कर्क राशि के अंतर्गत की वस्तुओं में साधारण मंदी हो।

सिंह—का मंगल हो सोना, रूपा, तांबा और लाल रंग के सब द्रव्य ४५ दिन में तेज हों एवं सिंह राशि के अन्तर्गत की सर्व वस्तुयें तेज हों।

कन्या—का मंगल हो तो चन्दन, रेशमी वस्त्र, लाल द्रव्य, लाल वस्त्र तेज हों गुड़, मजीठ, मिरची में साधारण तेजी, रूई में १६ दिन में तेजी तथा अलसी में फेर फार हो कन्या राशि के अंतर्गत की वस्तुएँ सामान्य रहे।

तुला—राशि का मंगल हो तो सर्व धान्य उड़द, मूंग, रूई, सूत, कपास विशेष कर ४५ दिन के अन्तर्गत तेज हो तुला राशि के अन्तर्गत की वस्तुएँ तेज हों।

वृश्चिक–राशि का मंगल हो तो सर्व द्रव्य तेज हों, १५ दिन के अंतर्गत रूई व शस्त्रों के भाव बढें तथा वृश्चिक राशि के अंतर्गत की सर्व वस्तुऐं तेज हों।

धनु–का मंगल हो तो धनु राशि के अन्तर्गत की वस्तुए साधारण तेज हों एवं मूल-द्रव्य तृण, कास्ठ पशु, घृत, कपास तेज हों।

मकर–का मंगल हो तो घृत, तेल तेज हो सर्व धान्य मंदे हों ३ दिन के अंतर्गत रूई में मंदी आवे, ४० दिन में आवरेज तेज हो तथा मकर राशि के अंतर्गत की वस्तुएं तेज हों।

कुंभ–का मंगल हो तो सर्व धान्य तेज हो आबरेज में ५० की मंदी हो कुम्भ राशि के अंतर्गत की वस्तुएं मंदी हों।

मीन—का मंगल हो तो तृण, काष्ठ तेज हो इनके संग्रह से लाभ हो मीन राशि के अंतर्गत की वस्तुएं साधारण मंदी हों।

शनि, शुक्र एवं मंगल ये तीनों ग्रह वृषभ राशि पर हो ता दुर्भिक्ष रूई, धान्य सर्व तेज हों।

शनि, रवि, शुक्र व मंगल एक साथ मेष राशि पर हो तो दुर्भिक्ष एवं जनता में पीड़ा व भय हो।

तुला का मंगल, कर्क के गुरु और मीन का शनि हो तो दुर्भिक्ष एवं धान्य तेज हों।

मंगल, चंद्र व शुक्र से युक्त मीन राशि पर हो तो सब अनाज तेज हों एवं अनावृष्टि हो।

मंगल नक्षत्रों से–

अश्विनी–शीत, पीड़ा, तुष, धान्य तेज हो।

भरणी–धान्य तेज हो सर्व देश में पीड़ा हो।

कृतिका–दिन १८ में रूई, सूत, कपड़ा, तिल, तेल, घृत राई, एरंड-बीज जव, चावल, मसूर, मोठ तेज हो।

रोहिणी—वृक्ष नाश, कपास, सूत, वस्त्र विशेष तेज, २१ दिन में रूई, सन, रेशम, गुड़, खांड, छुआरा, हींग, मिरच राई, सरसों, तेल आदि तेज हो।

मृगशिर–कपास का उत्पादन कम हो शेष सर्व वस्तुएं मंदी हो परंतु रूई अवश्य तेज हो।

आर्द्रा–तिल का उत्पादन अल्प हो।

पुनर्वसु–तिल का उत्पादन कम हो, १७ दिन में श्वेत वस्त्र, कपास, लवण, रस, धान्य तेज हो।

पुष्य–चोर भय।

अश्लेषा–अल्प वृष्टि, धान्य नष्ट, दुर्भिक्ष भय, दिन २३ के अंतर्गत धान्य तेज हो।

मघा—अवृष्टि, तिल, माष, मूंग का उत्पादन कम धान्य तेज हो।

पूर्वा फाल्गुनी–जल वृष्टि, रोग चतुष्पद पीड़ा, दिन २० में गुड़ खांड तेल घृतादि रस तेज हो।

उत्तरा फालगुनी–जल वृष्टि दिन २३ में गुड़ खांड तेज हो जनता को कष्ट हो।

हस्त—अल्प जल वृष्टि, धान्य, घृत, गुड़, लवण २२ दिन के अंतर्गत तेज हो।

चित्रा–अति रोग, पीडा, चावल, गेहूँ तेज हो, १२ दिन के अंतर्गत धान्य, धातु तेज हो।

स्वाति–अनावृष्टि २४ दिन के अंतर्गत रूई, गेहूँ, तिल, तेल रूई तेज हो।

विशाखा–कपास, गेहूँ, रूई २४ दिन में तेज हो वर्षा कम हो ।

अनुराधा–सुभिक्ष, पशु-पक्षी पीड़ा, २५ दिन के अंतर्गत गेहूँ तथा लाल मिर्च तेज हो ।

ज्येष्ठा–अल्प वर्षा, रोग वृद्धि, १२ दिन के अंतर्गत अफीम में तेजी हो ।

मूल—तुष, धान्य तेज हो मूंग का उत्पादन कम ।

पूर्वाषाढ़ा–बहु जल वृष्टि, धान्योत्पत्ति श्रेष्ठ, चावल, तिल, घृत, उड़द तेज हो ।

अभिजित—सुभिक्ष हो ।

श्रवण–बहु रोग, धान्य प्राप्ति वर्षा हो ।

धनिष्ठा—गुड़, शकर, गेहूँ, धातु जव तेज हो, धान्य मंदा हो ।

शतभिषा–मूषक, कीटक होते हुए भी धान्य बहुत ही अधिक उत्पन्न हो ।

पूर्वा भाद्रपदा—तिल, तेल, वस्त्र, सुपारी, कपास, सूत, सरसों, रूई अलसी तेज हो ।

उत्तरा भाद्रपदा—दुर्भिक्ष, बादल गरज कर आवे तो भी अवृष्टि हो ।

रेवती—सौख्य, सुभिक्ष, रोग वृद्धि, धान्य की अधिकता हो ।

आर्द्रा, भरणी, रोहिणी, मघा, उत्तरा फाल्गुनी, उत्तरा षाढ़ा, उत्तरा भाद्रपद, पर जब तक मंगल रहे तबतक वर्षा नहीं हो ।

मंगलोदय से—

जब मंगल उदय होता है तब राजपूताने में वर्षा हो, ५ दिन में अफीम तेज हो और रूई में १५ टके तक की तेजी हो ।

मंगलोदय राशि से–

मेष—में मंगल उदय हो तो मांस, उड़द, तिल तेज हो।

वृषभ—में चतुष्पद नष्ट हो।

मिथुन—में अन्न तेज हो।

कर्क—में अति वृष्टि एवं धान्योत्पत्ति।

सिंह—में चावल तेज हो।

तुला—में सुभिक्ष, चौराग्नि भय हो।

वृश्चिक—में अन्न की अधिक उत्पत्ति हो।

धनु—में वर्षा अधिक हो।

मकर—में चावल, गुड़ादि तेज हो, पश्चिम में धान्य नाश, अति वृष्टि, प्रथम वृष्टि को खेंच पीछे वर्षा, घृत, गुड़, रक्त वस्तुओं की वृद्धि हो

कुंभ—टिड्डी के आगमन से पीड़ा, अति वृष्टि अथवा मूषकों के कारण धान्य नाश, घी, गुड़, लाल रंग की वस्तुओं की वृद्धि।

मीन—वर्षा न हो, दुर्भिक्ष हो।

मंगलास्त से–

जब मंगल अस्त होता है तब दिन १०५ में तृणादि बाखर वस्तु मंदी जनता एवं शासक सुखी हो।

मंगलास्त राशि से–

मेष—में मंगल अस्त हो तो पाषाण तेज हो।

वृषभ—में अस्त हो तो तृणादि सर्व वस्तु मंदी हो।

मिथुन—में अधिक वर्षा तो कहीं सामान्य वर्षा हो।

कर्क—में धान्य का नाश हो।

सिंह—में खच्चरों को पीड़ा चतुष्पद तेज हो।

कन्या–में गेहूँ, चना आदि तेज हो

तुला–में गेहूँ, चनादि तेज हो

वृश्चिक—में सुभिक्ष शासक से भय हो।

धनु—में चावल, तुष, धान्य व अगर तेज हो।

मकर—में बहुत जल वर्षा एवं चोर भय हो।

कुम्भ–में शासन में उथल-पुथल हो।

मीन—में सुभिक्ष, सुखोदय, सर्प भय हो।

मंगल वक्री से–

मंगल वक्री हो तो दुर्भिक्ष महा भय रक्त वर्णों के सर्व द्रव्य तेज हों एवं अनावृष्टि हो।

मंगल जिस राशि में वक्री हो तो उस राशि के अन्तर्गत की सर्व वस्तुएँ तेज होती हैं।

मंगल वक्री राशि से—

मेष—में वक्री हो तो पृथ्वी पर विशेष दुख दुर्भिक्ष हो और यदि रेवती, अश्विनी, मृग, पुष्य मूल, हस्त, अनुराधा इन नक्षत्रों पर शनि मंगल बक्री हो तो पृथ्वी पर भरपूर दुख हो।

वृषभ–में वक्री हो तो दुर्भिक्ष देश भंग, जनता में महाभय हो।

मिथुन—में मंगल शनि के साथ वक्री हो तो घोर युद्ध दुर्भिक्ष सस्य नाश हो।

कर्क–में मंगल वक्री हो तो गेहूँ अलसी घटा-बढ़ी हो एवं दो देशों में आपसी युद्ध होने की सम्भावना।

सिंह—में मंगल शनि से युक्त होकर दोनों वक्री हों तो संग्राम, जन हानि, आन्तरिक कलह एवं सस्य नाश हो।

कन्या—में मंगल शनि दोनों वक्री हों तो दुर्भिक्ष, युद्ध की सम्भावना जन हानि हो।

तुला—में मंगल वक्री हो तो दुर्भिक्ष, देशभंग, जनता में महा असन्तोष हो।

वृश्चिक—में मंगल वक्री हो तो सस्य वृद्धि व उल्कापात हो।

धनु—में मंगल वक्री हो तो धान्य घृत तेज हों दुर्भिक्ष सस्य नाश, युद्ध, जन हानि एवं भय हो।

मकर—में मंगल वक्री हो तो लोहा, मशीनरी, विद्युत यंत्र, गेहूँ अलसी तेज हो, भूकंप तथा जनता में महा भय हो।

कुम्भ—में मंगल शनि के साथ वक्री हो तो धान्य मन्दा हो। जलयान में हानि, घृत तेल, रसादि वस्तु तेज हो व दिन २० में अलसी, गेहूँ, राई में तेजी हो।

मीन—में मंगल वक्री हो तो धान्य घृत तेज हो व जनता में भय हो और यदि शनि के साथ वक्री हो तो दुर्भिक्ष, सस्य नाश, संग्राम भय जन हानि हो।

माघ अथवा फाल्गुन में कृष्णपक्ष की १-२-३ के दिन मंगल वक्री हो तो अन्न संग्रह करना, १५ दिन के उपरान्त ही लाभ दायक सिद्ध होगा।

मंगल वर्षा काल में वक्री हो तो अनावृष्टि तथा दुर्भिक्ष होने की सम्भावना रहती है।

मंगल मार्गी राशि से—

मंगल मार्गी हो तो रूई मन्दी हो।

मंगल मार्गी राशि से—

मेष—में मंगल मार्गी हो तो चौपाय मन्दे हों तथा शासन में हेर फेर हो।

वृषभ—में मंगल मार्गी हो तो रूई तेज होकर मन्दी हो चांदी में घटा-बढ़ी हो।

मिथुन—में मंगल मार्गी हो तो पश्चिमी देशों में आपस में युद्ध हो।

कर्क—में मंगल मार्गी हो तो महामारी का प्रकोप हो।

सिंह—में मंगल मार्गी हो तो एक मास में अलसी तथा गेहूं तेज हो

कन्या—में मंगल मार्गी हो तो रूई, अलसी, गेहूँ, तेल, तेज होकर मन्दा हो।

तुला—में मंगल मार्गी हो तो गुजरात तथा कच्छ प्रान्त में दुष्काल हो।

वृश्चिक—में मंगल मार्गी हो तो चौपायों का नाश हो।

धनु—में मंगल मार्गी हो तो सभी धान्य मन्दा हो।

मकर—में मंगल मार्गी हो तो पंजाब तथा बंगाल में राज विग्रह हो।

कुंभ—में मंगल मार्गी हो तो वृष्टि अच्छी हो तथा सुभिक्ष होता है।

मीन–में मंगल मार्गी हो तो समुद्र में ज्वार भाटा का विशेष कोप हो तथा मांस व अभक्ष्य पदार्थ मन्दे हों।

सूचना–मंगल के राशि बदलने के समय वृष्टि होती है।

मेष, वृश्चिक की राशियों के बीच में मंगल भ्रमण करे तब तक धान्य तेज रहते हैं।

रवि, राहु, शनि, मंगल मध्यम राशि में उदय हो तो धन धान्य सुवर्ण नाश होता है।

जिस मास में देवयोग से सर्व ग्रह वक्री हो जावे तो उस मास में अति तेजी हो व धान्य नष्ट हो।

(१६) बुध राशि से–

मेष–में बुध हो तो चतुष्पद तेज हों, सोने के समान भाव रहे दिन १७ में गवादि पशु हानि, वर्षा मध्यम, मोती जवाहरात तेज हो

वृषभ–में संपूर्ण संसार में कलह, युद्ध महाभय हो।

मिथुन–में वायु चले और १६ दिन में वर्षा अधिक हो।

कर्क–में प्रजा को दुख अल्प सुभिक्ष दिन ५३ में दुर्भिक्ष-सुभिक्ष सुख-दुख का फेरफार होता रहे।

सिंह—में धान के भाव समान रहे, दही वगैरा खट्टे पदार्थ देव दारू तेज रहे और १८ दिन में सूत्र, वस्त्र आदि तेज हों।

कन्या–में वायु प्रकोप वर्षा अधिक हो जिस दिन कन्या में बुध आवे उस दिन से छः मास के अन्तर्गत सोना खांड आदि प्रथम तेज हो बाद में मन्दा हो।

तुला—में वर्षा हो, धान्य तेज हो युद्धादि कलह अधिक हो पवन का प्रकोप शीत ज्वरादि का भी प्रकोप हो।

वृश्चिक—में चौपाये तेज हों सोना का सम भाव रहे वृष्टि मध्यम हो।

धनु—मृग व हस्ती का नाश, जनता व शासन में विरोध की भावना उत्पन्न हो।

मकर—में अन्नादि का समान भाव सुख-दुख भी समान रहे।

कुंभ—में धान्य की घट-बढ़ एके भाव समान रहे सुख-दुख सम रहे अफीम तेज होकर मन्दी हो।

मीन—में मृग व हस्ती का नाश हो शासन व जनता में विरोध हो १५ दिन के अन्तर्गत रूई, अलसी, मेंथी लोंग तेज हो।

बुध का बिंब बड़ा स्निग्ध और तोता, सुवर्ण व नीलमणि जैसे वर्ण का हो तो हितकारक (सुवृष्टि, सुभिक्ष आदि) और जो उक्त लक्षणों से विपरीत हो तो अहितकारक (अनावृष्टि दुर्भिक्ष आदि) होवे।

बुध नक्षत्र से—

अश्विनी—गेहूँ, चने, यवादि तेज और दिन ९ में इक्षु, दूध, गुड़, खांड रस घृतादि सस्ते हों।

भरणी—हाथियों को पीड़ा, चांडाल नाश, धान्यादि वस्तुएं दिन ८ में तेज हो जनता को पीडा आपसी द्वेष एवं रोग बढ़े।

कृत्तिका—विप्र पीड़ा, अल्प वृष्टि, अन्नोत्पादन कम, जनता में ज्वर, बाधा विग्रह, ८ दिन में चांदी तथा अफींम में हेरफेर हो।

रोहिणी—कपास, तिल, सूत तेज हो ८ दिन में चावल, गुड़,

खाँड़ तेज हो, राई, सन, तुवर मन्दा हो, रूई पहिले तेज हो बाद मन्दी हो।

मृगशिर–सुभिक्ष, वायु चले, वर्षा अधिक हो, गेहूँ, तिल, उड़द मंदे हों ८ दिन के अन्तर्गत जनता सुखी हो।

आर्द्रा–बहु वृष्टि, नदियों में बाढ़ आने से जनता को अधिक से अधिक क्षति हो भाद्रपद मास में तेजी का झटका आवे।

पुनर्वसु–बालकों के रोगों की वृद्धि ८ दिन के अन्तर्गत रूई कपास, सूत मन्दा हो।

पुष्य–शासकीय भय तथा जय हो और दस दिन के अन्तर्गत जनता को चिंता लगे।

अश्लेषा–महावृष्टि, तुष धान्य हो १५ दिन के अन्तर्गत गुजरात आदि प्रदेशों में वृष्टि, तिल उडद तेज हो।

मघा–अल्प वृष्टि, धान्य नाश, जनता भय, सूत, वस्त्र, देवदारू तेज हो।

पूर्वाफाल्गुनी–क्षेत्र बाधा, दस दिन के अन्तर्गत अन्न सस्ता हो।

हस्त–सुभिक्ष, धान्य होय, अरोग्य बढ़े, बद्दल चढ़ के आवे।

चित्रा–अल्प वृष्टि, गणिका, विद्वान एवं शिल्प को पीड़ा की सम्भावना।

स्वाती–वृष्टि मन्दी एवं ८ दिन के अन्तर्गत वृष्टि भी न हो।

विशाखा–सुभिक्ष व्याधिमय तथा कहीं २ दुर्भिक्ष हो व रूई मंदी हो।

अनुराधा–सुभिक्ष, पशु पीड़ा, जनता सुखी, धान्य भाव मध्यम रहे।

ज्येष्ठा—इक्षु, चावल, घृत तेज, अश्वपीडा, रस तेज हो ।

मूल—पशु पक्षी, बालकों में पीड़ा, धान्य मन्दे सर्व सम्पदा हो ।

पूर्वाषाढ़ा—व्याधी, ग्रीष्म ऋतु में भी वर्षा हो ।

उत्तराषाढ़ा—सस्य, निष्पति ८ वर्ष के बच्चे मरें ।

श्रवण—गुड़, अलसी, धान, चना दस दिन में कहीं कहीं तुषार पड़ने से नाश हो ।

धनिष्ठा—गायों को पीड़ा हो ।

शतभिषा—नीच वृत्ति के लोगों को रोग एवं दुर्भिक्ष से पीडा हो ।

पूर्वा भाद्रपद—क्षेम आरोग्य ।

उत्तरा भाद्रपद—शासन में विग्रह पशु पक्षी सुखी हो ।

रेवती—केशरादि वस्तु तेज हो ११ दिन में केशर, मजीठ, करू ब आदि सर्व लाल वस्तु तेज हो ।

बुध नक्षत्र भेदन तथा गति से—

बुध कभी बिना उत्पात के उदय होता ही नहीं इसको उदय होने के समय जल अथवा अग्नि या वायु का भय होता है । रूई, कपास, धान्य की तेजी, कभी कभी मन्दी अवश्य अधिक होती है अर्थात इन वस्तुओं में विशेष घटा-बढ़ी होती है ।

बुध श्रवण, रोहिणी, मृगशिर, उत्तराषाढ़ा नक्षत्रों को भेद कर गमन करे तो अवर्षण व रोग भय हो ।

आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, अश्लेषा, मघा, नक्षत्रों को भेद कर गमन करे तो युद्ध, दुर्भिक्ष, रोग, अवर्षण, संताप का जनता को सामना करना पड़े ।

हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा नक्षत्रों पर बुध ठहर कर योगता को भेद करे तो गायों को अशुभ, तेलादि रसों की वृद्धि हो धान्योत्पन्न अधिक हो।

उत्तरा फाल्गुनी कृतिका, उत्तरा भाद्रपदा, भरणी नक्षत्रों को बुध भेद करे तो प्राणी मात्रों की धातु का नाश करे।

अश्विनी, शत तारका, मूल, रेवती इन नक्षत्रों को बुध भेदन करे तो व्यापारी वैद्य, नाविक, जलोत्पन्न द्रव्य (मुक्ता फलादि) अश्वादिक का नाश हो।

पूर्वा फाल्गुनी, पुर्वाषाढा, पूर्वा भाद्रपदा, नक्षत्रो में से एक को भी बुध भेदन करे तो जनता दुर्भिक्ष, युद्ध, चोर, रोगादिक से भय भीत हो।

प्राकृत गति में बुध हो तो आरोग्य, वृष्टि, धान्य वृद्धि और कल्याण होता है और यदि संक्षिप्त व मिश्र गति में हो तो पूर्वोक्त फल मध्यम होता है। परिवेषा, तीक्ष्णा, योगान्तका, घोरा, पापाख्या इन गति में बुध रहे तो रोग अवर्षण धान्य, व सर्व वस्तु के भाव तेज और उक्त कल्याण होता है।

देवल ऋषि के मतानुसार बुध की ऋण, अतियक्रा, वक्रा विकल ऐसी चार प्रकार की गति हैं जिसमें बुध ऋण गति में ३० दिन, अति वक्रा गति में २४ दिन, वक्र गति में १२ दिन और विकल गति में ६ दिन रहता है।

बुध की ऋण गति जनता की हित करने वाली है, अतिवक्रा गति धातु नाश जिससे धान्य तेज हो। वक्रा गति शस्त्र भय व विकल गति भय व रोग उत्पन्न करती है।

बुधोदय मासों से—

पौष, आषाढ़, श्रावण, बैशाख, माघ मासों में बुध उदय हो तो संसार में भय होता है और इन्हीं मासों में बुधास्त हो तो शुभ दायक होता है।

कार्तिक आश्विन मास में बुध उदय हो तो शस्त्र, चौर, अग्नि, रोग, जल व दुर्भिक्ष का भय हो।

जो वस्तु बुध के अस्त में घेरा गया हो तो वस्तु मन्दी हो और बुधोदय में वह वस्तु तेज हो।

अन्य ज्योतिषियों के मतानुसार यदि पश्चिम की ओर बुधोदय हो तो मंदा हो।

बुध बैशाख, आषाढ, श्रावण, पौष, माघ में बहुधा उदय नहीं होता है किन्तु अन्य मासों में उदय होता है। उदय होने वाले महीनों में तो यदि बुध उदय न हो और उपरोक्त उदय न होने वाले मासों में बुधोदय हो तो अनावृष्टी, दुर्भिक्ष तथा गायों में रोग हो।

ज्येष्ठ में बुधोदय हो तो अति वृष्टि अषाढ़ शुक्ल में उदय हो तो जबतक अस्त न हो तब तक अनावृष्टि तथा धान्य तेज रहे।

भाद्रपद, आश्विन में बुधोदय हो तो अति वृष्टि होती हैं।

फाल्गुन में बुधोदय हो तो रूई में १५ टका की घटा-बढ़ी हो एवं घृत व लाल वस्तु तेज हो।

अषाढ़ कृष्णपक्ष में बुधोदय हो तो एक मास पर्यंत सर्व धान्यादि तेज हो व संसार में विपत्ति हो यदि आषाढ़ शुक्ल में

बुधोदय होश्रौर शुक्रास्त भी श्रावण मास में हो जावे तो अन्न स्वर्ण के समान तेज हो।

शुक्रास्त होने के बाद बुधोदय श्रवण मास में हो तो भाद्रपद में वर्षा न हो। तिल शाल का नाश, कार्तिक में बुध का उदय-कर्ता है।

मार्गशीर्ष में बुधोदय हो तो कपास का उत्पादन कम हो।

श्रावण में बुधोदय अशुभ है, आविश्न में बुधोदय हो तो बहु वृष्टी हो जंगल में कमल फूले, धान अधिक पैदा हो व मन्दे हों और सुभिक्ष हो काड़ा मन्दा हों। दिन १५ में सर्व धातु तेज, रूई में ८ से १० टके तक की मन्दी हो एवं आवरेज भी ३ दिन के अन्तर्गत मन्दा हो।

बुध कार्तिक में उदय हो तो सन तिल साल का विनाश हो। मार्गशीर्ष, पौष, माघ मास में उदय हो तो अशुभ और फाल्गुन में बुधोदय हो तो दुर्भिक्ष, चैत्र बैशाख मास में बुधोदय हो तो शुभ तथा ज्येष्ठ मास में उदय हो प्रबल वर्षा श्रावण में बुधोदय हो तो दुर्भिक्ष, भाद्रपद में बुधोदय कल्याण करे एवं शुभ व बहु वर्षा, आश्विन में बुधोदय हो तो अति वर्षा हो

बुध किसी न किसी प्रकार की उथल-पुथल किए विना उदय नहीं होता उस समय वर्षा, अग्नि, वायु आदि का उपद्रव वस्तुओं में विशेष घटा बढ़ी हो और अस्त के समय इसके विपरीत होता है जैसे—बुधास्त के समय वर्षा हो तो बुधोदय के समय अनावृष्टि और यदि अस्त समय वस्तुए मंदी हो तो उदय के समय तेज हो एवं यदि तेज हो तो मंदे।

सूचना (१) बुधोदय ४० दिन में धान्य तेज, १० दिन के अन्तर्गत रूई में रु० १० से १२ तक की तेजी करे।

(२) आषाढ़ से बुधोदय हो तो ४० दिन में वर्षा न होने दे धान्य में तेजी, रूई में रु० १० तक की मंदी करे।

(३) पूर्व मे बुधोदय हो तो २५ दिन के अन्तर्गत रूई में २० रु० तक की तेजी हो। राजपूताने में वर्षा हो व भाद्रपद में बुधोदय हो तो श्रेष्ठ, सुभिक्ष कर्ता बहु वृष्टि कारक हो।

(४) पश्चिम में बुधोदय हो तो १५ दिन के अन्तर्गत कपास में रु० ८ से ६ तक की मंदी, धान, कपड़ा, रूई मंदा हो परन्तु मार्गशीर्ष में बुधोदय हो तो रूई तेज हो।

बुधोदय राशि से–

मेष में बुधोदय हो तो गवादि चतुष्पद में महापीड़ा व टिड्डी आदि कीडों से धान्य की फसल नष्ट होने से धान्य में तेजी हो।

वृषभ–में बुधोदय हो तो अति वृष्टि हो।

मिथुन–में बुधोदय हो तो अनावृष्टि, पीड़ा व वस्तुएं तेजी हो।

कर्क–में जनता को सुख हो, छ मास तक दुर्भिक्ष रहे एवं अति वृष्टि हो।

सिंह–में बुधोदय हो तो चौपायों का नाश हो।

कन्या–में बुधोदय हो तो धान्य उत्पादन बहुत हो जनता को सुख हो।

तुला–में बुधोदय हो तो भूकम्प युद्धादि व पीड़ा अधिक बढ़े।

वृश्चिक–में बुधोदय हो तो राज भय, सुभिक्ष हो।

धनु–में बुधोदय हो तो जनता सुखी हो।

मकर–में धान्य रसादिक से देश सुखी हो।

कुंभ–में बुधोदय हो तो अति वायु प्रकोप हो।

मीन–में बुधोदय हो तो दुर्भिक्ष वायु प्रकोप व वर्षा हो।

बुधास्त से–

बुध अस्त हो तो रूई १५ दिन के अन्तर्गत मंदी हो शासकवर्ग को पीड़ा अफीम साधारण मंदी होकर तेज हो।

पूर्व में बुधास्त हो तो ३३ दिन में धान्य, घृतादि मंदे हो रूई मे १० से १५ तक की घटा-बढी हो अर्थात पूर्व में तेज बाद मंदी फिर तेज हो।

पश्चिम में बुधास्त हो तो २५ दिन के अन्तर्गत रूई में १० से १५ तक की घटा-बढ़ी हो अर्थात पूर्व में तेज बाद मंदी फिर तेज हो।

पश्चिम में बुधास्थ हो तो १५ दिन के अन्तर्गत रूई में १० से १५ टके तक की मंदी हो और २० दिन के अन्तर्गत राजपूताने में वर्षा हों।

बुधास्त राशियों से—

मेष–में बुधास्त हो तो सुभिक्ष हो।

वृष–में बुधास्त हो तो चतुष्पदों का नाश हो।

मिथुन–में बुधास्त हो तो शासकवर्ग पीड़ित हो।

कर्क– में बुधास्त हो तो अनावृष्टि अकाल मृत्यु चौरादि उपद्रव अधिक हों।

सिंह–में बुधास्त हो तो अल्प वृष्टि हो।

कन्या–में बुधास्त हो तो अति वृष्टि चौरभय एवं किराने की वस्तुएं तेज हों।

तुला–में बुधास्त हो तो किराने की वस्तुएं तेज हो।

वृश्चिक–में बुधास्त हों तो सप्त धातु तेज हो।

धनु–में बुधास्त हो तो शासक वर्ग भयभीत हो।

मकर–में बुधास्त हो तो नाना रोगादि फैलें व्यवसायियों को अल्प लाभ हो।

कुंभ–में बुधास्त हो तो अति वायु प्रवाह करे तुषार व ओस से वृक्ष व फसल नष्ट हो।

मीन–में बुधास्त हो तो अन्न, धान्य नाश, शासक वर्ग को पीड़ा हो।

बुध वक्री से—

बुध वक्री हो तो इक्षु, गुड़, खांड आदि रस तेज हो और सब धान्य मंदे हों।

बुध वक्री राशि से—

मेष–में बुध वक्री हो तो नारोयल, सुपारो, किराने की वस्तुएं तेज हों।

वृषभ–में बुध वक्री हो तो चांदी घटा बढ़ी चलकर तेज हो।

मिथुन–में बुध वक्री हो तो हरी-सब्जी व साग आदि में मंदी हो तथा रूई में तेजी हो।

कर्क–में बुध वक्री हो तो सम्पूर्ण पदार्थ मंदे हों।

सिंह–में बुध वक्री हो तो सम्पूर्ण धान्य तेज हो तथा तांबा, पीतल आदि धातुओं में भी तेजी का रुख आवे।

कन्या—में बुध वक्री हो तो सर्व वस्तु मंदी तथा रूई में तेजी का झटका आकर बाद में हो।

तुला—में बुध वक्री हो तो व्यापारियों में अशांति हो तथा सोना तेज हो।

वृश्चिक—में बुध वक्री हो तो गुड़, शक्कर आदि तेज एवं अन्न मंदी हो।

धनु—में बुध वक्री हो तो मेवा तथा फलादि पदार्थ तेज हों।

मकर—में बुध वक्री हो तो सम्पूर्ण तेल पदार्थ तेज हो धान्य मन्दा हो।

कुंभ—में बुध वक्री हो तो रस व कस में प्रथम तेजी होकर मंदा हो।

मीन—में बुध वक्री हो तो चावल, धान, शक्कर, घृतादि में तेजी होकर मंदी हो तथा रूई कपास वस्त्र मंदा हो।

बुध, गुरु, शुक्र तीनों ग्रह एक साथ वक्री हो तो १५ दिन के अन्तर्गत धान्य, घृत, गुड़, रूई आदि मंदे होंव जनता सुखी हो।

बुध मार्गी से—

बुध मार्गी हो तो १५ दिन के अन्तर्गत कपूर, चन्दन, अगर, अफीम आदि वस्तुएं तथा रेशम मंदा हो।

बुध मार्गी राशि से—

मेष—राशि में बुध मार्गी हो तो चौपाए मंदे हो एवं अलसी का भाव मंदा हो।

वृषभ—में बुध मार्गी हो तो रूई, अलसी, गेहूं, चांदी, शक्कर, सूत, वस्त्र मंदा हो।

मिथुन—में बुध मार्गी हो तो पाट, अश्व, चना, मूंग, मोठ मंदा हो।

कर्क—में बुध मार्गी हो तो चांदी, चपड़ा, चावल मंदा हो एवं जलयान तेज हो।

सिंह—में बुध मार्गी हो तो अंगूर चन्दन, सुपारी, नारीयल तेज हो।

तुला—में बुध मार्गी हो तो घृत, शक्कर, अलसी एवं औषधियां तेज हों।

वृश्चिक—में बुध मार्गी हो तो अरंडा, बिनौला तेज हो तथा जनता में भय उत्पन्न हो।

धनु—में बुध मार्गी हो तो इक्षु, चावल तेज हो शासकवर्ग में विग्रह उत्पन्न हो।

मकर—में बुध मार्गी हो तो वायु का जोर होकर वृष्टि की सम्भावना होती है।

कुम्भ—में बुध मार्गी हो तो सोना, सुपारी, सरसों, सोंठ, लाख चपड़ा तेज हो।

मीन—में बुध मार्गी हो तो गुड़ खांड, तेल, घृत, मूंगफली, एरंडा, बिनौला व रूई मंदा हो।

बर्षा काल में यदि बुध अतिचारी (शीघ्रगामी) हो तो धान्य घृतादि पदार्थ तेज हो।

(१७) गुरू राशियों से—

मेष—राशि में गुरू हो तो सर्वजन सुखी, सुवृष्टी, सुभिक्ष, क्षेम, आरोग्य आदि से देश की जनता सुखी हो।

वृषभ–सुभिक्ष सर्व सुख बढे, गौरस तथा घृत तेज धान्य की फसल अच्छी हो वर्षा अल्प, घास आदि का सुभिक्ष जनता पीडित व विग्रह हो।

मिथुन–भयंकर भय देश के शासकवर्ग में आपसो झगड़े स्वल्प वृष्टि हो, रूई में अति मन्दी, एक वर्षोपरान्त पश्चिमी व उत्तरी देशों में दुर्भिक्ष, तांवा, चांदी, नारियल, तैल, घृत, सुपारी व अफीम आदि में प्रथम मंदी बाद तेज हों पांच माह के बाद मंदी हो।

कर्क–स्वल्प वर्षा, दुर्भिक्ष या महावृष्टि, देश भंग या आंतरिक कलह हों।

सिंह–बहु वर्षा, दुर्भिक्ष, बहुसस्योंत्पत्ति परन्तु गेहूँ व घृत तेज हों।

कन्या–उत्तम वृष्टि सुभिक्ष सर्व धान्य मंदे जनता में कहीं आरोग्य तो कहीं रोग बढ़े, पशुओं को पीड़ा, ज्वार, मूंग, मोठ, चावल, घृत, तैल, सिंघाड़ा में छ मास बाद तेजी हों रूई के संग्रह से ३-४ माह के अन्तर्गत लाभ की सम्भावना चांदी में साधारण मंदी एवं रूई में अति मंदी हो।

तुला–ज्वर से साधारण जनता पीड़ित हो सुभिक्ष परन्तु कहीं कहीं तेजी हो।

वृश्चिक–दुर्भिक्ष वृष्टि हो अधिकांशतः लोग पापी मनोवृत्ति की ओर बढें अनेक प्रकार के उपद्रव, राज, चोर व सर्प का भय हो।

धनु–वर्षा काल में गेहूं आदि अन्न तेज हो खेती निपजे तैल, गुड, मद्य मंदा हो तथा वर्षा अति उत्तम हो।

मकर–घोर दुर्भिक्ष हो पशु क्षय एवं शासक वर्ग में आपसी कलह होने की सम्भावना तीन मास बाद शुभ एवं सुभिक्ष हो

कुंभ–स्वल्प जलवर्षा, खेती का नाश, दुर्भिक्ष की सम्भावना। पूर्व दिशा के देशों में अनाज मंदा हो, धातु, मूल तेज हों।

मीन–पूर्व व दक्षिण के देशों में दुर्भिक्ष होने की सम्भावना यदि दुर्भिक्ष हो भी गया तो अल्प समय बाद ही क्षेम, कुशल व सुभिक्ष हो वस्तुओं का सामान्य भाव रहे।

मीन में गुरू हो तो बड़ा भयानक दुर्भिक्ष हो सागर, तालाब एवं नदियों में जल सूख जाय, चतुष्पदों को पीड़ा हो और यदि गुरू मेष, सिंह व कन्या में हो तो सुभिक्ष हो।

वृषभ, मिथुन, तुला, मकर में गुरू हो तो मध्यम वर्षा हो एवं कर्क, वृश्चिक, कुंभ व मीन में गुरू हो तो दुर्भिक्ष हो।

गुरू का बिंब बड़ी किरणे निर्मल वर्ण कुमुद व कुंद के पुष्प जैसा श्वेत तथा कांति स्फुटिक मणि जैसा स्निग्ध हो भौमादि ग्रहों से युद्ध में पराजित न हो और ग्रहों व नक्षत्रों से उत्तर की ओर निकले तो सुवृष्टि आदि और यदि उक्त लक्षणों से विपरीत हो तो अनावृष्टि आदि हो।

गुरू जिस नक्षत्र पर हो उससे उत्तर में निकले तो सुवृष्टि सुभिक्ष क्षेम दक्षिण में निकले तो अनावृष्टि दुर्भिक्ष अक्षेम और बीच में से निकले तो अवृष्टि आदि साधारण हो।

रोहणी के पांच तारों के बीच में से निकले तो ऐसा उपद्रव हो कि जनता अस्थिर रहे और इन पांचो में से प्रकाशवान् "योग तारे,, के ऊपर से निकले तो प्रजा को पींड़ा हो।

गुरू नक्षत्रों से—

अश्विनी—में गुरु हो तो सुभिक्ष धान्य सम्पदा हो।

भरणी—में गुरू हो तो वर्षा मध्यम एवं कृषि भी मध्यम हो।

कृतिका—में गुरू हो तो कृषि एवं वर्षा दोनों मध्यम हो।

रोहिणी—में गुरू हो तो मध्यम वर्षा व कृषि हो।

मृगशिरा—में गुरू हो तो सर्वत्र क्षेम कुशल, घृत, चावल, तृणादि या तो मंदे हो व वर्षा उत्तम हो या तेज हो व अनावृष्टि हो

आर्द्रा—सर्वत्र क्षेम, कुशल तीन मास के अन्तर्गत दुर्भिक्ष, अनावृष्टि या सुभिक्ष वर्षा हो, घृत, चावल, तृणादि अति तेज हो या अति मंदे हो।

पुनर्वसु—अल्प वर्षा और दुर्भिक्ष हो १२ दिन के अन्तर्गत चांदी रुई में मंदी हो।

पुष्य—में गुरू हो तो स्वल्प वर्षा एवं दुर्भिक्ष हो।

अश्लेषा—में गुरू हो तो स्वल्प वर्षा एवं दुर्भिक्ष हो।

मघा—में गुरू हो तो सुवृष्टि, क्षेम, आरोग्य, सुभिक्ष हो और जनता में सुख शांति रहे।

पूर्वा फाल्गुनी—में गुरू हो तो सुवृष्टि, क्षेम, आरोग्य, सुभिक्ष, जनता में सुख शांति रहे।

उत्तरा फाल्गुनी—में गुरू हो तो क्षेम, आरोग्य, सुवृष्टि, सुभिक्ष जनता में आनन्द की वृद्धि हो।

हस्त—में गुरू हो तो क्षेम, आरोग्य, सुभिक्ष, सुवृष्टि हो एवं जनता का कल्याण हो।

चित्रा—में गुरू हो तो उत्तम विचित्र वर्षा एवं आश्चर्य चकित कृषि हो।

स्वाति—में गुरू हो तो कृषि एवं वर्षा आश्चर्य मय हो।

विशाखा—में गुरू हो तो कृषि व वर्षा मध्यम हो धान्य तेज हो।

अनुराधा—में गुरू हो तो मध्यम वर्षा हो एवं मध्यम कृषि हो तथा सुभिक्ष हो।

ज्येष्ठा—में गुरू हो तो वर्षा ऋतु में केवल दो मास ही वर्षा हो एवं कन्या संक्राति हो तो कदापि वर्षा न हो।

मूल—में गुरू हो तो वर्षा काल में दो मास ही वर्षा हो और यदि कन्या संक्रांति हो तो वृष्टि का अभाव हो कुलथ मूंग की पैदावार अधिक हो।

पूर्वाषाढ़ा—में गुरु हो तो तीन मास तक वर्षा हो और एक मास वर्षा न हो आरोग्य, सुभिक्ष, सुवृष्टि हो।

उत्तराषाढ़ा—में गुरू हो तो वर्षा मौसम में केवल तीन मास वर्षा हो एक मास वर्षा न हो, आरोग्य, सुभिक्ष, सुवृष्टि हो तथा गुड़ तेज हो।

श्रवण—में गुरू हो तो क्षेम सुभिक्ष तथा आरोग्य हो।

धनिष्ठा—में गुरु हो तो क्षेम, आरोग्य व सुभिक्ष हो।

शतभिषा—में गुरु हो तो सुभिक्ष क्षेम तथा आरोग्य हो।

पूर्वाभाद्रपदा—में गुरू हो तो अनावृष्टि भय घोर दुर्भिक्ष हो।

उत्तराभाद्रपदा—में गुरु हो तो अनावृष्टि भय और घोर दुर्भिक्ष हो।

रेवती—में गुरु हो तो सुभिक्ष क्षेम आरोग्य बहु सस्योत्पत्ति अनावृष्टि, दुर्भिक्ष हो।

गुरू नक्षत्र चरण से—

रोहणी द्वितीय चरण में गुरू १८ दिन के अन्तर्गत वर्षा का अभाव, पशु पीड़ा, सर्व रत्न, धान्य, चांदी तेज एवं सुपारी, मिर्च सरसों राई, हींग, तैल, खजूर, हल्दी मंदी तथा रुई, सन गुड़ खांड में घटा-बढ़ी करता है।

रोहिणी तृतीय चरण में गुरु हो तो १६ दिन में तिल, तैल, घृत, गुड़, खांड, वस्त्र, गेहूँ, जव चने तेज और कलिंग व गौड देश में विग्रह हो।

रोहिणी के चतुर्थ चरण में गुरु हो तो १६ दिन के अन्तर्गत ज्वार, गेहूँ, जव, चने, मसूर, सरसों, तिल, तैल, घृत, गुड, खांड, लवण, मधु, सौंठ, मिरच, पीपल, रुई, सूत और कपड़ा मंदा हो।

मृगशिर के प्रथम चरण का गुरु १३ दिन के अन्तर्गत तिल कपास तेज करे एवं युद्ध की स्थिति में परिवर्तन हो।

मृगशिर के द्वितीय चरण में गुरु हो तो जनता में नाना रोग उपद्रव उत्पन्न हों एवं धान्य, तिल, कंदमूल आदि तेज हो।

मृगशिर के तृतीय चरण में गुरु हो तो रोगोपद्रव हों, धान्य में साधारण तेजी हो।

आर्द्रा के प्रथम एवं द्वितीय चरण में गुरु हो तो १८ दिन के अन्तर्गत स्वर्णादि, सर्व धातु, मोती आदि सर्व रत्न, नारियल, लोंग सर्व सुगंध पदार्थ, सर्व रस तेज हों।

आर्द्रा के तृतीय चरण में गुरु हो तो २५ दिन के अन्तर्गत स्वर्णादि धातु, सर्व रस, तिल, तैल तेज हो एवं कर्नाटक तथा समुद्रीय-तट के प्रान्तों में कुछ उपद्रव हों।

आर्द्रा के चतुर्थ चरण में गुरु हो तो २५ दिन के अन्तर्गत सुगंधित पदार्थ, सर्व रस एवं गेहूं मंदे हों तथा मगध, कन्नौज और मरुस्थल के आस-पास के क्षेत्र में कहीं कहीं वृष्टि हो।

उत्तरा फाल्गुनी के प्रथम चरण में गुरू हो तो चांदी, दाल मंदा हो तथा मोती के भी मंदे होने की सम्भावना हो।

उपरोक्त नक्षत्र चरणों के अतिरिक्त कुछ फल गुरु नक्षत्र चरण से और हैं वे दे रहे हैं।

मृगशिरा १, आर्द्रा २, पुनर्वसु ३, पुष्य ४, अश्लेषा ५, चित्रा ६, स्वाती ७, विशाखा ८, अनुराधा ९, ज्येष्ठा १०, मूल ११, पूर्वाषाढ़ा १२, उत्तराषाढ़ा १३, इन १३ नक्षत्रों में गुरू हो तो शुभ शेष में अशुभ फल दायक होता है।

स्वाति १, विशाखा २, अनुराधा ३, ज्येष्ठा ४, मूल ५, पूर्वाषाढा ६, उत्तराषाढ़ा ७, श्रवण ८, अश्विनी ९, भरणी १०, कृतिका ११ इन ग्यारहों नक्षत्रों में गुरू शनि या राहु या मंगल से युक्ति हो तो जब तक इन से योग रहे तब तक सुभिक्ष रहे।

मृगशिर १, आर्द्रा २, पुनर्वसु ३, पुष्य ४, अनुराधा ५, मघा ६, पूर्वा फाल्गुनी ७, उत्तरा फाल्गुनी ८, हस्त ९, चित्रा १०, धनिष्ठा ११, शतभिषा १२, पूर्वाभाद्रपदा १३, उत्तरा भाद्रपदा १४, रेवती १५ इन पन्द्रह नक्षत्रों में गुरू शनि या राहु, या मंगल से युक्त हो एवं गमन करे तो दुर्भिक्ष हो।

एक राशि में एक नक्षत्र में गुरू शनि राहु या मंगल का योग हो तो महा भय हो।

गुरु अतिचार गति में हो और शनि वक्री हो तो सर्व जाति में हाहाकार मचे एवं महायुद्ध होने की संभावना हो ।

शुभ ग्रह अतिचार गति का और पाप ग्रह वक्री हो तो छत्र भंग लोगों का नाश पीडा व पशु पीड़ा हो ।

गुरोदय से—

दो मास में शासक वर्ग में विग्रह दुर्भिक्ष भय, धान्य तेज गणितज्ञों को पीडा हो ।

गुरोदय राशि से—

मेष—राशि में गुरु उदय हो तो अति वृष्टि, दुर्भिक्ष, उत्तम जन की मृत्यु हो ।

वृषभ—में गुरु उदय हो तो सुभिक्ष, पाषाण, शाल, मणि रत्नादि तेज हो ।

मिथुन—में गुरु उदय हो तो गणिका को पीड़ा हो ।

कर्क—में गुरु उदय हो तो जनमृति अल्प जल वर्षा हो ।

सिंह—में गुरु उदय हो तो बहुत धान्य लाभ हो ।

कन्या—में गुरु उदय हो तो बच्चों व गणिका को तथा वृद्धों को पीड़ा हो ।

तुला—में गुरु उदय हो तो कश्मीरी चन्दन, फलों में तेजी, अनावृष्टि तथा व्यापार में अति लाभ हो ।

वृश्चिक—में गुरु उदय हो तो दुर्भिक्ष हो ।

धनु—में गुरु उदय हो तो अल्पवर्षा व लोगों में रोग बढ़े ।

मकर—में गुरु उदय हो तो बहुत धान्य उत्पन्न हो एवं बहु वृष्टि भी हो ।

कुंभ—में गुरु उदय हो तो सर्व देश में बहु वृष्टि एवं अन्न तेज हो।

मीन—में गुरु उदय हो तो अल्पवृष्टि एवं जनता नाना प्रकार के कलेशों से पीडित हो।

गुरोदय मासों से—

चैत्र—मास में गुरु उदय हो तो विचित्र जल वृष्टि धान्य की उत्पत्ति अच्छी हो।

वैशाख—में गुरू उदय हो तो सर्व सुख एवं सुभिक्ष हो।

ज्येष्ठ—में गुरू उदय हो तो जल निरोध, रोगोत्पत्ति व अकाल मत्यु हो।

आषाढ़—में गुरू उदय हो तो युद्ध, अन्न तेज दुर्भिक्ष तथा अनावृष्टि हो।

श्रावण—में गुरू उदय हो तो आरोग्य वृद्धि बहु वर्षा लोग सुखी हो।

भाद्रपद—में गुरु उदय हो तो कृषि नष्ट हो, चोरों का भय हो।

आश्विन—में गुरु उदय हो तो सुभिक्ष सुख एवं मध्यम वर्षा हो।

कार्तिक—में गुरु उदय हो तो अवर्षण, धान्य नाश, जनता में पीडा हो।

मार्गशीर्ष—में गुरु उदय हो तो अल्पवृष्टि, धान्य की निकासी अच्छी रहे, जनता सुखी।

पौष—में गुरु उदय हो तो निरोगता, सुवृष्टि सर्व धान्य अच्छे उत्पन्न हों।

माघ—में गुरु उदय हो तो खण्ड वृष्टि धान्य की उत्पत्ति उत्तम हो।

फाल्गुन—में गुरु उदय हो तो खंड वृष्टि हो।

गुरू अस्त से—

गुरु अस्त हो तो ३१ दिन में दुर्भिक्ष का भय, रुई में रुपये १० से २० तक की मंदी हो।

गुरू अस्त राशियों से—

मेष—राशि में गुरु अस्त हो तो अल्पवृष्टि दुर्भिक्ष हो।

वृषभ—राशि में गुरु अस्त हो तो दुर्भिक्ष हो।

मिथुन—में गुरु अस्त हो तो तैल, घृत, लवण तेज हो अल्प-वृष्टि एवम् मृत्युएं अधिक हो।

कर्क—में गुरु अस्त हो तो शासन का भय, कुशल सुभिक्ष हो।

सिंह—में गुरु अस्त हो तो देश में अशांति धनादि नाश हो।

कन्या—में गुरु अस्त हो तो सर्व धान्य मंदे हो क्षेम सुभिक्ष एवं अन्य सभी वस्तुओं के मंदे होने की सम्भावना हो।

तुला—में गुरु अस्त हो तो विद्वान वर्ग पीडित हो धान्य का भाव मंदा हो।

वृश्चिक—में गुरु उदय हो तो जनता नेत्र रोगों से पीड़ित हो।

धनु—में गुरु उदय हो तो शासक वर्ग में भय एवं चोरों का उत्पात अधिक हो।

मकर—में गुरु उदय हो तो उड़द, तिल का उत्पादन अधिक हो।

मीन—में गुरु उदय हो तो सुभिक्ष धान्य मंदे हों, सुवृष्टि हो। दिन ३१ में दुर्भिक्ष का भय एवं रुई में रु० १० से रु० २० तक की मंदी हो यदि फाल्गुन मास में गुरु मीन राशि में अस्त हुआ हो।

गुरू वक्री से—

गुरु वक्री हो तो जगत में सुभिक्ष हो एवं गौ का दूध घृत आदि मंदे हों, तथा जनता सुखी हो।

मघा नक्षत्र में गुरु वक्री हो तो सुभिक्ष शासक वर्ग सुखी घृत तेज हो।

शनि १० या ११ का हो उस समय गुरु वक्री हो तो धान संग्रह करने से अति लाभ हो।

गुरु वक्री हो तो १५ दिन के अन्तर्गत धातु, रुई, कपूर, केशर मंदी हो।

गुरू वक्री राशि से—

मेष—राशि में गुरु वक्री हो तो महायुद्ध-महामारी और जनता में पीड़ा हो।

वृषभ—में गुरु वक्री हो तो चौपायों में पीड़ा, सोना तेज हो।

मिथुन—में गुरु वक्री हो तो किराना, पीतल आदि धातु तेज हो।

कर्क—में गुरु वक्री हो तो जगत में अति वृष्टि धान्य की कृषि नष्ट हो।

सिंह—में गुरु वक्री हो तो जनता में सुख वृद्धि तथा वृष्टि उत्तम हो।

कन्या—में गुरु वक्री हो तो घृत, तेल, सरसों, तिल्ली आदि रसादि पदार्थ तेज हों।

तुला—में गुरु वक्री हो तो दो शासकों में युद्ध सर्व धान्य, रस गुड़, तिल, तेल, कपास, नमक आदि १० मास के अन्तर्गत तेज हों।

वृश्चिक—में गुरु वक्री हो तो परस्पर युद्ध की संभावना, दुष्ट-काल होने के उपरांत ३ माह के अन्तर्गत सम्पूर्ण वस्तुयें तेज हों।

धनु—राशि गत गुरु वक्री हो तो शेअर्स मंदे हों।

मकर—में गुरु वक्री हो तो महाराष्ट्र, मद्रास आदि प्रांतों में धान्य नाश तथा अनावृष्टि हो।

कुंभ—का गुरु वक्री हो तो पाश्चात देशों में राज्य भंग तथा जनता में भय की आशंका हो।

मीन—राशि गत गुरु वक्री हो तो ४ मास तक संपूर्ण वस्तु सस्ते हों तथा सुभिक्ष हों।

गुरु, शनि दोनों एक साथ वक्री हो तो नवम मास में गेहूँ, तिल तेज हो।

शनि अतिचारी हो और गुरु वक्री हो तो पृथ्वी पर धन धान्य की वृद्धि हो और यदि फाल्गुन मास में गुरु वक्री हो तो धान्य तेज हो।

गुरू मार्गी से—

गुरु मार्गी हो तो चांदी, सरसों तेज हों तथा लाख रुई, चावल १२ दिन के अंतर्गत मंदे हों एवं घृत के भाव तेज हों।

गुरू मार्गी राशियों—

मेष—राशि गत गुरू मार्गी हो तो इक्षु, कपड़ा मंदा हो, और घृत, तेल तेज होकर मंदे हों।

वृषभ—में गुरू मार्गी हो तो रूई, चावल, सुवर्ण, सूत्र, वस्त्र आदि मंदे हों।

मिथुन—का गुरू मार्गी हो तो जनता में सौख्य तथा सुभिक्ष हो।

कर्क—में गुरू मार्गी हो तो समुद्रीय जन्तु मंदे हो तथा अति वृष्टि हो।

सिंह—में गुरू मार्गी हो तो रुई, चांदी, चावल, घृत प्रथम तेज हो बाद दो मास में मंदे हों।

कन्या—का गुरू मार्गी हो तो रूई, चांदी में अति मंदी हो तथा उत्तरी-दक्षिणी अमेरिकन अथवा समीपवर्ती द्वीपों में कहीं भी राज्य क्रांति की सम्भावना उत्पन्न हो।

तुला—में गुरू मार्गी हो तो अफीम व शेअर्स से ६ मास के अन्तर्गत लाभ उठाया जा सकता है।

वृश्चिक—में गुरू मार्गी हो तो जनता में भय एवं माहामारी उत्पन्न हो।

धनु—में गुरू मार्गी हो तो पूर्वीय देशों में सुभिक्ष हो।

मकर—में गुरू मार्गी हो तो जलयान सम्बन्धी उपद्रव हो तथा पारस्परिक विग्रह होने की सम्भावना हो।

कुंभ—में गुरू मार्गी हो तो पाश्चात्य देशों में परस्पर युद्ध तथा सौराष्ट्र, गुर्जर, पांचाल आदि प्रान्तों में राज्य भय हो।

मीन-राशि गत गुरु मार्गी हो तो उत्तर पांचाल, काश्मीर, कुरुक्षेत्र आदि प्रान्तों में अति वृष्टि होने के कारण धान्यों का नाश हो।

गुरू ग्रह योग से—

गुरू, शुक्र तथा बुध अतिचार गति के हों और शनि मंगल पापग्रह वक्री हों तो भय, रोगादि हों।

शुक्र राशियों से—

मेष-में शुक्र हो तो धान्य तेज हो, पशु पीड़ा, २५ दिन के अन्तर्गत कहीं-कहीं वर्षा हो।

वृषभ-में शुक्र हो तो सर्व तेज हों एवं २६ दिन के अन्तर्गत अफीम व रूई मंदी हो।

मिथुन-में शुक्र हो तो नित्य वायु चले, जल वृष्टि हो, २५ दिन में रुई मंदी हो।

कर्क-में नित्य वायु चले जल वृष्टि हो छः मास के अन्तर्गत अन्न तेज, खंड वृष्टि सर्व वस्तु तेज हो २६ दिन के अन्तर्गत रूई का भाव बढे।

सिंह-में शुक्र हो तो सुवर्ण लाल रंग की वस्तुए तेज हों चतुस्पद पीड़ा, सर्व धान्यादि तेज हो।

कन्या-राशि गत शुक्र हो तो कृषि नष्ट हो धान्य तेज हो शाल में अति तेजी हो २७ दिन में रुई मंदी हो।

तुला-में शुक्र हो तो पृथ्वी पर क्षेम, आरोग्य, कुछ कुछ विरोध बढे।

वृश्चिक—में शुक्र हो तो सर्व धान्य मंदे हों जनता में सुख व स्वास्थ्य बढे, ३३ दिन के अन्तर्गत रूई मंदी हो।

धनु—में शुक्र हो तो सर्व धान्य तेज हो कृषि नष्ट हो रूई की कृषि एक मास के अन्तर्गत नष्ट हो।

मकर—में शुक्र हो तो सर्व प्रकार की कृषि नष्ट हो एवं २० दिन के अन्तर्गत सर्व अनाज एवं रस तेज हों।

कुंभ—में शुक्र हो तो अत्यंत वृष्टि और सुभिक्ष हो एवं पृथ्वी पर सुख बढे।

मीन—में शुक्र हो तो सुख बढे २५ दिन के अन्तर्गत रूई तेज हो एवं धान मंदे हो एवं प्रचुर सुभिक्ष हो लोक सुखी हो।

शुक्र नक्षत्र से—

अश्विनी—नक्षत्र में शुक्र हो तो अश्वपति को पीड़ा हो १२ दिन में तिल, जव, उड़द, अलसी, चना, सोंठ सर्व रस, धातु, ऊन मंदा हो।

भरणी—में शुक्र हो तो १२ दिन के अन्तर्गत, चाँदी, रक्त, द्रव्य, नारियल मंदा हो एवं चना, तुवर, मोठ, धान्य में घटा-वढ़ी हो।

कृतिका—में शुक्र हो तो पातक वृष्टि हो ११ दिन के अन्तर्गत रूई सूत, चाँदी, घृत, हींग, खजूर, कपास, तेल, तिल एरंड, सरसों मंदा हो।

रोहिणी—में शुक्र हो तो पातक वृद्धि; जन संहार, १२ दिन के अन्तर्गत सर्व सम्पदा गो को पीड़ा, अफीम तेज दाख, खारक सुपारी मंदे हों।

मृगशिर—में शुक्र हो तो धान्य नाश, मधुरादि पदार्थ, रस तेज हो १२ दिन में गौ पीड़ा चना आदि तुष धान्य मंदा हो. जगत में सम्पत्ति रहे।

आर्द्रा—में शुक्र हो तो अति वृष्टि कौशल, कलिंग क्षेत्रों में जनता दुखी हो, सुभिक्ष हो।

पुनर्वसु—में शुक्र हो तो अस्मक व विदर्भ क्षेत्रों में जन नाश १२ दिन के अन्तर्गत धान्य तेज हो व रुई मंदी हो जनता में भय, कहीं वर्षा हो।

पुष्य—में शुक्र हो तो बहु वृष्टि १२ दिन के अन्तर्गत नामी चोर या दस्यु का अन्त हो, लाख, चपड़ी, गुड़, कपूर, पारा, हिंगुल, लौंग मंदा हो।

अश्लेषा—में शुक्र हो तो सर्प से मानव पीडित हों, १२ दिन के अन्तर्गत वर्षा कहीं कहीं खेंच, तुअर, चावल, मोठ, चना, तुष, धान्य मंदा हो।

मघा—में शुक्र हो तो वृष्टि हो महावत का नाश हो धान्य तेज हो चतुष्पदों को पीड़ा हो।

पूर्वा फाल्गुनी—में शुक्र हो तो बृष्टी श्रेष्ट १४ दिन के अन्तर्गत धान्य में साधारण मंदी हो।

उतरा फाल्गुनी—में शुक्र हो तो वृष्टि हो १२ दिन के अन्तर्गत धान्य में साधारण तेजी हो।

हस्त—में शुक्र हो तो वर्षा न हो १३ दिन में जनता को कुछ पीड़ा हो धान्य मन्दा हो धान्य का संग्रह करने से भविष्य में लाभ की सम्भावना हो।

धनु–में शुक्रोदय हो तो अवर्षण हो ।

मकर–में शुक्रोदय हो तो धान्य तेज हो ।

कुंभ–में शुक्रोदय हो तो अनावृष्टि एवं चतुष्पद नाश हो ।

मीन–में शुक्रोदय हो तो सुभिक्ष, जनता सुखी एवं उत्तम वर्षा हो ।

शुक्रोदय मास से—

चैत्र–में शुक्रोदय हो तो ऐश्वर्य ऐवं वृक्ष फले फूलें ।

बैशाख–में शुक्रोदय हो तो दुर्भिक्ष एव युद्ध की सम्भावना हो ।

ज्येष्ठ–में शुक्रोदय हो तो अति वृष्टि, बहु दूध, घृत एवं गौ हो एवं सुभिक्ष हो ।

आषाढ़–में शुक्रोदय हो तो जल दुर्लभ हो एवं दुर्भिक्ष हो ।

श्रावण–में शुक्रोदय हो तो चतुरपद नाश एवं तेज हो ।

भाद्रपद–में शुक्रोदय हो तो अनाज की वृद्धि हो ।

आश्विन–में शुक्रोदय हो तो सर्व सम्पत्ति बढे ।

कार्तिक–एवं मार्गशीर्ष में शुक्रोदय हो तो शुभ हो ।

पौष–में शुक्रोदय हो तो छत्र भंग एवं अति तेजी हो ।

माघ–में शुक्रोदय हो तो शासन में उथल-पुथल हो एवं शासन परिवर्तन की सम्भावना हो आगामी वर्ष में जल वृष्टि हो तथा सर्व वस्तु तेज हो ।

फाल्गुन–मास में शुक्रोदय हो तो अर्थ वृद्धि, एवं भिखारियों की वृद्धि तथा वर्षा कम हो ।

सिंह का शुक्र, तुला का मंगल, कर्क का गुरु जब हो तब धूलि वर्षा वायु चले अनाज तेज हो।

एक मास के एक ही पक्ष में शुक्रास्त एवं उदय हो तो सहस्त्रों लोगों का खून खराब हो।

आषाढ़, श्रावण, पौष, वैशाख में शुक्र उदय हो तो चतुष्पद नाश, जनता में पीड़ा, दुर्भिक्ष एवं शासन विग्रह हो।

शुक्रोदय नक्षत्र मण्डल से—

मेघद्वार—भरणी से आठ नक्षत्र में—१ भरणी, २ कृतिका, ३ रोहिणी, ४ मृगशिर, ५ आर्द्रा, ६ पुनर्वसु, ७ पुष्य, ८ अश्लेषा इनमें शुक्र उदय हो तो मेघ वृष्टि जनता में सुख, सर्व वस्तु मंदा एवं धान्य बहु उत्पन्न हो।

धूलीद्वार—मघा से पांच नक्षत्र में—१ मघा, २ पूर्वा फाल्गुनी, ३ उत्तरा फाल्गुनी, ४ हस्त, ५ चित्रा इन पांच नक्षत्र में शुक्र उदय हो तो जनता को दुख, जल नाश एवं उपद्रव बढ़े।

राजद्वार—स्वाति से सात नक्षत्र में—१ स्वाति, २ विशाखा, ३ अनुराधा ४ ज्येष्ठा, ५ मूल, ६ पूर्वाषाढा, ७ उत्तराषाढ़ा इनमें शुक्र उदय हो तो जनता में भय, शासक वर्ग में क्लेश हो।

कनकद्वार—श्रवण से सात नक्षत्र में—१ श्रवण, २ धनिष्टा, ३ शतभिषा, ४ पूर्वाभाद्रपद, ५ उत्तरा भाद्रपद, ६ रेवती, ७ अश्विनी इनमें शुक्र उदय हो तो सुवृष्टि, बहु लोक, सुखी व सुभिक्ष हो।

शुक्रोदय नक्षत्र दिन से—

अश्विनी–नक्षत्र में शुक्रोदय हो तो यव, तिल, उड़द स्वल्प उत्पन्न हो।

भरणी–में शुक्रोदय हो तो तुष धान्य तेज हो तिल नाश एवं सरसों उड़द अल्प उत्पन्न हो।

कृतिका–में शुक्रोदय हो तो सर्व धान्य उत्तम उत्पत्ति हो।

रोहिणी–में शुक्रोदय हो तो आरोग्यता रहे।

मृगशिर–में शुक्रोदय हो तो धान्य तेज हो।

आर्द्रा–में शुक्रोदय हो तो अल्प वृष्टी हो।

पुनर्वसु–में शुक्रोदय हो तो अनाज, मधु नाश हो।

पुष्य–में शुक्रोदय हो तो दुर्भिक्ष भय हो।

अश्लेषा–में शुक्रोदय हो तो अवृष्टि चौर भय हो।

मघा–में शुक्रोदय हो तो कष्ट हो।

पूर्वा फाल्गुनी–में शुक्रोदय हो तो जनता को दुख हो।

उत्तरा फागुनी–में शुक्रोदय हो तो जनता दुखी हो।

हस्त–में शुक्रोदय हो तो अति वृष्टि हो।

चित्रा–में शुक्रोदय हो तो रोग, वृष्टि अधिक हो।

स्वाति–में शुक्रोदय हो तो क्षेम सुभिक्ष हो।

विशाखा–में शुक्रोदय हो तो वृक्ष सूखें तथा तुष, धान्य तेज हों।

अनुराधा–में शुक्रोदय हो अल्प वृष्टि, चतुस्पद पीड़ा हो।

शेष नक्षत्रों का फल उपरोक्त राजद्वार व कनकद्वार के अनुसार समझना चाहिए।

शुक्रोदय शुक्ल पक्ष तिथि से—

प्रतिपदा, षष्ठी एवं एकादशी इन तिथियों में शुक्रोदय हो तो युद्ध अनाज तेज हो अति उत्तम वर्षा, जनता सुखी हो।

द्वितीया अष्ठमी, द्वादशी–इन तिथियों में शुक्रोदय हो तो युद्ध, खंड वृष्टि, दुर्भिक्ष हो,

तृतीया, अष्ठमी, त्रयोदशी–इन तिथियों में शुक्रोदय हो तो भूकंप, छत्र भंग व युद्ध हो।

चतुर्थ, नवमी, चतुदर्शी–इन तिथियों में शुक्र उदय हो तो नर चतुस्पदों आदि को पीड़ा व काल हो।

पंचमी, दशमी एवं पूर्णिमा–इन तिथियों में शुक्रोदय हो तो पृथ्वी पर सर्व सुख हो।

शुक्रोदय कृष्ण पक्ष तिथि से—

प्रतिपदा, द्वितिया, तृतीया एवं चतुर्थ–इन तिथियों में शुक्र उदय हो तो सम्पूर्ण जनता सुखी हो एवं चोर उपद्रव की वृद्धि हो।

पंचमी, षष्टी, सप्तमी एवं अस्ठमी–इन चार तिथियों में शुक्रोदय हो तो चोर लोग सुखी हो एवं शासक वर्ग में आपसी द्वेष उत्पन्न हो।

नवमी दशमी एकादशी द्वादशी–इन तिथियों में शुक्रोदय हो तो दुर्भिक्ष वानारिका सुख एवं देशीय युद्ध हो।

त्रयोदशी, चतुर्दशी, अमावस्या--इन तिथियों में शुक्रोदय हो तो दुख, असुख अचिंति काल पड़े।

वर्षाकाल में शुक्र पिछली रात को पूर्व में दिखे तो वर्षा तो कम हो किन्तु धान्य तथा घास अति उत्पन्न हो और आगामी रात्रि को पश्चिम में दिखे तो वर्षा अधिक किन्तु धान्य व घास कम उत्पन्न हो।

शुक्र स्वाति, विशाखा, अनुराधा पर होके पूर्व में दिखता हो तो वर्षा नहीं हो किन्तु इन नक्षत्र में होके पश्चिम में दिखे तो अधिक वर्षा हो।

मघा, पूर्वा फाल्गुनी, उत्तरा फाल्गुनी हस्त व चित्रा पर शुक्र होके पश्चिम में दिखे तो वर्षा न हो किन्तु इन नक्षत्रों पर होकर शुक्र पूर्व में दिखे तो वर्षा अधिक हो।

शुक्रास्त से—

शुक्र अस्त हो तो सोना, चांदी, तेज हो तथा रूई में अति उथल-पुथल हो, रोग, वृद्धि सर्व वस्तु में लाभ उत्तर में सुभिक्ष मारवाड़ में दुर्भिक्ष पहाड़ी देशों में रोग का उपद्रव हो।

शुक्र शनि जब दोनों एक राशि पर अस्त हो तो अन्न का भाव अति तेज हो एवं देश-देश में विग्रह हो।

शुक्रास्त राशि से—

मेष—राशि गत शुक्रास्त हो तो सर्व धान्य व रस तेज हों।

वृषभ—राशि गत शुक्रास्त हो तो चतुस्पद में पीड़ा, धान्य को उत्पति अल्प हो।

मिथुन—में शुक्रास्त हो तो जनता में भय एवं सुवृष्टि उत्तम हो।

कर्कराशि–गत शुक्रास्त हो तो अवश्य बहुवृष्टि हो लोगों को पीड़ा हो।

सिंह–में शुक्रास्त हो तो शासक वाढ़ पीड़ित, अनावृष्टि भय चतुस्पद एवं धान्य नाश हो।

कन्या–में शुक्रास्त हो तो वैद्यों तथा सूत्र-धार को पीड़ा एवं व्यापारियों को कष्ट हो।

तुला–में शुक्र अस्त हो तो अनावृष्टि एवं शासक वर्ग को कष्ट हो।

वृश्चिक–में शुक्रास्त हो तो दुर्भिक्ष व अनावृष्टि हो।

धनु–में शुक्रास्त हो तो स्त्री संज्ञक धान्य नाश हो एवं ज्वार मक्की, साल आदि का दुर्भिक्ष हो।

मकर–में शुक्र अस्त हो तो धान्य मंदा हो एवं अन्न धान्य नष्ट हो।

कुंभ–में शुक्र अस्त हो तो विद्वान जनों को कष्ट हो।

मीन–में शुक्रास्त हो तो अति वृष्टि बहु रोग नाश जनता सुखी, कृषि अति उत्तम, मांगलिक कार्यों की अधिकता, सुभिक्ष हो।

शुक्रास्त मास से—

चैत्र–मास में शुक्र अस्त हो तो छः मास पर्यंत दुर्भिक्ष धान्य नाश हो

वैशाख–में शुक्रास्त हो तो अकाल पड़े चतुस्पदों में पीड़ा प्रबल, धान्य नाश हो।

ज्येष्ठ—में शुक्रअस्त हो तो महावृष्टि से जनता को क्षय हो।

आषाढ़—में शुक्र अस्त हो तो अनावृष्टि हो।

श्रावण—में शुक्रास्त हो तो महाकाल हो।

भाद्रपद—में शुक्रास्त हो तो धन धान्यादि की वृद्धि हो।

आश्विन--में शुक्र अस्त हो तो सुभिक्ष वृष्टि उत्तम हो।

कार्तिक--में शुक्र अस्त हो तो उत्तम वृष्टि हो।

मार्गशीर्ष--में शुक्रास्त हो तो उत्तम वर्षा शासकवर्ग में आपसी द्वेष जनता सुखी हो।

पौष--में शुक्रास्त हो तो शासन में परिवर्तन हो।

माघ--में शुक्रास्त हो तो शासक वर्ग पर अविश्वास हो एव उसमें परिवर्तन हो।

फाल्गुन--मास में शुक्रअस्त हो तो महा अग्नि भय है।

शुक्लपक्ष--में शुक्र उदय हो अथवा अस्त हो तो शासक वर्ग में आपसी कलह हो जिससे एक दूसरे के मृत्यु के कारण बने।

कार्तिकमास--में शुक्र अस्त होकर कार्तिकमास में ही उदय हो तो उस दिन से ३ मास तक वर्षा न हो।

आषाढ़शुक्ल--पक्ष में बुध उदय हो और श्रावण शुक्ल पक्ष में शुक्रास्त हो तो महा दुर्भिक्ष हो।

फाल्गुनमास--में शुक्र अस्त हो तो छः मास तक सर्व धान्य तेज रहे।

शुक्र किसी मास की कृष्णपक्ष की अष्टमी, चतुर्दशी व अमावस्या को अस्त या उदय हो तो अतिवृष्टि हो।

शुक्र का बिम्ब बड़ा, किरणें निर्मल तथा विस्तार वाली और वर्ण दही, कुसुम, पुष्प या चन्द्र जैसा श्वेत तथा निर्मल हो ग्रह युद्ध मे भौमादि ग्रहों से जय पाया हुआ हो, उत्पात से रहित हो और नक्षत्रों से उत्तर में निकले या उत्तरमार्ग के नक्षत्रों पर हो तो जगत में सतयुग वर्ते अर्थात दुख, दारिद्र, रोग, शोक से रहित सुवृष्टि, सुभिक्ष क्षेम, कल्याण आदि से जनता की वृद्धि हो।

शुक्र का वर्ण सुवर्ण, चाँदी, दही, घृत, मण्ड या मजींद के सदृश तथा तेज युक्त हो तो वर्षा हो किन्तु जो ताम्र वर्ण का तथा रूक्ष हो या दिन में दिखे तो वर्षा न हो।

शुक्र प्रथम मंडल के ४ नक्षत्रों में वक्री, मार्गी, उदय या अस्त हो तो सुभिक्ष तथा गायों को पीड़ा हो।

शुक्र द्वितीय मण्डल के ४ नक्षत्रों में वक्री मार्गी आदि हो तो बहु वर्षा हो।

शुक्र तृतीय तथा पंचम मण्डल के ५ नक्षत्रों में वक्री, मार्गी, उदयास्त हो तो धान्य तेज हो किन्तु तृतीय मण्डल के पूर्व दिशा में उदयास्त हो और पंचम मंडल के पश्चिम में उदयास्तादि हो तो धान्य मंदा हो।

शुक्र चतुर्थ तथा षष्ठी मण्डल के नक्षत्रों में वक्री, मार्गी, उदयास्त हो तो सुभिक्ष हो।

शुक्र भरणी, पूर्वा-फाल्गुनी, चित्रा स्वाति, विशाखा, पूर्वा भाद्रपदा, उत्तरा-भाद्रपदा पर हो तब तथा कृतिका या मघा के बीच से निकले तो वर्षा हो,

शुक्र पुनर्वसु, ज्येष्ठा, मूल या पूर्वाषाढ़ा के बीच में से या मंगल इन्हीं नक्षत्रों पर से निकला हो तो वर्षा न हो।

उपरोक्त दिन नक्षत्रों पर शुक्र के होने से वर्षा न होती हो यदि हो जावे तो जिन नक्षत्रों पर रहने से वर्षा होती है उन नक्षत्रों पर शुक्र के रहने से वर्षा न हो।

शुक्र का अस्त या उदय उत्तर वीथी में हो तो सुवृष्टि सुभिक्ष-क्षेम, कल्याण आदि उत्तम हो, मध्य वीथी में हो तो वृष्टि आदि मध्यम और दक्षिण वीथी में हो तो अनावृष्टि अक्षेम, अकल्याण आदि नेष्ट फल हो।

शुक्र वक्री से—

शुक्र वक्री हो तो धान्य मंदा हो, घृत तेल तेज हो एक मास में वृष, तुला, कर्क पर वक्री होके जब पीछे मार्गी हो तो शासक व प्रजा दोनो सुखी हो, सुवृष्टि, सुभिक्ष आदि हो।

शुक्र वक्री राशि से—

मेष—राशि गत शुक्र वक्री हो तो स्त्री जाति में पीड़ा विशेष तथा पशु नाश हो।

वृषभ—राशि गत शुक्र वक्री हो तो रूई, चांदी, शकर आदि तेज हो।

मिथुन—में शुक्र वक्री हो तो शेअर्स रूई में अति उत्तम तेजी हो।

कर्क—में शुक्र वक्री हो तो एक मास के अन्तर्गत रूई तेज हो एवं कहीं कहीं वर्षा भी हो।

सिंह—में शुक्र वक्री हो तो सूत, कपड़ा, रूई, घृत, चावल, दो मास के अन्तर्गत तेज हो।

कन्या—में शुक्र वक्री हो तो चांदी, सोना, पीतल, गाय बैल तेज हो।

तुला—का शुक्र वक्री हो तो धान्य रसादि पदार्थ मंदे हो।

वृश्चिक—में शुक्र वक्री हो तो साधारण वर्षा शासन में विघ्न उत्पन्न हो।

धनु—में शुक्र वक्री हो तो सोंठ, मिरच, पीपल, रूई, सूत मंदा हो।

मकर—में शुक्र वक्री हो तो गौड़, विदर्भ, कर्नाटक आदि क्षेत्रों में राज भय हो।

कुंभ—में शुक्र वक्री हो तो पाश्चात्य देशों में रोगोत्पद्रव तथा दुष्काल हो।

मीन—राशि गत शुक्र वक्री हो तो रूई, सूत, कपड़ा इनमें दो मास बाद मंदी हो।

४-४-५-३-५-६ इस क्रम से शुक्र नक्षत्रों में जाता है अर्थात वक्री होता है और क्रूर ग्रहों के साथ हो तो उसका फल इस प्रकार होगा:—

प्रथम चार में गौओं को पीड़ा, मेघ उदय हो द्वितीय चार में एवं दोनों पांचों में धान्य नाश तथा छः और तीन में सुख देता है।

छः और तीन में धान्य खरीदना एवं पांच में धान्य विक्रय करना इस प्रकार शुक्र की गति से क्रय-विक्रय करने से लाभ उठाया जा सकता है।

शुक्र मार्गी से—

शुक्र मार्गी हो तो ५ दिन के अन्तर्गत सोना चांदी, नोट, मोती कुछ मंदे हों।

शुक्र मार्गी राशियों से—

मेष–राशि में शुक्र मार्गी हो तो इक्षु, गुड़, तैल, तिल्ली, अरण्डी मंदा हो।

वृषभ–में शुक्र मार्गी हो तो शक्कर, चावल, घृत, एक मास पश्चात तेज हो।

मिथुन–में शुक्र मार्गी हो तो रूई, सूत, कपड़ा आदि मंदा हो।

कर्क–का शुक्र हो तो गाय बैल आदि पशु अति मंदे हो।

सिंह–राशि गत शुक्र मार्गी हो तो अनावृष्टि तथा जनता में भय उत्पन्न हो।

तुला–में शुक्र मार्गी हो तो सूत, घृत, हस्ती दंत, चावल एक मास उपरान्त तेज हो।

वृश्चिक–का शुक्र मार्गी हो तो अति वृष्टि के कारण से धान्य की कृषि नष्ट हो।

धनु–में शुक्र मार्गी हो तो पूर्वीय देशों में राज भय, रूई मंदी हो।

मकर–राशि गत शुक्र मार्गी हो तो गुड़, नारियल, अलसी तेज होकर मंदा हो।

कुंभ–का शुक्र मार्गी हो तो रूई, सूत, कपड़ा, चांदी प्रथम तेज होकर मंदा हो।

मीन–राशि का शुक्र मार्गी हो तो प्रायः सभी वस्तुएं मंदी हों।

शनि राशियों से—

मेष–राशि में शनि हो तो कंचन, चांदी, तांबा, मोती, पुखराज तेज हो।

वृषभ–में शनि हो तो अनावृष्टि, चतुस्पद नाश, सप्त धान्य तेज, दुर्भिक्ष, शासन में विग्रह एवं अनेकानेक उपद्रव हो।

मिथुन–में शनि हो तो अनावृष्टि, भयंकर दुर्भिक्ष, पश्चिम देशों में महायुद्ध, शासक वर्ग भयभीत, अनेकानेक उपद्रव हो।

कर्क–राशिगत शनि हो तो मध्य देश में शुभ फल, अनाज के होते हुए भी दुर्भिक्ष हो।

सिंह–में शनि हो तो अन्न के भाव समान रहे गुड़ तेल तेज मालवा क्षेत्र में उपद्रव हों।

कन्या–में शनि हो तो जल शोष अनावृष्टि वायु प्रकोप, दुर्भिक्ष, युद्ध आदि अनेक प्रकार के उपद्रव हों।

तुला–में शनि हो तो अनावृष्टि, अग्नि प्रकोप सातों धान्य तेज हो भूकंप व प्रलय, युद्ध महामारी आदि से जनता का नाश हो।

वृश्चिक–राशि गत शनि हो तो अनावृष्टि दुर्भिक्ष, लोक दुखी रहे एक वर्ष बाद दिल्ली क्षेत्र में उत्पीडित, युद्ध हो महामारी आदि से जनता का नाश हो।

धनु–में शनि हो तो गर्जता हुआ मेघ नहीं वर्षे, दुर्भिक्ष हो जल हीन भूमि हो भयंकर युद्ध हो।

मकर–में शनि हो तो दारुण दुर्भिक्ष हो कामी पुरुषों का नाश हो।

कुंभ–राशि में शनि हो तो एक वर्ष के अन्तर्गत दोआवा क्षेत्र में धान तेज हो।

मीन–में शनि हो तो भयंकर दुर्भिक्ष समुद्र, नदी आदि जल हीन, अनावृष्टि, भयंकर युद्ध, अनेक उपद्रव हो।

शनि स्निग्ध कांति नील मणि जैसी निर्मल किरणें अधिक और वर्ण वाण के पुष्प जैसा अति काला व अलसी के पुष्प जैसा अति नीला हो तो जनता आनन्दित किन्तु रूक्ष लाल पीला व काला हो तो दुर्भिक्ष हो शूद्रों को पीड़ा देता है।

शनि दक्षिण मार्ग के नक्षत्रों व कृतिका रोहिणी पर हो तो दुर्भिक्ष और कृतिका रोहिणी को छोड़कर उत्तर मार्ग के अन्य नक्षत्रों पर हो तो सुभिक्ष करता है।

शनि स्निग्ध वर्ण का भरणी, आर्द्रा, पूर्वा फाल्गुनी, हस्त, स्वाति व श्रवण नक्षत्र पर हो तो वर्षा अति हो। अश्लेषा, ज्येष्ठा, व शतभिषा पर हो तो वर्षा तो अधिक नहीं किन्तु जगत् में क्षेम कल्याण और मूल पर हो तो अनावृष्टि, दुर्भिक्ष, युद्ध आदि से जगत को कष्ट हो।

शनि नक्षत्रों से उत्तर में निकले तो सुवृष्टि, सुभिक्ष, क्षेम, कल्याण आदि से शासन व जनता की वृद्धि करता है और दक्षिण में निकले तो अनावृष्टि दुर्भिक्ष अक्षेम अकल्याण आदि से हानि हो।

शनि नक्षत्रों से—

अश्विनी—नक्षत्र में शनि हो तो दुर्भिक्ष रोग वृद्धि पशु तेज हो।

भरणी—में शनि हो तो लुहार कुम्हारों को पीड़ा हो।

कृतिका—में शनि हो तो अनावृष्टि विद्वानों को पीड़ा एवं धान्य तेज हो।

रोहिणी—में शनि हो तो धान्य निष्पत्ति हो श्रवण में अवर्षा छत्र भंग हो।

मृगशिर—में शनि हो तो सर्व धान्य उत्तम हों चतुष्पद नाश हो, वृष्टि अच्छी हो।

आर्द्रा—में शनि हो तो धान्य की पैदावार अच्छी हो सम्पूर्ण वस्तुएं मंदी हो रोग नाश एवं सुख हो।

पुनर्वसु—में शनि हो तो धान्य तेज हो कांगनी कोदों अलसी बहुत ही पैदा हो।

पुष्य—में शनि हो तो अवर्षा वस्तुएं तेज तीन मास तक वर्षा न हो।

अश्लेषा—में शनि हो तो चार मास तक वर्षा सर्व धान्य उत्पन्न हो जनता में सुख हो।

मघा—में शनि हो तो अवर्षा सर्व रस तेज भाद्रपद में अवृष्टि हो।

पूर्वा फाल्गुनी—में शनि हो तो चना, मूंग, उड़द आदि धान्य की उत्पत्ति अति उत्तम हो।

उत्तरा फाल्गुनी—में शनि हो तो पशु नाश, तुष, धान्य, तेज हो।

हस्त—में शनि हो तो जनता को अनेकानेक कष्ट, स्वल्प वृष्टि हो।

चित्रा—में शनि हो तो छत्र भंग गौ घृत-दूध अधिक हो बहु वृष्टि हो।

स्वाति—में शनि हो तो प्रियजन की मृत्यु तथा सुभिक्ष हो।

विशाखा—में शनि हो तो शाल व गेहूँ का नाश प्रथम तो वर्षा हो बाद वर्षा न हो सर्वत्र मंगल हो।

अनुराधा—में शनि हो तो केशर चन्दन कपूर तेज, सुभिक्ष एवं तीखी वस्तुएं भी तेज हो।

ज्येष्ठा—में शनि हो तो सर्व नास, शासन एवं चोर से पीड़ा धान्य का नाश निश्चित हो।

मूल—में शनि हो तो पशुओं को पीड़ा, मनुष्यों को कष्ट मध्यम वृष्टि हो।

पूर्वाषाढ़ा—में शनि हो तो पशु व मनुष्य नाना रोगों से पीड़ित हों।

उत्तराषाढ़ा—में शनि हो तो पशु और मानवों में अनेकानेक रोग हों।

अभिजित—में शनि हो तो सर्व सस्योत्पति हो।

श्रवण—में शनि हो तो मध्यम वृष्टि चतुष्पदों में पीड़ा हो।

धनिष्टा—में शनि हो तो राज बिग्रह गौ तथा द्विजों को पीड़ा अल्प वृष्टि स्वल्प धान्य हो।

शतभिषा—में शनि हो तो चतुस्पदों का नाश हो उत्तम वर्षा हो धान्य बहुत हो।

पूर्वाभाद्रपदा—में शनि हो तो धान्य तेज हो अल्प वृष्टि हो।

उत्तरा भाद्रपदा—में शनि हो तो शासन विग्रह, अल्प वृष्टि स्वल्प धान्य उत्पन्न हो।

रेवती—में शनि हो तो अवर्षा हाहाकार महा भयंकर दुर्भिक्ष हो सुवर्ण रौप्य रत्न बेचकर भी सर्व धान्य संग्रह करने से पुष्कल लाभ हो मध्य देश में पीड़ा दुर्भिक्ष हो शरद ऋतु की कृषि का नाश, अन्न का भाव तेज साजी उड़द मूंग तम्बाकू तेज हो।

शनि नक्षत्र चरणों से—

अश्विनी—के प्रथम चरण में शनि हो तो श्रीनगर व मध्य के क्षेत्रों में नाश हो।

अश्विनी—के द्वितीय चरण में सौराष्ट्र द्राविण देश मालव क्षेत्र का नाश हो।

अश्विनी—के तृतीय चरण में कलिंग गौड़ क्षेत्र नाश हो।

अश्विनी—के चतुर्थ चरण में शनि हो तो कलिंग गौड क्षेत्र नष्ट हो।

भरणी—के प्रथम चरण में शनि हो तो दुर्भिक्ष हो।

भरणी—के द्वितीय चरण में शनि हो तो पुरहर्षण में दुर्भिक्ष हो।

भरणी—के तृतीय चरण में शनि हो तो कपास, शकर, घृत, तैल आदि तेज हो।

भरणी--चतुर्थ चरण में शनि हो तो दुर्भिक्ष अग्नि भय हो।

कृतिका--के प्रथम चरण में शनि हो तो विग्रह, अग्नि भय, अवृष्टि हो।

कृतिका—के द्वितीय चरण में शनि हो तो कृष्णा नदी के तट-वर्तीय क्षेत्र में दुर्भिक्ष हो।

कृतिका—के तृतीय व चतुर्थ चरण में शनि हो तो द्वितीय नुसार ही फल हो।

रोहिणी—के प्रथम चरण में शनि हो तो गोदावरी के तटवर्तीय क्षेत्र में दुर्भिक्ष, स्वल्प वृष्टि हो।

रोहिणी—के द्वितीय क्षेत्र में शनि हो तो तिल, अलसी, मसूर, गेहूं, उडद, मूंग, काला जीरा, कपास, सूत, घृत तेज हो।

रोहिणी—के तृतीय चरण में लोह, कपास, कम्मल, स्वर्ण, चांदी, सूत, रस तेज हो।

रोहिणी—के चतुर्थ चरण में गौड क्षेत्र का नाश हो एवं सर्व धान्य तेज हो।

मृगशिर—के प्रथम चरण में शनि हो तो सर्व धान्य, रस तेज हो

मृगशिर—के द्वितीय चरण में शनि हो तो कपास, धान्य तेज हो।

मृगशिर—के तृतीय चरण में शनि हो तो पश्चिमी देश एवं सौराष्ट्र में किसी महापुरुष की मृत्यु हो।

मृगशिर—के चतुर्थ चरण में शनि हो तो उज्जयनी क्षेत्र में दुर्भिक्ष जनता को पीड़ा, गुड़, तेल, नमक, रस तेज हो।

आर्द्रा—के प्रथम चरण में शनि हो तो कलिग क्षेत्र एवं अन्न का नाश हो।

आर्द्रा—के द्वितीय चरण में शनि हो तो सर्व देश नाश, मूंग मोठ कोदों, उड़द, जव, कपास तेज हो।

आर्द्रा–तृतीय चरण में शनि हो तो कोंकण क्षेत्र में दुर्भिक्ष, धान्य दुर्लभ गुड़ादि तेज हो।

आर्द्रा–के चतुर्थ चरण में शनि हो तो ललाट, कोंकण क्षेत्र में दुर्भिक्ष, सब रस धान्य तेज हो।

पुनर्वसु–के प्रथम चरण शनि हो तो घी, तेल, कपास, रस, अति तेज अवर्षा हो।

पुनर्वसु–के द्वितीय चरण में शनि हो तो कपूर, रेशम, सूत, दाख, शक्कर, हींग तेज हो।

पुनर्वसु–के तृतीय चरण में शनि हो तो चना, गेहूं, रूई, अलसी जव, कपास, सूत, सन आदि तेज हो।

पुनर्वसु–के चतुर्थ चरण में शनि हो तो अग्नि भय, सर्व वस्तु तेज एवं कपास, सन, सूत अति तेज हों।

पुष्य–के प्रथम चरण में शनि हो तो कपास, घृत, शकर, रस, नमक, तेल, चतुस्पद तेज एवं अवृष्टि हो।

पुष्य–नक्षत्र के द्वितीय चरण में शनि हो तो चना, गेहूँ, रूई, अलसी कपास, जव, सूत, सन तेज हो।

पुष्य–नक्षत्र के तृतीय चरण में शनि हो तो दुर्भिक्ष सर्व वस्तु तेज हो।

पुष्य–नक्षत्र के चतुर्थ चरण में शनि हो तो महाभय एवं दुर्भिक्ष हो।

आश्लेषा–के प्रथम चरण में शनि हो तो विन्ध्य निवासियों का भय हो।

आश्लेषा—के द्वितीय चरण में शनि हो तो कांतार, बंग, कोश-लादि क्षेत्रों में अवर्षा एवं सर्व वस्तुएं तेज हो।

आश्लेषा—के तृतीय चरण में शनि हो तो हर्षपुर में भय विग्रह एवं सर्व वस्तुएं तेज हों।

आश्लेषा—के चतुर्थ चरण में शनि हो तो मदपुर में महा भय हो।

मघा—नक्षत्र के प्रथम चरण में शनि हो तो मालवा क्षेत्र में दुर्भिक्ष, राजयुद्ध, अवृष्टि, चतुस्पद नाश एवं तेज गेहूं संग्रह से लाभ हो।

मघा—नक्षत्र के द्वितीय चरण में शनि हो तो सन, कपास, गुड़ नमक, शकर, दाख, हींग तेज हो।

मघा—नक्षत्र के तृतीय चरण में शनि हो तो कपास, नमक, सूत, घृत, तेल, रस, दही, दूध, मधु तेज हो।

मघा—नक्षत्र के चतुर्थ चरण में शनि हो तो उज्जैन व मालवा क्षेत्र में दुर्भिक्ष, रस धान्य तेज अग्नि, मूसक व टिड्डियों का भय हो।

पूर्वा फाल्गुनी—के प्रथम चरण में शनि हो तो राज विग्रह, जनता में व्याधि हो।

पूर्वा फाल्गुनी—के द्वितीय चरण में शनि हो तो मालवा व उज्जयनी क्षेत्र में अवृष्टि, धान पके नहीं, महादुःख, कपास रस, पट्ट, सूत तेज हो।

पूर्वा फाल्गुनी—के तृतीय चरण में शनि हो तो दुर्भिक्ष, चतुष्पद नाश, गजोष्ट नाश, अग्नि भय, रूई तेज हो।

पूर्वा फाल्गुनी--के चतुर्थ चरण में शनि हो तो रस,धान्य तेज एवं सर्व जन्तु मरण हो।

उत्तरा फाल्गुनी–के प्रथम चरण में शनि हो तो कलिंग क्षेत्र में घृत, तेल, शकर, सरसों, कपास, केशर तेज हो।

उत्तरा फाल्गुनी–के द्वितीय चरण में शनि हो तो मध्य देश में दुर्भिक्ष एवं गंगा नदीय क्षेत्र में रस धान्य नाश हो।

उत्तरा फाल्गुनी–के तृतीय चरण में शनि हो तो गंगा एवं समुद्र तट वर्तीय क्षेत्र में रस धान्य नाश हो।

उत्तरा फाल्गुनी–नक्षत्र के चतुर्थ चरण में शनि हो तो विंध्य पर्वतीय एवं कन्नौज क्षेत्र में अवृष्टि से कपास, पट्ट, सूत, सन, लोहा, स्वर्ण, चाँदी, तांबा आदि तेज हो।

हस्त–नक्षत्र के प्रथम चरण में शनि हो तो कुरुक्षेत्र में सर्व नाश एवं चतुष्पद नाश हो।

हस्त–के द्वितीय चरण में शनि हो तो रस धान्य जल नाश हो।

हस्त–के तृतीय चरण में शनि हो तो सर्व वस्तु नाश जीवों को पीड़ा हो।

हस्त–के चतुर्थ चरण में शनि हो तो बीजापुर क्षेत्र में नाश, सरसों, जीरा, क्षार, संग्रह से अति लाभ हो।

चित्रा–के प्रथम चरण में शनि हो तो यमुना तटवर्तीय क्षेत्र में अग्नि भय हो।

चित्रा–के द्वितीय चरण में शनि हो दुर्भिक्ष हो।

चित्रा–के तृतीय चरण में शनि हो तो दुर्भिक्ष एवं अवृष्टि तथा परस्पर युद्ध हो।

चित्रा–के चतुर्थ चरण में शनि हो तो सर्व नाश हो।

स्वाति–के प्रथम चरण में शनि हो तो रस व चतुष्पद नाश हो।

स्वाति–नक्षत्र के द्वितीय चरण में शनि हो तो रस, धान्य, क्षय, विद्वानों को पीड़ा हो।

स्वाति–नक्षत्र के तृतीय चरण में शनि हो तो सर्व नाश हो।

स्वाति–नक्षत्र के चतुर्थ चरण में शनि हो तो रस शकर गुड़ दही तेज हो।

विशाखा--नक्षत्र के प्रथम चरण में शनि हो तो सोफोदर पीड़ा सर्व देश में हो।

विशाखा--नक्षत्र के द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ चरण में शनि हो तो सोफोदर पीड़ा से सम्पूर्ण देश पीड़ित हो।

अनुराधा--के प्रथम चरण में शनि हो तो सौराष्ट एवं ललाट क्षेत्र में अवृष्टि, धान्य कतई उत्पन्न न हो।

अनुराधा--के द्वितीय चरण में शनि हो तो अवृष्टि हो।

अनुराधा--के तृतीय चरण में शनि हो तो सर्व धान्य तेज हो।

अनुराधा--के चतुर्थ चरण में शनि हो तो दुर्भिक्ष, कपास नाश हो।

ज्येष्ठा--के प्रथम चरण में शनि हो तो पर चक्र से जनता को कष्ट हो।

ज्येष्ठा--के द्वितीय चरण में शनि हो तो समुद्र वर्तीय क्षेत्रों में दुर्भिक्ष, महायुद्ध, गेहूँ, चना, मूंग, मोठ तेज हो जनता का नाश हो।

ज्येष्ठा--नक्षत्र के तृतीय चरण में शनि हो तो समुद्रतटीय क्षेत्र वासियों का नाश दुर्भिक्ष, महायुद्ध, तस्कर भय हो।

ज्येष्ठा--नक्षत्र के चतुर्थ चरण में शनि हो तो धान्य नहीं पके अग्नि भय हो।

मूल--नक्षत्र के प्रथम चरण में शनि हो तो पूर्व देश में दुर्भिक्ष राज विग्रह, अन्न नहीं पके।

मूल--नक्षत्र के द्वितीय चरण में शनि हो तो दुर्भिक्ष प्रलय, अन्न न हो, अवृष्टि, कपास, रूई, सरसों, मूंग, उड़द, तेज हो।

मूल--नक्षत्र के तृतीय चरणमें शनि हो तो द्वितीय चरणानुसार फल हो।

मूल--नक्षत्र के चतुर्थ चरण में शनि हो तो सर्व वस्तुए तेज हो।

पूर्वाषाढ़ा-- के प्रथम चरण में शनि हो तो नागपुर क्षेत्र में घोर दुर्भिक्ष हो कपास, जीरा, क्षार, सरसों, जव, ज्वार में निशचिन्त लाभ हो।

पूर्वाषाढा--के द्वितीय चरण में शनि हो तो गुजरात व कुरुक्षेत्रादि में अवृष्टि, जन नाश हो।

पूर्वाषाढा--के तृतीय व चतुर्थ चरण में शनि हो तो सर्व नाश हो।

उत्तराषाढा—के प्रथम चरण में शनि हो तो अवृष्टि, दुर्भिक्ष सर्व वस्तु संग्रह करके प्रथम, तृतीय व षष्ठम मास में लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

उत्तराषाढा—के द्वितीय चरण में अष्ठमंडल व कामरूक्षेत्र में अवृष्टि, परचक्रभय, अन्न हानि, जन पीड़ा हो।

उत्तराषाढा—के तृतीय व चतुर्थ चरण में शनि हो तो कामरू क्षेत्र में अवर्षा महाभय, धान तेज राज विग्रह, अग्नि भय हो।

श्रवण—के प्रथम व द्वितीय चरण में शनि हो तो कामरू क्षेत्र में दुर्भिक्ष व अग्नि भय हो।

श्रवण—के तृतीय व चतुर्थ चरण में शनि हो तो कामरू क्षेत्र में दुर्भिक्ष अवर्षा सर्व रस धान्य तेज हो।

धनिष्ठा—के प्रथम व द्वितीय चरण में शनि हो तो छत्र नाश हो

धनिष्ठा—के तृतीय व चतुर्थ चरण में शनि हो तो कनकपुर क्षेत्र में तथा कन्नोज के आस पास अवृष्टि, दुर्भिक्ष अन्न नाश हो।

शतभिषा—के प्रथम चरण में शनि हो तो मरू क्षेत्र में कष्ट, अवृष्टि, अन्न नाश, दुर्भिक्ष, जनता को कष्ट हो।

शतभिषा—के द्वितीय चरण में शनि हो तो धान्य रसादिक मध्य देश में तेज हों एवं अन्यत्र मंदे हो।

शतभिषा—के तृतीय चरण में शनि हो तो चावल, लौंग, खांड, घृत, किराना तेज हो।

शतभिषा—के चतुर्थ चरण में शनि हो तो समफल रस धान्यादि तेज हो।

पूर्वाभाद्रपदा–के प्रथम, द्वितीय, तृतीय चरण में शनि हो तो समफल, चावल, लौंग, खांड, घृत, किराना तेज हो।

पूर्वाभाद्रपदा–के चतुर्थ चरण में शनि हो तो मेरू पर्वतीय क्षेत्र में जन नाश, बहु रोग वृद्धि हो।

उत्तरा भाद्रपदा–के प्रथम चरण में शनि हो तो हिमालय के आस पास दुर्भिक्ष हो।

उत्तरा भाद्रपदा–के द्वितीय, तृतीय चरण में शनि हो तो महा दुर्भिक्ष हो।

उत्तरा भाद्र पदा–के चतुर्थ चरण में शनि हो तो सौराष्ट्र क्षेत्र में दुर्भिक्ष, अन्न न उत्पन्न हो, अवर्षा, सर्व जीव, नाश हो।

रेवती नक्षत्र–के प्रथम चरण में शनि हो तो नदी क्षेत्रों में दुर्भिक्ष हो।

रेवती नक्षत्र–के द्वितीय चरण में शनि हो तो गोदावरी के समीप वर्ती क्षेत्र में भयंकर अकाल एवं अन्न का नाश हो।

रेवती नक्षत्र–के तृतीय चरण में शनि हो तो विंध्याद्रि के पूर्वीय क्षेत्र में मूषक व कवियों का नाश एवं नाटक कर्ताओं को कष्ट हो।

रेवती–के चतुर्थ चरण में शनि हो तो अन्न कतई उत्पन्न न हो अवर्षा भयंकर अकाल, अग्नि भय रस एवं धान्य का नाश हो।

शनि उदय से—

शनि उदय से ३ दिन बाद आवरेज, मूंग, साजी लसन, चावल आदि तेज एवं रुई मंदी हो।

शनि उदय राशियों से—

मेष–राशि गत शनि उदय हो तो जल वृष्टि लोकों में सुख हो।

वृषभ–में शनि उदय हो तो तृण, काष्ट का कष्ट, अश्वों में रोग, गुड इक्षु तेज धान्य अति तेज हो।

मिथुन–में शनि उदय हो तो अति सुभिक्ष, सुवृष्टि, पशु क्षय, प्रजा को पीड़ा, धान्य तेज हो।

कर्क–राशि गत शनि उदय हो तो तालाब सूख जांय, अवर्षण महामारी सर्वत्र हो।

सिंह–राशि में शनि उदय हो तो बच्चों का नाश शासन द्वारा अधार्मिक कृत्यों का प्रकट होना एवं तुला वृद्धि हो।

कन्या–राशि गत शनि उदय हो तो धान्य नाश, पशु पीड़ा, जनता का क्षय एवं धान्य तेज हों।

तुला–में शनि उदय हो तो अनावृष्टि, गेहूं लोप हो धान्य तेज एवं युद्ध हो।

वृश्चिक–में शनि उदय हो तो गेहूं की कृषि नष्ट हो एवं महा वर्षा हो।

धनु–राशि में शनि उदय हो तो अस्वस्थता लोगों में अनेकानेक रोगों की वृद्धि, धान्य नाश हो।

मकर–में शनि उदय हो तो चतुष्पद का नाश, तृण, काष्ट लोहादिक वस्तुएं तेज हों।

कुंभ-राशि गत शनि उदय हो तो मनुष्यों में दारिद्रता आदि धान्य हानि काष्ट, तृण लोहादिक वस्तुयें तेज हों।

मीन-राशि गत शनि उदय हो तो मनुष्यो में दरिद्रता आदि धान्य नष्ट हो।

शनि उदय मास से—

चैत्र-मास में शनि उदय हो तो धान्य नाश भय उत्पन्न हो।

वैसाख-मास में शनि उदय हो तो अग्नि भय एवं जल कष्ट हो।

ज्येष्ठ-मास में शनि उदय हो तो ज्वारादि बाधा एवं रोगोपद्रव हो।

आषाढ़-मास में शनि उदय हो तो स्त्री जाति का नाश हो।

श्रावण-मास में शनि उदय हो तो विद्वान एवं साधना करने वालों का नाश हो।

भाद्रपद-मास में शनि उदय हो तो राज्य भय एवं क्रांति हो।

आश्विन-में शनि उदय हो तो नदी तालाबादि सूखे, दुर्भिक्ष अवर्षा चतुस्पद नाश हो।

कार्तिक-मास में शनि उदय हो तो आश्विन मास के अन्तर्गत का फल हो।

मार्ग शीर्ष-मास में शनि उदय हो तो चतुष्पद नाश एवं दुर्भिक्ष हो।

माघ—मास में शनि उदय हो तो पाश्चात्य दिशा में राज्य क्षय हो।

फाल्गुन—मास में शनि उदय हो तो तृण काष्ठादि तेज हो।

शनि अस्त से—

फाल्गुन मास में शनि अस्त हो तो हिम गिरने का भय, चतुष्पदो को पीड़ा, रूई में १० से १५ तक की तेजी एवं अफीम में ३ दिन के अन्तर्गत मंदी हो।

तुला मीन राशि में शनि अस्त हो तो सुवृष्टि हो।

शनि अस्त राशियों से—

मेष—राशि गत शनि अस्त हो तो धान्य तेज हो परन्तु सर्व धान्य उत्पन्न हों।

वृषभ—राशि में शनि अस्त हो तो चतुष्पदो एवं वैश्याओं को पीड़ा हो।

मिथुन—में शनि अस्त हो तो दुःख की वृद्धि एवं अनावृष्टि हो।

कर्क—राशि में शनि अस्त हो तो शत्रु का भय कपास, धान्यादि दुर्लभ एवं अवर्षा हो।

सिंह—राशि गत शनि अस्त हो तो अनावृष्टि, रोग वृद्धि, स्वर्ण, रौप्यादि धातु एवं अन्न तेज हो।

कन्या—राशि में शनि अस्त हो तो अन्न, धातु, तेज जनता को पीड़ा अनावृष्टि हो।

वृश्चिक–राशि में शनि अस्त हो तो अनावृष्टि स्वल्प जल, धान्य नाश, राज भय, टिड्डी, चूहा आदि के उपद्रवों से जनता पीड़ित हो।

धनु–राशि में शनि अस्त हो तो जनता में सुख अन्न दुर्लभ हो।

मकर–राशि गत शनि अस्त हो तो वायु प्रकोप, रस व धान्य तेज अनावृष्टि, पशु को पीड़ा, स्त्रियों की मृत्यु अधिक हो।

कुंभ–राशि में शनि अस्त हो तो शीत भय, चतुष्पदों को पीड़ा व नाश गौ की हानि अधिक हो।

मीन–राशि गत शनि अस्त हो तो मेघों से कहीं भी जल वर्षा न हो राज विग्रह, संताप हो, सुभिक्ष, जलवृष्टि सर्व धान्य उत्पन्न हो।

शनि वक्री से—

अश्विनी तथा भरिणी में शनि वक्री हो तो एक वर्ष पीडा धान्य व चतुष्पद नाश हो।

मघा पर वक्री होके अश्लेषा पर जब शनि आवे तो गेहूँ, घृत, शाल, प्रवाल तेज हो।

ज्येष्ठा पर शनि वक्री होकर अनुराधा पर आवे तो सर्व वस्तु तेज हो।

उत्तराषाढा पर वक्री होकर पूर्वाषाढा पर जब शनि आवे तो भयंकर दुर्भिक्ष एवं पूंजीपतियों को बहु पीड़ा हो।

रेवती, अश्विनी, मृग पुष्य, मूल, हस्त, अनुराधा इन नक्षत्रों में मूगनि वक्री हो तो पृथ्वी पर भरपूर भय हो।

श्रावण में शनि वक्री हो तो दुर्भिक्ष महामारी आदि से जनता त्राहि त्राहि करे।

शनि वक्री राशियों से—

मेष—राशि में शनि वक्री हो तो पृथ्वी पर भयंकर दुःख हो।

वृषभ—में शनि वक्री हो तो दुर्भिक्ष, धान्य नाश, युद्ध, रोग, पीड़ा भयादि की वृद्धि हो।

मिथुन—राशि गत शनि वक्री हो तो पृथ्वी पर भरपूर दुःख हो।

कर्क—राशि में शनि वक्री हो तो पांचाल, गांधार, काश्मीर आदि क्षेत्रों में विग्रह हो।

सिंह—राशि में शनि वक्री हो तो युद्ध हो दुर्भिक्ष धान्य नाश भय एवं दुःख बढ़े।

कन्या—राशि में शनि वक्री हो तो शासक वर्ग में आपसी द्वेष, जनता में भय, दुर्भिक्ष हो।

तुला—राशि गत शनि वक्री हो तो पाश्चात्य देशों में पारस्परिक युद्ध हो।

वृश्चिक—में शनि वक्री हो तो भयंकर दुर्भिक्ष तथा महामारी उत्पन्न हो।

धनु—राशि में शनि वक्री हो तो धान्य नाश, दुर्भिक्ष जनता को कष्ट हो।

मकर–राशि में शनि वक्री हो तो गुजरात, गोड़, सौराष्ट्र प्रांतों में जल प्रलय, तथा पूर्व में भूकंप हो।

कुंभ–राशि में शनि वक्री हो तो पाश्चात्य में संसार व्यापी युद्ध हो।

मीन–राशि गत शनि वक्री हो तो दुर्भिक्ष हो।

सप्तमी के दिन शनि मंगल दोनों वक्री हो तो लोक में हाहाकार विशेषकर दक्षिण में हो।

गुरु और शनि दोनों साथ में वक्री हों और शनि १०-११ का हो तो गेहूँ, तिल, तेल ६ महीने तक तेज रहे।

शनि वक्री तीन मास महामारी आदि रोगों का उपद्रव यात्रियों को भय, हुंडी, प्रामेसरी नोट आदि धान्य गेहूं, मूंग, ज्वार, दाख, खजूर, जायफल, घृत, हल्दी, नील, नीलाथुता, धनिया, मैथी, जीरा, अश्व आदि तेज एवं सोना, चांदी, सर्व धातु मणि मोती आदि रत्न मंदा तथा नारीयल, सुपारी, लवंग, तिल, तैल आदि में घटा-बढ़ी हो।

जिस मास में सब ग्रह दैवयोग से वक्री हो जातं तो उस मास में सर्व वस्तुएं अति तेज एवं राज विग्रह हो।

शनि मार्गी से—

शनि मार्गी हो तो दो मास में तेल, सरसों हींग, मिरच तेज हो।

शनि मार्गी रूई मंदी एवं सुभिक्ष करता है।

शनि मार्गी राशियों से—

मेष–का शनि मार्गी हो तो यवन देश में भयंकर दुर्भिक्ष हो।

वृषभ–राशि गत शनि मार्गी हो तो दक्षिण दिशा में युद्ध हो।

मिथुन–राशि गत शनि मार्गी हो तो रुई, चांदी, घृत तेज होकर मंदे हो।

कर्क–राशि में शनि मार्गी हो तो तेल, मिरच, तिल्ली २३ दिन के अन्तर्गत मंदी हो।

सिंह–राशि गत शनि मार्गी हो तो हींग, सरसों, मंजीठ, मंदे होकर तेज हो।

कन्या–में शनि मार्गी हो तो रस, तेल, कपूर आदि मंदे हो।

तुला–राशि गत शनि मार्गी हो तो अलसी, चांदी, सोंठ पीपल तेज हो।

वृश्चिक–राशि गत शनि मार्गी हो तो अद्रक, मिर्ची तेज हो एवं धनिया मंदा हो।

धनु–राशि में शनि मार्गी हो तो चीन देश में भूकंप हो, धान्य का नाश हो।

मकर–राशि गत शनि मार्गी हो तो सम्पूर्ण पदार्थों में विशेष घट-बढ़ हो।

कुंभ–राशि में शनि मार्गी हो तो जल विप्लव हो।

मीन–राशि गत शनि मार्गी हो तो अति वृष्टि के कारण से धान्य नाश हो।

शनि कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिर, आर्द्रा, पुनर्वसु पुष्य व अश्लेषा पर वक्री हो तो अनावृष्टि करे बड़ा भयानक दुर्भिक्ष सर्व वस्तु तेज भय तथा मित्रों में द्वेष भावना जाग्रति हो।

माघ या फाल्गुन में कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा, द्वितिया, या तृतिया को शनि वक्री हो तो धान्य का संग्रह दिन १५ में ही लाभ करे।

जब धन, मीन, वृषभ, वृश्चिक राशि में मंगल हो उस समय शनि वक्री हो तो हाथी, घोड़े गाय, भैंसादि, चतुस्पद और मानव की अति नाश हो।

भरिणी, मघा, आर्द्रा, हस्त, रेवती इन नक्षत्रों में शनि वक्री हो तो शासकीय रक्षकों में भगी पड़े एवं समुद्र तटवर्ती निवासियों में महामारी फैले।

फाल्गुन में शनि वक्री हो तो धान्य तेज हो।

शनि विशेष योग से—

शुभ ग्रह बुध, गुरू, शुक्र जब अतिचार गति के हों तो दुर्भिक्ष शासक वर्ग को कष्ट एवं अशुभता सर्व स्थान पर व्याप्त हो।

क्रूर ग्रह (मंगल शनि) जब अतिचार गति के हो तो सब धान्य सुभिक्ष सर्वत्र सुख हो।

जब शुभ ग्रह अतिचारी हो एवं गुरु वक्री हो तो सर्वत्र सुभिक्ष हो।

यदि क्रूर ग्रह वक्री हो और सौम्य ग्रह अतिचारी हो तो पीड़ा, व्याधी, भय, राज विग्रह, व्यापारियों को लाभ हो।

ग्रह योगों से—

मेष का रवि वृषभ का मंगल हो तो दिन २४ के अंतर्गत रोग बढ़े, शासक वर्ग में विग्रह, व्यापारियों को लाभ हो।

अनुराधा में शनि ज्येष्ठा में गुरु हो तो पश्चिम देशों में युद्ध और जनता का नाश हो।

मूल नक्षत्र में शनि बुध, स्वाति या मघा में चन्द्र हो तो सर्व धान्य संग्रह करने से अवश्य लाभ हो।

श्रवण नक्षत्र में कोई भी क्रूर ग्रह हो तो अन्न तेज गेहूँ विशेष-कर तेज हो।

उत्तराषाढ़ा पर शनि और शनि से सातवे नक्षत्र में (रेवती में) जब रवि हो तो जल का त्रास और जनता को पीड़ा हो।

धनिष्टा में शनि मंगल से युक्त हो तो कृषि नष्ट हो एवं धान्य को क्षति हो।

तुला का शनि धन का राहु मिथुन का मंगल व गुरू हो तो अति वृष्टि हो।

शतभिषा का गुरु एवं चित्रा का मंगल हो तो गेहूं नाश सर्व धान तेज हो।

धन में शनि, मिथुन में मंगल एवं आर्द्रा या पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में राहु या केतु हो तो वर्षा ऋतु में भी वर्षा न हो।

मंगल, शुक्र व सूर्य मकर या कुंभ राशि में हो और चन्द्र मिल जावे तो दुर्भिक्ष से भय हो।

मीन में शनि तुला में मंगल, कर्क में गुरु हो तो दुर्भिक्ष पड़े।

रवि, चन्द्र, मंगल, शुक्र, शनि, राहू सब एक राशि में भ्रमरण करें तो पृथ्वी भय से व्याकुल हो जावे पूर्व देश में महा पीड़ा, शासन व जनता का नाश व व्याधि भय हो।

रवि, चन्द्र, मंगल, शनि, राहु व बुध का योग एक एक ही राशि पर हो तो दक्षिण में भय हो।

सूर्य, मंगल, शनि, राहु, गुरु व शुक्र एक ही राशि के अन्तर्गत हो जनता में भय उत्तर में छत्र भंग हो।

सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र योग पृथ्वी पर भय, शासक का नाश व्याधी महान जनता क्षय करता है।

मंगल, चन्द्र, सूर्य, गुरु, सिंह राशि में हो तो शासन व जनता दोनों का नाश, भूमि पर भय, तथा छत्र भंग हो।

सूर्य, बुध, शुक्र का किसी एक नक्षत्र पर योग हो तो सर्व धान्य तेज एवं जब तक ये उक्त नक्षत्र पर भोग करें तब तक भय रहे।

शनि गुरु युक्त हो या एक दूसरे से सप्तम हों तो धान्य नाश एवं प्रजा को कष्ट तथा दुख हो।

शनि व मंगल का योग कर्क, मीन, मकर या कन्या राशि के अन्तर्गत हो तो धन, धान्य रहित भूमि होकर विग्रह हो।

सूर्य, गुरु, शुक्र, शनि, राहु का योग किसी भी राशि के अन्तर्गत हो तो जल बरसे एवं अनाज तेज हो।

शुक्र, शनि एक राशि पर हो इसके पीछे बुध हो तो सर्व धन, धान्य मंदे, पृथ्वी पर सब लोग सुखी हों।

मंगल के पीछे सूर्य हो तो जल का शोष हो विपरीत हो तो जल वृष्टि अच्छी हो।

राहु राशि से—

मेष—में राहु क्रूर ग्रह के साथ हो तो अवश्य दुर्भिक्ष राज भय हो और शुभ ग्रह से युक्त हो तो सुभिक्ष हो।

वृषभ—में राहु व भौम दोनों हो तो छठे मास में सर्व धान्य दुर्लभ हो तथा बहुत तेज हो।

मिथुन—राशि गत राहु हो तो घृत और सर्व धान्य तेज हो अनावृष्टि एवं दुर्भिक्ष हो और यदि शनि से युक्त हो तो पशु क्षय, जनता-पीड़ा, धान्य तेज हो।

कर्क—में राहु हो तो चोरों का भय, सर्व लोहा मंदा तथा छठे मास बाद तेज हो अनावृष्टि तथा धान्य का भाव तेज हो।

सिंह—राशि में राहु हो तो अद्रक, सोंठ, मिरच, पीपल, क्रय करने से छः मास बाद अतिलाभ की सम्भावना, दुर्भिक्ष एवं धान्य तेज हो।

कन्या—राशिगत राहु हों तो आंवला, पीपल का भाव एक या दो मास के अन्तर्गत बढ़े, दुर्भिक्ष, पशु क्षय, प्रजा पीड़ा, धान्य तेज हो।

तुला—राशि में राहु क्रूर ग्रह के साथ युक्त हो तो कृषि नष्ट घोर दुर्भिक्ष एवं बहु वृष्टि हो।

वृश्चिक—राशि गत राहु हो तो छः मास ही हाहाकार दुर्भिक्ष, अतिवृष्टि या अनावृष्टि, टिड्डी आदि का भय अनेकानेक रोगों की वृद्धि हो।

धनु-में राहु हो तो पंचम मास बाद ही हस्ती व अश्व तेज हो, अति वृष्टि या अनावृष्टि, टिड्डी आदि का भय व अनेक रोगादि का भय हो।

मकर-राशि में राहु हो तो कांसा व सूत संग्रह से तीन मास बाद ही लाभ की सम्भावना हो।

कुंभ-राशि गत पाप ग्रह से युक्त राहु हो तो सूत व गेहूँ के संग्रह से छठे मास के अन्तर्गत लाभ हो तथा बहु वृष्टि हो।

मीन-राशि गत राहु हो तो सर्व धान्य का संग्रह करने से लाभ हो।

अश्लेषा द्वितीय चरण का राहु श्रवण के चतुर्थ चरण का केतु हो तो मास के अन्तर्गत चांदी आदि सर्व धातु मोती आदि सर्व रत्न प्रामिसरी नोट, गेहूँ, चने, जव, सर्व धान्य, अलसी, सरसों, तिल, तेल, घृत, गुड़, खांड, सर्व क्षार मजीठ, नारियल, सुपारी, लोंग, इलायची, अफीम तेज हो समुद्रतटीय एवं हिमालय के समीप विग्रह हो।

अश्लेषा के प्रथम चरण में राहु और श्रवण के तृतीय चरण का केतु ६२ दिन के अन्तर्गत अश्व, गाय आदि चतुस्पद कपूर आदि सुगंधित पदार्थ, तेल, घृतादि, रस, गोधूमादि, धान्य वस्त्र तेज, कलिग, गौड़, मथुरा, एवं समुद्र तटवर्तीय क्षेत्रों में विग्रह हो।

पुष्य के चतुर्थ चरण में राहु श्रवण के द्वितीय चरण में केतु हो तो दो मास में चांदी, लोहा, कपास, श्वेत वस्त्र, तेल, घृत, गुड़, खांड, लाख, नील, जीरा, जव, चना तेज हो।

पुष्य के तृतीय चरण में राहु श्रवण के प्रथम चरण में केतु हो तो दो मास के अन्तर्गत चांदी, अलसी, अफीम, तेज हो।

पुष्य के द्वितीय चरण में राहु उत्तराषाढ़ा के चतुर्थ चरण में केतु हो तो ६० दिन में सरसों, तिल, चन्दन मंदा तथा लवण आदि सर्व रस तेज हो तथा मारवाड़ क्षेत्र में दुर्भिक्ष हो।

मृगशिर के प्रथम चरण में राहु और ज्येष्ठा के तृतीय चरण में केतु हो तो दो मास में लाख, ऊन, तिल, ज्वार, नील, मैथी, चना तेज हो।

रोहिणी के चतुर्थ चरण में राहु ज्येष्ठा के द्वितीय चरण में केतु हो तो अलसी चांदी तेज हो ५० दिन के अन्तर्गत वस्त्र, घृत, चावल और हाथी दाँत की वस्तुएं तेज हो।

रोहिणी के तृतीय चरण में राहु ज्येष्ठा के प्रथम चरण में केतु हो तो सरसो, तेल, राई, मिर्च तेज सर्वतो भद्र से स्वाति नक्षत्र का वेधन होता हो तो रूई भी तेज हो।

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में केतु हो तो धान्य तेज हो।

तिथि क्षय व वृद्धि से—

चैत्र शुक्ल में तिथि वृद्धि हो तो धान्य की अधिक आमद हो एवं मंदे रहे और यदि चैत्र कृष्ण पक्ष में तिथि वृद्धि हो तो धान्य हानि एवं तेज रहे।

वैशाख कृष्ण पक्ष में तिथि क्षय हो तो ३ दिन के अन्तर्गत ही रूई तेज होकर मंदो हो।

वैशाख शुक्ल पक्ष में तिथि वृद्धि हो तो ६ दिन में रूई तेज हो और तिथि क्षय हो तो रूई में फेरफार हो।

ज्येष्ठ कृष्ण में तिथि क्षय हो तो धान्य मंदा घृत तेज रूई में घटा-बढ़ी हो एवं शुक्ल पक्ष में तिथि क्षय हो तो एक पक्ष के अन्तर्गत धान्य कुछ तेज दिन ३ में रूई मंदी हो।

आषाढ़ शुक्ल पक्ष में तिथि क्षय हो तो धान्य साधारण तेज तथा रूई मंदी हो एवं वृद्धि हो तो रूई में साधारण तेजी होकर मंदी हो तथा कृष्ण पक्ष में तिथि क्षय हो तीन ३ में रूई तेज हो और तिथि वृद्धि हो तो भी रूई तेज हो।

आश्विन शुक्ल पक्ष में तिथि क्षय हो तो रूई में २० से २५ तक की तेजी हो।

कार्तिक कृष्ण पक्ष में तिथि क्षय हो तो १३ रु० तक की रूई में तेजी हो एवं शुक्ल पक्ष में तिथि क्षय हो तो रूई में १० रु० तक की मंदी हो।

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष में तिथि क्षय हो तो धान्य साधारण तेज हो।

पौष शुक्ल पक्ष में तिथि क्षय हो तो धान्य तेज हो कृष्ण पक्ष में तिथि क्षय हो तो रूई तेज हो और वृद्धि हो तो ५ दिन के अन्तर्गत रूई तेज हो।

माघ शुक्ल पक्ष में तिथि वृद्धि हो तो ३ दिन में रूई मंदी हो।

फाल्गुन कृष्ण पक्ष में तिथि क्षय हो तो रूई तेज हो एवं शुक्ल पक्ष में क्षय हो तो रूई दिन ३ के अन्तर्गत तेज हो।

अगस्त्य से—

दिन में अगस्त्य उदय हो तो भय करने वाला एवं दुर्भिक्ष व्याधि हो और रात्रि में उदय हो तो शुभ हो।

अगस्त्य का तारा चांदी जैसा श्वेत स्फुटिक, निर्मल और प्रकाशवान् किरणों वाला हो तो अन्न अति उत्तम उत्पन्न हो किसी प्रकार के रोग व भय की आंशका न हो।

रविवार को अगस्त्य उदय हो तो कृषि नष्ट हो, मंगलवार को उदय हो तो रस नाश हो और शनिवार को नष्ट हो तो सर्व पदार्थ नष्ट हो।

चंद्र, बुध, गुरू, शुक्रवार को अगस्त्य उदय हो तो सर्व प्रकार के शुभ फल हों।

अगस्त्य का दिन में अस्त होना शुभ एवं रात्रि में अशुभ माना गया है।

अगस्त्य के उदय होने पर वर्षा हो जनता में आनंद तथा संपूर्ण धान्य की उत्पत्ति हो किन्तु वर्षा न हो तो प्रवल दुर्भिक्ष हो एवं सर्व वस्तु व धान्य तेज हो।

जिस मास में बुध उदय हो और उसके १० वे दिन अगस्त्य उदय हो तो बहुत दिनों तक लगातार वर्षा हो।

अगस्त्य का अस्त व उदय जानने की विधि—

ग्रह लाघव के मतानुसार अपने नगर के पलभा को अष्ठम गुणा

करो उसको क्षेत्रांश समझो इस क्षेत्रांस को ७८ अंश में से घटाओ जो शेष रहे उतने ही अंश के सूर्य पर अगस्त अस्त होता है और क्षेत्रांश को ९८ अंश में जोड़ने से जो अंश आवे उतने ही अंश के सूर्य पर अगस्त्य उदय होता है।

केतकी मतानुसार पलभा में से ३ घटाओ शेष में से सात का गुणा करके प्रथम फल आया, अब तीन घटाई हुई पलभा के वर्ग का पंचमांश से द्वितीय फल आया प्रथम एवं द्वितीय फल को ३३ अंश में जोड़ा जो आया वह क्षेत्रांश हुआ इस क्षेत्रांश को ७२ अंश में से घटाने से जो आया उस अंश के सूर्य पर अगस्त्य अस्त एवं उक्त क्षेत्रांश को ७२ अंश में जोड़ने से जो आया उस अंश के सूर्य पर उदय समझें।

ग्रहों के शरों से:—

जब कोई ग्रह उत्तर या दक्षिण शर में प्रवेश करता है, तब उसके शर-परिवर्तन-सम्बन्धी प्रभातकाल के अन्दर होने वाले अंशान्तरात्मक अन्य दृष्टि योगों का कुछ भी महत्व नहीं रहता उन दिनों शर परिवर्तन की ही मुख्यता रहती है।

ग्रहों के परम शर का गणित गतमान कभी न्यून, कभी अधिक हुआ करता है इस कारण हमारे पूर्वाचार्यों ने चन्द्र, मंगल बुध, गुरु, शुक्र, शनि, हर्शल, नेपच्यून और प्लूटो के उत्तर-दक्षिण शरों का व्यवहारोपयोगी माध्यम मान स्थिर निम्न प्रकार किया है:—

ग्रह	उत्तर शर का मध्यम मान	दक्षिण शर का मध्यम मान
चन्द्र	५ अंश १६ कला	५ अंश १३ कला
मंगल	६ ,, ३१ ,,	६ ,, ४७ ,,
बुध	७ ,, ० ,,	७ ,, ० ,,
गुरु	१ ,, ४१ ,,	१ ,, ३८ ,,
शुक्र	६ ,, २ ,,	८ ,, ५५ ,,
शनि	२ ,, ५२ ,,	२ ,, ५२ ,,
हर्शल	२ ,, ५२ ,,	२ ,, ५२ ,,
नेपच्यून	१ ,, ४१ ,,	१ ,, ३८ ,,
प्लूटो	६ ,, ३१ ,,	६ ,, ४७ ,,

किसी भी ग्रह के वर्तमान परमशर और मध्यम मान का अंतर करने पर वर्तमान परमशर और अन्तर में जो न्यूनतम हो, उसे मध्यम मान से गुणा करने पर, जो फल प्राप्त हो, उसको कला-विकलात्मक मानकर, तदनुसार उस ग्रह के शर की दैनिक गति के द्वारा जितना समय उपलब्ध हो उतने समय तक उस ग्रह के शर परिवर्तन का प्रभाव रहता है।

शर परिवर्तन के समय उस ग्रह की स्थान विशेष के साथ एक प्रकार की युति होती है जो अन्य युतियों से प्रबल एवं निरवकाश होती है। क्योंकि अन्य युतियों को तो फिर भी अपना फल करने के लिये अवकाश रहता है, किन्तु शर परिवर्तन को दूसरा समय महीनों और कभी वर्षों तक नहीं मिलता।

अधिकांशतः देखा गया है कि जब कोई ग्रह उत्तर शर में प्रवेश करता है तब मंदी और दक्षिण शर में प्रवेश करने पर तेजी करता

है। उस समय वह ग्रह यदि वक्री अथवा अस्त दोष से दूषित होगा, तो विपरीत फल करता है। मंदी की जगह तेजी और तेजी के स्थान में मंदी करता है।

पाश्चात्य त्रयोदश योगों से—

यूरोपीय ज्योतिष में जो प्योरलल, कञ्जवसन आदि एस्पेक्ट (ग्रहयोग) निश्चित किए गए हैं उनको हमारे आधुनिक विद्वानों ने ये नाम दिए है जैसे—पूर्ण युति, योग प्रतियोग, केन्द्र, त्रिकोण, पञ्चमांश, षष्ठांश आदि। परन्तु हम यहां उनको यूरोपीय नामों से ही सम्बोधन करेंगे—

नाम	चिन्ह	अंश	फल
१. प्योरलल	P	०	तेजी कारक
२. कञ्जवसन	☌	५	तेजी कारक
३. सेमीसिक्सटाइल	⊻	३०	तेजी कारक
४. सेमीक्विटल	⊥	३६	साधारण तेजी कारक
५. सेमीस्क्वायर	∠	४५	मंदी कारक
६. सिक्सटाइल	✳	६०	तेजी कारक
७. क्विटल	Q	७२	तेजी कारक
८. स्क्वायर	□	९०	मंदी कारक
९. ट्राइन	△	१२०	मंदी कारक
१०. सस्कीक्वड्रेट	⚼	१३५	तेजी कारक
११. वाईक्विटल	⊥	१४४	मंदी कारक
१२. क्विकंक	⊼	१५०	तेजी कारक
१३. अपोजिसन	☍	१८०	मंदी कारक

एस्पेक्ट (ग्रह योग) दैनिक तेजी मंदी पर अपना विशेष प्रभाव रखते हैं जो ग्रह जिस ग्रह के साथ अंशात्मक दूरी से एस्पेक्ट (ग्रहयोग) होता है उस ग्रह एवं एस्पेक्ट होने वाले ग्रह के अन्तर्गत की वस्तुओं पर ही तेजी मंदी का प्रभाव होता है।

प्योरलल—समक्रान्ति

जब दो ग्रह परस्पर सप्तम होकर एक उत्तरायण और दूसरा दक्षिणायन हो, तब प्योरलल योग होता है इस योग का भारतीय ज्योतिष में सप्तम (पूर्ण) दृष्टि में अन्तर्भाव है। इसको तेजी कारक माना गया है। यदि रवि, मंगल, शनि, राहु, हर्शल, प्लूटो का परस्पर किसी एक दूसरे का प्योरलल योग बनता हो तो एक दूसरे के अन्तर्गत की वस्तुयें अति तेज हों, यदि ऊपर लिखे ग्रहों के साथ चन्द्र, बुध, गुरु शुक्र व नेपच्यून किसी एक के साथ परस्पर प्योरलल योग बनता हो तो साधारण तेज हो और यदि चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, नेपच्यून का परस्पर एक दूसरे से प्योरलल योग बनता हो तो जिन ग्रहों से योग बन रहा हो उन ग्रहों के अन्तर्गत की वस्तुएं साधारण मंदी हों।

कञ्जवसन—०° से ५° अंश

जब दो ग्रह किसी भी एक राशि में समान अंश पर हों तो कञ्जवशन योग होता है यह योग हमारे भारतीय ज्योतिष में ग्रह युति नाम से कहा गया है। तेजी कारक है।

यदि रवि, मंगल, शनि, राहु, हर्शल, प्लूटो में से कोई भी दो ग्रह परस्पर कञ्जवशन योग बनाते हो तो उन ग्रहों के अन्तर्गत की

वस्तुएं अति तेज हों, यदि उपरोक्त ग्रहों में से कोई भी एक ग्रह चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र, नेपच्यून में से किसी एक साथ कक्षवसन योग बनाए तो इन ग्रहों के अन्तर्गत की वस्तुएं क्षणिक मंदी होकर तेज हों और यदि चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र, नेपच्यून में से कोई भी दो ग्रह परस्पर योग बनाए तो साधारण मंदी हो तथा इन ग्रहों के साथ पाप ग्रह यह योग बनाए तो क्षणिक तेजी होकर मंदी हों।

सेमीसिक्सटाइल—३०° अंश

जब एक ग्रह से दूसरा ग्रह ३०° अंश की दूरी पर हो तब सेमीसिक्सटाइल योग बनता है यह तृतीय (एक पाद) के अर्ध दृष्टि के अन्तर्गत है। यह योग तेजी कारक है।

इसकी तेजी मंदी का प्रभाव सामान्य पड़ता है। यदि सूर्य, मंगल, शनि, राहु, हर्शल, प्लूटो में से परस्पर कोई दो ग्रह इस योग में हों तो साधारण तेजी, यदि उपरोक्त ग्रहों में से कोई एक ग्रह चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र या नेपच्यून में से किसी एक ग्रह के साथ इस योग में हो तो क्षणिक तेजी एवं चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र व नेपच्यून में से कोई भी दो ग्रह परस्पर इस योग में हो तो मंदी का योग हो।

सेमीक्विटल—३६° अंश

जब किसी एक ग्रह से दूसरा ग्रह ३६° अंश की दूरी पर हो तो सेमी-क्वींटल योग होता है। यह साधारण तेजी कारक है।

जब रवि, मंगल, शनि, राहु, हर्शल, प्लुटो में से दो ग्रह परस्पर इस योग पर हों तो साधारण तेजी हो और यदि उपरोक्त

ग्रहों में से कोई भी एक ग्रह चन्द्र, बुध, गुरू, शुक्र, नेपच्यून में से किसी एक ग्रह के साथ इस योग पर हों तो क्षणिक तेजी तथा चंद्र, बुध, गुरू, शुक्र, नेपच्यून में से कोई दो ग्रह परस्पर इस योग पर हो तो साधारण मंदी हो।

सेमीस्कायर—४५° अंश

किसी ग्रह से दूसरा ग्रह ४५° अंश की दूरी पर हो तो सेमी-स्कायर नामक योग होता है इसका अन्तर्भाव (४-१०) चतुर्थ दशम की अर्धं दृष्टि में होता है यह मंदी कारक योग है।

जब सूर्य, मंगल, शनि, राहु, हर्शल, प्लूटो में से कोई दो ग्रह परस्पर इस योग पर हो तो साधारण मंदी, उपरोक्त किसी एक ग्रह के साथ चंद्र, बुध, गुरू, शुक्र, नेपच्यून में से किसी एक ग्रह के साथ यह योग बने तो मंदी एवं चन्द्र, बुध, गुरू, शुक्र, नेपच्यून में से कोई दो ग्रह परस्पर इस योग में हों तो अति मंदी हो।

सिक्सटाइल—६०° अंश

किसी एक ग्रह से दूसरा ग्रह ६०° अंश की दूरी पर हो तब सिक्सटाइल योग होता है यह तृतीय (एक पाद) दृष्टि के अंतर्गत है। यह तेजी कारक योग है।

यदि सूर्य, मंगल, शनि, राहु, हर्शल, प्लूटो में से कोई भी दो ग्रह परस्पर उक्त योग को बनाते हों तो अति तेजी एवं उपरोक्त किसी एक ग्रह के साथ चंद्र, बुध, गुरू, शुक्र, नेपच्यून में से कोई एक ग्रह इस योग को बनायें तो साधारण तेजी तथा चंद्र, बुध, गुरू, शुक्र, नेपच्यून में से कोई दो ग्रह परस्पर इस योग को बनाएं तो मंदी

एवं इन ग्रहों में से कोई एक ग्रह के साथ सूर्य, मंगल, शनि, राहु, हर्शल, प्लूटो में से कोई एक ग्रह इस योग को बनाये तो क्षणिक तेजी करके मंदी हो ।

क्विंटल—७२° अंश

जब दो ग्रह परस्पर ७२° अंश की दूरी पर हो तो क्विंटल योग होता है । यह तेजी कारक है ।

यदि सूर्य, मंगल, शनि, राहु, हर्शल, प्लुटो में से कोई दो ग्रह परस्पर इस योग पर हो तो अति तेजी और उपरोक्त ग्रहों में से किसी एक ग्रह के साथ चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र नेपच्यून में से कोई एक ग्रह योग को बनाते हो तो क्षणिक तेजी करके मंदी करें तथा चन्द्र, बुध, गुरू, शुक्र, नेपच्यून में से कोई दो ग्रह परस्पर इस योग पर हों तो साधारण मंदी एवं इन ग्रहों के साथ रवि, मंगल शनि, राहु, हर्शल व प्लूटो में से कोई एक ग्रह किसी एक के साथ यह योग बना रहे हो तो मंदी करके साधारण तेजी करें ।

स्क्वायर—९०° अंश

किसी एक ग्रह से दूसरा ग्रह ९०° अंश की दूरी पर हो तो स्क्वायर नामक योग होता है । इसका अन्तर्भाव चतुर्थ दशम दृष्टि में है । यह योग मंदी कारक है ।

यदि सूर्य, मंगल, शनि, राहु, हर्शल, प्लूटो में से कोई दो ग्रह परस्पर इस योग को बना रहे हो तो साधारण तेजी और उपरोक्त ग्रहों में से कोई एक ग्रह चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र व नेपच्यून के साथ उक्त योग को बनायें तो क्षणिक तेजी होकर मंदी तथा चन्द्र, बुध,

गुरु, शुक्र, नेपच्यून में से परस्पर कोई दो ग्रह इस योग में हों तो अति मंदी हो।

ट्राइन—१२०° अंश

किसी एक ग्रह से दूसरा ग्रह १२०° अंश की दूरी पर हो तो ट्राइन योग होता है। इस योग में और नवम पञ्चम (५-९) दृष्टि में कोई भेद नहीं है। यह मंदी कारक योग है।

जब रवि, मंगल, शनि, राहु, हर्शल, प्लुटो में से कोई दो ग्रह परस्पर उक्त योग में हो तो साधारण तेजी और उपरोक्त ग्रहों में से कोई एक ग्रह चन्द्र बुध गुरु शुक्र नेपच्यून में से किसी एक के साथ इस योग को बना रहे हों तो क्षणिक तेजी करके मंदी तथा चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, नेपच्यून, में से कोई दो ग्रह परस्पर इस योग को बनाएं तो अति मंदी एवं इन ग्रहों में से कोई एक ग्रह रवि, मंगल, शनि, राहु, हर्शल, प्लूटो के साथ इस योग में हों तो साधारण तेजी करके साधारण मंदी करें।

सस्कीक्वड्रेट—१३५° अंश

जब दो ग्रह परस्पर १३५° अंश की दूरी पर हों तो सस्कीक्वड्रेट योग होता है यह तेजी कारक है।

जब रवि, मंगल, शनि, राहु, हर्शल, प्लूटो में से दो ग्रह परस्पर इस योग में हो तो तेजी हो एवं यदि उपरोक्त ग्रहों में से कोई एक ग्रह चंद्र, बुध, गुरू, शुक्र या नेपच्यून में से किसी एक ग्रह के साथ इस योग में हो तो साधारण मंदी के बाद तेजी तथा चंद्र, बुध, गुरू, शुक्र, नेपच्यून में से कोई दो ग्रह परस्पर इस योग को बना

रहे हो तो साधारण मंदी और यदि इन ग्रहों में से कोई एक ग्रह रवि, मंगल, शनि, राहु, हर्शल, प्लूटो में से किसी एक के साथ इस योग में हो तो क्षणिक मंदी फिर क्षणिक तेजी हो।

धाईक्विटल—१४४° अंश

जब एक ग्रह किसी दूसरे ग्रहो से १४४° अंश की दूरी पर हो तो वाई क्विटल योग होता है। यह योग मंदी कारक है।

रवि, मंगल, शनि, हर्शल, प्लूटो और राहु में से कोई दो ग्रह परस्पर जब इस योग में हों तो क्षणिक मंदी हो और यदि उपरोक्त ग्रहों में से कोई एक ग्रह चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र नेपच्यून में से किसी एक के साथ उक्त योग बनाएं तो साधारण मंदी तथा चन्द्र, बुध गुरु, शुक्र, नेपच्यून में से कोई दो ग्रह परस्पर इस योग को बनाएं तो अति मंदी हो।

क्विकंक—१५० अंश

जब कोई एक ग्रह किसी दूसरे ग्रह से १५०° अंश की दूरी पर हो तो क्विकंक योग होता है। यह योग तेजी कारक है।

जब इस योग को रवि, मंगल, शनि, राहु, हर्शल, प्लूटो में से कोई दो ग्रह परस्पर बनाएं तो अति तेजी हो और उपरोक्त ग्रहों में से कोई एक ग्रह चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, नेपच्यून में से किसी एक ग्रह के साथ उक्त योग में हो तो तथा चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, नेपच्यून में से कोई दो ग्रह परस्पर इस योग में हो तो मंदी हो।

अपोजीशन—१८०° अंश

दो ग्रह परस्पर १८०° अंश की दूरी पर हों तो अपोजीशन

योग होता है। सप्तम दृष्टि में और इसमें कोई भेद नहीं है। यह योग मंदी कारक है।

जब रवि, मंगल, शनि, राहु, हर्शल, प्लूटो में से कोई दो ग्रह परस्पर इस योग को बनायें तो साधारण तेजी और उपरोक्त ग्रहों में से किसी एक के साथ चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र, नेपच्यून में से कोई एक ग्रह इस योग को बनाएं तो क्षणिक तेजी होकर मंदी हो तथा चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र, नेपच्यून में से कोई दो ग्रह परस्पर उक्त योग को बनाये तो अति मंदी हो।

चन्द्र-सूर्य ग्रहणों से—

चन्द्र-सूर्य ग्रहण का प्रभाव—ग्रहण जिस देश में हो और जहां दिखे, उस देश तथा उस स्थान में इसका प्रभाव होता है। पूर्ण (खग्रास) ग्रहण हो तो इसका बीस दिन में प्रभाव होगा पौन भाग का ग्रहण हो तो एक मास में इसका प्रभाव हो, अर्ध भाग का ग्रहण हो तो दो मास में इसका प्रभाव हो, तृतीय भाग का ग्रहण हो तो तीन मास में प्रभाव हो एवं चतुर्थ भाग का ग्रहण हो तो चार मास में इसका प्रभाव हो।

चन्द्र-सूर्य ग्रहण होने वाला हो तो रूई पर इनका प्रभाव १५ दिन पूर्व ही पड़े अर्थात् रूई के भाव में मंदी हो।

चन्द्र ग्रहण से १५ दिन पूर्व से १ मास तक चान्दी में २-४ टका की मंदी हो।

ग्रहण होने वाला हो तो रूई, चांदी तथा अन्य व्यापारिक वस्तुओं में पहले से बहुत फेर-फार (घटा-बढ़ी) हो।

चंद्र ग्रहण मासों से—

चैत्र में १५ को चन्द्र ग्रहण हो तो सब अनाजों के भाव घटे, वर्षा ऋतु में वर्षा का अभाव हो एवं अनाजों में ५-६ मास के अन्तर्गत अति तेजी हो।

वैशाख मास में १५ को चन्द्र ग्रहण हो तो रूई, कपास, सूत, तेज हो गेहूँ, अलसी आदि वस्तुओं में भी साधारण तेजी हो, अनाज, घृत, तेल, गुड़, खांड आदि रस कस में मंदी हो तथा अन्य सर्व वस्तुओं का भाव साधारण रहे। ५-६ मास के अन्तर्गत अनाज में बहु तेजी हो।

ज्येष्ठ में १५ को चन्द्र ग्रहण हो तो वर्ष मध्यम हो। अनाज, बिनौला, घृत, तेल, गुड़ खाण्ड, रस कस में मंदी हो। अतः इनके संग्रह से लाभ हो।

आषाढ़ मास की पूर्णिमा को चन्द्र ग्रहण हो तो अनाज, बिनौला, घृत, तेल, रस कस आदि गुड़, खाण्ड तेज हो यदि रविवार को ग्रहण हो तो मध्यम वर्ष हो। घास के लिए वर्षा अति उत्तम हो।

आषाढ़ सुदी १३ थोड़ी घड़ी की हो और १४ सुदी का क्षय हो तथा पूर्णिमा को ग्रहण हो तो रूई में टका १०० की मंदी हो।

श्रावण १५ को चन्द्र ग्रहण हो तो रूई, सूत, वस्त्र और रस कस तेज हो अनाज की अति उत्तम पैदावार हो।

भाद्रपद पूर्णिमा को चन्द्र ग्रहण हो तो रूई, कपास, घी, तेल, गुड, खांड तेज हो। अनाज का संग्रह अति लाभदायक सिद्ध हो।

आश्विन की १५ को चन्द्र ग्रहण हो तो रूई, सूत, तेज हो एवं व्यापार में उन्नति हो।

कार्तिक मास की पूर्णिमा को चन्द्र ग्रहण हो तो सुकाल हो परन्तु अन्तर्राष्ट्रीय कोई समस्या उलझे।

मार्गशीर्ष में १५ को चन्द्र ग्रहण हो तो अनाज का संग्रह करने से आठ मास के अन्तर्गत लाभ हो।

पौष की पूर्णिमा को चन्द्र ग्रहण हो तो रूई, सूत, कपास, वस्त्र, घी, तेल, गुड़, खाण्ड आदि रस कस तेज हो।

माघ की १५ को चन्द्र ग्रहण हो तो घी, तेल, गुड़ खाण्ड आदि रस कस के संग्रह से शीघ्र ही लाभ हो, अनाज में ५ या ६ मास के अन्तर्गत तेजी हो।

फाल्गुन मास की १५ को चन्द्र ग्रहण हो तो घृत, तेल, गुड़, खाण्ड आदि रसकस तेज हो। अनाज का भाव पहले तेज हो बाद को मंदा हो।

चंद्र ग्रहण वारों से—

रविवार को चन्द्र ग्रहण हो तो रूई, कपास, गेहूँ, अलसी तथा लाल वस्तुओं में तेजी हो। अनाज का संग्रह करने से पांच मास के अन्तर्गत लाभ हो, पूर्ण ग्रहण हो तो शासकों में लड़ाई हो, चांदी मंदी हो।

चन्द्रवार को चन्द्र ग्रहण हो तो रूई में टका ४० की तेजी, घृत, तेल तेज हो।

मंगलवार को ग्रहण हो तो रूई, कपास, सूत, सुपारी, गेहूँ, अलसी आदि अति तेज हो।

बुधवार को चन्द्र ग्रहण हो तो रूई, सोना, चांदी तांबा में तेजी हो। रूई में टका ३० की तेजी हो।

गुरुवार को चन्द्र ग्रहण हो तो रूई में पहले मंदी और दो मास के अन्तंगत २५ टका तेज हो। घृत, तेल, कुसंम रंग तेज हो।

शुक्रवार को चन्द्र ग्रहण हो तो रूई में पहले ४०-५० टका की तेजी बाद में इतनी ही मंदी हो। तीन मास में ४० टके की मंदी एवं चतुर्थ मास उपरान्त तेजी हो।

शनिवार को चन्द्र ग्रहण हो तो अलसी, सरसों, एरण्ड, उड़द, तेल आदि काली वस्तुएं तथा लोहा, ज्वार बाजरा एवं लोह की वस्तुए तेज हो एवं इनके संग्रह से ६ मास के अन्तर्गत लाभ हो।

सूर्य ग्रहण मासों से—

चैत्र वदी अमावस्या को सूर्य ग्रहण हो तो अनाज, सोना संग्रह से तुरन्त लाभ हो गेहूँ पहले तेज हो बाद को मंदा हो।

बैशाख वदी ३० को सूर्य ग्रहण हो तो अनाज मंदा हो, रूई, कपास, सूत, कपड़ा, तेल के संग्रह करने से भविष्य में लाभ हो।

ज्येष्ठ की अमावस्या को सूर्य ग्रहण हो तो धान्य संग्रह करने से अति लाभ हो अन्य वस्तुए मंदी हो।

आषाढ़ी अमावस्या को सूर्य ग्रहण हो तो शासकों में युद्ध दुर्भिक्ष हो और यदि मंगलवार को ग्रहण पड़े तो दुर्भिक्ष एवं गुड़,

खाण्ड, घृत, तेल, रस कस आदि तथा अनाज तेज हो। चार मास उपरान्त लाभ हो।

श्रावण मास की अमावस्या को सूर्य ग्रहण हो तो अन्न विक्रय से लाभ जिस दिशा में ग्रहण हो उस दिशा के देशों में अनाज तथा रस कस तेज हो तथा कार्तिक मास में जनता किसी नए रोग से पीड़ित हो।

भाद्रपद वदी ३० को सूर्य ग्रहण हो तो सर्व वस्तुओं का उत्पादन अच्छा हो।

आश्विन मास की ३० को सूर्य ग्रहण हो तो घृत तेल आदि तेज हो ३ मास के अन्तर्गत लाभ की सम्भावना एवं सुभिक्ष हो।

कार्तिक वदी अमावस्या को सूर्य ग्रहण हो तो सुभिक्ष, अनाज घृत आदि मंदा एवं रूई में साधारण मंदी हो।

मार्गशीर्ष मास की अमावस्या को सूर्य ग्रहण हो तो रूई, कपास, आदि मंदा उनके क्रय से भविष्य में लाभ, अनाज में अति मंदी, घृत, गुड़ खांड़ तेल आदि रस कस तेज हों।

पोष वदी ३० को सूर्य ग्रहण हो तो अनाज तेज हो वर्षा ऋतु में वर्षा अच्छी हो अनाज की पैदावार अति उत्तम हो।

माघ मास की ३० को सूर्य ग्रहण हो तो अनाज एवं घृत आदि तेज हो वर्षा ऋतु में अति वृष्टि किन्तु किसी प्रकार की क्षति न हो। वर्ष अति उत्तम धन-धान युक्त हो।

फाल्गुन मास की अमावस्या को सूर्य ग्रहण हो तो अनाज में तेजी एवं घृत, गुड़, तेल, खांड आदि रस कस वस्तुओं में साधारण

तेजो हो इनके संग्रह करने से भविष्य में लाभ की सम्भावना, घास का अकाल हो ।

सूर्य ग्रहण वारों से—

रविवार को सूर्य ग्रहण हो तो घृत, तेल, गुड़, खाण्ड, गेहूँ, चावल, धान्य का संग्रह करने से २ या २॥ मास के अन्तर्गत लाभ हो ।

सोमवार को सूर्य ग्रहण हो तो अनाज, घृत, तेल, उड़द आदि के संग्रह से भविष्य में लाभ की अति, सम्भावना शासकों में उपद्रव हो ।

मंगलवार को सूर्य ग्रहण हो तो रूई, कपास, सूत, कपड़ा, चांदी आदि के संग्रह से लाभ, अन्य सर्व वस्तुओं में ४ मास तक तेजी रहे । गेहूँ, चावल, घृत, गुड़ आदि में तेजी एवं २ मास से ४ मास तक लाभ हो ।

बुधवार को सूर्य ग्रहण हो तो गेहूँ, बाजरा, ज्वार, चना आदि धान्य, रूई, सूत, कपड़ा लोहा आदि के संग्रह से २ मास उपरान्त लाभ हो ।

गुरुवार को सूर्य ग्रहण हो तो तिल, तेल, अलसी, सरसों, एरण्ड एवं पीली वस्तुओं के भाव तेज हों ।

शुक्रवार को सूर्य ग्रहण हो तो रूई, कपास, सूत, घास का भाव तेज हो एवं वर्षा काल में वर्षा अति हो । सर्व वस्तुओं में तेजी हो ।

शनिवार को सूर्य ग्रहण हो तो शनि एवं सूर्य ग्रह के अन्तर्गत की वस्तुओं में तेजी हो।

चंद्र-सूर्य ग्रहण नक्षत्रों से—

अश्विनी नक्षत्र में ग्रहण हो तो घृत आदि तेज हो।

भरिणी नक्षत्र में ग्रहण हो तो अनाज तेज हो एवं श्वेत वस्त्र ३ मास के अन्तर्गत तेज हो।

कृतिका नक्षत्र में ग्रहण हो तो सोना, चांदी, मणि, माणिक्य आदि जवाहरात के क्रय से लाभ हो।

रोहिणी नक्षत्र में ग्रहण हो तो रूई, कपास सूत, अनाज, घृत, गुड़, खाण्ड, घास संग्रह से लाभ हो परन्तु चन्द्र ग्रहण हो तो लाभ न हो।

मृगशिर नक्षत्र में ग्रहण हो तो सोना, गेहूँ, चावल, एवं पशुओं का भाव तेज हो।

आर्द्रा नक्षत्र में ग्रहण हो तो, तेल, घृत, लोहा तेज हो पांच मास में लाभ हो।

पुनर्वसु नक्षत्र में ग्रहण हो तो रुई, कपास, चतुष्पद, चावल आदि तेज हों, गेहूँ, तेल के संग्रह से ३ मास के अन्तर्गत लाभ हो।

पुष्य नक्षत्र में ग्रहण हो तो घृत, गुड, जौ, तांबा आदि तेज हों, गेहूँ संग्रह से ३ मास में लाभ हो।

आश्लेषा नक्षत्र में ग्रहण हो तो ज्वार, बाजरा, अनाज, हल्दी, तांबा मजीठ तेज हो।

मघा नक्षत्र में ग्रहण हो तो चना आदि वस्तुओं से लाभ हो।

पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र में ग्रहण हो तो रूई, कपास, सूत, कपड़ा तेज हो एवं सर्व प्रकार के तेल, चना व चावल में तेजी हो।

उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में ग्रहण हो तो चना व चावल आदि तेज हों।

हस्त नक्षत्र में ग्रहण हो तो चावल, चना आदि में तेजी हो।

चित्रा नक्षत्र में ग्रहण हो तो ज्वार में दो मास के अन्तर्गत तेजी हो।

स्वाती नक्षत्र में ग्रहण हो तो अनाज संग्रह से ३,५ या ९ मास में लाभ उठाया जा सकता है।

विशाखा नक्षत्र में ग्रहण हो तो रुई, उड़द, चना, कुल्थी आदि लाल वस्तुओं में तेजी हो।

अनुराधा नक्षत्र में ग्रहण हो तो चावल मंदा एवं ज्वार तिल आदि तेज हो।

ज्येष्ठा नक्षत्र में ग्रहण हो तो घी खांड के संग्रह से ५ मास के अन्तर्गत लाभ हो, तांबा आदि धातुयें तेज हों।

मूल नक्षत्र में ग्रहण हो तो बिनोला, ज्वार, बाजरा, चावल, शक्कर इलायची तेज हो।

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में ग्रहण हो तो श्वेत वस्त्र के संग्रह से लाभ हो।

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में ग्रहण हो तो श्रीफल में पांच मास में लाभ हो।

श्रवण नक्षत्र में ग्रहण हो तो रूई, तुवर दाल, धान्य तेज हों।

धनिष्ठा नक्षत्र में ग्रहण हो तो उड़द संग्रह से लाभ हो।

शतभिषा नक्षत्र में ग्रहण हो तो चने से लाभ उठाया जा सकता है।

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में ग्रहण हो तो पीड़ाकारी हो।

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र में ग्रहण हो तो ३ मास के अन्तर्गत लवण से लाभ हो।

रेवती नक्षत्र में ग्रहण हो तो उड़द से ६ मास में लाभ हो।

सूर्य ग्रहण के दिन व्यतिपात योग हो तो रूई में अति तेजी हो।

सूर्य ग्रहण के अनन्तर १५ दिन में चन्द्र ग्रहण हो तो १५ दिन पूर्व से डेढ़ मास में चांदी में ४-५ टका की तेजी हो।

चैत्र मास में ग्रहण हो तो सोना तेज हो एवं वैशाख में ग्रहण हो तो रूई, सूत, कपास, कपड़ा, तिल तेज हो।

एक मास में सूर्य एवं चन्द्र दोनों ग्रहण खग्रास (पूर्ण) हों तो दुर्भिक्ष हो।

ग्रहण के चोघड़िया से—

रविवार को ग्रहण हो तो अनाज, घृत, तेल तेज हो और यदि उद्वेग चोघड़िया में ग्रहण हो तो अनाज संग्रह से लाभ हो।

सोमवार को ग्रहण हो तो घृत, तेल तेज हो और संग्रह करने से लाभ हो यदि अमृत चोघड़िया में अर्धग्रस्त ग्रहण हो तो तेल संग्रह से लाभ हो।

मंगलवार को ग्रहण हो तो कपास और पीली वस्तुओं का भाव तेज हो पृथ्वी पर संहार हो और यदि उस दिन रोग चौपड़िया में ग्रहण हो तो रूई, कपास के संग्रह से लाभ हो।

बुधवार को ग्रहण हो तो रूई, कपास, सूत, तेज हो और यदि उस दिन लाभ चौघड़िया में ग्रहण हो तो सुपारी और पीली वस्तुओं के संग्रह से दो मास के अन्तर्गत लाभ हो।

गुरुवार को ग्रहण हो तो रूई, कपास, सूत तेज हो और यदि उस दिन शुभ चौघड़िया में ग्रहण हो तो तेल का भाव भविष्य में बढ़े अतः संग्रह से लाभ हो।

शुक्रवार को ग्रहण हो तो रूई, कपास, पहले तेज हो बाद को उतना ही मंदा हो जितना कि तेज हुआ था। और यदि उस दिन चल चौघड़िया में ग्रहण हो तो व्यापारिक उन्नति अच्छी हो।

शनिवार को ग्रहण हो तो काली वस्तुएं तेज हों और यदि उस दिन काल चौघड़िया हो तो प्रायः सभी वस्तुएं तेज हो।

सूचना—ग्रहण का प्रभाव उन्हीं ही वस्तुओं पर होता है जिस ग्रह (सूर्य या चन्द्र) का ग्रहण हुआ हो उस ग्रह के अन्तर्गत की वस्तुएं एवं जिस राशि पर हुआ हो उस राशि के अन्तर्गत की वस्तुएं तथा वार व नक्षत्र के स्वामि के अन्तर्गत की वस्तुओं पर ही प्रभाव पड़ता है।

अमावस्या और पूर्णमासी से—

किसी भी पूर्णमासी या अमावस्या को भूकम्प हो या ओला गिरे, वर्षा हो, पीले रंग की आंधी आवे, बिजली गिरे, बादल हों

अथवा आकाश में मकड़ी दृष्टि गोचर हो तो उसे उल्कापात कहते है। यह विचार पूर्णमासी या अमावस्या को ही किया जाता है।

यदि मेष संक्रांति की पूर्णमासी या अमावस्या को उल्कापात हो तो गेहूँ, जौ, आदि गल्ला क्रय करके चतुर्थ मास में विक्रय करने से अच्छा लाभ हो।

बृषभ संक्रांति की पूर्णिमा या अमावस्या को उल्कापात हो तो सर्व रस और नमक क्रय कर छठे मास विक्रय करने से उत्तम लाभ हो।

मिथुन संक्रांति की पूर्णिमा या अमावस्या को उल्कापात हो तो श्वेत वस्तु कन्द मूल का क्रय करके चतुर्थ मास में विक्रय से लाभ हो।

कर्क संक्रांति की पूर्णिमा या अमावस्या को उल्कापात हो तो सोना, चांदी, लोहा आदि धातुएं व तेल, घृत, गुड़, खाण्ड, शक्कर, राव का संग्रह करके द्वितीय मास में विक्रय करने से लाभ हो।

सिंह संक्रांति की पूर्णिमा या अमावस्या को उल्कापात हो तो सोना, मोती, मूंगा, लाल, चुन्नी, पन्ना, पुखराज, हीरा, चांदी, चमड़ा क्रय करने से पांचवे मास में विक्रय करने से अच्छा लाभ हो।

कन्या संक्रांति की पूर्णिमा या अमावस्या को उल्कापात हो तो चतुस्पद आदि के क्रय से छठेमास लाभ हो

तुला सक्रांति की पूर्णिमा या अमावस्या को उल्कापात हो तो जवाहरात उडद, मूंग, ज्वार, बाजरा, मक्का, केसर, कस्तूरी, हल्दी, पीला रंग, घृत का संग्रह कर छठे मास विक्रय करे तो अति लाभ हो।

वृश्चिक संक्रांति की पूर्णिमा या अमावस्या को उल्कापात हो तो सोना, चांदी, ताम्बा, लोहा, पत्थर का कोयला, मिट्टी का तेल, आलू, अर्बी, जस्ता शीसा में क्षणिक तेजी आए अर्थात एक मास के अन्तर्गत क्रय-विक्रय करले।

धनु संक्रांति की पूर्णिमा या अमावस्या को उल्कापात हो तो केसर, मोती, मूंगा आदि खनिज पदार्थ में छः मास के अन्तर्गत तेजी हो।

मकर संक्रांति की पूर्णिमा या अमावस्या को उल्कापात हो तो उड़द, मूंग, गेहूँ, चना, जो लोहा, तांबा तथा तांबा की वस्तुओं का संग्रह करके एक मास बाद विक्रय करे तो लाभ हो।

कुम्भ संक्रांति की पूर्णिमा या अमावस्या को उल्कापात हो तो गेहूं, चना, जौ, मक्का ज्वार, बाजरा मटर, अरहर और लोहे तथा तांबे की वस्तुओं में एक मास बाद ही तेजी हो।

मीन संक्रांति की पूर्णिमा या अमावस्या को उल्कापात हो तो हीरा, पुखराज, नीलम, गोमेद, पत्थर का कोयला, मुर्दासंग सोना, चांदी आदि धातुओं का क्रय करके छठे मास विक्रय किया जाय तो अति लाभ हो।

ग्रह अंशों से—

जब कोई ग्रह किसी राशि में परिभ्रमण करता है तो वह प्रत्येक राशि के ३०° अंशों पर राहु और केतु को छोडकर मार्गी या चन्द्र, सूर्य को छोड़कर वक्री गति से चलता है। हम यहां पर ग्रहों का अंशों पर भोग्य काल से तेजी-मंदी का दिग्दर्शन कर रहे हैं—

तेजो कारक ग्रह तेजी कारक राशियों की विषम अंशों— १°, ३°, ५°, ७°, ९°, ११°, १३°, १५°, १७°, १९°, २१°, २३°, २५°, २७°, २९°, पर हों तो अति तेजी करता है और यदि सम अंशों—२°, ४°, ६°, ८°, १०°, १२°, १४°, १६°, १८°, २०°, २२°, २४°, २६°, २८°, ३०°, पर हों तो साधारण तेजी करता हैं।

तेजी कारक ग्रह मंदी कारक राशियों की विषम अंशों—१°, ३°, ५°, ७°, ९°, ११°, १३°, १५°, १७°, १९°, २१°, २३°, २५°, २७°, २९°, हो तो क्षणिक तेजी करके मंदी करेगा तथा यदि सम अंशों—२°, ४°, ६°, ८°, १०, १२°, १४°, १६°, १८°, २०°, २२°, २४°, २६°, २८°, ३०°, पर हों तो साधारण मंदी करेगा।

मंदी कारक ग्रह मंदी कारक राशियों की सम अंशों—२°, ४°, ६°, ८°, १०°, १२°, १४°, १६°, १८°, २०°, २२°, २४°, २६°, २८°, ३०°, पर हो तो अति मंदी करेगा एवं विषम अंशों—१°, ३°, ५°, ७°, ९°, ११°, १३°, १५°, १७°, १९°, २१°, २३°, २५°, २७°, २९°, पर हो तो साधारण मंदी करेगा।

मंदी कारक ग्रह तेजी कारक राशियों की सम अंशो—२°, ४°, ६°, ८°, १०°, १२°, १४°, १६°, १८°, २०°, २२°, २४°, २६°, २८°, ३०°, पर हो तो साधारण मंदी करेगा तथा यदि विषम अंशों—१°, ३°, ५°, ७°, ९°, ११°, १३°, १५°, १७°, १९°, २१°, २३°, २५°, २७°, २९°, पर हो तो क्षणिक तेजी करके मंदी करेगा।

मिश्रित योगों से—

(१) पुच्छल तारा उदय हो तो १, २ या ३ वर्ष के अन्तर्गत

दुर्भिक्ष पड़ता है। गत वर्षों में संवत् १९६४ के श्रावण मास तथा संवत् १९६७ के चैत्रमास में उदय हुआ था जिसका परिणाम सर्व विदित है।

(२) सूर्य में जब-जब श्याम वर्ण के चिह्न अधिक दीख पड़ते हैं तभी-तभी दुर्भिक्ष पड़ता है। वर्ष में अच्छे योग बने हों, मेघ गर्भ धारण भी अच्छी हो परन्तु उक्त वर्ष में सूर्य में श्याम वर्ण के चिह्न अधिक दिखाई पड़ते हों तो वह वर्ष अच्छा नहीं है दुर्भिक्ष होता है। सं० १९६१ के शीतकाल में यह योग बना था।

(३) श्रावण व भाद्रपद मास में पुच्छल तारा उदय हो तो अतिवृष्टि होती है। सम्वत् १९६४ में यह तारा उदय हुआ था तब मारवाड़ में बहुत वर्षा हुई परन्तु पीछे वर्षा की खेंच हो जाने से कृषि को बहुत ही क्षति पहुंची।

(४) आश्विन-कार्त्तिक मास में पुच्छल तारा उदय हो तो अनावृष्टि, माघ-फाल्गुन में उदय हो तो धान्य का नाश, चैत्र वैसाख में उदय हो तो उत्तम वर्षा एवं ज्येष्ठ आषाढ़ में उदय हो तो पवन जोर से चलता है।

(५) सूर्य और बुध की युति हो तो योग बनने से पूर्व ही तेजी होने लगती है और युति होने के पश्चात रूई में मंदी होती है।

(६) बुध और शुक्र की युति होने पर रूई मंदी होती है।

(७) गुरु और शुक्र की युति मार्गी की हो तो रूई तेज हो एवं युति होने के पश्चात मन्दी होती है। यदि शुक्र वक्री होकर युति करे तो पूर्व में मंदी होती है युति के पश्चात तेज हो।

(८) रूई के व्यापारियों के मतानुसार रूई में जब प्रबल अग्नि लगती है तब रूई मंदी रहती है यह अनेकों बार अनुभव में आया है तथा कभी-कभी अनुमान सही मिलता है।

(९) प्राय: देखने में आया है कि ग्रहण होने पर चांदी, रुई तथा अन्य व्यापारिक वस्तुओं में कुछ न कुछ फेरफार अवश्य हुआ है।

(१०) शनि तुला राशि गत वक्री हो तो दो मास में शेअर्स में तेंजी हुआ करती है बाद को विपरीत हो जाता है। यह योग सम्वत् १९५४ के आषाढ़ मास में बना था।

(११) बुध एवं शुक्र ग्रहों की गति वेध से रूई व कपास की तेजी-मंदी का अनुमान लगाया जाता है।

(१२) ग्रह वक्री हो तो भावों में तेजी करता है तथा शीघ्र-गति का हो तो मंदी करता है।

(१३) ग्रह अस्त होने के समय जो भाव होंगे वे ही भाव बाद में उदय होने के समय आ जाते हैं।

(१४) बुध, गुरु या शुक्र अस्त हों तो चांदी तेज हो जाती है एवं उक्त ग्रह उदय हों तो चांदी मंदी हो जाती है।

(१५) बुध, गुरु या शुक्र वक्री हो एवं किसी पाप ग्रह की दृष्टि न हो तो चांदी मंदी हो एवं यदि पाप ग्रह की दृष्टि हो तो मंदी न हो।

(१६) बुध, शुक्र की दैनिक गति पर से रूई के भाव का अनुमान ज्ञात किया जा सकता है।

(१७) बुध, शुक्र की युति जिस प्रकार की चांदी पर प्रभाव डालती है वैसा प्रभाव रूई पर नहीं डाल सकती।

(१८) जो ग्रह भू मण्डल से जितना पास होगा उसका प्रभाव अधिक एवं जो ग्रह जितना दूर होगा उसका प्रभाव उतना ही कम होगा। ग्रहों की दूरी का गणित अंग्रेजी पंचांगों से ज्ञात हो सकता है परन्तु अब हिन्दी पंचांगकर्त्ता भी दृष्य गणित से पंचांग तैयार करने लगे हैं जिनका अन्यत्र वर्णन कर चुके हैं।

(१९) शुक्र, गुरु व बुध जिस समय अस्त हों तथा बाद जब उदय हो तो उस समय व्यापार में बहुत ही घट-बढ़ होती है।

(२०) शुक्र, गुरु व बुध अस्त होकर वक्री भी हो तो व्यापार में विशेष अस्वाभाविक फेरफार होता है।

(२१) २-३ या ४ ग्रह अस्त हो तो धीरे-धीरे अति फेरफार होता है।

(१२) जब कोई ग्रह अस्त हो तो वह ग्रह कुछ समय पूर्व से ही अपना प्रभाव दिखाने लगता है।

(२३) शुक्र एवं सूर्य का परस्पर अन्तर ज्यों-ज्यो अधिक होता जावे त्यों-त्यों भाव में तेजी या मंदी होती जायगी।

(२४) चांदी की तेजी-मंदी का विचार गुरु, शुक्र, बुध की गति से करना चाहिए। राहु से भी इसकी तेजी मंदी का विचार किया जा सकता है। इन ग्रहों के परस्पर वेध होने से तेजी-मंदी होती है। बुध, शुक्र के बेध से मंदी, गुरु, शुक्र के बेध से तेजी,

बुध, गुरु के वेध से तेजी और राहु के वेध से भी मंदी हुआ करती है।

(२५) चन्द्र एवं शुक्र के परस्पर वेध होने से चांदी की मन्दी का ज्ञान होता है।

(२६) एरण्डा, सरसों और तिल का स्वामी शनि माना गया है अतः शनि की स्थिति से उक्त वस्तुओं को तेजी-मंदी का ज्ञान प्राप्त किया जाता है।

(२७) बुध, गुरु, व शुक्र वक्री होकर सूर्य से युति हों तो शेअर्स में युति होने के पूर्व तेजी आती है एवं युति होने के पश्चात क्रम से मंदी आने लगती हैं।

(२८) बुध पश्चिम में अस्त हो तथा वक्री भी हो एवं उस समय चन्द्र का परस्पर वेध भी हो तो उस दिन चांदी में तेजी आती है।

(२९) सायन गणितानुसार शनि और मंगल एक ही नक्षत्र होकर बाद में अलग-अलग हो तो उस समय रूई के भावों में बहुत फेरफार होता देखा गया है।

(३०) शनि अस्त हो तो एरण्डी तेज हो परन्तु सूर्य के साथ युति होने के पश्चात बाद में मन्दी हो तथा इस योग के उप-रान्त जब शनि उदय हो तो पूर्व के भाव हो जाते हैं।

(३१) शनि वक्री होने के पूर्व एरण्डा के जो भाव हों तो वक्री होने पर विपरीत प्रभाव करता है अर्थात कभी तेजी तथा कभी मंदी। यदि पहले मंदी चले तो बाद में तेजी हो।

(३२) शनि मंगल, शनि गुरु, राहु गुरु, केतु गुरु या मंगल गुरु परस्पर युति हो तो शेयर बाजार में तेजी या मंदी का प्रभाव पड़ता है।

(३३) गुरु वक्री मीन राशि गत हो तो रूई में ५० टके तक की तेजी होती है। सम्वत् १९७२ के आषाढ़ मास में यह योग था जिससे रूई का भाव २३५) से आश्विन सुदी पूर्णिमा तक ३१७) हो गया था।

(३४) मीन राशि का गुरु वक्री होकर कुम्भ राशि गत आवे तो रूई में मंदी हो। सम्वत १९७२ में इसका प्रभाव हुआ था।

(३५) वैसाख सुदी चतुर्थ को गुरुवार हो तो आषाढ़ से रूई तेज हो। यह योग सम्वत १९३३-३७-४०-५४-६४-६७ व ७७ में बना था जिसका प्रभाव भी लोगों को देखने को मिला था।

(३६) भाद्रपद सुदी अष्ठमी को चन्द्रवार हो एवं मूल नक्षत्र भी हो तो रूई तेज हो। यह योग सम्वत १९५३-६७-७४ में पहले बन चुके हैं।

(३७) कार्त्तिक सुदी प्रतिपदा को बुधवार या पंचमी को रविवार हो तो आगामी पूर्णिमा से ही रूई तेज हो।

(३८) कर्क राशिगत गुरु, मीन राशि का शनि अथवा तुला राशि में मंगल हो तो गुड़, घृत और धान्य तेज हों।

(३९) यदि चन्द्र शुक्रवार को उदय हो तो रूई तेज हो।

(४०) यदि किसी मास की सुदी द्वितीया सोमवार की हो और उसी ही दिन चन्द्र दर्शन हो तो रूई में तेजी आती है।

(४१) मकर राशि गत गुरु आवे तो रूई मंदी होती है परन्तु बाद को तेज हो।

(४२) सिंह राशि गत गुरु आवे तो ८ मास तक रूई में घट-बढ़ होकर पश्चात मंदी हो।

(४३) जिस वर्ष का राजा रवि हो तो घी, गुड़, तैल, धान्य आषाढ़ सुदी से एक मास में तेज हो।

(४४) राजा चन्द्र हो तो धान्य का संग्रह भाद्रपद मास से एक मास में लाभ दायक होता है।

(४५) राजा मंगल हो तो धान्य का संग्रह करना चाहिए और आश्विन मास में बेचना चाहिए एवं गुड़, खाण्ड, कपास भाद्र पद मास में बेचने से लाभ होता है।

(४६) राजा बुध हो तो घृत, तेल, कपास, गुड़, एरण्डा, मिरच, खाण्ड से लाभ हो।

(४७) राजा गुरु हो तो धान्य का संग्रह करना चाहिए भाद्र-पद मास में लाभ हो। एवं गुड़, गेहूँ, तेल, खांड, कपासिया हल्दी मंदी हो।

(४८) राजा शुक्र हो तो श्वेत वस्तुएं एवं जवाहरात हीरा में अच्छी तेजी हो।

(४९) राजा शुक्र हो तो धान्य तेज होता है। श्रावण अथवा मार्गशीर्ष मास में बेचना लाभकारी है।

(५०) जिस मास में सुदी द्वितीया बुधवार, सुदी षष्ठमी रविवार या सुदी त्रियोदशी शनिवारी हो तो उस मास में घृत का भाव तेज होता है।

(५१) जिस मास में सुदी सप्तमी सोमवार, सुदी त्रयोदशी शनिवार की हो तो उस मास में धान्य तेज रहे।

(५२) सूर्य सिंह राशिगत हो एवं मंगल, गुरु वक्री हो तो चांदी का भाव तेज हो।

(५३) सुदी पूर्णिमा ५ घड़ी के अन्तर्गत हो तो रूई के भाव तेज हो। ध्यान रहे सभी पंचांगों में घड़ी, पल बराबर सही-सही नहीं लिखे होते उनमें प्रायः अन्तर होता है इसके लिए असली शुद्ध पंचांगों का ही उपयोग करें।

(५४) यदि षस्टमी क्षय परन्तु वह यदि २ घडी के अन्दर ही हो तो रुई मंदी हो और यदि बाजार तेज हो तो मंदी अधिक आवे।

(५५) रविवारी तिथि क्षय हो और सोमवारी अमावस्या हो तो भी रुई मंदी होती है।

(५६) मंगल शनि एकत्र हो तो रुई में २०–२५ टके तक की तेजी हो।

(५७) मंगल राहु एक राशि पर हों तो कपड़ा व मील के शेयर मन्दे हों।

(५८) मंगल राहू या केतु एक राशि पर हों एवं उस पक्ष में किसी एक तिथि का क्षय हो तो रुई १५ टके तक मंदी हो।

(५९) राहु मीन या कुम्भ का हो एवं इसके साथ जब-जब चन्द्र युति हो तो रुई मन्दी हो

(६०) सूर्य राहु एक राशि पर आवे तो रुइ मन्दी हो।

(६१) बुध शुक्र श्रवण नक्षत्र पर और गुरु पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र पर हो तो रुई मन्दी हों।

(६२) शनि गुरु तुला राशि गत हों तो रुई मन्दी हो।

(६३) शुक्र से चन्द्र ७–५–८ राशि पर हो तो रुइ में घटा-बढी-कम हो।

(६४) बुध बक्री हो एवं शुक्र भी उस समय वक्री हो तो चांदी तेज हो।

(६५) मंगल मिथुन राशि गत हो एवं उसके साथ दो ग्रह और हों तो चांदी मन्दी हो।

(६६) जिस दिन ऐन्द्र व्यतिपात या वैधृत योग हो उस दिन शेयर तेज हों।

(७७) पंचक नक्षत्र (कुम्भ राशि का चन्द्र) ५० घड़ी के पश्चात लगे और मेंष का चन्द्र भी रात को लगे तो एक मास तक शेअर्स में तेजी रहती है।

(६८) मेंष या वृश्चिक राशि पर राहु, मंगल, शुक्र एकत्र हो तो रुई तेज हो।

(६९) सर्वतोभद्र चक्र में मघा नक्षत्र को क्रूर ग्रह का वेध हो तो तेजी सौम्य ग्रह का वेध हो तो मंदी होती है।

(७०) सूर्य सिंह राशि का और शनि मकर या कुम्भ राशि का हो तो चांदी तेज हों।

(७१) सर्वतोभद्र चक्र में बुध गुरू का परस्पर वेध हो तो चांदी तेज हो।

(७२) शुक्र बुध सूर्य एकत्र हो तो धान्य तेज हो।

(७३) चार या पांच ग्रह एकत्र हों तो अशुभ फल तथा व्यापार की वस्तुओं के भावों में भी बहुत ही फेरफार हो।

(७४) सूर्य बुध गुरु शुक्र एकत्र हो तो धान्य मंदा हो मंगल बुध गुरू शुक्र एकत्र हो-तो वर्षा योग बने।

(७५) सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध गुरु, शुक्र, शनि एकत्र हो तो गोल योग होता है यह दुर्भिक्ष कारक है; सम्वत् १९५६ में यह योग बना था। उस समय कुछ प्रान्तो को छोड़कर सभी प्रान्तों में दुर्भिक्ष पड़ा था।

(७६) मकर संक्रांति के समय कर्क का चन्द्र हो तो कपास, सूत, कपड़ा तिल तैल आदि का संग्रह ५-६ ठे मास में लाभ दायक हो।

(७७) सूर्य शुक्र कर्क राशि गत हो तो चांदी में तेजी चलती है।

(७८) शुक्र कुम्भ राशि का हो तथा शनि अस्त हो तो रुई मन्दी हो।

(७९) फाल्गुन सुदी पूर्णिमा या आश्विन सुदी पूर्णिमा को रात्री में चन्द्र के कुण्डल हो तो रुई तेज हो।

(८०) किसी मास की पूर्णिमा सोमवारी हो तथा उस पक्ष में किसी एक तिथि का क्षय हो एवं शनि वक्री हो तो रुई तेज हो।

(८१) शनि, राहु, मंगल, सूर्य और गुरू का एकत्र होना शुभ नहीं।

(८२) जिस वर्ष में राहु केतु उदय हो, भूकम्प हो, उल्कापात हो तो उस वर्ष में शुभ नहीं होता।

(८३) मीन का शनि, कर्क का गुरु तथा तुला का मंगल हो तो अशुभ हो।

(८४) सटोरियों का अनुमान है कि चन्द्र जिस मास ऊभा (खड़ा) उगता है उस महीने में रुई मन्दी, और आड़ा उगता है तो तेजी होतीं हैं।

(८५) पुष्य, नक्षत्र के दिन प्रायः रुई में मन्दी साधारण होती है ऐसा सटोरियों का अनुमान है।

(८६) किसी पक्ष की दशमी या त्रियोदशी क्षय हो तो घृत तेज हों।

(८७) पंचक नक्षत्र रवि, मंगल या शुक्रवार को लगे तो आवरेज तेज और सोम या बुधवार को लगे तो मन्दी, गुरुवार को लगे तो सम एवं शनिवार को लगे तो घटा-बढ़ी हो।

(८८) षष्ठमी रविवारी हो तो धान्य तेज हो।

(८९) एक मास के अन्तर्गत दो योग टूटे तो घृत तेज और बढ़े तो मंदा हो।

(९०) चौदश की घडियों से पूर्णिमा का घड़िया अधिक हो तो घृत मन्दा हो ।

(९१) कातिक बदी दशमी को शनिवार और मघा नक्षत्र हो तो चार मास में घृत तेज हो ।

(९२) तिथि द्वितिया बुधवार, षष्ठमी रविवार और दसमी गुरुवार की हो तो घृत तेज हो ।

(९३) शुक्ल पक्ष में क्रूरवार (सूर्य मंगल शनि) को योग टूटे तो पूरा योग और कृष्ण पक्ष में टूटे तो आधा योग घृत की तेजी का समझना चाहिए ।

(९४) शुक्ल पक्ष में चतुर्थी टूटे तो घृत तेज हो ।

(९५) पोष वदी द्वादशी को ज्येष्ठा नक्षत्र एवं बुधवार हो तो घृत तेज हो ।

(९६) गुरुवार के दिन बुध राशि बदले एवं उस समय बुध से चन्द्र ५।१८ राशि पर हो तो घृत तेज हो ।

(९७) पंचक लगे उस दिन के और पंचक उतरे उस दिन के दोनों समय के बाजार भाव देखें । यदि लगने के समय से उतरने के समय तक बाजार तेज रहे तो एक माह तक तेजी और मन्दी रहे तो एक माह तक मंदी रहती है । अधिक तेजी रही हो तो अधिक तेजी और अधिक मंदी रही हो तो अधिक मंदी चलती है । पंचक अगले मास का आवे उसके बीच में जब-जब शुक्रवार आवे और उस दिन पंचक मुजब तेजी या मंदी हो तो बुधवार तक विशेष फल होता है । यदि शुक्रवार के दिन विपरीत फल हो तो थोड़ा फल होता है ।

(९८) अनुमान लगाया जाता है कि सोमवार को मंदी रहे तो मंगल को तेजी और तेजी रहे तो मंगल को मंदी रहे।

(९९) अनुमान किया जाता है कि मंगलवार को किसी वस्तु की तेजी हो तो वह तेजी बुधवार को १२ बजे तक रहती है बाद को मंदी आती है। इसी ही प्रकार यदि मंदी हो तो वह मंदी बुधवार को १२ बजे तक रहती है बाद को तेजी आती है।

(१००) बुधवार को जो भाव प्रभात को होते हैं वे भाव शनिवार के पहिले-पहिले एकबार पीछे प्रायः आजाते हैं।

(१०१) गुरुवार को जो तेजी अथवा मन्दी चले वह शनिवार तक प्रायः रहती है।

(१०२) शुक्रवार को जो तेजी चलें तो पीछे मंदी आजाती है वह तेजी पक्की नहीं समझी जाती।

(१०३) शनिवार को तेजी चले तो बहुतायतः से बाजार एक सप्ताह तक तेज रहता है और ऐसे ही मन्दी चले तो एक सप्ताह तक मन्दी चलती है।

(१०४) गुरुवार के दिन किसी भी वस्तु का जो भाव हो वह भाव पीछे न होकर एक तरफी तेजी चले तो भी बाजार एकबार अवश्य घटकर वही गुरुवार के भाव पीछे आजावेंगे। वैसे ही यदि एकतरफी मन्दी चले तो भी एकवार बढ़कर वही गुरुवार के भाव पीछे आजावेंगे। यह प्रायः देखा गया है कि गुरुवार के दिन जो भाव रहे हों वे भाव प्रायः करके १०० दिन में पीछे आजाते हैं।

(१०५) अनुमान लगाया गया है कि रविवार को किसी वस्तु की तेजी रहे तो सोमवार को मंदी आती है और यदि रविवार को मन्दी रही तो सोमवार को तेजी आती है।

(१०६) सोमवार को भाव एक दम घटे तो मंगलवार को बाजार देखकर तेजी का व्यापार करना चाहिए बुधवार को थोड़ी मंदी होकर गुरुवार को बहुत तेजी होती है।

(१०७) मंगलवार के भाव से बुधवार को तेजी हो तो गुरुवार को एक बार तेजी होकर बाद को बाजार मन्दा हो जावेगा।

(१०८) मंगलवार के भाव से बुधवार मन्दा हो तो गुरुवार को एक बार बाजार मन्दा होकर बाद को तेज हो जाता है।

(१०९) मंगलवार को तेजी हो और पुनः शनिवार को तेजी हो तो आगामी मंगलवार तक तेजी चलती है। पर यदि शनिवार को मन्दी हों तो बाजार की तेजी अटक गई समझना चाहिए।

(११०) उपरोक्त अनुमान शास्त्रानुसार नहीं है वल्कि बड़े-बड़े सटोरियों का अनुमान है और वे इसी ही आधार पर व्यापार करते हैं जो प्रायः सही ही बैठता है यहाँ हम सर्व साधारण कीं जानकारी हेतु लिख रहे हैं।

(१११) यदि शनि किसी भी राशि गत हो वहां मंगल केन्द्र में आ जावे अथवा शनि, बुध सूर्य राहु से युक्त हो या बुध सूर्य राहु ये तीन ग्रह एक राशि में हो तथा राहु को छोड़कर शेष ग्रह मार्गी हो तो मंदी की चालू लाइन में तेजी का योग बन जाता है।

(११२) वृश्चिक राशि में सूर्य, शुक्र, बुध, गुरु, शनि के साथ युक्त हो और मंगल की पूर्ण दृष्टि इन पर हो तो मंदी से तेजी अचानक आती है।

(११३) वृश्चिक राशि में राहु, शनि, सूर्य, चन्द्र, बुध, ये पाँच ग्रह एक साथ हों और सूर्य ग्रहण भी इसी राशि गत पड़ जाय तो तेजी से मंदी का योग बन जाता है।

(११४) सूर्य मकर राशि में प्रवेश करे उस समय गुरु की पूर्ण दृष्टि मकर संक्रमण काल में पड़ जाय। मंगल मेष राशि में परिभ्रमण करता हुआ मकर राशिगत सूर्य के साथ केन्द्र योग बना रहा हो तो सम्पूर्ण रस, घृत, तेल, गुड़, गेहूँ, चना, जौ मटर, उडद, अरहर, मूंग, सरसों, अलसी, अरण्डी आदि व्यापारिक गल्लों में अच्छी मंदी के योग चालू हो जाते हैं।

(११५) कुम्भ की संक्रांति का सूर्य—सूर्योदय के बाद दिन के पूर्वार्ध में अपना संक्रमण लेवे एवं मकर राशि गत उस समय शुक्र अस्त हो जाय, अस्त हुए शुक्र पर शुभ ग्रह कन्या राशि के गुरु की पूर्ण दृष्टि पड़ती हो एवं ४५ मुहुर्ती कुंभ संक्रांति हो तो तीन मास तक लगातार गल्ला बाजार में मंदी रहे अर्थात जब तक शुक्र अस्त रहे तब तक मंदी रहे।

(११६) इसी प्रकार अन्य किसी भी संक्रांति में जो ४५ मुहुर्ती हो शुक्रास्त हो एवं गुरु की अस्तांगत शुक्र पर दृष्टि हो तो जब तक शुक्र अस्त रहेगा (शुक्र किसी भी राशि में प्रायः २॥ मास तक अस्त रहता है) तब तक गल्ला-बाजार—धान्य सरसों, अलसी, अरण्डी, पाट, जूट, बारदाना आदि में मंदी रहे।

(११७) शुक्र ग्रह पश्चिम दिशा में वृषभ या तुला राशि में उदय हो और गुरु तथा शनि अलग-अलग राशि गत वृषभ या तुला के शुक्र से केन्द्रवर्ती हो और सभी ४।७।१० राशि में हों तो चालू मंदी की लाइन में तेजी के योग बन जाया करते हैं।

(११८) सोमवार को चन्द्रग्रहण खग्रास हो तो चालू मंदी की लाइन में तेजी का योग बन जाता है इस योग को चूड़ामणि योग कहते हैं।

(११९) मंगल ग्रह अस्तावस्था में सिंह राशि गत हो बुध शुक्र सूर्य के साथ योग करता हो शनि की उस पर पूर्ण दृष्टि हो तो अनेक व्यापारिक गल्लों के बाजारों में अच्छी तेजी की लाइन बन जाती है। यह ध्यान रहे मंगल अस्तावस्था में मंदी का योग बनाता है परन्तु मंगल की अस्त स्थिति में सिंह राशि गत जैसे-जैसे बुध, सूर्य, शुक्र आकर मिलते जायें वैसे-वैसे ही मंदी से तेजी बढ़ती जायगी शनि पूर्ण दृष्टि से तेजी स्थिर होगी।

(१२०) बुध ग्रह वक्री होकर सिंह राशि गत हो एवं मंगल सिंह राशि में सूर्य के साथ-साथ रहता हुआ अंशो के पीछे हो तो गेहूँ, जौ, मटर, अरहर, सभी प्रकार की वस्तुएं, घृत, तैल रसादि पदार्थ, रुई, पाट, बारदाना, गुड़, सरसों, अलसी, अरण्डी तिल तथा सभी अनाज तेज हो जाते हैं। उक्त योग वर्षा काल में भी वर्षा की खेंच करता है इसी ही कारण से (वर्षा की कमी से) प्राय: तेजी होती है।

(१२१) कन्या राशि गत शीघ्रगति का शुक्र गुरु के साथ हो

एवं गुरु, शुक्र के अंशों के पीछे हो तो अवृष्टि कारक योग बनता है जिससे वृष्टि की कमी के कारण धान्यों, रसों, रुई, पाट, बारदाना, गुड, सरसों में तेजी होती है।

(१२२) गुरु कन्या राशि में अस्त हो तथा मंगल सूर्य से युक्त होकर कन्या राशि गत हो तथा मंगल से आगे जैसे-जैसे सूर्य बढ़ेगा वैसे-वैसे गल्ले में मंदी बढ़ेगी तथा वर्षा के योग से भी मंदी आवेगी। यदि अमावस्या को चार ग्रह—सूर्य, मंगल, गुरु,चन्द्र कन्या राशि गत एक साथ हो और अमावस्या को सोमवती पड़ जाय तो बाजारों में मंदी की हवा बंध जायगी।

(१२३) तुला राशि गत गुरु, राहु हो, तुला राशि से अगली राशि वृश्चिक राशि में शनि, मंगल हो, वृश्चिक राशि से अगली धनु राशि में बुध, सूर्य, चन्द्र हो तथा धनु राशि से अगली राशि मकर में शुक्र हो तो लगातार सभी ग्रहों के इस प्रकार के योग में प्रायः सभी व्यापारिक वस्तुओं में अति तेजी आ जाती है। इस प्रकार के योग से चालू तेजी स्थिर होती है अर्थात् कम से कम ऐसी तेजी १ मास तक रहती है।

(१२४) माघ शुक्ल पक्ष में मकर राशि गत सूर्य शुक्र के साथ हो तथा शुक्र अस्तावस्था में हो तो वृष्टि के योग होने से बाजारों में मंदियां आ जाती हैं विशेषकर गुड़, सरसों, मटर, अरहर,गुवार तेल के वायदा व्यापार में मंदी के योग हो जाते हैं।

(१२५) यदि मकर की संक्रांति १५ मुहुर्ती हो एवं रात्रि में लगे तो प्रथम तेजी का झटका देकर बाद में मंदी करती है।

(१२६) शनि धनु राशि में मूल नक्षत्र में प्रवेश करे वहां मंगल ग्रह भी पहले से परिभ्रमण कर रहा हो तो अनावृष्टि का योग बनने से दुर्भिक्ष का कारण बन जाता है अथवा कोई ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जाती है जिससे व्यापारिक सम्बन्धी बाजारों में तेजी का प्रभाव उत्पन्न हो जाय।

(१२७) चैत्र शुक्ल पक्ष में शनिवार एवं ५ रविवार हों, तथा मंगल वृषभ राशि गत वृश्चिक राशि के शनि की पूर्ण दृष्टि से युक्त हो एवं बुध, शुक्र, सूर्य मीन राशि गत स्थिर हों तो गल्ला मार्केट में बहुत ही घटा-बढ़ी चलती है तथा प्रायः अधिकांश वस्तुओं में तेजी होती है।

(१२८) ऊपर बताये गए योग में बुध, शुक्र, सूर्य मीन राशि गत न भी हो तो भी सभी धातु, तिलहन, सातों धान्य, रसादि पदार्थ, रुई, पाट, बारदाना आदि में अच्छी तेजी हो।

(१२९) चैत्र शुक्ल पक्ष में पांच शनि एवं रविवार हों मीन राशि गत बुध सूर्य शुक्र—तीनों ग्रह एकसाथ हों एवं इन पर कन्या के गुरु की पूर्ण दृष्टि न पड़ती हो तो सर्व रसादि पदार्थ, सभी धातुएं सातों धान्य, तिलहन आदि सभी गल्लों के बाजारो में मंदी का योग बन जाता है।

(१३०) बुध, सूर्य, केतु—एकसाथ मेष राशि गत हो एवं तुला राशि में स्थित राहु, गुरु के योग द्वारा वेधित हो तथा मंगल व शनि की दृष्टि से युक्त हों तो सर्व वस्तु में तेजी हो।

(१३१) किसी मास की शुक्ल पक्ष में पांच शनिवार हों,

अमावस्या भी शनिवारी हो तथा उसी ही दिन सूर्य ग्रहण भी पड़े एवं उच्च राशि की मेष की संक्रांति भी रविवारी हो तो वस्तु मात्र में तेजी का योग बनता है।

(१३२) बुध वक्री अवस्था में सूर्य चन्द्र के साथ हो और अमावस्या में सूर्य ग्रहण भी पड़जाय तथा गुरु और शनि–दोनों ही वक्री स्थिति में हो तो तेजी का योग होता है।

(१३३) सूर्य ग्रहण शनिवारी हो एवं १५ दिन बाद ही शनिवार को ही चन्द्र ग्रहण पड़े तथा शनि गुरु बुध वक्री हों तो भी तेजी का प्रबल योग बनता है।

(१३४) कर्क राशि में बुधवार को अमावस्या में ४५ मुहुर्ती हो और अधि मास श्रावण मास का पड़ जाय तो मन्दी हो।

(१३५) सोमवार को चन्द्र दर्शन हो बुधवार को कन्या की संक्रांति १५ मुहुर्ती क्यों न हो तथा बुध सिंह राशि गत अस्त होने से ही चारों ओर वर्षा के अच्छे योग होने से मन्दी चालू हो।

(१३६) तुला राशि में सूर्य, बुध, शुक्र, गुरु—चारों ग्रह एक साथ हों तथा तुला राशि गत शुक्र गुरु एक साथ अस्त हों तो रुई के बाजार में एक दम मंदी आती है, पाट, बारदाना में भी मंदी का योग बनता है परन्तु अनाज धान्य भाव समान रूप से चलते रहते हैं।

(१३७) मंगल वृषभ राशि गत हो और वृश्चिक राशि में शनि के साथ पूर्ण वेध हो रहा हो तो तिल सरसों अरण्डी, घृत तेल गुड़ में तेजी एवं धान्य भाव में समान रूप रहे।

(१३८) धनु राशि गत शनि मूल नक्षत्र में मन्द गति का हो एवं वक्री मंगल की पूर्ण दृष्टि हो तो सन, कपास, पाट, बारदाना रुई घृत तैल, गुड़, शकर, रसादि पदार्थ, सरसों अलसी अरण्डी आदि तेज हों।

(१३९) अस्त गुरु तुला राशि में परिभ्रमण करता हुआ कार्तिक मास की शुक्ल पक्ष को उदय हो और दीपावली मंगलवारी हो तथा कार्तिक सुदी की कोई तिथि टूटी हो तो अच्छी तेजी हो विशेषकर रसादि पदार्थों, रुई, पाट, बारदाना, गुड़ में।

(१४०) बुध पश्चिम दिशा में अस्त वृश्चिक राशि गत होकर सूर्य शुक्र से युक्त हो मंगल ग्रह मेष राशि गत ही पूर्ण दृष्टि से देख रहा हो तो वस्तुमात्र में तेजी से मंदी की स्थिति धारण हो जाती है।

(१४१) पौष मास में पांच शनिवार हो, शनि सूर्य, शुक्र के साथ धनु राशि गत हो तथा मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, सभी ग्रह मार्गी हों तो तेजी का योग बनता है। यह स्मरण रहे पांच ग्रहों का एक साथ मार्गी होना तेजी कारक एवं पाचों ग्रहों का एक साथ वक्री होना मंदी कारक होता है।

(१४२) वर्ष का मंत्री सूर्य ग्रह होता है तो राजा, रोग एवं चोरों से जनता को भय होता है परन्तु धान्योत्पत्ति अति उत्तम होती है तथा मंदी भी अच्छी रहती है।

(१४३) चन्द्र वर्ष का मंत्री हो तो जनता में सुख समृद्धि रहती है वर्षा भी अच्छी होती है चारा भी अच्छा उत्पन्न होता है। व्यापारिक वस्तुओं में भी मंदी ही रहती है।

(१४४) मंगल वर्ष का मंत्री हो तो जनता सुखी रहती है अन्न का उत्पादन अति उत्तम होता है गौ के दूध कम देने से दूध की कमताई होती है तथा चोरों का उपद्रव बढ़ता है।

(१४५) बुध वर्ष का मंत्री हो तो धन धान्य की उत्पत्ति अति अच्छी रहती है वर्षा भी अधिक होती है फिरभी धान्य के भाव तेज रहते हैं। महिला वर्ग में विलासता अधिक बढ़ती है।

(१४६) गुरु वर्ष का मंत्री हों तो धान्य की उत्पत्ति अति उत्तम रहती है तथा भाव में मंदी भी अधिक आती है एवं जनता व शासक वर्ग में धार्मिक भाव अधिक जागते हैं यज्ञ यज्ञादि भी अधिक होते हैं।

(१४७) शुक्र वर्ष का मंत्री हो तो टिड्डी, जंगली जानवर, मूसों का भय अधिक रहे वर्षा अति हो धान्य भाव मन्दे रहें तथा इति दोष बढ़ जाता है।

(१४८) शनि वर्ष का मंत्री हो तो वर्षा की कमी रहती है धान्य भाव तेज रहते हैं एवं उद्दण्डता अधिक बढ़ती है।

(१४९) शनि वक्री होकर वृश्चिक राशि में चल रहा हो और मंगल ग्रह की दृष्टि उससे हट जाय तथा कन्या राशि को छोड़कर गुरु भी वक्री होकर सिंह राशि में पहुंचे तो अति मंदी कारक योग बनता है इस योग से विशेष कर सरसों, अरण्डी, अलसी गल्ला अच्छी मंदी करता है।

(१५०) गुरु से केन्द्र स्थान में सूर्य तथा शुक्र का योग हो और

द्वितीय स्थान में शनि मंगल का योग हो तो धान्य सर्व तेल, तिल सरसों अलसी अरण्डी में अति मंदी हो।

(१५१) गुरु वक्री हो, मंगल शुक्र के साथ योग कर रहा हो शनि ग्रह अस्त हो रहा हो अथवा शुक्र मंगल एवं शनि तीनों ग्रह एक साथ हो तो सर्व धान्य, तेल, तिल घृत, सरसों, गुड़, अरण्डी अलसो रसादि पदार्थों में अच्छी मंदी के योग बना करते हैं।

(१५२) गुरु कन्या या मीन राशि में अस्त हो अथवा गुरु के साथ चन्द्र, बुध, शुक्र, सूर्य एक साथ योग करें अथवा परस्पर योग करें अर्थात गुरु चन्द्र के योग, सूर्य शुक्र बुध की युति के साथ दृष्टि रखकर योग बनावे तो गेहूँ, चना, जौ, मटर, अरहर, सरसों, अलसी, अरण्डी, तेल, तिलादिकों में मंदी करता है।

(१५३) बुध वृश्चिक राशि में शुक्र के साथ योग करता हो और कुम्भ राशि में गुरु अस्त होता हो तो मंदी आती है तथा इन दोनो राशियों में किसी एक राशि में यदि चन्द्र प्रवेश करे तो भी मंदी होती है विशेष कर सरसों अलसी अरण्डी गेहूं, चना, जौं, मटर आदि धान्यों में अति मंदी आती है।

(१५४) बुध कन्या की अपनी उच्च राशि में वक्री होकर अथवा शीघ्र गति को धारण करके नेपच्यून के साथ अपनी द्रुत गति को पकड़े तो सरसों अलसी अरण्डी में विशेषकर मूंगफली, मक्का, बाजरा एवं मोटा अनाज घृत तेल तिलहनादि में मन्दी आती है।

(१५५) बुध धनु, कर्क अथवा मीन राशि में मंगल के साथ योग करे तो रसादि पदार्थ, धान्य सरसों आदि में मन्दी होती है।

(१५६) गुरु कर्क, मीन अथवा धनु राशि में शनि व मंगल से युक्त हो तो गल्ला आदि सातों धान्य, तेल, तिलहन में मन्दी हों तथा गुरु तुला राशि में शुक्र मंगल के योग से भी मंदिया करती हैं।

(१५७) किसी भी राशि में गुरु, चन्द्र, मंगल एक साथ हों तो पहले समस्त प्रकार के धान्य तेज रहा करते है बाद को योग होते ही व्यापारिक गल्लों में—सरसों अलसी अरण्डी गेहूँ चना जौ मटर अरहर तेल आदि में मंदी आती है।

(१५८) कर्क राशि में गुरु हो, मंगल तुला राशि में हो व शनि, मीन राशि में हो या शनि, सूर्य, मंगल वृषभ राशि में हो, अथवा शुक्र मेष राशि में हो या मेष राशि में शुक्र, मंगल, सूर्य शनि योग करें अथवा अलग-अलग ये ग्रह भी मेष राशि में आकर मिले, तो गल्ला, तेल, और तिलहन के बाजारों में तेजी के योग बनते हैं। शुक्र राहु भी मेष राशि में युक्त हों तो भी धान्य तिलहन तेज होते हैं।

(१५९) मीन अथवा धनु राशि गत शनि राहु से युक्त हो अथवा वक्री मंगल से युक्त हो तो धान्य तथा तेल तिलहनों में अति तेजी हो।

(१६०) गुरु कर्क राशिगत, शनि वृश्चिक राशि में राहु के साथ हो और मंगल वृश्चिक राशि को छोड़ता हुआ धनु राशि में

हो तो धान्य तिलहन सरसों अलसी अरण्डी के भावों में अति तेजी हो।

(१६१) मंगल गुरु शुक्र शनि किसी राशि में एकत्र हो तो धान्य तिलहन आदि में तेजी आती है अथवा मंगल शुक्र शनि राहु किसी एक राशि में आकर मिले तो भी धान्य तेल, तिलहनों में तेजी आती है।

(१६२) किसी भी राशि में पांच ग्रह—सूर्य शनि, गुरु, मंगल बुध एक साथ हो तो पशु पक्षी जीव जन्तु सभी पीडित हो अति वृष्टि या अनावृष्टि से अति हानि हो। घास धान्य सरसों आदि में तेजी हो।

(१६३) ज्येष्ठा नक्षत्र में गुरु हो वृश्चिक राशि गत अनुराधा का शनि हो या वृषभ राशि में मंगल राहु हो अथवा शनि राहु या आर्द्रा नक्षत्र में शनि राहु हो तो व्यापारिक धान्यादि जिन्सों में गेहूँ चना जौ मटर अरहर में अच्छी तेजी हो।

(१६४) रोहिणी नक्षत्र में शुक्र मंगल शनि और चन्द्र का योग बन जाय अथवा श्रवण नक्षत्र में बुध अस्त हो तो गेहूँ चना जौ मटर के भाव तेज हों।

(१६५) मेष राशि में मंगल शुक्र राहु एक साथ हो तो जौ, चना, गेहूँ, अरहर, मसूर, गुड़, अलसी, सरसों, अरण्डो, मूंगफली में प्रबल तेजी होती है।

(१६६) खग्रास (पूर्ण) चन्द्र ग्रहण के उपरान्त ही १५ दिन के अन्तर्गत ही सूर्य ग्रहण हो तो ग्रहण के पूर्व चांदी, सोना, रुई, तिलहन, धान्य, शेयर आदि में अच्छी तेजी होती है,

(१६७) कन्या राशि में मंगल राहु के साथ हो, धनु राशि में स्थित शनि की पूर्ण दृष्टि पड़ रही हो एवं शुक्र वक्री अवस्था में सूर्य के साथ हो या अस्त हो तो व्यापारिक सम्बन्धी गल्लों के भाव दुतर्फा अच्छी घट बढ़ में बनते हैं।

(१६८) भाद्रपद मास की शुक्ल पक्ष की दो तिथियां क्षय हों जाने से त्रयोदश दिन का पक्ष हो तथा शनि मन्दी गति का हो कर मार्गी हो तो दुतरफा घट-बढ़ हो। वैसे भी १३ दिन का पक्ष हो तो संसार में हानियां होती हैं।

(१६९) आश्विन मास में पांच शुक्रवार व गुरुवार हों, सूर्य, बुध, राहु, मंगल कन्या राशि में एकत्र हो रहे हो तो अच्छी मन्दी आती है तथा बुध कन्या राशि में अस्त होकर शीघ्र गति से तुला राशि में उदय हो तो जब भी वह तुला में उदय होगा तभी से सरसों, अरण्डी, अलसी, रुई, पाट, वारदाना, गला गुड़ रसादि पदार्थ तेज होने लगते हैं।

(१७०) मंगल, सूर्य, तथा सूर्य, राहु कन्या राशि में हो, वृश्चिक राशि का शनि की दृष्टि उस पर पड़ रही हो तो जनता में पीड़ा करता है एवं रोग अशान्ति का वातावरण पैदा हो तथा व्यापारिक वस्तुओं में तेजी हो, विशेष—रुई में सूर्य, मंगल योग से तेजी और सूर्य, राहु के योग से मंदी होती है।

(१७१) मार्गशीर्ष मास में पांच सोमवार व मंगलवार पड़े और पांचों ग्रहों का योग किसी एक राशि पर हो (बुध, सूर्य, [illegible]) तो हर व्यापारिक वस्तु में बहुत ही घटा-बढ़ी

चलती है अर्थात् पांच सोमवार हों तो मंदी, पांच मंगलवार हो तो तेजी होती है।

(१७२) मंगल शुक्र गुरु बुध एक साथ वृश्चिक राशि में मार्गी होकर स्थिति हो और धनु राशि के शनि व सूर्य की पूर्ण दृष्टि हो तो तेज़ी कारक योग होता है अर्थात व्यापारिक वस्तुओं के भावों में अच्छी तेजी आया करती है।

(१७३) धनु राशि गत गुरु व शनि हो मकर राशि में शुक्र एवं मंगल हो तथा सूर्य, बुध कुम्भ राशि के हों तो वस्तु मात्र में तेजी के योग बनते हैं।

उपरोक्त तेजी-मंदी के योग बताये गए हैं फिर भी देश समय की परिस्थिति से भी तेजी-मन्दी के योगों को विद्वानों को समझना चाहिए।

चांस निकालने की विधिः—

(१) जब कोई एक ग्रह जिस वस्तु का कि वह स्वामी है उसका दृष्टि सम्बन्ध अथवा स्थान सम्बन्ध दूसरे ग्रह से पड़ जावे तो दूसरा ग्रह उस प्रथम ग्रह का सहायक ग्रह माना जाता है और तीसरा ग्रह का भी सम्बन्ध बन जाय तो वह तीसरा ग्रह उप सहायक ग्रह होता है यदि सहायक और उप सहायक ग्रह शुभ ग्रह हों तो मंदी का चांस और यदि पाप ग्रह हों तो तेजी का चाँस बन जाता है।

(२) अब यहाँ रुई में चाँस निकालने के प्रसंग में यह समझने की है कि रुई मूल पदार्थ है, इसका श्वेत वर्ण है। शुक्र ग्रह से

प्रायः इसका सम्बन्ध होता है, मंगल ग्रह इसका सहायक होता है (मालिक, अधिकारी नहीं होता)। सूर्य ग्रह उपसहायक ही हुआ करता है इसलिए रुई के चांस साधन के लिए शुक्र, मंगल, सूर्य— इन तीन ग्रहों के द्वारा ही करें, रुई में चन्द्र से भी सहायता ली जा सकती है।

(३) शुक्र ग्रह वक्री होकर सूर्य से अपनी कम ही चाल अथवा गति रखता हुआ सूर्य से इत्थशाल करता हो तो वह रुई, में तेजी कारक होता है। इसके विपरीत शुभ ग्रह से इत्थशाल होने पर मन्दी के चांस बन जाते हैं पूर्ण अस्त कालिक अवस्था में भी मन्दी के ही योग बना करते हैं।

(४) शुक्र ग्रह सूर्य से आगे हो और इत्थशाल करता हो किसी शुभ ग्रह से उसका सम्बन्ध न हो तो रुई तेज हो जाती है यदि सूर्य के साथ ही शुक्र हो जाय और अंशों से भी यदि बराबर हो तो पूर्णास्त कालिक अवस्था होने से अति और मोटी तेजी आती है।

(५) वृश्चिक तथा सिंह राशि में मंगल ग्रह वक्री होकर पाप ग्रहों से देखे जाते हों शुभ ग्रहों की वहां दृष्टि न हो तो हर प्रकार से रुई तेज हो।

(६) सूर्य, मंगल शुक्र के साथ अलग-अलग इत्थशाल योग करता हो अर्थात् सूर्य का मंगल का इत्थशाल हो, सूर्य का शुक्र का इत्थशाल हो और दोनों ही इत्थशाल एक साथ होते हों—पाप ग्रहों के साथ सूर्य का इत्थशाल हो शुभ ग्रह की दृष्टि न हो तो तेजी के चांस बन जाते हैं।

मंगल के साथ गुरु ग्रह हो, चन्द्र के साथ गुरु हो, गुरु शुक्र के साथ हो अथवा गुरु बुध के साथ हो तो व्यापारिक वस्तुओं में मंदियां होती हैं, परन्तु पाप ग्रह योग द्वारा तेजी कहनी चाहिए।

सूर्य ग्रह को बुध पूर्ण दृष्टि से वेध करता हो तथा पूर्ण चन्द्र सूर्य से देखा जाता हो शुभ ग्रह की दृष्टि का सम्बन्ध आपस में नहीं हो तो हर प्रकार से व्यापार में तेजी के योग बनते हैं।

शुक्र ग्रह गुरु ग्रह से पीछे हो अथवा एक राशि पर भी अंशों करके शुक्र पीछे हो गुरु आगे हो तो अच्छी मंदी होती है जैसे-जैसे शुक्र अपनी तीव्र गति द्वारा गुरु के पास में आता जावेगा तेजी भी उसी प्रकार बढ़ती जाती है और जब शुक्र आगे पहुंच जायगा तेजी भी बढ़ जायगी।

इत्थसाल योग की जानकारी—

इत्थशाल योग तीन प्रकार का होता है भूत इत्थशाल, बर्तमान इत्थशाल, भविष्य इत्थशाल—तीनों प्रकार का इत्थशाल योग ग्रहों की स्पष्टी के आधार पर जाना जाता है -

सूर्य के १५, चन्द्र के १२, मंगल के ८, बुध के ७, गुरु के ९, शुक्र के ७, शनि के ९, ये ही अंश होते हैं और अपने स्थान से १।३।४।५।७।९।१०।११ इन स्थानों में दृष्टि ग्रहों की होती है।

यहां इत्थशाल योग जानने के वास्ते जिन दो ग्रहों का इत्थशाल विचारना हो जो मन्द गति ग्रह हो उसका अंश अधिक हो और शीघ्र गति ग्रह का अंश कम हो और शीघ्र गति ग्रह भी

मन्द गति ग्रह को देखता हो, शीघ्र गति ग्रह के अंश में अपना उपरोक्त घटित ही अंश छोड़कर उन ही अंशों के अन्दर ही मन्द गति ग्रह का अंश पड़ जाय तो इत्थशाल योग हो जाता है। शीघ्र गति ग्रह मन्द गति ग्रह को अपना तेज देता है, पूर्ण इत्थशाल योग होने से पूर्ण रूप से तेजी-मन्दी होती है।

बायदा बाजार में रूई

बायदा बाजार में रुई भी अपना एक विशेष स्थान रखती है। भारतवर्ष में इसका व्यापार तीन हजार वर्ष पूर्व से हो रहा है। यंत्र कल के न बनने से पूर्व भारतीय कपड़े की विदेशों में विशेष मांग थी १९ वीं सदी से भारत में भी कपड़े के मील खुल गए परन्तु उनका विकास प्रथम महायुद्ध से हुआ।

रुई का बाजार वर्तमान समय में अमेरिका के भाव से चलता है इसका सबसे बड़ा बाजार न्यूयार्क है, इसी बाजार के भावों पर जिन्हें फ्यूचर्स कहते हैं, रुई की घट-बढ़ होती है। रुई का व्यापार करने से पूर्व निम्न बातों की जानकारी आवश्यक है—

(१) जब अमेरिका और इंगलैण्ड की हुंडी का भाव बराबर हो तो २०२ फीचर एक पैनी के बराबर होता है।

(२) लीवरपुल में एक पाइण्ट घट-बढ़ होने से लीवरपुल में १०० गांठों पर २ पोन्ड का अन्तर होता है क्योंकि १०० गांठ में ४८,००० रतल रुई होती है (१ पैनी अथवा १ सेण्ट के १०० वें भाग को १ पाइन्ट कहते हैं)।

(३) न्यूयार्क का बाजार १० बजे खुलता है जिसे ग्रॉपनिंग बाजार कहते हैं और ४ बजे बन्द होता है जिसे क्लोजिंग बाजार कहते हैं। शनिवार को २ बजे बन्द होता है एवं रविवार को बाजार बिल्कुल बन्द रहता है।

(४) अमेरिका और लीवरपुल में Middling upland Cotton सौदा होते हैं।

(५) इजिपशन रुई का सौदा कम से कम ५० गांठ का है और ५० गांठ में ३६,००० रतल रुई होती है।

(६) चांदी के भाव की घट-बढ़ रुई के भाव पर भी अति प्रभाव डालती है। चांदी जैसे-जैसे मंहगी होगी वैसे ही वैसे कपड़ा तथा रुई में भी तेजी प्रायः होती है।

(७) अमेरिका में रुई की बावनी मार्च-अप्रेल में होती है एवं रुई की अच्छी फ़सल के लिए अप्रैल के अन्तिम सप्ताह, मई तथा जून के प्रथम सप्ताह ठीक-ठीक मामूली बरसात होनी चाहिए यदि कम वर्षा हो तो भी उत्तम है। जून के अन्तिम सप्ताह, सम्पूर्ण जौलाई और अगस्त में अच्छी धूप व गर्मी अधिक हो, कभी-कभी अच्छी बौछार और पानी भी बरसे तथा सितम्बर व अक्टूबर बिल्कुल सूखे अर्थात वर्षा न हो, होने चाहिए इस प्रकार की जलवायु होने से रुई का उत्पादन अच्छा रहता है।

हानिप्रद पाला (वर्फ) अधिकांशतः २० अक्टूबर से नवम्बर के प्रथम सप्ताह तक पड़ा करता है। जो पाला २० अक्टूबर के

आस-पास पड़े वह अधिक हानिकर नहीं होता बर्फ पड़ने से रुई के पाक को अति हानि पहुंचती है।

उपरोक्त हालत का ज्ञान सदैव ज्ञात करते रहना चाहिए जिससे रुई के उत्पादन का ज्ञान रहने से उसके भावों की भी धारणा बनाई जा सके।

कुछ व्यापारियों का यह अनुमान है कि अमेरिका में कार्तिक वदी अमावस्या से कार्तिक सुदी पूर्णिमा तक कभी-कभी बर्फ पड़ता है जो हानिकर होता है।

(८) अमेरिकन शासकीय वाशिंगटन से मई, जून, जौलाई अगस्त, सितम्बर और अक्टूबर में दिनांक २५ के आस-पास अथवा पहिली, दूसरी तारीखों को फसल की हालत की रिपोर्ट निकलती है जिसे Condition Report कहते हैं।

दिसम्बर में सम्पूर्ण फसल का अनुमान जो अमेरिका में होगी उसकी भी रिपोर्ट प्रकाशित करती है तथा सितम्बर से जनवरी तक १० जीनिंग रिपोर्ट भी प्रकाशित होती हैं इन सभी रिपोर्टों के अनुसार ही रूई भावों में भी घटा-बढ़ी चलती है।

यह स्मरण रहे अमेरिका देश ही संसार में रूई उत्पादक देशों में सर्व प्रथम है।

(९) भारतीय रूई दो प्रकार की होती है एक तो जो जल्दी उत्पन्न होती है और दूसरी जो देर से उत्पन्न होती है। मध्य एवं उत्तरी भारत में इसकी कृषि जल्द होती है एवं दक्षिणी तथा पश्चिमी भारत में इसकी कृषी देर से होती है।

(१०) मार्च से अगस्त तक इसकी बावनी होती है और Harvesting पैदायश अक्टूबर से अप्रैल तक है। दक्षिणी भारत के कुछ विभागों में अक्टूबर तक वावनी होती रहती है और जोलाई में इसका पाक उतरता है।

वर्षा ऋतु प्रारम्भ में अच्छा हो तो रूई में मन्दी आती है और वर्षा अच्छी न हो तो बाजार तेज रहता है।

(११) भारत में रूई के लिए बम्वई बाजार बड़ा है यहां के ही बाजार से अन्य केन्द्रों के भाव भी घटते-बढ़ते हैं।

मानसून के अच्छे-बुरे प्रभाव से बम्बई के लोकल बाजार में भी घट-बढ़ होती है। आश्विन सुदी में वर्षा हो तो रूई के पाक पर मध्य एवं उत्तरी भारत की रूई पर हानिप्रद प्रभाव पड़ता हैं।

(१२) भारत रूई का निर्यात अच्छा करता है अतः विदेशी खरीद के अनुसार ही यहां के बाजारों में भी घट-बढ़ होती है।

(१३) सन् १९५३ तक मीलों की गणना ४५७ तक की है आज भारत का सबसे बड़ा उद्योग—मील उद्योग ही है। इन मीलों में कुल ४,५१,७०२ रूई की गाँठों की खपत होती है।

रूई के वायदा बाजार में व्यापार करने के पूर्व उपरोक्त बातों के जानने के उपरान्त इस व्यापार में रूई की आंकडा स्थिति एवं उसका व्यापार तथा संचालन भली-भांति समझना चाहिए इस इस सम्बन्ध में हम यहां कुछ जानकारी दे रहे हैं—

रूई की आंकडा स्थिति—

(१) संसार में प्रतिवर्ष दि० ३१ अगस्त का स्टॉक।

(२) संसार की नए फसल की पैदावार।

(३) संसार में आगामी वर्ष के खपत का अनुमान।

(४) यूनायटेड स्टेट्स ऑफ अमेरिका, जो संसार की रूई की पैदावार, खपत, निकाल भावों की घट-बढ़ आदि में प्रधान है उसकी आंकडा स्थितियों से परिचित रहना।

(५) भारतीय रूई की आंकडा स्थिति की जानकारी एवं भारतीय रूई की पेरिटी वेल्यु।

(६) सांसारिक भौगोलिक स्थिति, व्यापार, प्रत्येक राष्ट्र का व्यापारिक सम्बन्ध तथा वहां के सम्बन्धित नियम, ड्यूटी आदि एवं अन्य राजनैतिक परिवर्तन।

रूई का व्यापारिक संचालन—

लोक मनोवृति (व्यापार करने वालों की मनोवृत्ति) भावों में फेरफार का बड़ा कारण है और कभी-कभी तूफानी घट-बढ़ इसी कारण से होते है आंकडा स्थिति से तेजी या मंदी की रूप रेखा मालूम होती है परन्तु प्रति दिन की घटबढ़ लोक मनोबृति पर निर्भर रहती है जिसके विस्तार पूर्वक कारण निम्न हैं:—

(१) राजनैतिक, आर्थिक या सामाजिक परिवर्तन का प्रभाव, संग्रहखोरी की प्रवृति, बड़े व्यापारियों के लेन-देन, ज्योतिष की रुख और कुछ वर्षों से फिगर लाइन को भी अधिक महत्व दिया जाता है आदि।

(२) बनावटी तेजी-मंदी ले जाने के लिए लेन-बेचान बढ़ाना (Bull Squeeze and Bear Raids) कितनी ही पार्टियाँ सिण्डीकेट बनाकर अपनी धारणा के अनुसार खेला (Cornering) करके बाजार को बढ़ा ले जाती हैं जब कि आंकडा स्थिति द्वारा वास्तविक स्थिति विपरीत होती है।

(३) तेजी-मंदी नजराना का बंधी जोखम का व्यापार अथवा बदला (अमेरिका में खरीद कर भारत में बेचना) आदि का प्रभाव

(४) हुंडियामन, क्रॉस रेट, पेरिटी आदि में परिवर्तन।

(५) आयात, निर्यात, डयूटी या कानून में परिवर्तन का प्रभाव

(६) हेजकट्राक्ट के नियमों में परिवर्तन, ऊंचे-नीचे भावों की बांधनी में परिवर्तन का प्रभाव।

(७) यातायात के साधन की कठिनाईयां एवं सुविधायें।

(८) युद्ध एवं राजद्वारी परिवर्तन – उसका स्थानिक परिस्थिति व व्यापार पर प्रभाव।

रूई में तेजी मंदी किस प्रकार होती है—

रुई का अधिष्ठाता शुक्र है इसकी गति, संयोग, भ्रमण ही रुई की तेजी-मंदी प्रकट करता है। जब शुक्र ऐसे ग्रहों के साथ युति करता है जो एक राशि पर लम्बे समय तक रहते हैं तो लम्बी रुख की तेजी मंदी करता है तथा जब ऐसे ग्रहों के साथ युति करता है जो थोडे समय तक एक राशि पर रहते हैं तो साप्ताहिक तेजी मंदी करता है एवं जब अंशात्मक योग बनाता है तो दैनिक तेजी

मंदी करता है इसके अतिरिक्त राशि,नक्षत्र, नवांश, उदयास्त और वक्री मार्गी गतियों द्वारा भी रुई के भावों में घट-बढ़ करता है।

लम्बी रुख की तेजी—

(१) शुक्र वक्री होकर मेष वृश्चिक और मकर राशियों में सूर्य, मंगल, शनि, राहु, हर्शल, प्लूटो—इन ग्रहों में से किसी दो, तीन या चार अथवा सभीं के साथ हो तो क्रम से २५), ३५), ५०), ६०), टकों तक की तेजी २१ दिन एवं ३१ दिन के अन्तर्गत करता है।

(२) शुक्र के साथ में सूर्य ग्रहण मंगलवार या शनिवार को हो तो दो मास के अन्तरगत ७०)-८०) टकों तक की तेजी हो।

(३) शुक्र गुरु दोनों वक्री गति से मीन राशि गत परि भ्रमण करते हों तो १००) टकों तक की तेजी ४० दिन में हो।

(४) शुक्र वक्री, गुरु तथा राहु—ये ग्रह मेष, सिंह, वृश्चिक और मकर किसी एक राशि के अंश ७° से १९° तक में युति करें तो २१ दिन में ५०) टके तक की तेजी हो।

(५) सिंह राशि का शनि अंश ७° या ६° अंश का हो और शुक्र से ६०°, १३५° या १५०° अंश का योग बनाता हो तो रूई में ५०) टके तक की तेजी २० दिन के अन्तर्गत हो।

(६) धनु का शुक्र १७° अंश का मंगल अथवा राहु के साथ हो और मीन राशि गत गुरु अंश ५° का हो तो रूई में ४०) टके तक की तेजी १४ दिन में हो।

(७) वृषभ राशिगत शुक्र, मकर राशि में मंगल, वृश्चिक राशि का शनि, राहु हो तो ३५) से ५०) तक की तेजी १५ दिन में आ जाती है।

(८) मेष या वृषभ में राहु, सूर्य, मंगल शुक्र मकर राशि में हो तो ३० दिन के अन्तर्गत १००) टके तक की तेजी हो।

(९) तुला राशि में राहु अंश ११° और मंगल १९° तथा सूर्य शनि का भी संयोग हो तो अचानक ८ दिन में ५०) टके तक की तेजी आती है।

(१०) वृषभ राशि गत शुक्र १५° अंश का वक्री हो और शनि राहु मकर राशि में हो तो रूई में ४० टके की तेजी ८ दिन में आती है।

(११) मेष, सिंह और मकर राशि—इन राशियों में किसी एक राशि गत हर्शल, प्लूटो, शनि, शुक्र, मंगल पांचों ग्रह वक्री गति से भ्रमण करते हों तो १० दिन के अन्तर्गत ३० टके तक की तेजी आती है।

(१२) मेष, कर्क सिंह, वृश्चिक, मकर राशि में से किसी एक राशि में मंगल और शुक्र दोनों एक साथ अस्त हों तो ११ दिन में ४५) टके तक की तेजी करता है।

(१३) किसी भी राशि में शनि के अस्त होते ही ४-६ दिन में १५–२० टके तक की तेजी आती है

(१४) मेष व वृश्चिक राशि में राहु, मंगल, शुक्र ये तीनों ग्रह एकत्र हों तो २०) टके तक और यदि तीनों वक्री हों तो ४०) टके तक तथा अस्त व वक्री हों तो ५०) टके तक की तेजी समझो।

(१५) तुला राशि में शुक्र ५° अंश का मंगल वक्री ११° अंश का हो तो २५) टके तक की तेजी ३ दिन में होती है।

(१६) तुला राशि गत मंगल, वृश्चिक राशि में शनि, मकर राशि का शुक्र—ये शीघ्रगामी हो तो १५ दिन के अन्तर्गत ४०, टके तक तेजी हो।

(१७) मकर राशि गत शनि, मंगल; शुक्र के साथ १५०° अंश का योग बनाते हों तो १ मास के अन्तर्गत ७०–८० टके तक की तेजी हो।

(१८) मेष, वृश्चिक, मकर संक्रांति १५ मुहुर्ती हो और इन्ही राशियों में सूर्य और शुक्र हों तो २०), २५) टके की तेजी १० दिन में लाते हैं।

(१९) कर्क का सूर्य, मंगल राहु प्लूटो, शुक्र के साथ हो तो ३०), ३५) टके तक की तेजी लाता है। यह तेजी १५ दिन में होती है।

(२०) कर्क राशि गत सूर्य और सिंह राशि में मंगल व शुक्र हो तो १५ दिन में १५), २०) टके की तेजी लाता है।

(२१) वृश्चिक राशि में शुक्र, मंगल और धनु या मकर राशि में शनि, सूर्य, हर्शल या प्लूटो किसी एक के साथ हो तो रुई में ४०) ५०) टके तक की तेजी २१ दिन में हो।

(२२) कुम्भ राशि का शुक्र ११° अंश से २१° अंश तक हो तो २०) से २५) टके तक की १०-१२ दिन में तेजी करता है।

(२३) वृश्चिक राशि में वक्री शनि हो और मार्गशीर्ष वदी अमावस्या को सूर्य ग्रहण खग्रास हो तो १५ दिन पूर्व ही ३०) ३५) टकों तक की तेजी हो।

(२४) मकर राशि का शनि ७° अंश से १६° अंश तक वक्री हो तो १५ दिन में ५०) टके तक की तेजी करता है।

(२५) शुक्र वक्री हो एवं अस्त हो तो १० दिन में २५ टके तक की तेजी करे।

साप्ताहिक तेजी:—

(१) गुरु, शुक्र की युति मेष, सिंह, तुला, वृश्चिक और मकर राशि में वक्री गत हो तो १५ टके। मार्गी हो तो १० टके तक की तेजी ३४ घण्टे में करते हैं।

(२) कृष्ण पक्ष की अमावस्या १ घड़ी से ५ घड़ी तक की हो तो २॥ दिन में ७), ८) टके तक की तेजी आती है।

(३) सुदी षष्ठ का क्षय हो तो २ दिन में ८), १०) टके तक की तेजी हो।

(४) बुध, शुक्र एक साथ वक्री हो तो १५), २०) टके की तेजी ७ दिन में करते हैं।

(५) मीन राशि पर मंगल प्रवेश होते ही ५ दिन में १०, १२ टकों की तेजी करता है।

(६) शुक्र, मंगल वक्री साथ-साथ मेष राशि में हों तो ८ दिन में २० टके तक की तेजी हो।

(७) शुक्र मंगल वक्री होकर सिंह राशि गत हों तो ८ दिन में १०, १२) टके तक की तेजी करते है।

(८) मंगल का पूर्व में उदय किसी भी राशि पर हो तो ७ दिन में तेजी १०-१५) टके तक की करता है।

(९) वृश्चिक राशि का मंगल २५° अंश का ४ दिन में १०) १५) टके तक की तेजी करता है।

(१०) मकर राशि गत मंगल ११° अंश का हो तो ५ दिन में २०) टके तक की तेजी करता है।

(११) शुक्र वृषभ राशि का १५° अंश का हो तो ७ दिन के अन्तर्गत ३०) टके तक की तेजी करता है।

(१२) सिंह राशि में शुक्र १३° अंश से १९° अंश तक का हो तो ७ दिन में २५ टके की तेंजी करता है।

(१३) शुक्र का और सूर्य का मेष, वृश्चिक, मकर और कुंभ राशि में ३०° का योग हो या ०° से ५° तक का योग हो तो ७ दिन में २०) टके तक की तेजी करता है।

(१४) सूर्य व शुक्र का ६०° का योग मेष, वृश्चिक, मकर या कुम्भ राशि पर हो तो १५-२०) टके तक की तेजी ७ दिन के अन्तर्गत करेगा।

(१५) शुक्र व राहु एक साथ ५° अंश की युति करते हो तो ५ दिन में १०),१२) टके की तेजी हो।

(१६) सिंह राशि में राहु और मीन राशि में गुरु तथा तुला राशि में शुक्र जिस सप्ताह में परिभ्रमण करे तो उस सप्ताह में १५) टके तक की तेजी हो।

(१७) हर्शल वक्री किसी भी राशि पर, वृश्चिक राशि का शनि तथा कुम्भ राशि का राहु व शुक्र हो तो ७ दिन के अन्तर्गत १५-२०) टके की तेजी हो।

दैनिक तेजी—

(१) मेष का चन्द्र शुक्र के साथ ३०° अंश का योग हो तो १८ घण्टे में ८-१० टके तक की तेजी हो।

(२) सिंह, तुला, वृश्चिक, कुम्भ, का चन्द्र शुक्र के साथ ६०° अंश का योग हो तो २२ घण्टे में १०-१२) टके की तेजी हो।

(३) वृश्चिक का चन्द्र हो एवं वृश्चिक संक्रांति १५ मुहुर्त की हो तो १० घण्टे में १५-२०) टके तक की तेजी हो।

(४) मकर या कुम्भ राशि गत सूर्य राहु आदि क्रूर ग्रह हो और मीन का चन्द्र आए तो १२ घण्टे में १०-१२) टके की तेजी करता है।

(५) वृषभ संक्रांति १५ मुहुर्त एवं वृषभ का चन्द्र हो तो ५-७) टके की तेजी १४ घण्टे में होती है।

(६) सूर्य, मंगल, शनि से चन्द्र १।५।८ स्थान में हो और ३०° अंश का योग करे तो १० घण्टे में १०-१२) टके की तेजी करता है।

(७) चन्द्र सूर्य की युति २४ घण्टे में तेजी ३-४) टके की लाती है।

(८) सूर्य शुक्र की युति २४ घण्टे में ५-६) टके की तेजी लाती है।

(९) मंगल शुक्र की युति २४ घण्टे में ४-५) टके तक की तेजी करती है।

(१०) शनि शुक्र की युति २४ घण्टे में ४-५) टके तक की तेजी लाती है।

(११) राहु शुक्र की युति हो तो २४ घण्टे में २-३) टके की तेजी होती है यह योग वृश्चिक या मकर राशि में सूर्य व शुक्र हो तभी मिलेगा।

(१२) केतु शुक्र की युति हो तो २४ घण्टे में २-३) टके की तेजी होती है यह योग चन्द्र और सूर्य का प्रतियोग हो तभी मिलेगा।

(१३) हर्शल शुक्र की युति २४ घण्टे के अन्तर्गत ३-४) टके की तेजी करता है यह योग तभी मिलेगा जब सूर्य मिथुन राशिगत हो।

(१४) प्लूटो शुक्र की युति २४ घण्टे में २-३) टके की तेजी लाती है यह योग चन्द्र तुला या मीन राशि गत होने से मिलेगा।

(१५) सूर्य शुक्र के साथ मंगल, शनि, राहु, हर्शल, प्लूटो में से कोई एक ग्रह ३०° या ६०° अंश की दृष्टि योग करे तो २४ घण्टे में ३-४) टके की तेजी आती है।

(१६) सूर्य शुक्र के साथ उपरोक्त ग्रहों में से कोई एक ग्रह १३५° या १५०° अंश की दृष्टि करे तो वह ग्रह अपने प्रभाव से ३-४) टके की तेजी १२ घंटे में करता है।

(१७) सूर्य शुक्र के साथ सूर्य, मंगल, शनि, राहु, हर्शल, प्लूटो में से कोई ग्रह ४५° अंश की दृष्टि करे तो साधारण तेजी ६ घंटे में आती है।

(१८) शुक्र के साथ सूर्य, मंगल, शनि, राहु, हर्शल, प्लूटो से कोई एक ग्रह ९०°, १२०° या १८०°, अंश की दृष्टि योग करे तो क्रम से ६, ९, १२ घण्टे में क्षणिक तेजी करके मंदी करता है।

(१९) पुनर्वसु नक्षत्र में सूर्य हो एवं ज्येष्ठा नक्षत्र में चन्द्र हो तो रुई में तेजी होती है।

(२०) सूर्य पुनर्वसु नक्षत्र में हो तथा चन्द्र मूल नक्षत्र में हो तो भी रुई में तेजी आती है।

(२१) सूर्य पुनर्वसु एवं चन्द्र शतभिषा नक्षत्र में हो तो रुई के भावों में तेजी आती है।

(२२) पुष्य नक्षत्र का सूर्य तथा पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र का चन्द्र रुई में तेजी करता है।

(२३) पुष्य नक्षत्र का सूर्य एवं रोहिणी नक्षत्र का चन्द्र रुई में तेजी कारक होता है।

(२४) वृषभ राशि गत सूर्य हो एवं वृश्चिक या मकर राशि गत चन्द्र हो तो रुई में तेजी आए।

(२५) वृश्चिक राशि गत सूर्य तथा चन्द्र – दोनों ग्रह एक साथ हों तो रुई में तेजी आती है।

(२६) कर्क राशि में सूर्य हो चन्द्र मेष या वृश्चिक राशि गत हो तो रुई के भाव तेज होते है।

(२७) सिंह राशि गत सूर्य स्थिति हो और चन्द्र मकर या कुम्भ राशि में हो तो रुई में तेजी आती है।

(२८) वृश्चिक राशि गत सूर्य हों तथा चन्द्र मेष या सिंह राशि गत हो तो रुई तेज होती है।

(२९) सूर्य एवं चन्द्र दोनों ग्रह सिंह राशि गत हो तो भी रुई में तेजी आती है।

(३०) मकर राशि गत सूर्य हो तथा सिंह या वृश्चिक राशि गत चन्द्र परिभ्रमण कर रहा हो तो रुई के भाव बढ़ जाते हैं अर्थात् रुई तेज होती है।

यहां नीचे एक कोष्टक दिया जा रहा है जिससे दैनिक तेजी मंदी का ज्ञान साधारणतया समझने में आजाय जिस वस्तु का ग्रह उस वस्तु के नक्षत्र पर हो उस दिन तेजी आजाती है और जिसके विपरीत जिस वस्तु का ग्रह उस वस्तु के नक्षत्र से चौदवां नक्षत्र पर हो तो उस वस्तु की मंदी समझना—

दैनिक तेजी-मंदी देखने का कोष्ठक—

(नक्षत्र, राशि, स्वामी, तिथि, वार की कौन-कौन सी वस्तुएं हैं और उनके सहायक सम्बन्धों द्वारा तेजी मंदी विचार).

———

क्रम	वस्तु	राशि	ग्रह	तिथि एवं वार	सहायक नक्षत्र	ग्रह संयोग
१	रूई	तुला ७	शुक्र	रिक्ता ४।८।१४ शनिवार शुक्रवार	मृगशिर, मूल पुनर्वसु पू.षाढ़ा शतभिषा, पू.भाद्र-पदा	सूर्य, मंगल शुक्र
२	सरसों तिल काली-मिर्च	मकर १०	शनि	नन्दा १।६।११ रविवार मंगलवार शनिवार	मूल, पुनर्वसु स्वाति	शनि, राहु सूर्य
३	अलसी तेलबीयां और अरण्डा	वृ. ८	मंगल शनि	पूर्णा ५।१०।१५ शनिवार. मंगलवार	रोहिणी, आर्द्रा पू.फाल्गुनी, स्वाती मूल, अश्विनी शतभिषा	मंगल, सूर्य शनि, गुरु
४	सोना	सिंह ५	सूर्य	रिक्ता ४।९।१४ मंगलवार चन्द्रवार	पुनर्वसु, पुष्य, चित्रा, धनिष्ठा कृतिका, उत्तरा-षाढ़ा रोहिणी	सूर्य, मंगल, गुरु
५	चांदी	कर्क ४	चन्द्र	पूर्णा ५।१०।१५	पुनर्वसु, पुष्य,पूर्वा-फाल्गुनी,मूल,धनि. पू. भाद्रपदा, उ. षाढ़ा, कृतिका रोहिणी	चन्द्र, शुक्र सूर्य, मंगल शनि
६	गुवार मटर अरहर	कन्या ६	बुध	जया ३।८।१३ गुरुवार बुधवार	अश्लेषा, रोहिणी विशाखा, अश्विनी पू. भाद्रपदा	बुध,सूर्य,गुरु, शुक्र, शनि

रूई की लम्बी खासी मंदी—

(१) शुक्र मार्गी होकर कन्या, कर्क, मिथुन राशियों में चन्द्र, बुध, गुरु, नेपच्यून — इन ग्रहों में से किसी दो या दो से अधिक अथवा सभी ग्रहों के साथ परिभ्रमण कर रहा हो तो क्रम से २५), ३०), ३५) टकों तक की मंदी २१ या ३१ दिन के अन्तर्गत हो।

(२) श्रावण या भाद्रपद की पूर्णिमा को चन्द्र ग्रहण किसी शुभ ग्रह की राशि पर हो और उसी ही राशि गत शुक्र भी स्थिति हो तथा उस दिन चन्द्र या गुरुवार भी हो तो दो मास के अन्तर्गत रुई में ७०–८०) टके तक की मंदी आती है।

(३) शुक्र, गुरु — दोनों मार्गी होकर मीन, कन्या या मिथुन राशि गत सूर्य के साथ हों तो ४० दिन में १००) टकों तक की मंदी हो।

(४) शुक्र मार्गी, गुरु चन्द्र तथा बुध — ये ग्रह मिथुन कर्क, कन्या, कुम्भ में से किसी एक राशि गत ८° से २०° तक की सम अंशों में प्रति योग करें तो २१ दिन के अन्तर्गत ५०) टके तक की मंदी आने की पूर्ण सम्भावना रहती है।

(५) कन्या या कर्क राशि का गुरु शुक्र के साथ हो, और नेपच्यून ६°, ८° अंश का हो ये दोनो ग्रह शुक्र के साथ ६०°, १२०° या १८०° अंश का योग बनाते हो तो रुई में ५०) टके तक की मंदी २० दिन में आती हैं।

(६) मिथुन राशि गत शुक्र २° अंश का गुरु अथवा नेपच्यून के साथ हो और कर्क राशि गत बुध २०° का हो तो रुई में १४ दिन के अन्तर्गत ४०) टके तक की मंदी होती है।

(७) कन्या राशि गत गुरु या नेपच्यून हो तो ३५) टके से ५०) टके तक की मंदी २१ दिवस के अन्तर्गत हो।

(८) मिथुन या कन्या राशि गत राहु के साथ शुक्र हो चन्द्र बुध, गुरु, कर्क राशि में हों तो १ मास में १००) टके तक की मंदी आती है।

(९) मीन राशि का राहु २६° अंश का, गुरु ४° अंश का तथा बुध व शुक्र का संयोग हो तो अचानक रुई में १५ दिवस में ही ५०) टके तक की मंदी आती है।

(१०) मीन राशि गत शुक्र ०° अंश का मार्गी हो और बुध, चन्द्र, गुरु कर्क राशि में हों तो रुई में ४०) टके तक की मंदी १५ दिन के अन्तर्गत आती है।

(११) कर्क, कुम्भ, कन्या राशि गत – इन में किसी भी एक राशि में नेपच्यून, गुरु, बुध, चन्द्र चारों ग्रह मार्गी गति से भ्रमण करते हों तो १० दिन के अन्तर्गत ३०) टके तक की मन्दी आती है।

(१२) कर्क, कुम्भ, तुला, कन्या, मिथुन राशि में से किसी एक राशि में गुरु और शुक्र दोनों एक साथ उदय हों तो ११ दिन के अन्तर्गत ४५) टके तक की मंदी करता है।

(१३) किसी भी मंदी कारक राशि में शुक्र के उदय होते ही ४-६ दिन में १५-२०) टके तक की मंदी आती है।

(१४) मिथुन व धन राशि में शुक्र, गुरु, नेपच्यून ये तीनों ग्रह एकत्र हों तो २०) टके तक और यदि तीनों मार्गी हों तो ४०) टके तक तथा मार्गी एवं उदयावस्था में हो तो ५०) टके तक की मंदी समझो।

(१५) तुला राशि गत शुक्र २०• अंश का, गुरु मार्गी २६° को हो तो २५) टके तक की मंदी १३ दिन में होती है।

(१६) मिथुन राशि गत मंगल तथा शनि हों और कर्क को शुक्र हो ये मन्दगामी हों तो १५ दिन के अन्तर्गत ३०-४०) टके की मंदी होती है।

(१७) कर्क राशि गत गुरु – शुक्र नेपच्यून के साथ १२०° अंश का योग बनाते हो तो १ मास के अन्तर्गत ५० – ६०) टके की मंदी होती है।

(१८) मिथुन, कर्क, सिंह संक्रांति ४ मुहुर्त का हो और इन्हीं राशियों में गुरु बुध और नेपच्यून हो तो २०–२५) टके तक की मंदी १०–१२ दिन में होती है।

(१९) कन्या का सूर्य, शुक्र, गुरु और नेपच्यून के साथ हो तो ३०–३५) टके तक की मंदी १५ दिन के अन्तर्गत लाता है।

(२०) मिथुन राशि गत सूर्य, कन्या राशि गत बुध, शुक्र हों तो १५–१६ दिन से १५–२०) टके तक की मंदी लाता है।

(२१) मिथुन राशि में शुक्र, गुरु, बुध, चन्द्र और कर्क राशि गत सूर्य एंव धनु राशि में शनि स्थिति हो तो २१ दिन में ३०-४० टके तक मंदी होती है।

(२२) मिथुन राशि का शुक्र २२° से २८° अंश तक का हो एवं गुरू कर्क या मीन राशि में स्थित हो तथा इनका बुध के साथ ९वें अंश का योग बनता हो तो इसी ही दिन से १० या १२ दिन के अन्तर्गत १२--१४) टके तक की मंदी करता है।

(२३) धनु राशि गत मार्गी शनि हों भाद्रपद सुदी पूर्णिमा को चन्द्र ग्रहण खग्रास हो तो १५ दिन के पूर्व ही १५-२०) टकों की मंदी होती है।

(२४) धनु राशि का शनि, गुरु-शुक्र मार्गी ६° अंश से २४° अंश के अन्तर्गत के हों और सूर्य मिथुन, कर्क अथवा कुम्भ या मीन राशि गत स्थिति हो तो ४०–५०) टके तक की मंदी २१ दिवस के अन्तर्गत तक आती है। इस योग में परस्पर केन्द्र त्रिकोण होना अति आवश्यक है तभी पूर्ण योग बनेगा, अभाव में साधारण मंदी समझे।

(२५) शुक्र मार्गी एवं उदय हो, बुध गुरू नेपच्यून के साथ मिथुन, कर्क, कन्या–इन राशियो में किसी राशि गत हों तो १० दिन के अन्दर २०-२५) टके तक की मंदी आती है।

(२६) कन्या राशि गत गुरु १ से ४ अंश का, शुक्र तुला के १ अंश तक का नेपच्यून के साथ युति करता हो तो रुई में १५ दिन में २०–२५) टके की मंदी करता है। विशेष–इस योग के साथ-साथ सूर्य—राहु की युति हो तो द्विगुण ४०-५०) की मंदी आती है।

साप्ताहिक मंदी—

(१) गुरु शुक्र का प्रति योग मिथुन, कर्क, कन्या, तुला और मीन राशि में से किसी एक राशि गत हो और सूर्य मियुन कन्या, तुला, कुम्भ, मीन राशि में २४° से २८° अंश तक का हो तो १०-१५) टके तक की मंदी ३६ घण्टे में हो।

(२) शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा १ घड़ी से ६ घड़ी तक की हो तो २॥—३ दिन के अंतर्गत ८-१०) टके तक की मंदी आती है।

(३) शुक्ल पक्ष की द्वितीया की वृद्धि हो तो दो दिन में ६-७) टके की मंदी आती है।

(४) बुध, गुरु, शुक्र एक साथ मार्गी हो तो १०–१५) टके तक की मंदी ७ दिन के अन्तर्गत होती है।

(५) मिथुन कर्क या मीन राशि गत गुरू के प्रवेश होते ही ५ दिन में १०–१२ टके की मंदी आती है।

(६) बुध और गुरु मार्गी साथ-साथ मिथुन, कर्क, कन्या राशि में हों तो ८ दिन में १५–२०) टके तक की मंदी हो।

(७) गुरु, शुक्र और बुध सूर्य के साथ मिथुन राशि गत हो तो ८ दिन में १०-१२) टके की मंदी करते है।

(८) मंगल पश्चिम में अस्त हो बुध मार्गी, नेपच्यून वक्री मिथुन कर्क राशि गत सूर्य के साथ हों तो ३ दिन में १०-१५) टके तक की मंदी करते हैं।

(९) किसी भी मास की शुक्ल पक्ष की द्वितीया को चन्द्र दर्शन ४५ मुहुर्त हो और बुध, गुरु और शुक्र में से कोई भी ग्रह २४° अंश का हो तो ४ दिन में १०–१५ टके की मंदी हो।

(१०) कन्या राशि गत गुरु १८° से २४° अंश तक का हो और मिथुन, कर्क, कन्या या तुला राशि में सूर्य बुध, शुक्र एक साथ हों तो ७ दिन के अन्तर्गत २०) टके तक की मंदी आती है।

(११) शुक्र कर्क राशि का २२° अंश का, सूर्य मिथुन राशि का २४° का हो तो ३ दिन के अन्तर्गत १०–१५) टके तक की मंदी आती है।

(१२) मिथुन या कन्या राशि गत सूर्य, शुक्र केन्द्र त्रिकोण योग बनाते हों तो ७ दिन के अन्तर्गत २०–२५) टके की मंदी करते हैं।

(१३) गुरु और बुध मिथुन, कर्क, कन्या या तुला अथवा मीन राशि में ९०° या १२०° अंश का योग हो तो ७ दिन में १५–२०) टके तक की मंदी होती है।

(१४) गुरु, शुक्र का १८०° अंश का योग मेष तुला और कुम्भ, मीन राशिगत हो और चन्द्र भी इन राशियों में से किसी एक राशि में हो तो ७ दिन के अन्तर्गत १०–१५) टके की मंदी होती है।

(१५) शुक्र, गुरु, बुध एक साथ १८०° अंश का योग बनाते हों तो ५ दिन के अन्तर्गत १०–१२) टके की मंदी करते हैं।

(१६) वृश्चिक राशि में राहु, कर्क राशि में गुरु और शुक्र जिस सप्ताह में परिभ्रमण करें तो उस सप्ताह में १५) टके तक की मंदी आती हैं।

(१७) नेपच्यून मार्गी किसी भी राशि पर, कर्क राशि का गुरु और शनि, कन्या राशि गत शुक्र व बुध ये जिस दिन १८०° अंश का योग बनावे उससे ७ दिन के अन्दर ही १५–२०) टके तक की मंदी करते हैं।

(१८) शुक्र और गुरु एक साथ मीन राशि में २८° अंश पर चलें तो २ दिन में ही १०–१२) टके की मंदी करते हैं।

(१९) नेपच्यून, शुक्र धनु राशि के अन्तर्गत १८° से २४° तक के हों और तुला के गुरु के साथ जिस दिन चन्द्र योग बनावे तो २ दिन में ८–१०) टके की मंदी होती है।

दैनिक मंदी—

(१) मिथुन राशि का चन्द्र जिस दिन गुरु के साथ युति करे उस दिन १४ घण्टे में ५-६) टके की मंदी हो।

(२) कर्क, कन्या, तुला, धनु और मीन राशि का चन्द्र मार्गी शुक्र के साथ केन्द्र योग बनावे अथवा गुरु के साथ युति करता हो तो १२।। घंटे में ५-७) टके की मंदी करता है।

(३) तुला या कर्क राशि का चन्द्र, मिथुन या तुला की संक्रांति ४५ मुहुर्ती हो, चन्द्र दर्शन भी ४५ मुहुर्त का हो तो शुक्ल पक्ष की द्वितीया या तृतीया के दिन १० घंटे में ५-६) टके की मंदी आती है।

(४) मिथुन, कर्क या कन्या राशि का सूर्य चन्द्र, बुध, गुरु नेपच्यून के साथ १८० अंश का योग बनावे और तुला या मीन राशि गत चन्द्र आवे तो १२ घंटे में १०-१२) टके तक की मंदी होती है।

(५) कन्या संक्रांति ४५ मुहुर्त एवं कन्या राशि गत ही चन्द्र सूर्य की प्रति युति हो तो २४ घंटे में ४-५) टके की मंदी समझें।

(६) बुध, गुरु, शुक्र से चन्द्र ७।१०।१२ स्थान में हो और १२०° अंश का योग करे तो १० घंटे में ८-१०) टके की मंदी आती है।

(७) चन्द्र, शुक्र या चन्द्र, गुरु की प्रति युति २४ घंटे में ३-४) टके की मंदी लाती है।

(८) सूर्य – गुरु, सूर्य-बुध, सूर्य-चन्द्र-ये तीनों प्रति युति पूर्णमासी को एक साथ हों तो २४ घंटे में ५-७) टके की मंदी आती है।

(९) चन्द्र ग्रहण के समय शुक्र बुध गुरु और नेपच्यून की प्रति युति चन्द्र के साथ हो तो २४ घंटे के अन्तर्गत ४-५) टके की मंदी आती है।

(१०) शनि शुक्र की प्रति युति २४ घंटे में ४-५) टके की मंदी लाती है।

(११) गुरु, राहु, शुक्र की परस्पर (केन्द्र, त्रिकोण) प्रति युति हो तो २४ घंटे में २-३) टके की मंदी होती है।

(१२) शुक्र और नेपच्यून की युति एवं प्रति युति हो तो २१ घंटे की अन्तर्गत २-३) टके की मन्दी हो यह योग मिथुन, कर्क राशि गत गुरु एवं शुक्र हों तभी मिलता है।

(१३) बुध, शुक्र की प्रति युति हो तो २४ घण्टे के अन्तर्गत २-३) टके की मन्दी होती है।

(१४) नेपच्यून, गुरु, शुक्र की युति २४ घंटे के अन्तर्गत ३-४) टके की मंदी करती है।

(१५) मार्गी नेपच्यून गुरु की युति, प्रति युति हो तो २४ घंटे में २-३) टके की मन्दी आती है।

(१६) चन्द्र, शुक्र के साथ गुरु, बुध, नेपच्यून इन ग्रहों में से कोई एक ग्रह ९०°, १२०°, १८०° अंश की दृष्टि योग बनाए तो २४ घण्टे के अन्तर्गत ३-४) टके की मंदी आती है।

(१७) चन्द्र, शुक्र के साथ उपरोक्त ग्रहों में से कोई एक ग्रह ३६°, ७२°, १४४° अंश की दृष्टि योग करे तो ३-४) टके की मन्दी १२ घंटे में करता है।

(१८) चन्द्र शुक्र के साथ शुभ ग्रह ४५° अंश की दृष्टि योग करे तो ६ घण्टे में साधारण मन्दी होती है।

(१९) चन्द्र शुक्र के साथ गुरु, बुध, नेपच्यून में से कोई एक ग्रह ३०, ६०°, १५०°, अंश की दृष्टि योग करे तो क्षणिक मंदी करके तेजी आती है। यह क्षणिक मंदी क्रम से ६, ९, १२ घन्टे के अन्तर्गत होती है।

(२०) आश्लेषा नक्षत्र में सूर्य, चन्द्र पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र में हो तो मन्दी आती है।

(२१) आश्लेषा नक्षत्र में सूर्य एवं उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में चन्द्र हो तो मन्दी हो।

(२२) मघा नक्षत्र में सूर्य अश्विनी नक्षत्र में चन्द्र हो तो मन्दी हो।

(२३) सूर्य मघा नक्षत्र में और चन्द्र पुष्य नक्षत्र में हो तो मन्दी आती है।

(२४) मिथुन राशि गत सूर्य हो कन्या या तुला राशि गत चन्द्र हो तो रुई में मंदी आती है।

(२५) कन्या राशि गत सूर्य तथा चन्द्र एक साथ होकर १८० अंश का योग जिस दिन बनावे उसी ही दिन रुई मंदी होती है।

(२६) मिथुन या कर्क राशि में सूर्य हो और चन्द्र मिथुन, कर्क, कन्या, तुला अथवा मीन राशि में हो तो रुई मन्दी होती है।

(२७) मिथुन अथवा मीन राशि गत सूर्य गुरु के साथ हो और चन्द्र कन्या या मीन राशि में हो तो रुई मंदी होती है।

(२८) सूर्य एवं चन्द्र—दोनों ग्रह कर्क, तुला और मीन राशि गत हो तो भी रुई में मंदी आती है।

(२९) कर्क राशि गत सूर्य हो, वृषभ, कुम्भ राशि गत चन्द्र के साथ प्रति युति करे तो रूई में मंदी आती है।

सूचना—रूई के लम्बी, साप्ताहिक व दैनिक तेजी-मंदी के ये योग सिल्क, अरहर, गेहूँ, चावल, सर्व प्रकार के रंगीन वस्त्र, साबूदाना, खोपरा, पोस्तदाना, जूट की वस्तुएं, सूत, शक्कर चावल, लेशियन सिल्क, शेअर्स ऑफ शुगर मिल्स. मिष्ठान्न, मोती, कांच की वस्तुएं, पुष्प, तांबा, सुगन्धित पदार्थ, सेव नाशपाती एवं शराब आदि पर भी वही प्रभाव डालते हैं जो कि रूई पर डालते है।

इन योगों के प्रभाव का समय वही होता है जो रूई पर होता है तेजी-मंदी की घट-बढ़ रूई से कम परसेन्टेज की होती है जितने कि रूई के भावों में होती है।

वायदा-व्यापार में चांदी और सोना—

वायदा-व्यापार में चांदी अपना विशेष स्थान रखती है अधिकांश बाजारों में जहां वायदा व्यापार चलता है वहां चांदी का

भी वायदा-बाजार होता है वैसे इसका सम्बन्ध सोने से जोड़ा गया है किन्तु सोने की अपेक्षा इसके व्यापार को लोग अधिक करते हैं क्योंकि इसमें सोने से अधिक हानि-लाभ होता है।

चांदी का सौदा पेटियों से होता है एक पेटी २८०० तोले की होती है। छोटी पूंजी वाले इसकी तेजी-मंदी पर नजराना लगाकर व्यापार करके लाभ प्राप्त करते हैं।

आधुनिक ज्योतिष शास्त्रकारों ने इसका स्वामी चन्द्र एवं राशि कर्क मानी है। चन्द्र की गति, संयोग, भ्रमण ही चांदी की तेजी-मंदी प्रकट करता है। जब चन्द्र ऐसे ग्रहों के साथ युति करता है जो लम्बे समय तक एक राशि पर रहते हैं तो चांदी में लम्बी रुख की तेजी-मंदी होती है और जब ऐसे ग्रहों के साथ चन्द्र की युति होती है जो थोड़े समय तक एक राशि पर रहते हैं तो साप्ताहिक तेजी-मंदी का ज्ञान होता है तथा जब अंशात्मक योग बनते हैं तब दैनिक तेजी-मंदी प्रकट होती है। इसके अतिरिक्त राशि, नक्षत्र, नवांश, वेध, चन्द्र दर्शन—ग्रहण, आदि से भी चांदी के भावों में घट-बढ़ होती है।

चन्द्र काल पुरुष का मन (हृदय) है इसलिए इस पर पुरुषाकार की अन्य इन्द्रियों के देवताओं का प्रभाव पड़ता है इस कारण अन्य ग्रहों का भी चन्द्र से अत्याधिक संम्बंध है चन्द्र की चन्द्रिका द्वारा रात्रि में ग्रह प्रकाशित होते हैं इसलिए सूर्य, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, हर्शल, नेपच्यून, प्लूटो आदि के योगों का भी चांदी की तेजी-मंदी पर प्रभाव पड़ता है। जो ग्रह मन्द गति से चलता है उसका प्रभाव लम्बी लाइन की, जो साधारण गति से चलता है

उसका साप्ताहिक लाइन की, और जो शीघ्र गति से चलता है उसका दैनिक लाइन की तेजी-मंदी का प्रभाव होता है। जिस तिथि को जो ग्रह चन्द्र की कक्षा के जितने निकट से अधिक से अधिक तेज लेकर जितना प्रकाशमान होता है वह ग्रह चांदी में उतनी ही अधिक घट-बढ़ करता है और जो ग्रह जितनी दूर रहकर जितना कम तेज लेकर जितना कम प्रकाश मान होंगे वे उतनी ही कम घट-बढ़ करेंगे।

इसके अतिरिक्त कुछ निम्न साधारण बातों पर चांदी के वायदा व्यापार को करने वाले व्यापारी ध्यान दें ले तो उन्हें व्यापार में कुछ सफलता प्राप्त होगी—

(१) चांदी वायदा-व्यापार का सबसे बड़ा बाजार रूई की भांति अमेरिका का न्यूयार्क का माना गया है क्योंकि चांदी का उत्पादन संसार में सबसे अधिक अमेरिका में होता है।

(२) संसार भर का चांदी का उत्पादन लगभग २५ करोड़ आउंस के हैं।

(३) द्वितीय महायद्ध से पूर्व भारत का सिक्का रुपया चांदी का था परन्तु युद्ध काल में चांदी का मूल्य बढ़ जाने से रुपये को धातु में परिवर्तन कर दिया गया जो क्रमशः परिवर्तित होते होते उसका वह रूप आगया जो वर्तमान समय में है।

(४) भारतवर्ष विदेशों से प्रति वर्ष ६·२० लाख आउंस चांदी का आयात करता है।

(५) चांदी का आयात करने वाला सब से बड़ा देश चीन है।

(६) चांदी के भाव बढ़ने पर दूसरे पदार्थों के भाव प्राय: बढ़ते हैं और घटने पर घटते हैं।

(७) युद्ध काल में चांदी के भाव बढ़ते हैं एवं शांतिकाल में प्राय: भाव घटते हैं।

सोना का भी वायदा — व्यापार चांदी की ही भांति होता है इसका सौदा २५० तौले का एक सौदा माना जाता है परन्तु इसके सौदे को तेजी–मन्दी के नजराने में चांदी के तेजी–मन्दी के नजराने से कम लाभ मिलता है इस कारण से लोग सोने का वायदा व्यापार कम करते हैं। प्राय: सोना की घट–वढ़ चांदी की घट–बढ़ से कम होती है।

सोने का मुख्य बाजार प्रथम महायुद्ध से पूर्व लण्दन था परन्तु उसके बाद न्यूयार्क हो गया जो अभी तक चला आ रहा है। सोने के भाव पर ही कॉसरेट, एक्सचेञ्ज तथा गिन्नी का भाव निश्चित किया जाता है।

सोने का अधिष्ठाता कालात्म सूर्य एवं राशि सिंह आधुनिक ज्योतिषियों ने मानी है। सूर्य की स्थिति एवं युति से सोने के भाव में घट–बढ़ होती है जब सूर्य किसी ऐसे ग्रह से युति करता है जो लम्बी अवधि तक एक राशि पर रहते हैं तो सोने में लम्बी अवधि तक की तेजी मंदी होती है और ऐसे ग्रह के साथ युति सूर्य के साथ होती है जो थोडे समय तक एक राशि पर रहते हैं तो साप्ताहिक तेजी मंदी का ज्ञान होता है तथा जब सूर्य अंशात्मक योग बनाए तो दैनिक तेजी-मंदी प्रकट होती है। इसके अतिरिक्त

राशि, नक्षत्र, नवांश, वेध, संक्रति, ग्रहण का भी सोने के भाव पर प्रभाव पड़ता है।

सूर्य काल पुरुष की आत्मा है इसलिए इस पर पुरुषाकार की अन्य इन्द्रियों के देवताओं का भी प्रभाव पड़ता है इस कारण अन्य ग्रहों का भी सूर्य से अत्याधिक सम्बन्ध है इस लिए चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, हर्शल, नेपच्यून, प्लूटो आदि के योगों का भी सोने की तेजी मन्दी पर प्रभाव पड़ता है। जो ग्रह मन्द गति से चलता है उसका प्रभाव लम्बी लाइन को जो साधारण गति से चलता है उसका प्रभाव साप्ताहिक लाइन की और जो शीघ्रगति से चलता है उसका दैनिक लाइन की तेजी-मंदी पर पड़ता है।

लम्बी रुख की तेजी—

(१) सूर्य तथा चन्द्र वक्री ग्रह के साथ मेष, वृश्चिक और मकर राशियों में किसी एक राशि गत मंगल, शनि, राहु, हर्शल, प्लूटो— इन ग्रहों में किसी के साथ एक, दो, तीन, चार, या सभी के साथ हो तो क्रम से चांदी में २॥) ३) ३॥) ४) ५) टके तक की तेजी एवं सोने में १) १॥) २) २I) २॥) तक की तेजी ११ या १३ दिन के अन्तर्गत होती है।

(२) खग्रास (पूर्ण) सूर्य ग्रहण हो और उस समय सूर्य के साथ वक्री शुक्र भी हो तो चांदी में १ मास के अन्तर्गत ७-८) टके की तथा सोने में ३-४ टके की तेजी आती है।

(३) सूर्य चन्द्र के साथ मेष वृषभ या मकर राशि गत हो एवं शुक्री वक्री अवस्था में मीन राशि गत स्थिति हों तो २०-२१ दिन

के अन्तर्गत सोने में ६-७) टके की तथा चांदी में १०-११) टके की तेजी आती है।

(४) सूर्य चन्द्र के साथ शुक्र, गुरु दोनों वक्री एवं राहु में से कोई भी ग्रह मेष, सिंह, वृश्चिक या मकर किसी भी एक राशि गत ७° से १६° अंश तक में युति करे तो ११-१३ दिन के अन्तर्गत चांदी में ७) टके तक की तथा सोने में ३-४) टके तक की तेजी होती है।

(५) सूर्य एवं चन्द्र के साथ सिंह राशि गत शनि ७° या ६° का ६०°, १३५° या १५०° अंश का योग बनाए तो १० दिन के अन्दर सोने में ३) टके की और चांदी में ५-६) टके तक की तेजी करता है।

(६) मकर राशि गत सूर्य चन्द्र के साथ १७° अंश का शुक्र और मंगल या राहु हो तथा मीन राशि गत गुरु ५° अंश का हो तो ४ दिन में चांदी में ३) टके की एवं सोने में १ से २) टके तक की तेजी आती है।

(७) वृषभ राशि गत सूर्य चन्द्र व शुक्र, वृश्चिक राशि गत शनि तथा राहु एवं मकर राशि में मंगल विद्यमान हो तो ५) टके से ७) टके तक की तेजी चांदी में और सोने में २) टके से ४) टके तक की तेजी सोने में ५-७ दिन के अन्तर्गत आती है।

(८) सूर्य चन्द्र, मंगल, शुक्र ये चारों ग्रह मकर राशि गत हो एवं राहु मेष या वृषभ राशि में हो तो सोने में ४-५) टके तक की और चांदी में १०-१२) टके तक की तेजी ८-९ दिन में होती है।

(६) सूर्य चन्द्र व शनि का तुला राशि में १६° अंश के मंगल एवं ११° अंश के राहु के साथ संयोग हो तो सोने में ३) टके तक और चांदी में ५) टके तक की तेजी ३-४ दिन में आती है।

(१०) सूर्य, चन्द्र, शुक्र वृषभ राशि गत हो,—शुक्र १५° का वक्री हो तथा मकर राशि गत शनि व राहु हो तो २ दिन में सोने में २) टके तथा चांदी में ३) टके की तेजी होती है।

(११) सूर्य चन्द्र के साथ वक्रावस्था के मंगल, शुक्र, शनि, हर्शल, प्लूटो—ये पांचों ग्रह हो तो ५-६ दिन में चांदी में ३-४) टके की तथा सोने में २-२॥) टके की तेजी होती है।

(१२) सूर्य, चन्द्र, मंगल, शुक्र—ये ग्रह मेष, कर्क, सिंह, वृश्चिक में से किसी राशि में एकत्र हों तथा उनमें से शुक्र व मंगल एक साथ अस्त हो जाय तो ६-७ दिन के अन्तर्गत चांदी में ५) टके तथा सोने में ३) टके तक की तेजी आती है।

(१२) सूर्य चन्द्र के साथ शनि किसी भी राशि गत हो उस समय शनि के अस्त होते ही सोने व चांदी में २-३ दिन के अन्दर ही क्रम से १) व ३) टके की तेजी आती है।

(१४) सूर्य चन्द्र के साथ मेष या वृश्चिक राशि में राहु शुक्र व मंगल—ये तीनों ग्रह हों तो सोने में २) टके, चांदी में ३) टके और यदि ये तीनों ही ग्रह वक्री हो तो चांदी में ६) टके तथा सोने में ४) टके तक की तेजी तथा ये तीनों ग्रह वक्री एवं अस्तावस्था में हो तो चांदी में ८) टके और सोने में ५) टके तक की तेजी १३-१४ दिन में होती है।

(१५) तुला राशि गत सूर्य चन्द्र के साथ मंगल वक्री ११° अंश का तथा शुक्र ५° अंश का हो तो सोने में २) टके की एवं चाँदी में ३) टके की तेजी ३-४ दिन में होती है।

(१६) सूर्य, चन्द्र और मंगल तुला राशि गत, वृश्चिक राशि में शनि व मकर राशि में शुक्र हो तो चांदी में ४) टके तथा सोने में २) टके की तेजी ५–६ दिन में आती है और यदि मंगल, शुक्र व शनि शीघ्रगामी हो तो सोने व चांदी में ३-४ दिन के अन्तर्गत ही क्रम से २) व ५) टके तक की तेजी होने की सम्भावना समझें।

(१७) मकर राशि गत सूर्य व चन्द्र के साथ शनि मंगल व शुक्र १५०° अंश का योग बनाते हों तो ११-१२ दिन में ही सोने में ३-५) टके तक व चांदी में ६-७) टके तक की तेजी समझें।

(१८) मेष, वृश्चिक या मकर संक्रांति १५ मुहुर्ती हो और उसी ही राशि गत सूर्य, चन्द्र, शुक्र राहु हों तो चांदी में ३-४) टके तक की तेजी तथा सोने में १-२) टके की तेजी २-३ दिन के अन्तर्गत आती है।

(१९) कर्क राशि गत सूर्य, चन्द्र, मंगल, शुक्र, राहु प्लूटो एकत्र हो तो चांदी में ३-४) टके व सोने २-२॥) टके तक की तेजी ६-७ दिन में आती है।

(२०) कर्क राशि गत सूर्य व चन्द्र तथा सिंह राशि गत मंगल व शुक्र वक्री हो तो ७-८ दिन के अन्तर्गत चांदी में २-३) टके तक व सोने में १) टके की तेजी आती है।

(२१) वृश्चिक राशि गत सूर्य, चन्द्र मंगल और धनु या मकर राशि गत शनि, हर्शल या प्लूटो किसी एक के साथ हो तो ११-१२ दिन के अन्दर ही सोने में ३) टके तक की तेजी तथा चाँदी में ५) टके तक की तेजी आती है।

(२२) सूर्य, चन्द्र के साथ वक्री शनि वृश्चिक राशि गत हो एवं मार्गशीर्ष वदी अमावस्या को खग्रास सूर्य ग्रहण हो तो ११-१२ दिन पूर्व ही सोने में २-३) टके की और चांदी में ३-४) टके की तेजी आती है।

(२३) सूर्य, चन्द्र के साथ मकर राशि गत ७° अंश से १६° अंश तक का वक्री शनि सोने में ३) टके की और चांदी में ५) टके तक की तेजी ५-६ दिन के अन्तर्गत करता है।

(२४) कुम्भ राशि गत सूर्य चन्द्र के साथ ११° अंश से २१° अंश तक का वक्री शुक्र ५-६ दिन में सोने में १-२ टके की एवं चाँदी में २-३ टके की तेजी करता है।

(२५) किसी राशि गत शुक्र वक्री होकर सूर्य व मंगल के साथ हो तो सोने में १) टका तथा चांदी में ३) टके की तेजी ५-६ दिन में करता है।

साप्ताहिक तेजी—

(१) मेष, सिंह, तुला, वृश्चिक, मकर – इन राशियों में किसी एक राशि में सूर्य, चन्द्र की युति गुरु- शुक्र से हो तो ४८ घंटे में चांदी में १) टके की और सोने में ।।)-।।।) आने की तेजी होती

है तथा यदि गुरु, शुक्र दोनों उस समय वक्री हों तो सोने में ।।।)-१) टके की तथा चांदी में १।।) – २) टके की तेजी हो।

(२) सूर्य चन्द्र साथ-साथ हों और कृष्ण पक्ष की अमावस्या १ घड़ी से ५ घड़ी के अन्तर्गत की हो तो सोने में ।) ।=) आने की और चांदी में ।।।), १) टके की तेजी २ दिन में आती है।

(३) सूर्य चन्द्र किसी राशि गत हो और शुक्ल पक्ष की षष्ठमी क्षय हो तो १ दिन में चांदी में ।।।)-१) टके की और सोने में ।=)-।।) की तेजी होती है।

(४) सूर्य चन्द्र के साथ बुध शुक्र युति करके एक साथ वक्री हों तो ३-४ दिन के अन्तर्गत सोने व चांदी में क्रम से ।।।)-।।।=) व १।)-१।।) टके तक की तेजी आती है।

(५) सूर्य, चन्द्र मीन राशि गत हो, मंगल के प्रवेश होते ही चांदी में १-१।) टके की और सोने में ।।=)-।।।) आने की तेजो २ दिन में आती है।

(६) मेष राशि गत शुक्र, मंगल साथ-साथ वक्री हों एवं सूर्य चन्द्र का भी संयोग हो तो ३-४ दिन के अन्तर्गत चांदी में २) टके एवं सोने में १।) टके की तेजी आती है।

(७) शुक्र, मंगल वक्री होकर सिंह राशि गत सूर्य, चन्द्र के साथ युति करें तो ४-५ दिन में चांदी में १-१।) टके एवं सोने में ।।=)-।।।) आने की तेजी आती है।

(८) मंगल पूर्व दिशा में किसी भी राशि गत उदय हो और उसी राशि में सूर्य चन्द्र भी हों तो सोने में ।।)-।।=) आना और चांदी में १।)-१।।) टके की तेजी ३-४ दिन के अन्तर्गत आती है।

(९) वृश्चिक राशि गत सूर्य चन्द्र मंगल हो और मंगल के २५° अंश के होते ही २ दिन में चांदी में १।)-१॥) टके और सोने में ।≈)-॥) की तेजी आती है।

(१०) सूर्य, चन्द्र के साथ मकर राशि गत मंगल ११° अंश का हो तो २-३ दिन के अन्तर्गत चांदी में २) टके की और सोने में १।) टके की तेजी होती है।

(११) वृषभ राशि गत सूर्य चन्द्र के साथ १५° अंश का शुक्र हो तो ३-४ दिन में सोने व चांदी में क्रम से १।) व २) टके तक की तेजी आती है।

(१२) १३° अंश से १९° अंश तक के शुक्र के साथ सूर्य चन्द्र सिंह राशि गत संयोग करें तो ३-४ दिन के अन्दर चांदी में २-२॥) टके की और सोने में १।)-१॥) टके की तेजी आती है।

(१३) सूर्य चन्द्र का शुक्र के साथ मेष, वृश्चिक, मकर या कुंभ राशि में ३०° अंश या ०° से ५° अंश तक का योग हो तो ३-४ दिन में सोने में १।) टके की और चांदी में २) टके की तेजी आती है।

(१४) सूर्य चन्द्र और शुक्र का योग ६०° अंश का मेष, वृश्चिक, मकर, कुंभ राशि गत हो तो चांदी में १॥)-२) टके की और सोने में १) टके की तेजी ४-५ दिन के अन्तर्गत होती है।

(१५) सूर्य, चन्द्र के साथ शुक्र व राहु ५° अंश की युति करते हों तो २-३ दिन के अन्दर सोने में ॥≈)-।॥) आने की और चांदी में १-१।) टके की तेजी आती है।

(१६) सिंह राशि गत सूर्य चन्द्र के साथ राहु व मीन राशि गत गुरु तथा तुला राशि में शुक्र जिस सप्ताह में परिभ्रमण करें तो उसी सप्ताह में सोने में ।।=) आने चांदी में १।) टके की तेजी आती है ।

(१७) कुम्भ राशि गत सूर्य चन्द्र व शुक्र, वृश्चिक राशि गत शनि तथा दुर्बल वक्रावस्था में किसी राशि गत हो तो ४-५ दिन के अन्तर्गत चांदी में १।।-२) टके की और सोने में ।।)-।।=) आने की तेजी आती है ।

(१८) सूर्य वृषभ राशि गत हो और इसी राशि पर आकर पूर्णिमा को अर्ध चन्द्र ग्रहण हो तो ७ दिन के अन्तर्गत ही चांदी व सोने में क्रम से ५) व २) टके की तेजी हो ।

दैनिक तेजी—

(१) मेष राशि के सूर्य, चन्द्र, शुक्र के साथ ३०° अंश का योग करें तो चांदी में १) टका और सोने में ।।=) आने की तेजी १२ घण्टे में करते हैं ।

(२) सिंह, तुला, वृश्चिक या कुंभ राशि के सूर्य, चन्द्र, शुक्र के साथ ६०° अंश का योग बनाए तो १२ घण्टे में सोना व चांदी में क्रम से ।।।=) व १=) आने की तेजी आवे ।

(३) वृश्चिक राशि के सूर्य व चन्द्र हों व वृश्चिक संक्रांति १५ मुहुर्ती पड़े तो १६ घंटे में चांदी में १।।-२) टके की तथा सोने में ।।।)-।।।=) आने की तेजी आती है ।

(४) मकर या कुंभ राशि में सूर्य, मंगल आदि क्रूर ग्रह हो और मीन राशि गत चन्द्र प्रवेश करे तो १० घण्टे में चांदी के अन्दर १-१।) टके की और सोने के अन्दर ।।=)-।।।) की तेजी आती है।

(५) वृषभ राशि गत सूर्य चन्द्र हों तथा वृषभ संक्रांति १५ मुहुर्ती हो तो सोने व चांदी में क्रम से २४ घंटे के अन्तर्गत ।।) व ।।।=) आने की तेजी आती है।

(६) सूर्य चन्द्र से मंगल शनि राहु १।५।८ स्थान में हो और ३०° अंश का योग भी करें तो १० घंटे में चांदी में १-१।) टके की और सोने में ।।=)-।।।) आने की तेजी आती है।

(७) सूर्य, चन्द्र की युति २४ घंटे के अन्तर्गत सोने व चांदी में क्रम से ।।=) व १) की तेजी लाती है।

(८) सूर्य चन्द्र की शुक्र से युति हो तो २४ घंटे में चांदी में ।।।)-१) टके की और सोने में ।=)-।।) की तेजी हो।

(९) सूर्य चन्द्र से मंगल की युति हो तो सोने में ।।)-।।=) आने की और चांदी में १) टके की तेजी २४ घंटे के अन्तर्गत आती है।

(१०) सूर्य चन्द्र के साथ शनि युति करे तो चांदी में १-१=) आने की और सोने में ।।=)-।।।) की तेजी २४ घंटे के अन्तर्गत करता है।

(११) वृश्चिक या मकर राशि गत सूर्य चन्द्र हो और राहु की युति हो तो २४ घंटे में सोने में ।।)-।।।) आने की एवं चांदी में १-१=) की तेजी आती है।

(१२) केतु शुक्र की युति हो तो २४ घंटे के अन्तर्गत सोने व चांदी में क्रम से ।)-।=) व ।।।)-।।।=) आने की तेजी करता है यह चन्द्र व सूर्य का प्रतियोग हो तभी मिलता है।

(१३) सूर्य, चन्द्र की युति हर्शल के साथ हो तो चांदी में ।।।)-।।।=) आने की व सोने में ।)-।-) आने की तेजी २४ घंटे में आती है यह योग चन्द्र तुला या मीन राशि गत हो तभी मिलता है।

(१४) सूर्य चन्द्र की युति प्लूटो के साथ हो और सूर्य मिथुन राशि गत हो तो चांदी में ।।)-।।=) की व सोने में ।)-।=) आने की तेजी होती है।

(१५) सूर्य चन्द्र के साथ मंगल, शनि, राहु-केतु, हर्शल प्लूटो में से कोई ग्रह ३०° या ६०° अंश की दृष्टि योग बनाए तो २४ घंटे के अन्तर्गत चांदी में ।।=)-।।।) आने और सोने में ।=)-।≡) आने की तेजी आती है।

(१६) सूर्य चन्द्र के साथ उपरोक्त १५ नं० के ग्रहों में से कोई एक ग्रह १३५° या १५०° अंश का दृष्टि योग बनाएं तो चांदी में ।=)-।≡) आने की और सोने में =)-≡) आने की तेजी १२ घंटे के अन्तर्गत होती है।

(१७) सूर्य चन्द्र के साथ मंगल, शनि, राहु, हर्शल, प्लूटो— इन ग्रहों में से कोई एक ग्रह ४५° अंश का दृष्टि योग बनाएं तो ६ घण्टे के अन्तर्गत साधारण तेजी आती है।

(१८) सूर्य चन्द्र के साथ मंगल, शनि, राहु, हर्शल, प्लूटो में से कोई ग्रह ९०°, १२०°, १८०° अंश का दृष्टि योग बनाए तो क्रम से ६, ६, १२ घण्टे में क्षणिक तेजी होकर मंदी आती है।

(१९) राहु से युति होकर सूर्य पुनर्वसु नक्षत्र में हो और चन्द्र मूल नक्षत्र में हो तो सोना व चांदी दोनों में तेजी आती है।

(२०) सूर्य व शनि पुनर्वसु नक्षत्र पर हो एवं चन्द्र ज्येष्ठा नक्षत्र में हो तो सोना व चांदी में तेजी होती है।

(२१) मंगल के साथ सूर्य पुनर्वसु नक्षत्र पर हो और चन्द्र शतभिषा नक्षत्र पर परिभ्रमण कर रहा हो तो चांदी व सोना में तेजी आती है।

(२२) पुष्य नक्षत्र गत सूर्य हर्शल के साथ हो चन्द्र पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र पर हो तो सोना व चांदी में तेजी का योग बनता है।

(२३) प्लूटो व सूर्य पुष्य नक्षत्र पर हो एवं चन्द्र रोहिणी नक्षत्र गत हो तो सोना व चांदी में तेजी आती है।

(२४) वृषभ या मकर राशि गत चन्द्र व सूर्य की युति सोना व चांदी में तेजी कारक होती है।

(२५) वृश्चिक राशि गत सूर्य व चन्द्र की युति हो एवं वक्री मंगल का भी संयोग हो तो २४ घण्टे में सोना व चांदी दोनों में तेजी आती है।

(२६) कर्क राशि गत वक्री शनि के साथ सूर्य हो एवं चंद्र मकर या कुम्भ राशि गत हो तो सोना व चांदी में तेजी आती है।

(२७) सिंह राशि गत सूर्य के साथ वक्रावस्था का हर्शल हो और चन्द्र मकर कुम्भ राशि में परिभ्रमण कर रहा हो तो २४ घंटे के अन्तर्गत सोना व चाँदी में तेजी का योग बनता है।

(२८) वृश्चिक राशि गत वक्री प्लूटो के साथ सूर्य परिभ्रमण कर रहा हो और चन्द्र मेष या सिंह राशि गत हो तो सोना व चाँदी में तेजी आती है।

(२६) सूर्य, चन्द्र दोनों ग्रह किसी क्रूर ग्रह के साथ सिंह राशि में हों तो उस क्रूर ग्रह के वक्री होते ही २४ घण्टे के अन्दर सोना व चांदी में तेजी आती है।

(३०) मकर राशि गत सूर्य किसी क्रूर ग्रह के साथ हों और चन्द्र सिंह या वृश्चिक राशि में हो उस क्रूर ग्रह के वक्री होते ही सोने व चांदी में २४ घंटे के अन्तर्गत तेजी आती है।

लम्बी रुखी मंदी—

(१) सूर्य, चन्द्र, मार्गी शुक्र, कन्या, कर्क, मिथुन—इन में से किसी भी एक राशि में बुध, गुरु नेपच्यून में से किसी एक, दो या तीनों के साथ हों तो क्रम से चांदी में ३-४-५) टकों की और सोने में २-२।।) ३) टकों की मंदी ११–१३ दिन के अन्तगर्गत आती है ।

(२) मिथुन, कन्या, कर्क, तुला, मीन राशि गत गुरुवार या चन्द्रवार को चन्द्र ग्रहण भाद्रपद या श्रावण मास में हो और जिस राशि गत ग्रहण हो उसी राशि गत शुक्र भी हो तो १ मास के अन्तर्गत सोने में ४-५) टकों की और चाँदी में ७-८) टकों की मंदी आती है।

(३) सूर्य, चन्द्र के साथ गुरु व शुक्र दोनों मार्गी अवस्था के मिथुन, कन्या, या मीन राशिगत हो तो २० दिन के अन्तर्गत ही चांदी में १०) टकों तक की और सोने में ६) टके तक की मंदी आती है।

(४) सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु व मार्गी शुक्र एक साथ—मिथुन, कर्क, कन्या, कुम्भ में से किसी एक राशि गत ८° से २०° तक की सम अंशों में प्रतियोग करें तो ११-१२ दिन के अन्तर्गत चांदी में ५) टके तक की और सोने में ३) टके तक की मंदी होती है।

(५) कन्या या कर्क राशि के गुए, शुक्र या नेपच्यून ६° अंश या ८° अंश के हों और इनमें से कोई एक ग्रह सूर्य, चन्द्र के साथ ६०°, १२०° या १८०° अंश का योग बनाए तो चांदी में ५-६) टके की और सोने में ३-४) टके की मंदी ११-१२ दिन में होती है।

(६) सूर्य चन्द्र के साथ शुक्र २° अंश का मिथुन राशि गत हो और गुरु से युक्त हो तथा बुध २०° अंश का कर्क राशिगत हो तो चांदी में ४-५) टके की और सोने में २।)-३) टके की ७-८ दिन के अन्तर्गत मंदी आती है।

(७) कन्या राशि गत सूर्य चन्द्र व शुक्र, कर्क राशि गत बुध और मीन राशि गत गुरु या नेपच्यून हो तो सोने में ३-४) टके की और चांदी में ५-६) टके की मंदी ११-१२) दिन के अन्तर्गत होती है।

(८) सूर्य, चन्द्र के साथ शुक्र मिथुन या कन्या राशि गत हो
और बुध, गुरु कर्क राशि गत हो तो १४-१५ दिन के अन्तर्गत १०-
११) टके की मंदी चांदी में और ६-७) टके की मंदी सोने में
आती है।

९ २६° अंश के राहु के साथ सूर्य, चन्द्र मीन राशि गत
हों एवं गुरु ४° अंश का, बुध व शुक्र का संयोग भी उसी राशि
गत हो तो अचानक चांदी में ५) टके की व सोने में ३) टके
की ७-८ दिन के अन्तर्गत मंदी होती है।

(१०) सूर्य चन्द्र के साथ ०° अंश का मार्गी शुक्र मीन राशि
गत हो बुध गुरु कर्क राशि गत हो तो सोने में ३) टके की और
चांदी में ४।।) टके की मंदी ७-८ दिन के अन्तर्गत आती है।

(११) सूर्य चन्द्र, बुध, गुरु—ये ग्रह कर्क, कुम्भ, कन्या, में से
किसी भी एक राशि में एक साथ हों एवं बुध, गुरु मार्गी अवस्था
में हो तो चांदी में ३) टके और सोने में २) टके की मंदी ६-७
दिन में होती है।

(१२) गुरु शुक्र दोनों एक साथ कर्क, कन्या, तुला, कुम्भ में
से किसी एक राशि गत उदय हो और उसी ही राशि पर सूर्य,
चन्द्र हो तो चांदी में ६) टके और सोने में ४) टके की मंदी ११
दिन में होती है।

(१३) सूर्य चन्द्र किसी भी मंदी कारक राशि में हो तो उसी
राशि में ही शुक्र के उदय होते ही ४-६ दिन में चांदी में २-३)
टके की और सोने में १)-१।।) टके की मंदी आती है।

(१४) सूर्य चन्द्र मिथुन, धनु राशि गत शुक्र, गुरु, नेपच्यून के साथ हो तो चांदी व सोने में क्रम से) २) व १।।) टके की और यदि शुक्र, गुरु, नेपच्यून तीनों मार्गी हो तो चांदी व सोने में क्रम से ४) व २।।) टके की तथा तीनों मार्गी एवं उदयावस्था में हो तो चाँदी व सोने में क्रम से ५) व ३) टके की मंदी समझे।

(१५) सूर्य, चन्द्र के साथ २०° अंशी शुक्र व २६° अंशी मार्गी गुरु तुला राशि गत हो तो ८-९ दिन के अन्दर ही चांदी में ४-५) टके तक व सोने में २।।)-३) टके तक की मंदी आती है।

(१६) मन्दगामी मंगल व शनि के साथ सूर्य चन्द्र मिथुन राशि गत हों व कर्क राशि गत मंदगामी शुक्र हो तो १०-११ दिन के अन्तर्गत चांदी में ३-४) टके की और सोने में १-२) टके की मंदी आती है।

(१७) कर्क राशि गत सूर्य चन्द्र के साथ गुरु शुक्र नेपच्यून १२०° अंश का योग बनाएं तो १०-११ दिन के अन्तर्गत चांदी में ५-६) टके तक और सोने में ३-३।।) टके तक की मंदी आती है।

(१८) मिथुन, कर्क, सिंह संक्रांति ४५ मुहुर्ती हो तथा इन्हीं राशि गत सूर्य, चन्द्र, गुरु, बुध, नेपच्यून के साथ हो तो चांदी में ३-४) टके की और सोने में १।।-२) टके की मंदी ७-८ दिन में आती।

(१९) कन्या राशि के सूर्य चन्द्र के साथ शुक्र, गुरु, और नेपच्यून हो तो १०-११ दिन के अन्तर्गत चांदी में ३-४) टके की और सोने में २-२।।) टके तक की मंदी आती है।

(२०) मिथुन राशि गत सूर्य चन्द्र, कन्या राशि गत बुध शुक्र हो तो ८-९ दिन में चांदी में ३-४) टकें की और सोने में २-२।।) टके को मंदी आती है।

(२१) सूर्य कर्क राशि गत, धनु राशि गत शनि व चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्र मिथुन राशि गत हो तो ११-१२ दिन के अन्तर्गत सोने में ३-४) टके की और चांदी में ५-६) टके तक की मंदी आती है।

(२२) सूर्य चन्द्र मिथुन राशि गत २२° से २८° अंश के शुक्र के साथ हो गुरु कर्क या मीन राशि गत हो इनका बुध के साथ ९०° का योग बने तो सोने में २-३) टके तक और चांदी में ४-५) टके तक की मंदी ७-८ दिन में आती है।

(२३) भाद्रपद सुदी पूर्णिमा को खग्रास चन्द्र ग्रहण हो और धनु राशि गत शनि मार्गी स्थिति का हो तो सोने में १-२) टके की और चांदी ३)-४) टके की मंदी १५ दिन पूर्व ही आती है।

(२४) सूर्य चन्द्र शनि गुरु शुक्र ६° से २४° अंश तक के धनु राशि गत हों और नेपच्यून मिथुन, कर्क अथवा कुम्भ या मीन राशि गत हो तो ११ दिन के अन्तर्गत सोने में ५-६)ट के तक और चांदी में ३-४) टके तक की मंदी आती है। इस योग में परस्पर

केन्द्र त्रिकोण होना अति आवश्यक है तभी पूर्ण योग बनेगा अभाव में साधारण मंदी समझें।

(२५) सूर्य चन्द्र मिथुन, कर्क, कन्या—इन में किसी राशि में मार्गी एवं उदयावस्था के शुक्र, बुध, गुरु, नेपच्यून के साथ हो तो ७-८) दिन के अन्तर्गत चांदी में ३-४) टके की एवं सोने में १॥-२) टके की मंदी आती है।

(२६) बुध, गुरु, शुक्र, नेपच्यून मार्गी एवं उदयावस्था में कुम्भ मीन राशि गत हों एवं सूर्य चन्द्र मिथुन कर्क राशि गत हो तो १०-११ दिन में सोने में २-३) टके और चांदी में ५-६) टके की मंदी आती है।

साप्ताहिक मंदी—

(१) सूर्य, चन्द्र, मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, और मीन राशि में से किसी राशि गत २४° से २८° अंश तक का हो और गुरु शुक्र का प्रतियोग भी इन्हीं राशियों में हो तो सोने में ।।।)-।।।=) आने की और चांदी में ।।।=)-१) रु० तक की मंदी आती है।

(२) शुक्ल पक्षी पूर्णिमा १ घड़ी से ६ घड़ी तक की हो तो २-२॥ दिन में सोने में ।।)-।।=) आने की और चांदी में ।।।=)-१) रु० तक की मंदी आती है।

(३) द्वितीया की वृद्धि शुक्ल पक्ष में हो तो सोने में ।।)-।।=) आने की और चांदी में ।।।)-।।।=) की मंदी १॥-२ दिन में आती है।

(४) सूर्य चन्द्र के साथ बुध, गुरु, शुक्र एक साथ मार्गी हो तो ३-४ दिन के अन्तर्गत सोने में १-१।।) टके की और चांदी में २-३) टके की मंदी आती है।

(५) सूर्य चन्द्र मिथुन, कर्क या मीन राशि गत हो जिस राशि गत सूर्य चन्द्र हो उसी राशि में गुरु के प्रवेश होते ही ३-४ दिन के अन्तर्गत चांदी में १-१।।) टके की और सोने में ।।।)-।।।=) आने की मंदी आती है।

(६) मिथुन, कन्या कर्क राशियों में जिस राशि गत सूर्य चन्द्र हो उसी राशि में बुध गुरु एक साथ मार्गी हों तो ५-६ दिन के अन्दर ही चांदी में २-३) टके की और सोने में १।)-१।।) टके की मंदी आती है।

(७) मिथुन राशि गत सूर्य चन्द्र के साथ बुध, गुरु शुक्र हो तो ५-६ दिन में ही चांदी में २-३) टके की तथा सोने में १)३१।) टके की मंदी आती है।

(८) मिथुन या कर्क राशि गत सूर्य चन्द्र के साथ मार्गी बुध व वक्री नेपच्यून हों एवं मंगल पश्चिम दिशा में अस्त हो तो २-३ दिन में चांदी में १-१।।) टके की और सोने में ।।।)-।।।=) आने की मंदी आती है।

(९) शुक्ल पक्ष की द्वितीया को चन्द्र दर्शन ४५ मुहुर्ती हो एवं बुध, गुरु, शुक्र व सूर्य में से कोई एक ग्रह २४° अंश का हो तो चांदी में १-१।।) टके की और सोने में ।।।)-।।।=) आने की मंदी २-३ दिन में आती है।

(१०) मिथुन, कर्क, कन्या या तुला राशि गत सूर्य, चन्द्र बुध शुक्र एक साथ हों तथा कन्या राशि में गुरू १८° से २४° अंश तक का हो ती चांदी में २) टके एवं सोने में १।) टके तक की मंदी ४-५ दिन में होती है।

(११) सूर्य चन्द्र मिथुन राशि गत २४° अंश का व शुक्र २२° अंश का कर्क राशि का हो तो सोने में १)-१।) टके की और चांदी में २-३) टके की मंदी ६ दिन के अन्तर्गत आती है।

(१२) सूर्य चन्द्र शुक्र मिथुन या कर्क राशि गत केन्द्र त्रिकोण योग बनाते हों तो चांदी में २-३) टके की व सोने में १।)-१॥) टके की मंदी ५-६ दिन में होती है।

(१३) मिथुन, कर्क कन्या तुला या मीन राशियों में से किसी राशि गत बुध गुरू का योग ९०° या १२०° अंश का हो तो चांदी में २-३ दिन में १-२) टके की व सोने में ॥)-।॥) आने की मंदी आती है।

(१४) मेष, तुला, कुम्भ या मीन राशि गत गुरु शुक्र का १८०° अंश का योग हो और इन्हीं में से किसी राशि में चन्द्र हो तो चांदी में १-२) टके व सोने में ॥≈-।॥) आने की मंदी ३-४ दिन में आती है।

(१५) बुध, गुरु, शुक्र एक साथ १८०° अंश का योग बनावें तो चांदी में १-१॥) टके व सोने में ॥≈-।॥) आने की मंदी २-३ दिन में आती है।

(१६) सूर्य चन्द्र राहु वृश्चिक राशि गत व गुरु तथा शुक्र कर्क राशि गत जिस सप्ताह में परिभ्रमण करें उसी सप्ताह में चांदी में १॥-२) टके की तथा सोने में ॥।~-॥।≈) आने की मंदी आती है।

(१७) मार्गी नेपच्यून व सूर्य चन्द्र किसी भी राशि पर हो एवं गुरू शनि कर्क राशि गत तथा शुक्र बुध कन्या राशि गत जिस दिन १८०° अंश का योग बनावे उस दिन से ४-५ दिन के अन्तर्गत ही चांदी में २-३ टके की और सोने में १॥)-१॥।) टके की मंदी होती है।

(१८) सूर्य चन्द्र के साथ गुरू शुक्र एक साथ २८° अंश पर मीन राशि गत चलें तो २ दिन के अन्तर्गत ही चांदी में १।-१=) आने की और सोने में ॥।)-॥।~) आने की मंदी आती है।

(१९) सूर्य, चन्द्र, शुक्र, नेपच्यून धनु राशि के अन्तर्गत १८° अंश से २४° अंश तक हो तथा तुला राशि गत गुरू के साथ चन्द्र जिस दिन योग करे उस दिन से २। दिन में ही चांदी में १)-१।) टके की व सोने में ॥=)-॥।) आने की मंदी आती है।

दैनिक मंदी—

(१) मिथुन राशि के सूर्य, चन्द्र जिस दिन गुरू के साथ युति करें उस दिन १० घण्टे के अन्तर्गत ही चांदी में ॥)-॥=) आने की और सोने ।~-।=) आने की मंदी आती है।

(२) मार्गी शुक्र के साथ कर्क, कन्या, तुला, धनु का चन्द्र सूर्य केन्द्र योग बनावे अथवा बुध के साथ युति करें तो ६ घण्टे में

ही सोने में ≡)—।) आने की और चांदी में ।≡)-।।) आने की मंदी आती है।

(३) सूर्य चन्द्र तुला या कर्क राशि गत हो, मिथुन या तुला संक्रांति ४५ मुहूर्त की हो तथा चन्द्र दर्शन भी ४५ मुहूर्त का हो तो शुक्ल पक्ष की द्वितीया या तृतीया को ५-६ घंटे में चांदी में ।।−)-।।≈) आने की और सोने में ।−)—।।) आने की मंदी आती है।

(४) सूर्य मिथुन, कर्क या कन्या राशि गत हों और बुध, गुरु, शुक्र, नेपच्यून में से किसी के साथ १८०° का योग बनावे तथा मीन या तुला राशि गत चन्द्र प्रवेश करे तो ५-६ घंटे में ही चांदी में १-१।) टके की तथा सोने में ।।।)-।।।−) आने की मंदी आती है।

(५) कन्या राशि गत सूर्य चंद्र की प्रति युति हो तथा कन्या संक्रांति ४५ मुहुर्ती हो तो १२ घंटे के अंतर्गत सोने में ।−)-।≈) आने की व चांदी में ।।−)-।।≈) आने की मंदी आती है।

(६) सूर्य चंद्र से १२०° अंश का योग बुध, गुरु, शुक्र बनावें तथा ७।१०।१२ वें स्थान पर हों तो ६ घंटे में ही चांदी में ।≡)-।।) आने व सोने में ≡)-।) आने की मंदी आती है।

(७) सूर्य चन्द्र से गुरु या शुक्र की प्रति युति १२ घंटे में चांदी में ।−)-।≈) आने की व सोने में ≡)-।) आने की मंदी लाती है।

(८) सूर्य चन्द्र, सूर्य-बुध, सूर्य-गुरु, चन्द्र-बुध, चन्द्र-गुरु की प्रति युति पूर्णमासी को कोई भी तीन प्रति युति एक साथ हों तो १२ घण्टे के अन्तर्गत चांदी में ।≈)-।≡) आने की व सोने में ≡)-।) आने की मंदी लाती है।

(९) बुध, गुरु, शुक्र की प्रति युति चन्द्र के साथ उस समय हो जब कि चन्द्र ग्रहण हो तो १६ घण्टे में सोने में ।)-।=) आने की व चांदी में ॥)-॥=) आने की मंदी आती है।

(१०) सूर्य चन्द्र के साथ नेपच्यून की प्रति युति सोने में ।)-।~) आने की व चांदी में ।≡)-॥) आने की मंदी १३ घण्टे के अन्तर्गत लाती है।

(११) सूर्य चन्द्र, गुरु, शुक्र की परस्पर केन्द्र त्रिकोण प्रति युति हो तो १२ घण्टे के अन्दर ही चांदी में ।)-।=) आने व सोने में ≡)-≡)॥ आने की मंदी होती है।

(१२) चन्द्र और शुक्र या चन्द्र व नेपच्यून की युति या प्रति युति हो तो चांदी में ।=)-।≡) आने व सोने में ≡)-।) आने की मंदी १२ घण्टे में आती है यह योग तभी मिलेगा जब कि चन्द्र, शुक्र या नेपच्यून कर्क या मिथुन राशि गत हों।

(१३) चन्द्र, बुध की प्रति युति हो तो १० घण्टे के अन्तर्गत चांदी में ≡)-।) आने की व सोने में =)-=)॥ आने की मंदी आती है।

(१४) चन्द्र, बुध की प्रति युति हो तो १० घण्टे के अन्तर्गत सोने में ≡)-।) आने की व चांदी में ।~)-।=) आने की मंदी आती है।

(१५) मार्गी नेपच्यून और गुरु की युति या प्रति युति हो तो ११ घंटे मे ।)-।~) आने की मंदी चांदी में तथा =)-=)॥ आने की मंदी सोने में आती हैं।

(१६) सूर्य चन्द्र के साथ शुक्र, बुध, गुरु नेपच्यून में कोई एक ग्रह ६०°, १२०°, १८०°, अंश का दृष्टि योग बनाएं तो १४ घंटे में ।)-।=) आने व ।=)-।≡) आने की मंदी क्रम से सोने व चांदी में आती हैं।

(१७) सूर्य चन्द्र के साथ उपरोक्त ग्रहों में से कोई एक ग्रह ३६°, ७२°, १४४° अंश का दृष्टि योग बनाते हों तो चांदी में =) ।) आने व सोने में =)-=)॥ आने की मंदी १० घंटे में आती है।

(१८) सूर्य चन्द्र के साथ कोई भी शुभ ग्रह ४५° अंश का दृष्टि योग करे तो सोने व चांदी में ६ घंटे के अन्दर ही साधारण मंदी आती है।

(१९) सूर्य चन्द्र के साथ बुध, गुरु, शुक्र नेपच्यून में से कोई भी ग्रह ३०, ६०, १५०° अंश का दृष्टि योग करे तो क्रम से ६, ६, १२, घंटे में सोने व चांदी में क्षणिक मंदी आकर पुनः वही भाव हो जाते हैं।

(२०) सूर्य चन्द्र क्रम से आशलेषा व पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र पर परिभ्रमण कर रहे हों तो मंदी आती है।

(२१) उत्तराषाढ़ा व आश्लेषा नक्षत्र पर क्रम से चन्द्र व सूर्य हों तो सोने व चांदी में मंदी आती है।

(२२) अश्विनी नक्षत्र का चन्द्र एवं मघा नक्षत्र का सूर्य-दोनों मिलकर सोने व चांदी में मंदी लाते हैं।

(२३) मघा नक्षत्री सूर्य व पुष्य नक्षत्री चन्द्र – दोनों के प्रभाव से चांदी व सोने में मंदी आती है।

(२४) तुला राशि गत चन्द्र व मिथुन राशि गत सूर्य हो तो सोने व चांदी में मंदी आती है।

(२५) सूर्य चन्द्र १८०° अंश का योग जिस दिन कन्या राशि गत बनावें उसी दिन सोने व चांदी में मंदी आती है।

(२६) चन्द्र के मिथुन, कर्क, कन्या, तुला अथवा मीन राशि में आते ही, जब कि सूर्य मिथुन या मीन राशि गत हो, सोने व चांदी में मंदी आती है।

(२७) सूर्य गुरु के साथ मिथुन या कर्क राशि में हो तो चन्द्र के कन्या या मीन राशि में प्रवेश करते ही सोने व चांदी में मंदी आती है।

(२८) सूर्य कर्क, तुला या मीन में से किसी राशि गत हो उसी राशि गत चन्द्र के प्रवेश होते ही सोनें व चांदी में मंदी आती है।

(२९) वृषभ या कुम्भ राशि गत सूर्य का चन्द्र कर्क राशि गत के साथ प्रति युति करे तो चांदी व सोने में मंदी आती है।

सूचना—उपरोक्त सोने चांदी के लम्बी साप्ताहिक व दैनिक तेजी मंदी के योगों का निम्न वस्तुओं पर वही प्रभाव पड़ता है जो सोने चांदी पर पड़ता है। इन योगों के प्रभाव की अवधि भी वही है जो सोने-चांदी के प्रभाव की अवधि होती है और घट-बढ़ भी कम व ज्यादा परसन्टेज की होती है जो कि सोने व चांदी में होती है।

...ली, पटसन, मृगछाला, गुड़, खांड, कोदों, केला, दुग्ध, जायदाद, घास, नारीयल, तम्बाकू, दालचीनी, चाय।

शासकीय मुद्रा, चावल, चना, गुड़, चमड़ा, गिल्ट, या गिलट की बनी वस्तुएं, बाउण्ड, शहद, जड़ी बूटियां, दूध, पेट्रोलियम के शेयर्स होटल, जो, साधारण शेयर्स ऑफ आयल कम्पनी, द्रव्य, मछली, घी आदि।

वायदा बाजार में अरहर, मटर, गुवार, जूट—

गल्ले के आढ़ती अधिकांशत: वायदा बाजार में अरहर, मटर, गुवार का सौदा करते हैं परन्तु पंजाब, बंगाल व बड़े बड़े व्यापारिक केन्द्रों में ही जूट का सौदा होता है। ये भारतीय किसान की मुख्य पैदावार हैं इसलिये भारतीय कृषक अपने पास की व्यापारिक मंडी में बेचने जाता है जहां हाजिर माल खरीदने वाले व्यापारी खरीदते हैं। वहीं पर ही कुछ व्यापारी चेम्बर ऑफ कॉमर्स के द्वारा इन वस्तुओं का वायदा – व्यापार करते हैं।

अरहर, मटर, गुवार का भारत में सबसे बड़ा बाजार हापुड़ है और जूट का सबसे बड़ा बाजार कलकत्ता है। जूट का भारतीय उत्पादन संसार का १/३ है इसलिए भारत जूट का सबसे बड़ा निर्यातकर्ता है।

वायदा बाजार में इनका सौदा पर्चियों से होता है एक पर्ची १०० मन की होती है केवल जूट का सौदा गाठ्ठीयों से होता है एक सौदे में २५० गट्ठी होती है। इनका वायदा व्यापार करने वाले वायदा बाजार में सफलता जिसे कि हम इसी पुस्तक में पूर्व में लिख चुके हैं का पालन करने पर लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

अरहर, मटर, गुवार, जूट का अधिष्ठाता बुध एवं राशि कन्या है। बुध की गति, संयोग, परिभ्रमण ही इन वस्तुओं की तेजी-मंदी प्रकट करते हैं। लम्बे समय तक एक राशि पर रहने वाले ग्रहों के साथ बुध की युति इन वस्तुओं की लम्बी रुखी तेजी-मंदी व थोड़े समय तक एक राशि पर रहने वाले ग्रहों के साथ बुध की युति से साप्ताहिक तेजी-मंदी तथा ग्रहों से अंशात्मक योग बुध के साथ बनने से इन वस्तुओं की दैनिक तेजी-मंदी होती है। इसके अतिरिक्त राशि, नक्षत्र, नवांश, वेध, वक्री, मार्गी तथा उदयास्त अवस्था से भी इन वस्तुओं के भावों में घट-बढ़ होती है।

लम्बी रूख की तेजी—

(१) बुध, मेष, वृश्चिक या मकर में से किसी भी राशि गत वक्री, शुक्र, मंगल, शनि, राहु, हर्शल, प्लूटो-इन ग्रहों में से किसी दो, तीन, चार, पाँच या सभी ग्रहों के साथ हो तो क्रम से अरहर, मटर, गुवार में लगभग ॥), ॥=), ।॥), ।॥=), १), १।) टके की व जूट में ।॥), ।॥-), ।॥=), १), १।), १॥) टके की तेजी १२-१३ दिन में होती है।

(२) वक्री, बुध पूर्ण (खग्रास) सूर्य ग्रहण के दिन सूर्य के साथ हो तो १ मास के अन्तर्गत अरहर, मटर, गुवार व जूट में ३-४ टके की तेजी आती है।

(३) बुध व गुरु वक्रावस्था के होकर मीन राशि गत हों और सूर्य व चन्द्र या सूर्य अकेला मेष, वृषभ या मकर राशि गत हो तो २१ दिन के अन्तर्गत अरहर, मटर, गुवार व जूट सभी में लगभग ६-७ टके तक की तेजी आती है।

(४) मेष, सिंह, वृश्चिक या मकर में से किसी राशि गत बुध के साथ सूर्य, वक्रावस्था के गुरू व शुक्र दोनों या राहु में कोई भी ग्रह युति करे एवं युति की स्थिति ७०° अंश से १६° अंश तक की हो तो ११-१३ दिन के अंतर्गत अरहर, गुवार, मटर में ३-४ टके तक की व जूट में ५-६ टके तक की तेजी आती है।

(५) ७° अंश या ६° का शनि सिंह राशि गत होकर बुध के साथ ६०°, १३५°, या १५०° अंश का योग बनाए तो १० दिन के अन्तर्गत लगभग अरहर, मटर, गुवार व जूट सभी में १-१॥) टके की तेजी करता है।

(६) बुध, १७° अंश का मकर राशि गत मंगल या राहु के साथ हो एवं गुरू मीन राशि गत ५° अंश का हो तो १५ दिन में अरहर, गुवार, मटर में १॥) टके व जूट में २ टके की तेजी आती है।

(७) वृश्चिक राशि गत शनि व राहु, मकर राशि गत मंगल तथा वृषभ राशि गत बुध व सूर्य हो तो १५-१६ दिन के अंतर्गत अरहर, मटर, गुवार में २-३ टके की व जूट में ३-३॥ टके की तेजी आती है।

(८) मेष या वृषभ राशि गत राहु हो तथा मकर राशि गत सूर्य मंगल, व बुध एक साथ हों तो १२-१३ दिन के अंतर्गत अरहर, मटर, गुवार व जूट में लगभग २-३ टके तक की तेजी आती है।

(९) १९ अंश के मंगल व ११ अंश के राहु का संयोग तुला राशि गत शनि बुध के साथ हो तो अरहर, मटर, गुवार में १॥) टके की व जूट में २ टके की तेजी १०-१२ दिन में आती है।

(१०) १५° अंश का बुध सूर्य के साथ वृषभ राशि गत होकर वक्री हो जाय, शनि व राहु मकर राशि गत हो तो अरहर, मटर, गुवार व जूट में १-२ टके तक की तेजी १०-११ दिन में आती है।

(११) बुध के साथ चारों पाप ग्रह वक्रावस्था के हों अर्थात मंगल, शनि, हर्शल, प्लूटो। तो अरहर, मटर, गुवार व जूट में १)-१।) टके की तेजी ११-१२ दिन में होती है।

(१२) मंगल व बुध दोनों एक साथ उस समय अस्त हो जांय जिस समय ये दोनों ग्रह सूर्य के साथ मेष, सिंह, वृश्चिक इन में से किसी भी राशि गत हों तो जूट में २ टके व अरहर, मटर, गुवार में १-१।।) टके की तेजी १४-१५ दिन के अंतर्गत हो।

(१३) शनि के उस समय अस्त होते ही जब कि वह बुध सूर्य के साथ किसी भी राशि गत हो, १२-१३ दिन के अन्तर्गत ही अरहर, मटर, गुवार व जूट में १-१।) टके की तेजी आती है।

(१४) राहु, मंगल व बुध एक साथ मेष या वृश्चिक राशि गत हों तो १०-११ दिन के अन्तर्गत ही अरहर, मटर, गुवार व जूट में लगभग १-१।) टके तक की तेजी आती है और यदि ये तीनों ग्रह वक्रावस्था के हों तो १।।) टके तक की तेजी समझो तथा ये तीनों ग्रह वक्री एवं अस्त अवस्था के एक साथ ही उक्त राशि गत हो तो अरहर, मटर, गुवार में २) टके की तथा जूट में २।। - ३) टके की तेजी विचारें।

(१५) वक्री मंगल ११° अंश के साथ तुला राशि गत बुध ५° अंश का हो तो अरहर, मटर, गुवार में १) टके की व जूट में १।।) टके की तेजी १०-११ दिन के अन्तर्गत होती है।

(१६) वृश्चिक राशि गत शनि, तुला राशि गत सूर्य, मंगल व मकर राशि गत बुध हो तो १२ – १३ दिन के अन्तर्गत अरहर, मटर, गुवार में १) टके की व जूट में १।) टके की तेजी ९-१० दिन में आती है।

(१७) बुध मकर राशि गत मंगल, शनि के साथ १५०° अंश का योग बनाते हों तो ११ – १२ दिन के अन्तर्गत अरहर, मटर, गुवार में १॥)–२) टके की व जूट में २।)-२॥) टके की तेजी आती है।

(१८) मेष, वृश्चिक या मकर संक्रांति १५ मुहूर्ती हो और इन्हीं राशि गत सूर्य, बुध हों तो अरहर मटर गुवार में १) टके की व जूट में १।) टके की तेजी ११–१२ दिन में आती है।

(१९) मंगल, बुध, राहु, प्लूटो व सूर्य कर्क राशि गत एकत्र हों तो अरहर, मटर, गुवार में १)-१।) टके की व जूट में १॥–२) टके की तेजी १० – ११ दिन में आती है।

(२०) सिंह राशि गत मंगल व वक्री बुध तथा कर्क राशि गत सूर्य हो तो ७-८ दिन के अन्तर्गत अरहर गुवार, मटर में ॥) और जूट में ॥।) आने की तेजी आती है।

(२१) शनि धनु या मकर राशि गत सूर्य, हर्शल या प्लूटो में से किसी एक ग्रह के साथ एवं बुध, मंगल वृश्चिक राशि गत हो तो अरहर, मटर, गुवार में १) टके व जूट में १॥) टके की तेजी १०–११ दिन में आती है।

(२२) वक्री शनि के साथ बुध वृश्चिक राशि गत हो तथा मार्गशीर्ष वदी अमावस्या को खग्रास (पूर्ण) सूर्य ग्रहण हो तो

११–१२ दिन पूर्व ही अरहर, मटर गुवार में १)–१।।) टके की व जूट में २) टके की तेजी आती है।

(२३) मकर राशि गत बुध के साथ का ७° अंश से १६° अंश तक का वक्री शनि अरहर, मटर, गुवार में १।) टके की व जूट में १।।) टके की तेजी ९–१० दिन में लाता है।

(२४) कुम्भ राशि गत बुध वक्री शुक्र के साथ हो एवं उस समय शुक्र ११° अंश से २१° अंश तक का हो तो अरहर, मटर, गुवार में १) टके की तेजी ८–९ दिन में करता है।

(२५) सूर्य मंगल के साथ वक्री बुध किसी राशि गत हो तो अरहर, मटर, गुवार में १) टके की व जूट में १।) टके की तेजी १३–१४ दिन के अन्तर्गत होती है।

साप्ताहिक तेजी

(१) बुध की युति गुरु–शुक्र के साथ मेष, सिंह, तुला वृश्चिक या मकर में से किसी राशि गत हो तो २–३ दिन के अन्दर अरहर मटर, गुवार में ।)-।-) आने की व जूट में ।।=)–।।≡) आने की तेजी आती है।

(२) बुध सूर्य के साथ किसी राशि गत हो एवं कृष्ण पक्ष की अमावस्या ५ घड़ी से अधिक की न हो तो अरहर, मटर, गुवार में ≡) आने की व जूट में ।≡) आने की तेजी १।। दिन के अन्तर्गत आती है।

(३) बुध किसी पाप ग्रह की राशि गत हो और षष्ठमी तिथि की शुक्ल पक्ष में हानि हो तो अरहर, मटर गुवार में ≡) आने व जूट में ।) आने की तेजी २ दिन में आती है।

(४) किसी राशि गत बुध शुक्र एक साथ वक्री हों तो ३–४ दिन के अन्तर्गत अरहर, मटर, गुवार में ।=) आने की व जूट में ।।।) आने की तेजी होती है।

(५) मीन राशि गत बुध हो तो मीन राशि गत मंगल के प्रवेश होते ही २ दिन के अन्तर्गत ही अरहर, मटर, गुवार में ।) ।–) आने की व जूट में ।।=) आने की तेजी आती है।

(६) बुध मंगल एक साथ मेष राशि गत वक्री हों तो ३-४ दिन के अन्तर्गत अरहर, मटर, गुवार में ।≡) आने की व जूट में ।।।)-।।।=) आने की तेजी आती है।

(७) सिंह राशि गत के बुध, मंगल एक साथ वक्री हों तो अरहर, मटर, गुवार में ।=)-।≡) आने व जूट में ।।।)-।।।=) आने की तेजी ४ – ५ दिन के अन्तर्गत आती है।

(८) पूर्व दिशा में मंगल जिस राशि गत उदय हो और उसी राशि गत बुध भी हो तो अरहर, मटर, गुवार में ।)-।–) आने की व जूट में ।।=)—।।≡) आने की तेजी ३-४ दिन में आती है।

(९) २५° अंश के मंगल के साथ बुध वृश्चिक राशि गत हो तो २ दिन में अरहर मटर गुवार में ≡)—।) आने की व जूट में ।।) ।।–) आने की तेजी आती है।

(१०) मकर राशि गत बुध ११° अंशी मंगल के साथ हो तो २—३ दिन के अन्तर्गत अरहर, मटर, गुवार में ।।) आने की व जूट में ।।।=) आने की तेजी आती है।

(११) वृषभ राशि गत बुध १५° अंश का हो तो ३ – ४ दिन

के अन्दर ही अरहर, मटर, गुवार में ।।) व जूट में ।।।=) आने की तेजी आती है ।

(१२) बुध १३° अंश से १६° अंश तक सिंह राशि गत हो तो ३-४ दिन के अन्तर्गत अरहर, मटर, गुवार में ।।) ।।=) आने तक व जूट में ।।।) आने तक की तेजी आती है ।

(१३) ०° अंश से ५° अंश या ३०° अंश का योग बुध व सूर्य का मेष, वृश्चिक, मकर या कुंभ राशि गत हो तो अरहर, मटर, गुवार में ।।) आने की व जूट में ।।।=) आने की तेजी ३-४ दिन के अन्तर्गत आती है ।

(१४) मेष, वृश्चिक, मकर, कुम्भ में से किसी राशि गत सूर्य बुध का योग ६०° अंश का हो तो अरहर, मटर, गुवार में ।-)-।=) आने की व जूट में ।।।) आने की तेजी ४-५ दिन में आती है ।

(१५) बुध व राहु ५° अंश की युति करें तो २-३ दिन के अन्तर्गत अरहर, मटर, गुवार में ।-) आने की व जूट में ।।=) आने की तेजी आती है ।

(१६) तुला राशि गत बुध, मीन राशि गत गुरु व सिंह राशि गत राहु परिभ्रमण कर रहा हो तो ३—४ दिन के अन्दर ही अरहर, मटर, गुवार में ।।) आने व जूट में ।।।=) आने की तेजी आती है ।

(१७) वृश्चिक राशि गत शनि, कुम्भ राशि गत सूर्य बुध व हर्षल वक्रावस्था में किसी राशिगत गत हो तो ४-५ दिन के अन्तर्गत अरहर, मटर, गुवार में ।)-।-) आने की व जूट में ।।=) आने की तेजी आती है ।

(१८) सूर्य के साथ बुध वृषभ राशि गत हो तो बुध के वक्री होते

ही ७ दिन के अन्तर्गत ही अरहर, मटर, गुवार में १) टके की व जूट में १।) टके की तेजी आती है।

वैनिक तेजी—

(१) शुक्र, बुध मेष राशि गत ३०° अंश का योग बनाएं तो अरहर, गुवार, मटर में।) आने की व जूट में।—) आने की तेजी १२ घण्टे में करते हैं।

(२) सिंह, तुला, वृश्चिक या कुम्भ का चन्द्र बुध के साथ ६०° अंश का योग बनाएं तो अरहर, मटर, गुवार में।=) आने व जूट में।।=) आने की तेजी २४ घण्टे के अन्तर्गत होती है।

(३) १५ मुहुर्ती वृश्चिक संक्रांति को वृश्चिक राशि गत बुध हो तो १४ घंटे में अरहर, मटर, गुवार में।=) आने व जूट में।।≡) आने की तेजी आती है।

(४) मीन राशि गत चन्द्र उस समय प्रवेश करे जब कि मकर या कुम्भ राशि गत बुध के साथ कोई क्रूर ग्रह हो तो १० घंटे में ही अरहर, मटर, गुवार में।—) आने की व।।=) आने की जूट में तेजी आती है।

(५) बुध वृषभ राशि गत उस समय हो तब कि वृषभ संक्रांति १५ मुहुर्ती हो तो २४ घंटे में ही अरहर, मटर, गुवार में।) व जूट में।=) आने की तेजी आती हैं।

(६) बुध१।५।८ स्थान पर क्रम से सूर्य मंगल व शनि के साथ हो और ३०° अंश का योग बनाता हो तो १० घण्टे में अरहर, मटर गुवार में।—)-।=) आने की तथा जूट में।≡)-।।) आने की तेजी आती है।

(७) सूर्य, बुध की युति अरहर, मटर, गुवार में ।–) व जूट में ।≡) आने की तेजी २४ घंटे में लाती है।

(८) मंगल, बुध की युति अरहर, मटर, गुवार में ।=) व जूट में ।।।) की तेजी २४ घण्टे के अन्तर्गत लाती है।

(९) बुध वक्री शुक्र की युति अरहर, मटर, गुवार में ।–) आने की व जूट में ।।=) आने की तेजी २४ घण्टे में लाती है।

(१०) बुध, शनि, की युति अरहर, मटर, गुवार में ।) व जूट में ।।=) आने की तेजी २४ घण्टे के अन्तर्गत लाती है।

(११) मकर या वृश्चिक राशि गत के बुध के साथ राहु की युति हो तो २४ घण्टे में अरहर, मटर, गुवार में ।) आने व जूट में ।≡) आने की तेजी आती है।

(१२) सूर्य, चन्द्र का प्रतियोग हो उस समय केतु बुध की युति हो तो अरहर मटर गुवार में =)–≡) आने तक की तेजी २४ घण्टे में आती है।

(१३) बुध की युति हर्शल के साथ हो तो अरहर, मटर, गुवार में =) आने व जूट में ≡) आने की तेजी १४ घंटे में आती है।

(१४) जिस समय सूर्य मिथुन राशि गत हो तो उस समय बुध प्लूटो की युति हो तो अरहर, मटर, गुवार में ≡) आने व जूट में ।≡) आने की तेजी २४ घण्टे के अन्दर ही आती है।

(१५) बुध के साथ मंगल, शनि राहु, हर्शल, प्लूटो या सूर्य में से कोई ग्रह ३०° या ६०° अंश का दृष्टि योग बनाए तो अरहर मटर, गुवार में ≡) व जूट में ।।) आने की तेजी २४ घंटे में आती है।

(२) श्रावण या भाद्रपद मास में चन्द्र ग्रहण मिथुन, कर्क कन्या, तुला, मीन में से किसी राशि गत हो और उसी राशि गत बुध भी हो तो अरहर, मटर, गुवार में २) टके की व जूट मे २॥) टके की तेजी १ मास के अन्तर्गत आती है।

(३) बुध, गुरु दोनों मार्गी अवस्था के मिथुन, कन्या या मीन राशि गत हों तो २१ दिन के अन्तर्गत अरहर, मटर, गुवार में २) टके की व जूट में २॥) टके की तेजी आती है।

(४) चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र मिथुन, कर्क, कन्या, कुम्भ में से किसी एक राशि में एकत्र हो और ये सभी ग्रह ८° अंश से २०° अंश तक की सम अंशों में प्रति योग करे तो १५-१६ दिन में अरहर, मटर, गुवार में १॥) टके की व जूट में २।) टके की मंदी आती है।

(५) बुध व गुरु या नेपच्यून ६° या ८° अंश के कर्क या कन्या राशि गत हों और इनमें से कोई एक ग्रह सूर्य या चन्द्र के साथ ९०°, १२०° या १८०° अंश का योग बनाए तो अरहर, मटर, गुवार में १॥) टके की व जूट में १॥।) टके की मंदी ११-१२ दिन में आती है।

(६) २° अंशी बुध गुरु के साथ मिथुन राशि गत हो शुक्र २०° अंश का कर्क राशि गत हो तो अरहर, मटर, गुवार में १।) टके तथा जूट १॥) टके की मंदी १०-११ दिन मे आती है।

(७) कर्क राशि गत बुध, चन्द्र, मीन राशि गत गुरु या नेपच्यून तथा कन्या राशि गत शुक्र हो तो अरहर, मटर, गुवार में

१।) टके की तथा जूट में १॥) टके की मंदी १०-१२ दिन के अन्तर्गत आती है।

(८) कर्क राशि गत बुध, गुरु व मिथुन या कन्या राशि गत चन्द्र, शुक्र हो तो १४-१५ दिन के अन्तर्गत अरहर, मटर, गुवार में २) टके की तथा जूट में २॥) टके तक की मंदी आती है।

(९) मीन राशि गत बुध, गुरु ४° अंश का शुक्र, राहु २६° अंश का हो तो अरहर, मटर, गुवार में १) टके की व जूट में १॥) टके की मंदी १०-११ दिन के अन्तर्गत होती है।

(१०) बुध, गुरु, कर्क राशि गत व मीन राशि गत शुक्र ०° अंश का मार्गी हो तो अरहर, मटर, गुवार में १) टके व जूट में १।) टके की मंदी ९-१० दिन के अन्तर्गत आती है।

(११) चन्द्र, बुध, गुरु व शुक्र—ये चारों ग्रह कर्क, कुम्भ व मीन राशि में से किसी राशि में मार्गी अवस्था में परिभ्रमण कर रहे हों तो अरहर, मटर, गुवार में १॥) टके की व जूट में १॥।) टके की मंदी ९-१० दिन में आती है।

(१२) मिथुन, कर्क, कन्या, तुला राशि में से किसी राशि गत गुरु, बुध एक साथ उदय हों और उसी राशि गत शुक्र भी उदयावस्था का हो तो अरहर, मटर, गुवार में १॥) टके व जूट में २) टके की मंदी १५-१६ दिन के अन्तर्गत होती है।

(१३) मंदी कारक राशि में बुध उदय हो तो १०-११ दिन के अंतर्गत ही अरहर, मटर, गुवार में ८-९ दिन के अंतर्गत ही ॥।)-

(१६) बुध के साथ सूर्य, मंगल, शनि, हर्शल प्लूटो या राहु में से कोई एक ग्रह १३५° या १५०° का दृष्टि योग बनाए तो अरहर, मटर, गुवार में ≡) व जूट में ।) आने की तेजी २४ घंटे में आती है।

(१७) बुध के साथ सूर्य, मंगल, शनि, राहु, हर्शल, प्लूटो—इन ग्रहों में से कोई ग्रह ४५° अंश का दृष्टि योग बनाए तो ६ घंटे में अरहर, मटर, गुवार व जूट में साधारण तेजी आती है।

(१८) बुध के साथ सूर्य, मंगल, शनि राहु, हर्शल, प्लूटो में से कोई एक ग्रह ९०°, १२०°, १८०° अंश का दृष्टि योग बनाए तो अरहर, मटर, गुवार व जूट में क्रम से ६, ९, १२ घंटे में क्षणिक तेजी आती है,

(१९) सूर्य बुध पुनर्वसु नक्षत्र पर एवं चन्द्र मूल नक्षत्र पर हो तो अरहर, मटर, गुवार जूट में तेजी आती है।

(२०) पुनर्वसु नक्षत्र पर सूर्य व बुध हो एवं चन्द्र ज्येष्ठा नक्षत्र पर हो तो अरहर, मटर गुवार व जूट में तेजी आती है।

(२१) चन्द्र शतभिषा नक्षत्र पर उस समय हो जब कि सूर्य बुध के साथ पुनर्वसु नक्षत्र पर हो तो अरहर, मटर, गुवार व जूट में तेजी आती है।

(२२) बुध सूर्य पुष्य नक्षत्र पर हो एवं पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र पर चन्द्र हो तो अरहर, मटर, गुवार व जूट में तेजी आती है।

(२३) सूर्य बुध पुष्य नक्षत्र पर एवं चन्द्र रोहिणी नक्षत्र पर हो तो अरहर मटर गुवार व जूट में तेजी आती है।

(२४) बुध सूर्य के साथ वृश्चिक राशि गत हो और चन्द्र के

प्रवेश करते ही अरहर, मटर, गुवार व जूट में अचानक तेजी होती है :

(२५) सूर्य व बुध वृषभ राशि गत हो तो वृश्चिक या मकर राशि में चन्द्र प्रवेश होते ही अरहर, मटर गुवार व जूट में तेजी आती है।

(२६) कर्क राशि गत सूर्य बुध दोनों हो और चन्द्र मेष या वृश्चिक राशि गत हो तो अरहर, मटर, गुवार व जूट में तेजी आती है।

(२७) सूर्य वक्री बुध के साथ सिंह राशि में हो एवं चन्द्र मकर या कुम्भ राशि गत हो तो अरहर, मटर, गुवार तथा जूट में तेजी आती है।

(२८) मेष या सिंह राशि गत चन्द्र हो एवं बुध सूर्य के साथ वृश्चिक राशि गत हो तो अरहर, मटर, गुवार व जूट तेज होती है।

(२९) सूर्य, बुध, वक्री शुक्र तीनों ग्रह सिंह राशि गत हो या सूर्य, बुध, चन्द्र – ये तीनों ग्रह हो सिंह राशि गत हों तो अरहर, मटर, गुवार व जूट तेज होते हैं।

(३०) मकर राशि गत सूर्य व बुध हो एवं सिंह या वृश्चिक राशि गत चन्द्र हो तो अरहर, मटर, गुवार व जूट में तेजी होती है।

लम्बी रुख की मंदी—

(१) मार्गी बुध कन्या, कर्क, मिथुन में से किसी राशि गत चन्द्र, गुरु, शुक्र, नेपच्यून में किसी दो तीन या चारों ग्रह के साथ हो तो अरहर, मटर, गुवार में क्रम से १)-१।)-१॥) व जूट में १=) १।=) व १॥।) टकों की तेजी २१ या ३१ दिन के अन्तर्गत आती है।

।।।=) आने की तथा इतने ही दिन में जूट में १)-१=) आने की मंदी आती है।

(१४) बुध, गुरु, नेपच्यून ये तीनों ग्रह मिथुन या धनु राशि गत एक साथ हो तो अरहर, मटर, गुवार में ।।।) आने व जूट में १) की और यदि ये तीनों ग्रह मार्गी हों तो अरहर, मटर, गुवार में ।।।=)-१) तक की व जूट में १।) टके तक की तथा ये तीनों ग्रह मार्गी और उदयावस्था के हों तो अरहर, मटर, गुवार में १)-१।) टके की तथा जूट में १।।) टके तक की मंदी १०-११ दिन के अंदर ही आती है।

(१५) १३ दिन के अंतर्गत ही अरहर, मटर, गुवार में १) व जूट में १।) टके की मंदी आती है जब कि बुध २०° अंश व गुरू २६° अंश के मिथुन या कन्या राशि गत के हों।

(१६) मिथुन राशि गत बुध मंदगामी मंगल व शनि के साथ हो तथा शुक्र कर्क राशि गत हो तो १०-११ दिन के अंतर्गत अरहर, मटर, गुवार में ।।) व जूट में ।।।) आने की मंदी आती है।

(१७) कर्क राशि गत बुध, गुरु व शुक्र परस्पर १२०° अंश का योग बनाए तो १०-११ दिन के अंतर्गत अरहर, मटर, गुवार में १।।) टके की व जूट में २) टके की मंदी आती है।

(१८) मिथुन, कर्क, सिंह संक्रांति में से कोई भी एक संक्रांति ४५ मुहुर्ती हो और उसी ही राशि गत बुध, गुरु और नेपच्यून भी हों तो अरहर, मटर, गुवार में ।।।) आने की व जूट में १) टके की मंदी ८-९ दिन में आती है।

(१६) कन्या राशि गत सूर्य बुध, गुरु व नेपच्यून के साथ हो तो अरहर, मटर, गुवार में ।।।) आने की व जूट में १) टके की मंदी १४-१५ दिन के अंतर्गत आती है।

(२०) बुध, गुरु, शुक्र व चन्द्र मिथुन राशि गत व कर्क राशि गत सूर्य तथा धनु राशि गत शनि हो तो २१ दिन के अंतर्गत अरहर, मटर, गुवार में १।।) टके की व जूट में १।।।) टके की मंदी आती है।

(२१) कर्क या मीन राशि गत गुरु तथा मिथुन राशि गत बुध २२° अंश से २८° अंश तक का हो एवं इनका ९०° अंश का योग शुक्र या नेपच्यून से बनता हो तो १०-१२ दिन के अन्तर्गत अरहर, मटर, गुवार में ।।) आने व जूट में ।।।) आने की मंदी आती है।

(२२) भाद्रपद सुदी की पूर्णिमा को खग्रास (पूर्ण) चन्द्र ग्रहण हो और धनु राशि गत मार्गी शनि हो तो १०-१२ दिन के अन्दर ही अरहर, मटर, गुवार में ।।) आने की व जूट में ।।।) आने की मंदी आती हैं।

(२३) सूर्य, मिथुन, कर्क, कुम्भ या मीन राशि में से किसी राशि का हो और मार्गी बुध, गुरु ६° अंश से २४° अंश तक का धनु राशि गत शनि के साथ हो तो २१ दिन के अन्तर्गत अरहर, मटर, गुवार में १।।) टके की व जूट में २) टके की मंदी आती हैं यह योग परस्पर केन्द्र त्रिकोण हों तभी पूर्ण प्रभाव होता है अन्यथा प्रभाव में साधारण मंदी समझें।

(२४) बुध मार्गी एवं उदयावस्था का गुरु, शुक्र, नेपच्यून के साथ मिथुन, कर्क, कन्या में से किसी राशी गत हो तो १०-११ दिन के अन्तर्गत ही अरहर, मटर, गुवार में ॥≈) आने व जूट में ॥।) आने की मंदी आती है।

(२५) बुध, गुरु, शुक्र व नेपच्यून—सभी मार्गी एवं उदयावस्था के एक साथ कुम्भ या मीन राशि गत सम अंशों के हों तो १५-१६ दिन के अन्तर्गत अरहर, मटर, गुवार में १॥) टके की तथा जूट में २।) टके की मंदी आती है।

साप्ताहिक मंदी—

(१) सूर्य २४° अंश से २८° अंश तक का मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, कुंभ, मीन में से किसी भी राशि गत हो एवं इन्हीं ही राशियों में से किसी भी राशि गत गुरू, बुध का प्रति योग हो रहा हो तो अरहर, मटर, गुवार में ।≈) आने की तथा जूट में ॥) आने की मंदी ३६ घंटे के अंतर्गत आती है।

(२) १ घडी से ६ घडी तक की पूर्णिमा शुक्ल पक्ष की हो तो २-३ दिन में ॥।) आने की अरहर, मटर, गुवार में व जूट में ॥।-) आने की मंदी आती है।

(३) किसी मास में द्वितीया की वृद्धि शुक्ल पक्ष में हो तो २ दिन के अन्तर्गत ही अरहर, गुवार, मटर, में।≈) आने की व जूट में ॥≈) आने की मंदी आती है।

(४) किसी राशि गत बुध, गुरू, शुक्र एक साथ मार्गी हो तो एक सप्ताह में अरहर, मटर, गुवार में ॥।) आने की व जूट में १) की मंदी आती है।

(५) बुध, कर्क, मिथुन, मीन राशि में से किसी राशि गत हो तो उसी राशि गत गुरु के प्रवेश होते ही ४-५ दिन के अन्तर्गत ही अरहर, मटर, गुवार में ॥=) व जूट में ॥।) आने की मंदी आती है।

(६) मिथुन, कर्क, कन्या राशि में से किसी राशि गत बुध गुरू के एकत्र होते ही ५-६ दिन के अंतर्गत ही अरहर, मटर, गुवार में ॥।) आने की व जूट में १) की मंदी आती है।

(७) मिथुन राशि गत सूर्य के साथ बुध हो तो गुरु शुक्र के प्रवेश होते ही अरहर, मटर, गुवार में ॥) आने व जूट में ॥।) आने की मंदी ३ दिन में आती है।

(८) मिथुन या कर्क राशि गत सूर्य मार्गी बुध, वक्री नेपच्यून एक साथ हों तो ३-४ दिन के अन्तर्गत ही अरहर, मटर, गुवार में ॥-॥।) आने की व जूट में ॥=)-॥।=) आने की मंदी आती है।

(९) किसी मास की शुक्ल पक्षीय द्वितीया को बुध, गुरु, शुक्र में से कोई भी ग्रह २४° अंश का हो और उसी ही दिन चन्द्र दर्शन ४५ मुहुर्ती हो तो ४ दिन के अंतर्गत ही अरहर, मटर, गुवार में ।=) आने की व जूट में ॥) आने की मंदी आती है।

(१०) बुध, मिथुन, कर्क या कन्या राशि गत शुक्र व सूर्य के साथ हो और गुरु मिथुन राशि गत १८° अंश से २४° अंश तक का हो तो अरहर, मटर, गुवार में ६-७ दिन के अन्तर्गत ही ॥) आने की व जूट में भी इतने ही दिन में ॥।) आने की मंदी आती है।

(११) मिथुन राशि गत सूर्य २४° अंश का व बुध २२° अंश का कर्क राशि गत हो तो ३ दिन के अन्तर्गत अरहर, मटर, गुवार में ॥)-।॥) आने की व जूट में १) की मंदी आती है।

(१२) बुध व सूर्य मिथुन या कन्या राशि गत त्रिकोण योग बनाएं तो ६-७ दिन के अंतर्गत ।॥) की मंदी अरहर, मटर, गुवार में व १) टके की मंदी जूट में आती है।

(१३) मिथुन, कर्क, कन्या, तुला या मीन राशियों में से किसी राशि गत गुरू व बुध ९०° या १२०° अंश का योग बनाएं तो ५-६ दिन के अन्तर्गत अरहर, मटर, गुवार में ।॥) आने की व जूट में १) की मंदी आती हैं।

(१४) गुरु, शुक्र का योग १८०° अंश का मेष तुला, कुम्भ और मीन राशि गत हो तो ५-६ दिन के अंतर्गत अरहर, मटर, गुवार में ॥=) आने की मंदी व जूट में ।॥) आने की मंदी आती है।

(१५) बुध, गुरु शुक्र एक साथ १८०° अंश का योग बनाएं तो ४-५ दिन के अंतर्गत अरहर, मटर, गुवार में ।॥) आने की व जूट में ॥=) आने की मंदी आती हैं।

(१६) गुरू, बुध कर्क राशि गत तथा राहु वृश्चिक राशि गत हो जिस सप्ताह में परिभ्रमण करते हों तो उसी सप्ताह में अरहर, मटर, गुवार में ॥=) आने व जूट में ।॥) आने की मंदी आती हैं।

(१७) बुध व शुक्र कन्या राशि गत हो, गुरु व शनि कर्क राशि गत हो तथा नेपच्यून मार्गी अवस्था का किसी भी राशि गत

हो–ये ग्रह जिस दिन १८०° अंश योग बनावे उससे ७ दिन के अन्तर्गत ही अरहर, मटर, गुवार में ।=)-।।) आने की व जूट में ।।=)-।।।) आने की मंदी आती है।

(१८) गुरु व बुध मीन राशि गत एक साथ २८° अंश पर चले तो २ दिन में ही अरहर, मटर, गुवार में ।-) आने की व जूट में ।।) आने की मंदो आती है।

(१९) धनु राशि गत बुध व नेपच्यून १८° अंश से २४° अंश तक का हो एवं तुला राशि गत गुरु के साथ जिस दिन चन्द्र योग बनावे तो २ दिन के अन्तर्गत ही अरहर, मटर, गुवार में ।=) आने की व जूट में ।।) आने की मंदी आतो है।

दैनिक मंदी—

(१) गुरु के साथ चन्द्र की युति उस समय हो जब कि चन्द्र मिथुन राशि गत हो तो १४ घण्टे के अन्तर्गत ही अरहर मटर गुवार में ≡) आने की व जूट में ।) आने की मंदी आती है।

(२) बुध के साथ कर्क, कन्या, तुला, धनु या मीन राशि का चन्द्र केन्द्र योग बनावे अथवा गुरु के साथ युति करे तो १२।। घंटे के अन्तर्गत ही अरहर मटर गुवार में ≡) आने व जूट में ।) आने की मंदी आती है।

(३) किसी मास में मिथुन या तुला संक्रांति ४५ मुहूर्ती हो तथा चन्द्र कर्क या तुला राशि गत हो तो शुक्ल पक्ष की द्वितीया या तृतीया को १० घंटे के अन्दर ही अरहर, मटर, गुवार में ।) आने की व जूट में ।=) आने की मंदी आती है।

(४) चन्द्र, बुध, गुरु, नेपच्यून—में से किसी के साथ मिथुन कर्क या कन्या राशि का सूर्य १८०° अंश का योग बनावे तथा चन्द्र तुला या मीन राशि गत प्रवेश हो तो अरहर, मटर, गुवार में ≈) आने की व जूट में ।) आने की मंदी १२ घंटे में आती है।

(५) चन्द्र सूर्य की प्रति युति उस समय हो जब कि कन्या संक्रांति ४५ मुहुर्ती हो तथा इसी ही राशि गत का चन्द्र भी हो तो अरहर, मटर, गुवार में ≥) आने व जूट में ।) आने की मंदी १२ घंटे में होती है।

(६) चन्द्र ७।१०।१२ स्थान पर क्रमशः बुध, गुरु, शुक्र से युक्त हो तथा १२०° अंश का योग भी इन्हीं से कर रहा हो तो १० घंटे के अन्तर्गत ही अरहर, मटर, गुवार में ≈) आने की व जूट में ≥) आने की मंदी होती है।

(७) चन्द्र बुध, चन्द्र गुरु को प्रति युति अरहर, मटर, गुवार में ≥) आने की व जूट में ।) आने की मन्दी १० घंटे में लाती है।

(८) सूर्य बुध, सूर्य गुरु, सूर्य शुक्र—ये तीनों प्रति युति पूर्णिमा को एक साथ हों तो अरहर, मटर, गुवार में ≥)-।) आने व जूट में ।–)-।≈) आने की मंदी १२ घंटे में आती है।

(९) चन्द्र के साथ बुध, गुरु, शुक्र की प्रति युति उस समय हो जब कि चन्द्र ग्रहण हो तो २४ घंटे के अन्तर्गत ही अरहर, मटर गुवार में ।) आने की व जूट में ।≈) आने की मन्दी आती है।

(१०) शनि बुध की प्रति युति २४ घंटे के अन्तर्गत ही अरहर मटर गुवार में ।) आने की व जूट में ।≈) आने की मन्दी लाती है।

(११) बुध, गुरु, राहू की परस्पर केन्द्र त्रिकोण प्रति युति हो तो २४ घंटे में अरहर, मटर, गुवार में≥) आने की व जूट में ।) आने की मन्दी आतीं है।

(१२) बुध व नेपच्यून की युति एवं प्रति युति हो तो २४ घंटे में अरहर मटर गुवार में =) आने व जूट में ≡) आने की मन्दी आती है।

(१३) बुध व शुक्र की प्रति युति हो तो २४ घण्टे के अन्तर्गत ही अरहर, मटर, गुवार में =) आने की व जूट में ≡) आने की मन्दी आती है।

(१४) बुध, गुरु, नेपच्यून की युति एवं प्रति युति दोनों हो अरहर, मटर, गुवार में ≡) आने व जूट में ।) आने की मन्दी लाती है।

(१५) मार्गी नेपच्यून व गुरु की युति एवं प्रति युति दोनों ही २४ घंटे में अरहर, मटर, गुवार में ।) व जूट में ।=) आने की मंदी आती है।

(१६) चन्द्र, बुध के साथ गुरू, शुक्र, नेपच्यून—इनमें से कोई एक ग्रह ९०°, १२०°, १८०° अंश का दृष्टि योग बनावें तो २४ घंटे के अन्तर्गत अरहर, मटर, गुवार में ।) व जूट में ।–) आने की मंदी आती है।

(१७) चन्द्र, बुध, के साथ गुरू, शुक्र, नेपच्यून में से कोई भी ग्रह ३६°, ७२°, १४४° अंश का दृष्टि योग बनावे तो अरहर, मटर, गुवार में =) आने व जूट में ≡) आने की मंदी २४ घंटे में करता है।

(१८) चन्द्र, बुध के साथ का सौम ग्रह ९०° अंश का दृष्टि योग करे तो अरहर, मटर, गुवार व जूट में ६ घंटे में ही साधारण मंदी आती है।

(१९) चन्द्र, बुध के साथ गुरू, शुक्र, नेपच्यून में से कोई एक ग्रह ३०°, ६०°, १५०° अंश का दृष्टि योग करे तो क्रम से ६, ९, १२ घन्टे के अन्तर्गत ही अरहर, मटर, गुवार व जूट में क्षणिक मंदी आकर पुनः वही भाव हो जाते हैं।

(२०) सूर्य आश्लेषा नक्षत्र का हो एवं चन्द्र पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र का हो तो अरहर, मटर, गुवार व जूट में कमी आती है।

(२१) आश्लेषा नक्षत्र का सूर्य व उत्तराषाढ़ा नक्षत्र का चन्द्र अरहर, मटर, गुवार व जूट में मंदी लाता है।

(२२) मघा नक्षत्री सूर्य अश्विनी नक्षत्री चन्द्र अरहर, मटर, गुवार व जूट में मंदी लाता है।

(२३) मघा नक्षत्र का सूर्य व पुष्य नक्षत्र का चन्द्र हो तो अरहर, मटर, गुवार व जूट में मंदी आती है।

(२४) तुला या कन्या राशि गत चन्द्र व बुध हो एवं मिथुन राशि गत सूर्य हो तो अरहर, मटर, गुवार व जूट में मंदी आती है।

(२५) सूर्य, चन्द्र, बुध व कन्या राशि गत होकर परस्पर १८०° अंश का योग बनावें तो अरहर, मटर, गुवार व जूट में मंदी आती है।

(२६) मिथुन, कर्क, कन्या तुला अथवा मीन राशि गत चन्द्र व बुध हो एवं मिथुन या कर्क राशि गत सूर्य हो तो अरहर, मटर गुवार व जूट में मंदी आती है।

(२७) सूर्य गुरु के साथ मिथुन या मीन राशि गत हो और चन्द्र बुध के साथ कन्या या मीन राशि गत हो तो अरहर, मटर, गुवार व जूट में मंदी आती है।

(२८) कर्क व तुला राशि गत सूर्य, चन्द्र, बुध—ये तीनों ग्रह एकत्र हो तो अरहर मटर गुवार व जूट में मन्दी आती है।

(२९) वृषभ या कुंभ राशि गत चन्द्र व बुध हो एवं कर्क राशि गत का सूर्य चन्द्र के साथ प्रति युति करे तो अरहर मटर गुवार व जूट में मन्दी आती है।

सूचना—उपरोक्त तेजी-मंदी के लम्बी रुखी, साप्ताहिक व दैनिक योगों का प्रभाव निम्न वस्तुओं पर भी उसी अवधि व उसी परसन्टेज के आधार पर ही पड़ेगा जिस आधार पर अरहर, मटर, गुवार व जूट पर पड़ता है—

पीली राई, मूंग, चावल, अनाज एवं फलों की साधारण वस्तुएं कत्थील, कत्था, गोंद, कतीरा, धनियां, पन्ना, मेंहदी के फूल, पिस्ता खाद्य पदार्थ, सिल्क, टेक्सटाइल, शक्कर, तांबा, अर्थ सम्बन्धी सामान आदि।

(३३) वायदा बाजार में अलसी, अरण्डा व मूंगफली—

अलसी, अरण्डा, मूंगफली भारतीय तिलहनों में मुख्य स्थान रखती हैं। इन वस्तुओं के खरीददार तेल मिल्स की कम्पनियां होती हैं जो तेल मिल्स को सप्लाय करती हैं। इन्हीं ही वस्तुओं का कुछ व्यापारी वायदा बाजार में व्यापार करते हैं। अलसी, अरण्डा, मूंगफली का सब से बड़ा बाजार बम्बई है। जहां पर अलसी का

वायदा व्यापार दि मारवाड़ी चैम्बर ऑफ कामर्स लि० के नियमानुसार होता है तथा अरण्डा व मूंगफली का वायदा व्यापार सीड्स ट्रेडर्स एसोशियेशन लि० एवं दि ग्रेन मर्चेण्ट एसोसियेशन लि० के नियमानुसार होते है। इन वस्तुओं का सौदा खडियों से होता है केवल अलसी का सौदा मन के हिसाब से होता है।

इन वस्तुओं का व्यापार करनेवाले वायदा बाजार के व्यापारी इस पुस्तक में लिखे लेख—"वायदा व्यापार"—को पढ़कर उसके सारांश पर चले तो लाभ उठा सकते हैं थोड़ी सी जानकारी यहां हम ज्योतिष के सम्बन्ध में दे रहे हैं जो वायदा व्यापार में आगे की धारणा के लिए मार्ग दर्शक होगी।

अलसी, अरण्डा व मूंगफली का अधिष्ठाता मंगल ग्रह है और इनकी राशि वृश्चिक मानी गई है अतः मंगल की युति ऐसे ग्रहों के साथ होगी जो लम्बे समय तक एक राशि पर परिभ्रमण करते हैं तो इन वस्तुओं में लम्बी रुखी-तेजी-मंदी का विचार होगा और जो ग्रह थोड़े समय तक एक राशि पर रहते हैं ऐसे ग्रहों के साथ मंगल की युति होगी तो इन वस्तुओं में साप्ताहिक तेजी-मंदी का ज्ञान होगा तथा मंगल जब अन्य ग्रहों के साथ मंगल के साथ अन्य ग्रह अंशात्मक योग बनाएं तो अलसी अरण्डा व मूंगफली में दैनिक तेजी-मंदी का विचार प्रकट करना चाहिए इसके अतिरिक्त राशि, नक्षत्र, नवांश, वेध, उदयास्त, वक्री, मार्गी आदि अवस्थाओं द्वारा भी अलसी, अरण्डा व मूंगफली की तेजी-मंदी की घट-बढ़ का भी ज्ञान होता है। हम यहां पर इन वस्तुओं के कुछ योग—लम्बी रुखी

साप्ताहिक व दैनिक तेजी व मंदी के दे रहे हैं जिसके आधार पर आप अन्य योगों का सारांश निकाल सकें--

लम्बी रुखी तेजी--

(१) मेष, वृश्चिक या मकर राशि में से किसी भी राशि गत मंगल इन ग्रहों—सूर्य, वक्री शुक्र, शनि, राहु, हर्शल, प्लूटो में से किसी दो, तीन, चार या सभी ग्रहों के साथ हो तो २१ या २५ दिन के अन्तर्गत अलसी में क्रम से ।।।), १), १।), १।।), १।।।) टके की व अरण्डा व मूंगफली में क्रम से १।।), २), २।।), २।।।), ३) तथा २), २।), २।।), २।।।), ३) टके की तेजी आती है।

(२) खग्रास सूर्य ग्रहण उस समय हो जब कि मंगल उसके साथ हो तो १ मास के अन्तर्गत अलसी में २-३) टके की व अरण्डा में ४-५) टके की तथा मूंगफली में ५-६) टके की तेजी आती है।

(३) गुरु, शुक्र दोनों वक्रावस्था के एक साथ मीन राशि गत हों तो तथा मंगल मेष, वृषभ या मकर में से किसी भी राशि गत हो तो अलसी में ५-६) टके की व मूंगफली ७-८) टके की तथा अरण्डा में ९-१०) टके की तेजी २०-२१ दिन में आती है।

(४) मेष, सिंह, वृश्चिक, मकर, में से किसी भी राशि गत मंगल के साथ वक्रावस्था के गुरु, शुक्र या राहु में से कोई ग्रह ७° से १९° तक में युति करे तो १५-१६ दिन के अन्तर्गत अलसी में २-३) टके की व अरण्डा में ३-४) टके की व मूंगफली में ५-६) टके की तेजी होती है।

(५) ७° या ९° अंश का शनि सिंह राशि गत मंगल के साथ [illegible] अंश का योग बनाए तो १२-१३ दिन के

अन्तर्गत अलसी में ३) टके की, अरण्डा में ५) टके की व मूंग-फली में ७) टके की तेजी होती है।

(६) मंगल के साथ मकर राशि गत सूर्य, शनि व राहु में से कोई ग्रह १७° अंश का हो तो १४ दिन के अन्तर्गत अलसी में ३ टके की अरण्डी में ५) टके की व मूंगफली में ८) टके की तेजी होती है ये तेजी तभी समझे जब कि मीन राशि गत गुरु ५° अंश का हो।

(७) मकर राशि गत मंगल, वृश्चिक राशि गत शनि व राहु तथा वृषभ राशि गत सूर्य व शुक्र हों तो अलसी में २) टके की अरण्डी में ३॥) टके की व मूंगफली में ६) टके की तेजी १०-११ दिन के अन्तर्गत होती है।

(८) सूर्य, मंगल, शुक्र शनि—ये चारों ग्रह मकर राशि गत हों एवं मेष या वृषभ राशि गत में राहु हो तो अलसी में ३-४) टके की व अरण्डा में ५-६) टके की तथा मूंगफली में ७-८) टके की तेजी १०-११ दिन के अन्तर्गत होती है।

(६) तुला राशि गत मंगल १६° अंश का राहु ११° अंश का व सूर्य तथा शनि का संयोग हो तो अलसी में ३) टके की व अरण्डा में ५) टके की तथा मूंगफली में ८) टके की तेजी १२-१४ दिन के अन्तर्गत होती है।

(१०) १५° अंश का वक्री शुक्र मंगल के साथ वृषभ राशि गत हो तथा शनि व राहु मकर राशि गत हो तो १३ दिन के अंतर्गत अलसी में २) टके की अरण्डा में ३ टके की तथा मूंगफली में ५) टके की तेजी आती है।

(११) मंगल, शुक्र, शनि, राहु, हर्शल—ये पांचों ग्रह वक्रावस्था के एक साथ किसी राशि गत हो तो १५-१६ दिन के अन्तर्गत अलसी में १॥-२) टके की अरण्डा में ३-४) टके की तथा मूंगफली में ५-६) टके की तेजी आती है।

(१२) मेष, कर्क, सिंह वृश्चिक में से किसी राशि गत शुक्र मंगल उस समय एक साथ अस्त हो जब कि सूर्य भी उसी राशि गत हो तो १६-१७ दिन के अन्तर्गत अलसी में २) टके की व अरण्डा में ३) टके की तथा मूंगफली में ५) टके की तेजी आती है।

(१३) मंगल शनि एक साथ किसी भी राशि गत हो तो शनि के अस्त होते ही अलसी में १) टके की व अरण्डा में २) टके व मूंगफली में ३) टके की तेजी ६-१० दिन के अन्तर्गत होती है।

(१४) मंगल के साथ मेष या वृश्चिक राशि गत राहु शनि व शुक्र—ये तीनों ग्रह हो तो अलसी, अरण्डा व मूंगफली में क्रम से २) – ३) व ५) टके की तेजी और यदि ये तीनों वक्री हों तो क्रम से ३)-५) व ७) टके की तेजी तथा ये तीनों ग्रह वक्री तथा अस्त अवस्था के हो तो क्रम से ४), ६) व ६) टके तक की तेजी १३-१६ दिन के अन्तर्गत होती है।

(१५) मंगल वक्रावस्था का ११° अंश का तथा शुक्र ५° अंश का तुला राशि गत हो तो १३ दिन के अन्तर्गत अलसी में १॥) टके की अरण्डा में २॥।) टके की तथा मूंगफली में ४) टके तक की तेजी आती है।

(१६) शीघ्र गामी गति ये ग्रह—मंगल तुला राशि गत, शनि वृश्चिक राशि गत तथा शुक्र मकर राशि गत हों तो अलसी में २) टके की अरण्डा में ३॥) टके की तथा मूंगफली में ६) टके तक की तेजी १०-११ दिन के अन्तर्गत आती है।

(१७) मकर राशि गत मंगल के साथ शनि व सूर्य १५०° अंश का योग बनाते हों तो ११-१२ दिन के अन्तर्गत अलसी में २-३) टके तक अरण्डा में ४-५) टके तक व मूंगफली में ५-६) टके तक की तेजी आती है।

(१८) मेष, वृश्चिक, मकर राशि में से जिस राशि गत सूर्य, मंगल, शनि हो और उसी की संक्रांति १५ मुहुर्ती हो तो अलसी में १-२) टके की अरण्डा में २-३) टके की व मूंगफली में ३-४) टके की तेजी ८-९ दिन के अन्तर्गत आती है।

(१९) ये चारो ग्रह—मंगल, शनि, राहु व सूर्य कर्क राशि में एकत्र हों तो अलसी में २-२॥) टके की, अरण्डा में ४-५) टके की तथा मूंगफली में ६-७ टके की तेजी १०-११ दिन के अन्दर ही आती है।

(२०) मंगल व शुक्र वक्री दोनों ग्रह सिंह राशि गत तथा कर्क राशि गत सूर्य हो तो ८-९ दिन के अन्तर्गत अलसी में १-१॥) टके की, अरण्डा में २-३) टके की तथा मूंगफली में ४-५) टके की तेजी आती है।

(२१) मंगल शुक्र के साथ वृश्चिक राशि गत तथा शनि धनु राशिगत सूर्य, हर्शल या प्लूटो में से किसी के साथ हो तो अलसी में

३) टके की व अरएडा में ५) टके की तथा मूंगफली में ७-८ टके की तेजी १०-११ दिन के अन्तर्गत आती है।

(२२) वक्री शनि के साथ मंगल वृश्चिक राशि गत हो एवं मार्गशीर्ष मास की अमावस्या को पूर्ण (खग्रास) सूर्य ग्रहण भी हो तो १५ दिन पूर्व ही अलसी में २-३) टके की अरण्डा में ४-५) टके की तथा मूंगफली में ७-८) टके की तेजी आती है।

(२३) वक्री शनि ७० अंश से १९° अंश तक के बीच का मंगल के साथ वृश्चिक, मकर राशि गत हो तो अलसी में २॥) टके की अरंडा में ४॥) टके की तथा मूंगफली में ६) टके की तेजी ८-९ दिन के अन्तर्गत करता है।

(२४) वक्री शुक्र ११° अंश से २१° अंश तक का मंगल के साथ कुम्भ राशि गत हो तो ९-१० दिन के अन्तर्गत ही अलसी में २) टके अरंडा में ३॥) टके तथा मूंगफली में ६) टके तक की तेजी करता है।

(२५) मंगल किसी भी राशि गत सूर्य तथा वक्री शुक्र के साथ हो तो अलसी में १॥) टके की अरंडा में २॥) टके की तथा मूंगफली में ४॥) टके की तेजी ८-९ दिन के अन्तर्गत होती है।

(२६) मार्गी शनि वृश्चिक राशि गत ८ अंश से १३ अंश तक का राहु के साथ हो और सूर्य तुला तथा वृश्चिक में चार या पांच ग्रहो के साथ (पंचग्रही) योग बनाता हो तो ८, १३, २४ दिन के अन्तर्गत अलसी में ३), ४) अरंडा में ३५) ४०) मूंगफली में २०) २५) टके की तेजी आती है।

(२७) राहु और शनि की वृश्चिक में युति हो और सूर्य तुला या वृश्चिक में, मंगल, मकर या कुम्भ में, गुरु, शुक्र, सिंह राशि में हो तो अलसी ४) अरंडा में २५) मूंगफली में १५) टके की तेजी ११ या २१ दिन के अन्तर्गत अचूक आती है।

साप्ताहिक तेजी—

(१) मंगल, गुरु की युति मेष, सिंह, तुला, वृश्चिक राशि में से किसी राशि गत हो तो २-३ दिन के अन्तर्गत अलसी, अरण्डा व मूंगफली में क्रम से १।)-२) ३) टके की तेजी आती है।

(२) मंगल अमावस्या को सूर्य के साथ हो और अमावस्या भी १ घडी से ५ घडी के अन्तर्गत की हो तो अलसी में ।।) आने की अरन्डा में ।।।=) आने की तथा मूंगफली में १।) टके की तेजो १-१।। दिन के अन्तर्गत आती है।

(३) किसी भी मास की शुक्ल पक्ष की षष्ठमी का ह्रास हो तथा मंगल तेजी कारक राशि में हो तो २ दिन के अन्तर्गत अलसी में ।।) आने की व अरन्डा में ।।=) आने की तथा मूंगफली में १।) टके की वेजी आती है।

(४) मंगल किसी राशि गत शुक्र, बुध के साथ हो तो शुक्र, बुध के साथ अस्त हो जाने से ३-४ दिन के अन्तर्गत अलसी में ।।।) आने की अरण्डा में १।) टके की तथा मूंगफली में २) टके की तेजी आती है।

(५) सूर्य मीन राशि गत हों तो मंगल के प्रवेश होते ही २ दिन में ही अलसी में ।।=) आने की, अरन्डा में १।) टके तथा मूंगफली में २) टके तक की तेजी आती है।

(६) मेष राशि में मंगल के साथ शुक्र हो तो दोनों ग्रहों के एक साथ वक्री होते ही ३-४ दिन के अन्तर्गत अलसी में १।) टके की अरन्डा में २) टके तथा मूंगफली में ३ टके की तेजी आती है।

(७) सिंह राशि गत मंगल शुक्र एक साथ हो तो दोनों के एक साथ वक्री होते ही अलसी में ।।।) आने की अरन्डा में १।) टके की तथा मूंगफली में २) टके की तेजी २-४ दिन में आती है।

(८) सूर्य किसी भी राशि गत हों उसी राशि गत मंगल पूर्व दिशा में उदय हो तो ३-४ दिन के अन्तर्गत अलसी में ।।=) आने अरन्डा में १) टके व मूंगफली में १।।) टके की तेजी २-३ दिन में आती है।

(९) मंगल परिभ्रमण करता हुआ वृश्चिक राशि गत २५° अंश का हो जाय तो ४ दिन के अन्तर्गत ही अलसी में १) टके की अरन्डा में २।।।) टके तथा मूंगफली में ३।।) टके की तेजी करता है।

(१०) किसी तेजी कारक ग्रह के साथ मंगल ११° अंश का मकर राशि गत हो तो अलसी में १।) टके की अरन्डा में २) टके व मूंगफली मे ३) टके की तेजी ३-४ दिन के अन्तर्गत होती है।

(११) १५° अंश का शुक्र, मंगल के साथ वृषभ राशि गत हो तो ३-४ दिन के अन्तर्गत अलसी में १) टके की अरन्डा में २) टके की तथा मूंगफली मे ३) टके की तेजी आती है।

(१२) सिंह राशि गत मंगल के साथ १३° अंश से १९° अंश तक का शुक्र संयोग करे तो ३-४ दिन के अन्तर्गत अलसी में १।) टके की तेजी आती है।

(१३) मंगल व सूर्य का योग मेष, वृश्चिक, मकर या कुम्भ में से किसी राशि गत ३०° अंश या ०° अंश से ५° अंश तक का हो तो अलसी में १।) टके की अरण्डा में २।) टके तथा मूंगफली में ३।।) टके की तेजी आती है ये तेजी ६-७ दिन के अंतर्गत होती है।

(१४) मंगल सूर्य का ६०° अंश का योग मेष, वृश्चिक मकर या कुम्भ राशि में से किसी राशि गत हो तो अलसी में ।।।) आने अरण्डा में १।) टके तथा मूंगफली में २।) टके की तेजी ३ – ४ दिन के अन्तर्गत आती है।

(१५) मंगल व राहु एक साथ ५° अंश की युति करें तो ५ दिन के अन्तर्गत ही अलसी में ।।।) आने की अरण्डा में १।) टके की तथा सोने में २।) टके की तेजी आती है।

(१६) मंगल राहु सिंह राशि गत, गुरु मीन राशि गत तथा शुक्र वक्री तुला राशि गत हो तो अलसी में ।।=) आने की अरन्डा में १) टके की तथा मूंगफली में २) टके की तेजी ३ – ४ दिन में आती है।

(१७) कुम्भ राशि गत मंगल व राहु, वृश्चिक राशि गत शनि तथा वक्री हर्शल किसी भी राशि गत हो तो अलसी में ।।) आने की अरन्डा में ।।।=) आने तथा मूंगफली में १।।) टके की तेजी २-३ दिन के अन्तर्गत होती है।

(१८) वृषभ राशि गत मंगल सूर्य के साथ हो और इसी ही राशि गत चन्द्र का अर्ध ग्रहण शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा को पड़ जाय तो अलसी में १) टके की अरन्डा में १।।।) टके की तथा २।।) टके की तेजी ४-५ दिन के अन्तर्गत आती है।

(१६) किसी राशि गत मंगल, शनि, राहु, प्लूटो व हर्शल तथा सूर्य में कोई से भी ३-४-५ ग्रह एक साथ एकत्र हो जाय तो क्रम से अलसी में १-१।-१।।) टके की तथा अरन्डा में १।।।)-२)-२।) टके की तथा मूंगफ़ली में २।।)-२।।।)-३)-३।) टके की तेजी ४-५ दिन के अन्तर्गत होती है।

दैनिक तेजी—

(१) मेष राशि गत मंगल के साथ शुक्र ३६० अंश का योग बनाए तो २४ घंटे के अन्तर्गत अलसी में १।।) टके तक की तेजी आती है।

(२) मंगल सिंह, तुला, वृश्चिक कुंभ में किसी राशि गत होकर शुक्र के साथ ६०° अंश का योग बनावे तो २४ घंटे के अन्तर्गत अलसी में ।।=) आने की अरन्डा में १) टके की व मूंगफली में १।।।) टके की तेजी आती है।

(३) वृश्चिक संक्रांति को मंगल सूर्य के साथ हो एवं वृश्चिक संक्रांति १५ मुहुर्ती हो तो १६ घंटे के अन्तर्गत अलसी में ।।) आने की व अरन्डा में ।।।) आने की तथा मूंगफली में १।) टके की तेजी आती हैं।

(४) मीन राशि गत चन्द्र के प्रवेश होते ही जब कि सूर्य एवं मंगल एक साथ मकर या कुम्भ राशि गत हों तो १०-१२ घंटे के अन्तर्गत अलसी में ।।।) आने की अरण्डा में १=) आने की तथा मूंगफली में १।।।) टके की तेजी आती हैं।

(५) वृषभ राशि गत मंगल हो तथा वृषभ संक्रांति १५ मुहुर्ती हो तो अलसी में ॥) आना अरण्डा में ॥|=) आना तथा मूंगफली में १॥) टके की तेजी २४ घन्टे में होती है।

(६) सूर्य, शनि, राहु क्रम से १।५।८ स्थान पर मंगल से हों और ३०° अंश का योग भी करें तो २४ घंटे के अन्तर्गत अलसी में ॥=) आने की अरण्डा में १) टके की मूंगफली में १|||) टके तक की तेजी आती है।

(७) सूर्य मंगल की युति २४ घन्टे के अंतर्गत अलसी में ।=) आने, ॥=) आने की अरण्डा में तथा मूंगफली में १) टके की तेजी लाती है।

(८) मंगल व शुक्र की युति २४ घन्टे के अन्तर्गत अलसी में ।) आने की अरण्डा में ॥) आने की व मूंगफली में |||) आने की तेजी लाती है।

(९) मंगल चन्द्र की युति २४ घन्टे में अलसी में ।) आने की अरन्डा में ॥) आने की व मूंगफली में |||) आने की तेजी लाती है।

(१०) मंगल शनि की युति हो तो अलसी में ॥) आने की अरन्डा में ॥=) आने की व मूंगफली में १) टके तेजी २४ घंटे के अन्तर्गत आती है।

(११) मंगल राहु की युति उस समय हो जब कि मंगल सूर्य के साथ वृश्चिक या मकर राशि गत हो तो अलसो में ।=) आने की अरन्डा में ॥=) आने की तथा मूंगफली में १) टके की तेजी २४ घंटे के अन्तर्गत आती है।

(१२) सूर्य चन्द्र की प्रति युति एवं मंगल राहु की युति हो तो अलसी में ।) आना की अरन्डा में ।≈) आने की तथा मूंगफली में ।।=) आने की तेजी २४ घटे में होती है।

(१३) मंगल व हर्शल की परस्पर युति हो तो २४ घंटे के अन्तर्गत अलसी में ।) आने की अरन्डा में ।≈) आने की तथा मूंगफली में ।।≈) आने तेजी आती है।

(१४) मंगल व प्लूटो की युति उस समय हो जब कि सूर्य मिथुन राशि गत हो तो २४ घंटे के अन्तर्गत अलसी में ।-) आने की, अरन्डा में ।।-) आने की व मूंगफली में ।।।-) आने की तेजी आती है।

(१५) मंगल के साथ सूर्य, शनि, राहु, हर्शल, प्लूटो में से कोई ग्रह ३०° अंश या ६०° अंश का दृष्टि योग बनाये तो २४ घंटे के अन्तर्गत अलसी में ।=) आने तक, अरन्डा में ।।=) आने तक तथा मूंगफली में १) टके तक की तेजी आ सकती है।

(१६) मंगल के साथ उपरोक्त नं. १५ के ग्रहों में से कोई ग्रह १३५° या १५०° का दृष्टि योग बनाएं तो अलसी में ≈) आने की अरण्डा में ।-) आने की व मूंगफली में ।।) आने की तेजी २४ घन्टे में होती है।

(१७) सूर्य, शनि, राहु, हर्शल, प्लूटो—इन में से कोई भी ग्रह ४५° अंश का दृष्टि योग बनावें तो अलसी, अरण्डा व मूंगफली में ६ घन्टे के अन्तर्गत साधारण तेजी आती है।

(१८) मंगल के साथ ९०°, १२०°, १८०° अंश का दृष्टि योग सूर्य, शनि, राहु, हर्शल व प्लूटो में से कोइ ग्रह बनाए तो अलसी,

अरण्डा व मूंगफली में क्रमशः ६, ६, १२ घंटे में क्षणिक तेजी आकर मंदी आती है।

(१६) पुनर्वसु नक्षत्र में सूर्य मंगल हो और मूल नक्षत्र में चन्द्र हो तो अलसी, अरण्डा व मूंगफली में तेजी आती है।

(२०) मंगल सूर्य पुनर्वसु नक्षत्र पर हो एवं चन्द्र ज्येष्ठा नक्षत्र में हो तो अलसी, अरण्डा व मूंगफली में तेजी आती है।

(२१) सूर्य, मंगल पुनर्वसु नक्षत्र पर हो एवं चन्द्र शतभिषा नक्षत्र पर परिभ्रमण कर रहा हो तो अलसी, अरण्डा व मूंगफली में तेजी आती है।

(२२) सूर्य, मंगल पुष्य नक्षत्र पर हो एवं चन्द्र पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र पर हो तो अलसी, अरन्डा व मूंगफली में तेजी आती है।

(२३) रोहिणी नक्षत्र पर चन्द्र हो एवं सूर्य मंगल पुष्य नक्षत्र पर हो तो अलसी, अरन्डा व मूंगफली में तेजी आती है।

(२४) मंगल व चन्द्र की युति वृषभ या मकर राशि गत हो तो अलसी, अरन्डा व मूंगफली में तेजी आती है।

(२५) वृश्चिक राशि गत वक्री मंगल व सूर्य की युति हो तो अलसी, अरन्डा व मूंगफली में तेजी आती है।

(२६) कर्क राशि गत वक्री शनि के साथ मंगल हो और मकर या कुम्भ राशि गत चन्द्र हो तो अलसी, अरन्डा व मूंगफली में तेजी आती है।

(२७) सिंह राशि गत सूर्य के साथ मंगल हो और चन्द्र मकर या कुम्भ राशि गत प्रवेश करे तो अलसी, अरन्डा व मूंगफली में तेजी आती है।

(२८) वृश्चिक राशि गत वक्री प्लूटो के साथ मंगल वक्रावस्था के प्लूटो के साथ परिभ्रमण कर रहा हो तो अलसी, अरन्डा व मूंगफली में तेजी आती है।

(२६) मंगल किसी क्रूर ग्रह के साथ सिंह राशि गत हो तो सूर्य को छोड़ कर कोई क्रूर ग्रह के वक्री होते ही अलसी, अरण्डा, मूंगफली में तेजी होती है।

(३०) मंगल मकर राशि गत किसी भी क्रूर ग्रह के साथ हो एवं चन्द्र सिंह या वृश्चिक राशि गत हो तो सूर्य को छोड़ कर कोई भी ग्रह वक्री हो तो अलसी अरण्डा मूंगफली में तेजी आती है।

लम्बी रुखी मंदी—

(१) मंगल मार्गी बुध, गुरु, शुक्र, नेपच्यून में से किसी दो, तीन व चार ग्रहों के साथ कन्या, कर्क, मिथुन राशि गत में से किसी राशि में हो तो क्रम से अलसी में २-)२।)-२॥) टके की अरन्डा में ३-३।)-३॥) टके की तथा मूंगफली में ४)-४।)-४॥) टके की मंदी १५-१६ दिन के अन्तर्गत आती है।

(२) चन्द्रवार या गुरुवार को श्रावण या भाद्रपद मास की पूर्णिमा को मिथुन, कन्या, कर्क तुला या मीन में किसी राशि गत पूर्ण चन्द्र ग्रहण हो और जिस राशि गत ग्रहण हो उसी राशि गत ही मंगल हो तो १ मास के अन्तर्गत अलसी में ४-५) टके की व अरन्डा में ६-७) टके की तथा मूंगफली में १०-११) टके की मंदी आती है।

(३) गुरु व शुक्र दोनों मार्गी अवस्था के होकर मंगल के साथ मिथुन, कन्या, मीन में से किसी राशि गत हो तो २० दिन के अन्दर

ही अलसी में ६) टके तक अरन्डा में १०) टके तक व मूंगफली में १५) टके तक की मन्दी आती है ।

(४) मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, नेपच्यून – ये सब ग्रह एक साथ मिथुन, कर्क, कन्या, कुम्भ में से किसी राशि गत ८° अंश से २०° अंश तक की सम अंशों में प्रति योग करे तो २१-२२ दिन के अन्तर्गत अलसी में ५) टके तक व अरन्डा में ८) टके की तथा मूंगफली में १२) टके तक की मन्दी आती है ।

(५) ६° अन्श या ८° अंश के गुरु, शुक्र या नेपच्यून, कन्या या कर्क राशि के हों और इनमें से कोई एक ग्रह मंगल के साथ ६०°, १२०° या १८०° में से कोई एक अंशात्मक योग बनाए तो अलसी में ३) टके की अरन्डा में ५) टके की व मूंगफली में ८) टके की मंदी ११-१२ दिन में आती है ।

(६) मंगल, २ अंश का शुक्र तथा गुरु मिथुन राशि गत तथा बुध २० अंश का कर्क राशि गत हो तो अलसी में २॥) टके की अरण्डा में ४) टके की तथा मूंगफली में ६) टके की मंदी १८-१९ दिन में आती है ।

(७) मंगल व शुक्र कन्या राशि गत बुध कर्क राशि गत तथा गुरु या नेपच्यून मीन राशि गत हो तो अलसी में ३) टके की अरण्डा में ५) टके की तथा ७) टके की मूंगफली में मन्दी ११-१२ दिन के अन्तर्गत आती है ।

(८) मिथुन या कन्या राशि गत मंगल शुक्र हो एवं बुध, गुरु कर्क राशि गत हो तो १४-१५ दिन के अन्तर्गत अलसी में ५-६) टके

की अरन्डा में ८-९) टके की तथा मूंगफली में १२-१३) टके की मंदी आती है।

(९) मंगल मीन राशि गत २६° अंश के राहु के साथ हो एवं बुध, शुक्र तथा ४° अंश का गुरु का भी संयोग हो जाय तो अचानक १७-१८ दिन के अन्तर्गत ही अलसी में ३) टके की अरंडा में ५) टके की तथा मूंगफली में ७) टके की मन्दी आती है।

(१०) मंगल के साथ ०° अंश का मार्गी शुक्र मीन राशि गत हो बुध गुरु कर्क राशि गत हो तो अलसी में ३) टके की अरन्डा में ५) टके की तथा मूंगफली में ८ टके की मंदी १८-१९ दिन में आती है।

(११) बुध गुरु मार्गी अवस्था के चन्द्र तथा मंगल के साथ कर्क, कुम्भ, कन्या में से किसी भी एक राशि में एक साथ हो तो अलसी में २) टके की अरन्डा में ३) टके की तथा मूंगफली में ५) टके की मंदी १६-१७ दिन के अन्तर्गत आती है।

(१२) कर्क, कन्या, तुला, कुम्भ में से किसी एक राशि में मंगल हो और उसी ही राशि गत गुरु व बुध एक साथ उदय हो तो अलसी में ४) टके की अरन्डा में ६) टके की तथा मूंगफली में ९) टके की मन्दी ११-१२ दिन के अन्तर्गत आती है।

(१३) शुक्र उस मंदी कारक राशि में उदय हो जिस में मंगल हो तो अलसी में १) टके की, अरएडा में २) टके की तथा मूंगफली में ३ टके की मंदी ८-९ दिन के अन्तर्गत आती है।

(१४) गुरु, शुक्र, नेपच्यून के साथ मंगल मिथुन या धनु राशि गत हो तो अलसी में १॥) टके की, अरएडा में २॥) टके की तथा

मूंगफली में ४) टके की मंदी आती है। यदि गुरु, शुक्र, नेपच्यून में तीनों मार्गी हों तो अलसी, अरएडा व मूंगफली में क्रमश: २), ३), ५) टके की तथा ये तीनों मार्गी एवं उदयावस्था में हों तो अलसी, अरएडा, मूंगफली में क्रम से २॥), ३॥), ६) टके तक की मंदी ११-१२ दिन के अन्दर आती है।

(१५) मंगल, शुक्र २०° अंश का, मार्गी गुरु २६° का तुला राशि गत हो तो ९-१० दिन के अन्तर्गत ही २) टके की अलसी में, ३॥) टके की अरएडा में तथा ५॥) टके की मूंगफली में मंदी आती है।

(१६) मिथुन राशि गत मंगल शनि मंदगामी गति के हों कर्क राशि गत मंदगामी शुक्र हो तो १०-११ दिन के अन्तर्गत अलसी में १॥) टके की, अरएडा में २॥) टके की तथा मूंगफली में ४) टके की मंदी आती है।

(१७) कर्क राशि गत मंगल के साथ गुरु, शुक्र, नेपच्यून १२०° अंश का योग बनाएं तो १०-११ दिन के अन्तर्गत अलसी में २॥) टके की अरएडा में ४) टके की तथा मूंगफली में ६) टके की मंदी होती है।

(१८) मिथुन, कर्क, सिंह में कोई सी भी संक्रांति ४५ मुहुर्ती हो तथा उसी राशि गत मंगल, बुध, गुरु, नेपच्यून के साथ हो तो अलसी में २) टके की अरएडा में ३॥) टके की तथा मूंगफली में ५) टके की मंदी आती है।

(१९) मंगल के साथ गुरु, शुक्र नेपच्यून कन्या राशि गत हों तो १०-११ दिन के अन्तर्गत ही अलसी में २-२॥) टके की,

अरण्डा में ३-४) टके की तथा मूंगफली में ५-६) टके की मंदी आती है।

(२०) मंगल, मिथुन राशि गत, बुध, शुक्र कन्या राशि गत हो ८-९ दिन टके अन्तर्गत अलसी में २) टके की अरण्डा में ३॥) टके की तथा मूंगफली में ५) टके की मंदी आती है।

(२१) कर्क राशि गत मंगल, धनु राशि गत शनि तथा मिथुन राशि गत चन्द्र, बुध गुरु तथा शुक्र हों तो १५-१६ दिन के अन्तर्गत अलसी में ३) टके की, अरण्डा में ५) टके की तथा मूंगफली में ८) टके की तेजी होती है।

(२२) मिथुन राशि गत मंगल, २२° से २८° अंश के शुक्र के साथ हो एवं कर्क या मीन राशि गत गुरु हो तथा इनका योग बुध के साथ ९०° अंश का बने तो अलसी में २) टके की, अरण्डा में ३॥) टके की तथा मूंगफली में ५॥) टके की मंदी १८-१९ दिन के अन्तर्गत होती है।

(२३) भाद्रपद शुक्ल पक्षी पूर्णिमा को खग्रास (पूर्ण) चन्द्र ग्रहण हो और धनु राशि गत शनि मार्गी हो तो अलसी में २) टके अरन्डा में ३) टके व मूंगफली में ५) टके की मन्दी १२-१३ दिन के अन्तर्गत आती है।

(२४) मंगल, बुध, गुरु, शुक्र धनु राशि गत ६° अंश से २४° अंश तक के हों और नेपच्यून मिथुन, कर्क, कुम्भ या मीन में से किसी राशि गत हो और यह योग आपस में केन्द्र त्रिकोण बना रहे हों तो अलसी में ३) टके की अरण्डा में ५) टके की तथा मूंगफली में ७) टके की मंदी १८-१९ दिन के अन्तर्गत होती है।

(२५) मार्गी एवं उदयावस्था के बुध, गुरु, शुक्र एवं नेपच्यून मिथुन, कर्क कन्या में से किसी राशि गत मंगल के साथ हो तो अलसी में १॥-२) टके की, अरण्डा में ३) टके की तथा मूंगफली में ४-५ टके की मंदी आती है।

(२६) मिथुन या कर्क राशि गत मंगल एवं बुध, गुरु, शुक्र तथा नेपच्यून—ये सभी ग्रह मार्गी एवं उदयावस्था के कुम्भ या मीन राशि गत हों तो अलसी में २-३) टके तक की, अरन्डा में ४-५) टके तक की तथा मूंगफली में ७-८) टके तक की मंदी १४-१५ दिन के अन्तर्गत आती है।

साप्ताहिक मंदी—

(१) मिथुन, कर्क, कन्या, तुला और मीन राशि में से किसी राशि गत २४° से २८° अंश तक का मंगल के साथ गुरु शुक्र का प्रति योग हो तो अलसी में १) टके की अरण्डा में ३) टके की तथा मूंगफली में ३) टके की मंदी २ दिन के अन्दर ही आती है।

(२) शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा को मंगल चन्द्र एक साथ हो एवं पूर्णिमा १ घड़ी से ६ घड़ी तक के मध्य को हो तो अलसी में १।) टके की मंदी २ दिन में आती है।

(३) किसी मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीया की वृद्धि हो तो अलसी में ॥=) आने अरन्डा में १) टके तथा मूंगफली में १॥) टके की मंदी २ दिन के अन्तर्गत आती है।

(४) मंगल जिस राशि गत हो उसी राशि गत बुध गुरु शुक्र एकसाथ मार्गी हो तो ३-४ दिन के अन्तर्गत अलसी में १) टके की अरन्डा में २) टके की तथा मूंगफली में ३) टके की मंदी होती है।

(५) मंगल मिथुन राशि गत या मीन अथवा कर्क राशि गत हो इनमें जिस राशि गत मंगल होगा उसी राशि गत गुरु के प्रवेश होते ही ३-४ दिन के अन्तर्गत अलसी में ।।।) आने अरण्डा में १।) टके तथा मूंगफली में २) टके की मंदी आती है।

(६) वक्रावस्था के बुध गुरु दोनों मंगल के साथ मिथुन कर्क कन्या में किसी राशि गत हो तो बुध गुरु के एक साथ मार्गी होते ही ५-६ दिन के अन्तर्गत ही अलसी में १।) टके की अरन्डा में २) टके तक तथा मूंगफली में ३) टके तक की मंदी आती है।

(७) मंगल के साथ बुध, गुरु, शुक्र तीनों ग्रह मिथुन राशि गत हों तो ५-६ दिन के अन्तर्गत ही अलसी में १।।) टके तक की अरन्डा में २-३) टके तक की तथा मूंगफली में ४-५) टके की मंदी आती है।

(८) पश्चिम दिशा के अस्तावस्था का मंगल मिथुन या कर्क राशि गत मार्गी बुध व वक्री नेपच्यून के साथ हो तो अलसी में ।।।) आने की अरन्डा में १।) टके की तथा मूंगफली में २) टके की मंदी ३-४ दिन के अन्तर्गत होती है।

(९) किसी मास की शुक्ल पक्ष की द्वितीया को चन्द्र दर्शन ४५ मुहुर्त्त का हो एवं उस समय बुध गुरु, शुक्र, व मंगल में से कोई एक ग्रह २४° अंश का हो तो अलसी में ।।।) आने की अरन्डा में १।) टके की तथा मूंगफली में २) टके की मंदी आती है।

(१०) मंगल, चन्द्र, बुध एवं शुक्र एक साथ मिथुन, कर्क कन्या या तुला में से किसी राशि गत हो एवं गुरु १८° से २४° अंश तक का कन्या राशि गत हो तो अलसी में १।) टके की अरन्डा में

२) टके की तथा मूंगफली में ४) टके तक की मंदी ५-६ दिन के अन्तर्गत आती है।

(११) मंगल २४° अंश का मिथुन राशि गत तथा शुक्र २२° अंश का कर्क राशि गत हो तो अलसी में १) टके की अरण्डा में २) टके की तथा मूंगफली में ३) टके की मंदी ३-४ दिन में आती है।

(१२) मंगल शुक्र मिथुन या कर्क राशि गत केन्द्र त्रिकोण योग बनाते हों तो अलसी में २) टके की अरन्डा में ३॥) टके की तथा मूंगफली मे ५) टके की मंदी ५-६ दिन के अन्दर ही आती है।

(१३) बुध व गुरु का योग ९०° या १२०° अंश का मिथुन कर्क, कन्या, तुला या मीन राशियो में से किसी राशि गत हो तो अलसी में १) टके की अरन्डा में २) टके की तथा मूंगफली में ३) टके की मंदी ३-४ दिन में आती है।

(१४) गुरु शुक्र का १८०° अंश का योग मेष, तुला, कुम्भ या मीन राशि में से किसी भी राशि गत हो और इन्ही राशियों में से किसी राशि गत मंगल व चन्द्र हो तो अलसी में ॥=) आने की अरन्डा में १) टके की तथा मूंगफ़ली में १॥) टके की मंदी २ दिन में आती है।

(१५) बुध, गुरु, शुक्र १८०° अंश का योग बनावें तो अलसी में ॥।) आने की अरन्डा में १।) टके तथा मूंगफली में २) टके की मंदी २-३ दिन में आती है।

(१६) मंगल राहु के साथ वृश्चिक राशि गत व गुरु तथा शुक्र कर्क राशि गत जिस सप्ताह में परिभ्रमण करें तो उसी सप्ताह में

अलसी में १।) टके की अरन्डा में २) टके की तथा मूंगफली में ३) टके की मन्दी आती है।

(१७) मंगल व मार्गी नेपच्यून किसी भी राशि गत शुक्र बुध कन्या राशि गत तथा गुरु शनि कर्क राशि गत जिस दिन १८०° का योग बनावें तो उसी दिन से ४-५ दिन के अन्तर्गत अलसी में १॥) टके अरण्डा में २॥) टके तथा मूंगफली में ३॥) टके की मन्दी आती है।

(१८) मंगल शुक्र व गुरु—तीनों ग्रह मीन राशि गत २८° पर एक साथ चले तो २ दिन के अन्दर ही अलसी में ॥।) आने की अरण्डा में १।) टके की तथा मूंगफली में २) टके की मन्दी आती है।

(१९) मंगल, शुक्र व नेपच्यून धनु राशि गत १७° अंश से २४° अंश तक के बीच के हो और गुरु चन्द्र का योग जिस दिन तुला राशि गत हो जाय तो २-३ दिन के अन्तर्गत ही अलसी में ॥=) आने की अरण्डा में १) टके की तथा मूंगफली में २) टके की मन्दी आती हैं।

दैनिक मंदी—

(१) मंगल जिस दिन गुरु के साथ युति करे उस दिन १० घंटे के अन्तर्गत ही अलसी में ।=) आने की अरन्डा में ॥=) आने की तथा मूंगफली में १) टके की मन्दी आती है।

(२) मार्गी शुक्र के साथ कर्क, कन्या, तुला या धनु राशि गत का मंगल केन्द्र योग बनावे अथवा गुरु के साथ युति करे तो ६

घन्टे में ही अलसी में ≡) आने की अरन्डा में ।−) आने की तथा मूंगफली में ॥) आने की मन्दी आती है।

(३) मिथुन या तुला संक्रांति ४५ मुहुर्ती हो एवं मंगल कर्क या तुला राशि गत हो तथा चन्द्र दर्शन भी ४५ मुहुर्ती हो तो शुक्ल पक्ष की द्वितीया या तृतीया को ५-६ घण्टे में अलसी में ।) आने की अरण्डा में ।≡) आने की तथा मूंगफली में ॥−) आने को मंदी आती है।

(४) मिथुन, कर्क या कन्या राशि गत का मंगल, बुध, गुरु, शुक्र या नेपच्यून में से किसी के साथ १८०° का योग बनावे तथा मीन या तुला राशि गत चन्द्र प्रवेश करे तो ५-६ घण्टे में ही अलसी में ॥=) आने की अरण्डा मे १) टके की तथा मूंगफली में १॥) टके की मंदी आती है।

(५) मंगल चन्द्र की प्रति युति कन्या राशि गत हो तथा कन्या संक्रांति ४५ मुहुर्ती हो तो १२ घंटे के अन्तर्गत अलसी में ।=) आने की अरण्डा में ॥−) आने की तथा मूंगफली में ॥।−) आने की मंदी आती है।

(६) मंगल से १२०° अंश का योग बुध, गुरु, शुक्र बनावे तथा मंगल से क्रम से ७।१०।१२ वें स्थान पर हों तो ६ घंटे के अन्तर्गत ही अलसी में ।=) आने की. अरण्डा में ॥=) आने तथा मूंगफली में ॥।=) आने की मंदी आती है।

(७) मंगल से गुरु या शुक्र की प्रति युति १२ घंटे के अन्तर्गत ही अलसी में ।−) आने की, अरन्डा में ॥) आने की तथा मूंगफली में ॥।) आने की मंदी लाती है।

(८) मंगल-चन्द्र, मंगल, बुध, मंगल-गुरु की प्रति युति पूर्णिमा को एक साथ हो तो १२ घंटे अन्तर्गत अलसी में ≡) आने की अरन्डा में ।-) आने की व मूंगफली में ।≡) आने की मंदी होती है।

(९) चन्द्र ग्रहण के समय मंगल, चन्द्र के साथ हो और मंगल के साथ बुध, गुरु, शुक्र की प्रति युति हो तो १६ घंटे में अलसी में ।) आने की अरन्डा में ।≡) आने की तथा मूंगफली में ।।=) आने की मंदी होती है।

(१०) मंगल के साथ नेपच्यून की प्रति युति अलसी में ।-) आने की, अरंडा में ।≡) आने की तथा मूंगफली में ।।=) आने की मंदी १२ घण्टे में लाती है।

(११) मंगल, गुरु, शुक्र की परस्पर केन्द्र त्रिकोण प्रति युति हो तो १२ घंटे के अन्तर्गत ही अलसी में ।) आने की अरंडा में ।=) आने की तथा मूंगफली में ।।=) आने की मंदी आती है।

(१२) मंगल और शुक्र या मंगल व नेपच्यून की युति या प्रति युति हो तो अलसी में ≡) आने की अरंडा में ।-) आने की तथा मूंगफली में ।।) आने की मंदी होती है।

(१३) मंगल, बुध की प्रति युति हो तो १० घंटे के अन्तर्गत अलसी में =) आने की अरंडा में ≡) आने की व मूंगफली में ।-) आने की मंदी आती है।

(१४) मंगल गुरु की युति १२ घंटे के अन्तर्गत ही अलसी में =) आने की अरण्डा में ।-) आने की तथा मूंगफली में ।≡) आने की मंदी लाती है।

(१५) मार्गी नेपच्यून और गुरु की युति या प्रति युति ११ घंटे के अन्तर्गत ही अलसी में ≈) आने की अरण्डा में ।≃) आने की तथा मूंगफली में ।≈) आने की मंदी लाती है।

(१६) मंगल के साथ बुध, गुरु, शुक्र, नेपच्यून में से कोई एक ग्रह ९०°, १२०°, १८०° अंश का दृष्टि योग बनाए तो १२ घन्टे में अलसी में ।) आने की अरन्डा में ।≈) आने की तथा मूंगफली में ।।≈) आने की मंदी आती है।

(१७) मंगल के साथ यदि सौम ग्रह (बुध, गुरु, शुक्र नेपच्यून) में से कोई भी ग्रह ३६°, ७२°, १४४° अंश का दृष्टि योग बनाए तो अलसी में ≈) आने की, अरन्डा में ≈) आने की तथा मूंगफली में ।) आने की मंदी १० घण्टे में आती है।

(१८) मंगल के साथ कोई भी सौम ग्रह ४५° अंश का दृष्टि योग करे तो अलसी अरन्डा व मूंगफली में ६ घन्टे के अन्तर्गत साधारण मंदी आती है।

(१९) मंगल के साथ बुध, गुरु, शुक्र, नेपच्यून में से कोई भी ग्रह ३०°, ६०°, १५०° अंश का दृष्टि योग करे तो क्रम से ६,९,१२ घन्टे में अलसी, अरण्डा, मूंगफली में क्षणिक मन्दी आकर पुनः वही भाव हो जाते हैं।

(२०) मंगल के साथ सूर्य आश्लेषा नक्षत्र पर तथा चन्द्र पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र पर परिभ्रमण कर रहा हो तो अलसी अरन्डा मूंगफली में मन्दी आती है।

(२१) उत्तराषाढ़ा नक्षत्र पर चन्द्र तथा आश्लेषा नक्षत्र पर सूर्य मंगल के साथ हो तो अलसी, अरन्डा, मूंगफली में मन्दी आती है।

(२२) मघा नक्षत्र का सूर्य, अश्विनी नक्षत्र का चन्द्र अलसी अरन्डा, मूंगफली में मन्दी लाता है।

(२३) मघा नक्षत्र का मंगल के साथ सूर्य पुष्य नक्षत्र का चन्द्र अलसी, अरन्डा तथा मूंगफली में मन्दी लाता है।

(२४) तुला राशि गत चन्द्र मंगल व मिथुन राशि गत सूर्य हो तो अलसी, अरन्डा, मूंगफली में मन्दी आती है।

(२५) मंगल चन्द्र १८०° अंश का योग जिस दिन कन्या राशि गत बनावे उसी दिन अलसी, अरण्डा व मूंगफली में मन्दी आती है।

(२६) मंगल मिथुन, कर्क, कन्या, तुला अथवा मीन राशि गत हो तो चन्द्र के प्रवेश होते ही अलसी, अरण्डा व मूंगफली में मंदी आती है।

(२७) मंगल गुरु के साथ मिथुन या कर्क राशि में हो तो चन्द्र के कन्या या मीन राशि में प्रवेश होते ही अलसी, अरण्डा तथा मूंगफली में मन्दी आती है।

(२८) चन्द्र कर्क तुला राशि गत उस समय प्रवेश करे जब कि इन्ही राशि गत मंगल हो तो अलसी, अरण्डा, मूंगफली में मन्दी आती है।

(२९) वृषभ या कुम्भ राशि गत का चन्द्र, कर्क राशि गत का मंगल के साथ प्रतियुति करे तो अलसी अरन्डा तथा मूंगफली में मन्दी आती है।

सूचना—उपरोक्त लम्बी रुखी, साप्ताहिक व दैनिक तेजी व मन्दी के अलसी, अरन्डा व मूंगफली के योग निम्न वस्तुओं पर उतने ही अवधि में तथा उतनी ही परसण्टेज की घट बढ़ करेंगे जितने परसेन्ट एवं अवधि में अलसी अरन्डा व मूंगफली में करते हैं—

केमीकल्स गुड़, शक्कर, लोहा, चमड़ा, लाख, ऊन, पीली सरसों, कांगनी, कत्था, पारा, तेजाब, सुपारी, चावल, तिलहन, धातु पदार्थ उद्योग, मशीनरी, जायदाद, लोहा, ईंट, काफी, चाय आदि।

(३४) वायदा व्यापार में मिल्स, आर्डनरी एवं आयरन शेअर्स तथा काली मिर्च—

कम्पनी, फैक्टरी एवं मिल्स जो लिमिटेड होते है उनके शेअर्स भी वायदा-बाजार में बिकते हैं बहुत से व्यापारी, जिस प्रकार से रुई, चांदी, सोना, अलसी, अरण्डा आदि का वायदा व्यापार में लेबेच करते या उसकी तेजी मंदी का नजराना लगाते हैं उसी प्रकार से इनके शेयर्स खरीद-बेच या तेजी मंदी का नजराना लगाकर इसके बायदा बाजार में लाभ प्राप्त करते हैं। लिमिटेड कम्पनी, फैक्टरी एवं मिल्स के अलग २ नामों के शेअर्स हैं एवं उनके भाव भी अलग अलग निश्चित हैं। शेअर्स के भाव जिस कम्पनी, फैक्टरी, मिल्स के हों, जिस वस्तु का उत्पादन होता है उस वस्तु के भावों

के घट-बढ़ से ही शेअर्स के भावों में भी घट-बढ़ होती है इसके अतिरिक्त शेअर्स के भाव खरीद एवं बेचान वालों की संख्या के ऊपर निर्भर है।

शेअर्स एवं कालीमिर्च का वायदा-व्यापार का केन्द्र सबसे बड़ा बम्बई है। काली मिर्च का वायदा व्यापार दि पेपर एन्ड जिंजर मर्चेन्ट एसोशियेसन लि० के नियमानुसार होता है। इसका सौदा कम से कम ५० बोरी का होता है एवं इसके सौदे हिन्दी मास के वायदे में चला करते हैं—भादवा, आसोज, चैत, जेठ परन्तु कभी-कभी आसोज मास का वायदा नहीं निकलता है।

यहां केवल हम शेअर्स में टाटा आर्डनरी तथा इन्डियन आयरन शेयर्स के भावों का ही उल्लेख करेंगे उसके अनुपात से ही अन्य शेअर्स में घट-बढ़ का अनुमान निकाल लें। क्योंकि टाटा कम्पनी भारत की सबसे बड़ी कम्पनी है।

मिल्स, आर्डनरी एवं आयरन शेअर्स तथा कालीमिर्च का अधिष्ठाता शनि है एवं इनकी राशि कुम्भ एवं मकर है। शनि जब जब ऐसे ग्रहों के साथ युति करेगा जो लम्बी अवधि तक एक राशि गत परिभ्रमण करते हैं तब-तब इनमें लम्बी रुखी तेजी-मंदी करेगा तथा जब शनि ऐसे ग्रहों के साथ युति करेगा जो थोड़ी अवधि तक एक राशि पर योग करते हैं तो इनमें साप्ताहिक तेजी-मंदी का प्रभाव करेगा और यदि शनि के साथ अन्य ग्रह या अन्य ग्रहों के साथ शनि अंशात्मक योग बनाएगा तो इन वस्तुओं में दैनिक तेजी-मन्दी करेगा। इसके अतिरिक्त राशि, नक्षत्र, नवांश, वेध, उदयास्त

वक्री, मार्गी आदि अवस्थाओं द्वारा भी इन वस्तुओं की तेजी मन्दी का विचार करना चाहिए।

लम्बी रुखी तेजी—

(१) शनि के साथ मेष, वृश्चिक एवं मकर राशि गत सूर्य, मंगल, राहु, हर्शल, प्लूटो में से कोई भी दो, तीन, चार या सभी ग्रह हों तो क्रम से टाटा आर्डनरी में १०)-१५)-२०)-२७) टकों की, इण्डियन आयरन में २-३-४-५) टकों की तथा काली मिर्च में २०)-२५)-३०)-५०) टकों की तेजी २१ या ३१ दिन के अन्तर्गत होती है।

(२) पूर्ण (खग्रास) सूर्य ग्रहण के समय सूर्य शनि एक साथ हों एवं ग्रहण मंगलवार या शनिवार का हो तो आर्डनरी में ३०-३५) टके तक की एवं आयरन में ४-५) टके तक की तथा काली मिर्च में ६०-७०) टकों तक की तेजी २ मास के अन्तर्गत तक आती है।

(३) शनि के साथ वक्रावस्था के गुरु एवं शुक्र दोनों में से कोई एक मीन राशि गत हो तो ४० दिन के अन्तर्गत ही आर्डनरी में ४५) टके की तथा आयरन में ५) टके की तथा काली मिर्च में ६०) टके तक की तेजी आती है।

(४) शनि, वक्री गुरु या शुक्र, राहु—ये ग्रह मेष, सिंह, वृश्चिक या मकर राशि में से किसी राशि गत ७° से १६° अंश तक में युति करें तो २१ दिन के अन्तर्गत आर्डनरी में २०) टके की आयरन में ४) टके की तथा काली मिर्च में ४५) टके तक की तेजी आती है।

(५) सूर्य के साथ सिंह राशि का ७° या ६° अंश का शनि ६०°,१३५° या १५०° अंश का योग बनाता हो तो आर्डनरी में २०) टके की आयरन में ३) टके की तथा काली मिर्च में ४५) टके की तेजी २० दिन के अन्तर्गत आती है।

(६) धनु राशि गत शनि १७° अंश का मंगल अथवा राहु के साथ हो एवं मीन राशि गत गुरु ५° अंश का वक्री हो तो आर्डनरी में १६-१७) टके की आयरन में २) टके की तथा काली मिर्च में ३०-३५ टके तक की तेजी १४ दिन के अन्तर्गत आती हैं।

(७) वृश्चिक राशि गत शनि, मकर राशि गत मंगल एवं वृषभ राशि गत शुक्र एवं राहु हो तो आर्डनरी में १४) टके से २५) टके तक, आयरन में २) टके से ४) टके तक एवं काली मिर्च में ३०) टके से ४५) टके तक की तेजी १५ दिन में आती है।

(८) मकर राशि गत सूर्य मंगल एवं शनि तथा मेष या वृषभ राशि गत राहु हो तो आर्डनरी में ४०) टके तक, आयरन में ५) टके तक और काली मिर्च में ८०-६०) टके तक की तेजी ३० दिन या १। मास के अन्तर्गत होती है।

(६) शनि के साथ सूर्य, मंगल १६° अंश का तथा राहु ११° का तुला राशि गत हो तो आर्डनरी में २०) टके तक, आयरन में ३) टके तथा काली मिर्च में ४५) टके तक की तेजी ११ दिन के अन्तर्गत आती है।

(१०) शनि के साथ राहू मकर राशि गत हो तथा वक्री शुक्र १५° अंश का वृषभ राशि गत हो तो आर्डनरी में १५ टके की,

आयरन में २॥) टके की और काली मिर्च में ३०) टके तक की तेजी आती है।

(११) मंगल, शनि, हर्शल, प्लूटो – ये चारो ग्रह वक्रावस्था के एक साथ मेष, सिंह या मकर में से किसी राशि गत परिभ्रमण करते हो तो १० दिन के अन्तर्गत ही आर्डनरी में १२) टके की आयरन में २) टके की तथा काली मिर्च में २५) टके की तेजी आती है।

(१२) मंगल, शनि दोनों मेष, कर्क, सिंह में से किसी एक राशि गत एक साथ अस्त हों तो ११ दिन के अन्तर्गत ही २०) टके तक की आर्डनरी में, ३) टके तक की आयरन में एवं ४०) टके तक की काली मिर्च में तेजी करेंगे।

(१३) किसी भी राशि गत शनि परिभ्रमण कर रहा हो तो उसके अस्त होते ही ९-१० दिन में आर्डनरी में ७-८) टके की आयरन में २-२॥) टके की तथा काली मिर्च मे १२-१६) टके की तेजी आती है।

(१४) मंगल, शनि, राहु, मेष या वृश्चिक राशि गत एकत्र हों तो १०-१२ दिन के अन्तर्गत ही आर्डनरी में ८) टके की, आयरन में २) टके की एवं काली मिर्च में १५) टके की तेजी तथा ये तीनों ग्रह वक्री अवस्था के हों तो क्रमशः आर्डनरी, आयरन एवं काली मिर्च में १५)-४)-३५) टके तक तथा ये तीनों ग्रह वक्री एवं अस्तावस्था के हों तो आर्डनरी, आयरन, काली मिर्च में क्रम से २०)-५)-४०) टके तक की तेजी आती है।

(१५) मंगल वक्रावस्था का ११° अंश का शनि वक्रावस्था का ५° अंश का तुला राशिगत का हो तो आर्डनरी में १०) टके की, आयरन में १) टके की एवं काली मिर्च में २०) टके तक की तेजी ८-६ दिन में होती है।

(१६) वृश्चिक राशिगत शनि, तुला राशि गत मंगल, मकर राशि गत वक्री शुक्र—ये शीघ्रगामी गति के हों तो १५ दिन के अन्तर्गत आर्डनरी में २०) टके तक, आयरन में २) टके की, तथा काली मिर्च में ३५) टके की तेजी आती है।

(१७) शनि के साथ मकर राशि गत मंगल, हर्शल १५०° अंश का दृष्टि योग बनाए तो १ मास के अन्तर्गत आर्डनरी में ३०-३५) टके की आयरन में ४-५) टके की तथा काली मिर्च में ६५-७०) टके तक की तेजी करते हैं।

(१८) मेष, वृश्चिक, मकर में से जिस राशि गत सूर्य के साथ शनि हो एवं उसी राशि की संक्रांति १५ मुहुर्ती पड़े तो आर्डनरी में १०-१२) टके की आयरन में १-२) टके की तथा काली मिर्च में १८-२०) टके तक की तेजी १०-११ दिन के अन्दर ही आती है।

(१९) कर्क राशि गत का सूर्य मंगल, शनि, राहु प्लूटों के साथ हो तो आर्डनरी में १५-१६) टके की, आयरन में २-३) टके की और काली मिर्च में ३०-३) टके की तेजो १५ दिन के अन्तर्गत होती है।

(२०) सिंह राशि गति शनि मंगल के साथ एवं कर्क राशि गत सूर्य हो तो १५ दिन के अन्तर्गत आर्डनरी में १०-१२) टके की

आयरन में १-१।।) टके की तथा काली मिर्च में १६-१७) टके की तेजी आती है।

(२१) मकर राशि गत शनि के साथ सूर्य, हर्शल या प्लूटो में से कोई एक ग्रह हो एवं वृश्चिक राशि गत मंगल हो तो २१ दिन के अन्तर्गत आर्डनरी में १५) टके की, आयरन में २-२।।) टके की तथा काली मिर्च में ४०-४५) टके तक की तेजी आती है।

(२२) कुम्भ राशि गत शनि ११° अंश से २१° अंश तक हो तो आर्डनरी में १२-१३) टके की, आयरन में १-२) टके की तथा काली मिर्च में १८-२०) टके तक की तेजी १०-१२ दिन में करता है।

(२३) मार्गशीर्ष मास की कृष्ण पक्ष की अमावस्या को खग्रास (पूर्ण) सूर्य ग्रहण हो एवं वृश्चिक राशि गत वक्री शनि हो तो १०-१२ दिन अन्तर्गत ही आर्डनरी में १५-१६) टके की, आयरन में २-३) टके की तथा काली मिर्च में २५-३०) टके तक की तेजी आती है।

(२४) वक्री शनि ७° अंश से १९° अंश तक का मकर राशि गत हो तो १५ दिन के अन्तर्गत ही आर्डनरी में २०) टके तक तथा आयरन में ३) टके तक एवं काली मिर्च में ४५) टके तक की तेजी आती है।

(२५) वक्री एवं अस्तावस्था का शनि आर्डनरी, आयरन तथा काली मिर्च में क्रम से १०)-१।।) तथा २२) टके तक की तेजी १० दिन में करता है।

साप्ताहिक तेजी—

(१) मेष, सिंह, तुला, वृश्चिक और मकर राशि में से किसी राशि गत शनि गुरु की युति वक्री अवस्था की हो तो आर्डनरी में ६) टके की, आयरन में १) टके की तथा काली मिर्च में १३-१४) टके की तेजी होती है यह तेजी २-३) दिन के अन्तर्गत समझें और यदि यही युति मार्गी अवस्था की हो तो आर्डनरी, आयरन एवं काली मिर्च में क्रम से ४)-॥॰) एवं १०) टके की तेजी इतने ही दिन में होती है।

(२) सूर्य शनि किसी भी राशि गत हो एवं उसी समय ही कृष्ण पक्ष की अमावस्या १ घड़ी से ५ घड़ी तक की पड़ जाय तो २॥ दिन के अन्तर्गत ही आर्डनरी में ३-४) टके की आयरन में ॥=) आने की एवं काली मिर्च में ६-७) टके की तेजी होती है।

(३) किसी मास की शुक्ल पक्ष की षष्टमी का क्षय हो जाय तो २ दिन के अन्तर्गत ही आर्डनरी में ४-५) टके की आयरन में ॥=)-॥।) आने की तथा काली मिर्च में ८-९) टके की तेजी होती है।

(४) किसी भी राशि गत बुध व शनि एक साथ वक्री हों तो १ सप्ताह के अन्दर ही अन्दर आर्डनरी में ८-९) टके की आयरन में १॥)-२) टके की तथा काली मिर्च में १६-१७) टके की तेजी आती है।

(५) शनि मीन राशि गत हो तो मंगल के मीन राशि गत प्रवेश करते ही ५ दिन के अन्तर्गत ही आर्डनरी में ४-५) टके की

आयरन में ।।=) ।।।) आने तथा काली मिर्च में ६-१०) टके की तेजी आती है।

(६) मेष राशि गत वक्रावस्था के शनि व मंगल दोनो के एकत्र होते ही ६-७ दिन के अन्तर्गत ही आर्डनरी में ६) टके की आयरन में १) टके की तथा काली मिर्च में १७-१८) टके की तेजी आती है।

(७) मंगल व शनि दोनों वक्रावस्था के सिंह राशि गत जब भी एक साथ हो तो आर्डनरी में ४-५) टके तक आयरन में ।।।) ।।।=) आने की व काली मिर्च मे ६-१०) टके की तेजी ६-७ दिन में आती है।

(८) मंगलोदय पूर्व दिशा में उस राशि गत हो जिस राशि गत शनि हो तो आर्डनरी में ५-६) टके की, आयरन में ।।=)-।।।) आने की तथा काली मिर्च में ११-१२) टके की तेजी एक सप्ताह में होती है।

(९) शनि के साथ वृश्चिक राशि गत का मंगल २५° अंश का होते ही आर्डनरी में ६-७) टके की, आयरन में ।।।)-।।।=) आने की तथा काली मिर्च में १२-१३) टके की तेजी ६-७ दिन में लाता है।

(१०) मकर राशि गत मंगल ११° अंश का होते ही शनि प्रवेश कर जाय तो आर्डनरी में ८) टके की आयरन में १) टके की तथा काली मिर्च में १६-१७) टके की तेजी आती है।

(११) वृषभ राशि गत शनि के १५° अंश का होते ही आर्डनरी में ९) टके आयरन में १) टके तथा काली मिर्च में १७-१८) टके की तेजी ६-७ दिन में कर देगा।

(१२) सिंह राशि गत शनि २३° अंश तक का हो तो ७ दिन के अन्तर्गत ही आर्डनरी में १२) टके की आयरन में १।) टके की एवं काली मिर्च में २०) टके की तेजी करता है।

(१३) मेष वृश्चिक, मकर या कुम्भ में से किसी राशि गत शनि व सूर्य का ३०° अंश या ०° से ५° अंश तक का योग हो तो ७ दिक के अन्तर्गत ही आर्डनरी में ८-९) टके की आयरन में १) टके की व काली मिर्च में १७-१८) टके की तेजी आती है।

(१४) मेष, वृश्चिक, मकर या कुम्भ में से किसी राशि गत शनि व सूर्य का ६०° अंश का योग हो तो आर्डनरी में ७-८) टके की, आयरन में ॥।)-॥।=) आने की व काली मिर्च में १५-१६) टके की तेजी ७ दिन के अन्तर्गत आती है।

(१५) शनि व राहु एक साथ ५° अंश की युति करें तो ५ दिन के अन्तर्गत ही आर्डनरी में ४-५) टके की आयरन में ॥=)-॥।) की व काली मिर्च में ९-१०) टके की तेजी आती है।

(१६) मकर राशि में शनि, मीन राशि में गुरु तथा सिंह राशि में राहु जिस सप्ताह में परिभ्रमण करते हों उस सप्ताह में आर्डनरी में ६) टके की आयरन में ॥।) की एवं काली मिर्च में १२) टके की तेजी होती है।

(१७) वृश्चिक राशि गत शनि, कुम्भ राशि गत राहु या [illegible] किसी राशि गत हो तो ७ दिन में आर्डनरी में

९-१०)टके की आयरन में १) टके तक की व काली मिर्च में १७-१८) टके की तेजी आती है।

दैनिक तेजी—

(१) शनि के साथ मेष, राशि गत का चन्द्र ३०° अंश का योग बनाए तो १८।। घन्टे के अन्तर्गत आर्डनरी में ३-४) टके की आयरन में ।।)-।।=) आने की व मूंगफली में ८-९) टके की तेजी आती है।

(२) सिंह, तुला, वृश्चिक, कुम्भ में से किसी राशि गत का चन्द्र शनि के साथ ६०° अंश का योग बनाए तो २२ घन्टे के अन्तर्गत ही आर्डनरी में ४-५) टके की आयरन में ।।)-।।=) आने की व काली मिर्च में ७-८) टके की तेजी आती है।

(३) शनि वृश्चिक राशिगत परिभ्रमण कर रहा हो उसी समय ही वृश्चिक संक्रांति १५ मुहुर्ती पड़ जाय तो ८।। घण्टे के अन्तर्गत ही आर्डनरी में ८-९) टके की, आयरन में १) टके की तथा काली मिर्च में १६-१७) टके की तेजी आती है।

(४) मकर या कुम्भ राशि गत शनि सूर्य, राहु आदि क्रूर ग्रह सहित बैठा हो तो चन्द्र के मीन राशि गत प्रवेश करते ही १२ घन्टे के अन्तर्गत आर्डनरी में ५-६) टके की, आयरन में ।।।)-।।।=) आने की तथा काली मिर्च में ८-९) टके की तेजी आती है।

(५) वृषभ संक्रांति १५ मुहुर्ती हो एवं वृषभ राशि गत शनि व चन्द्र भी हो तो २४ घण्टे के अन्तर्गत ही आर्डनरी में २-३) टके की, आयरन में ।)-।=) आने की व काली मिर्च में ५-६) टके की तेजी आती है।

(६) चन्द्र क्रमशः सूर्य, मंगल, शनि से १।५।८ स्थान पर होकर ३०° अंश का योग करे तो आर्डनरी में ४-५) टके की, आयरन में ॥)-॥=) आने की व काली मिर्च में ८-९) टके की तेजी १०॥ घण्टे के अन्तर्गत आती है।

(७) सूर्य शनि की परस्पर की युति २४ घण्टे के अन्तर्गत आर्डनरी में १॥)-२) टके की, आयरन में ≡)-।) आने की व काली मिर्च में ३-४) टके को तेजी लाती है।

(८) चन्द्र शनि की पारस्परिक युति २४ घण्टे के अन्तर्गत ही आर्डनरी में १-२) टके की, आयरन में ≡)-।) आने की व काली मिर्च में ३-३॥) टके तक की तेजी लाती है।

(९) मंगल शनि की पारस्परिक युति २४ घण्टे के अन्तर्गत ही आर्डनरी में २-२॥-) टके की, आयरन में ।)-।-) आने की तथा काली मिर्च में ४-५) टके की तेजी करती हैं।

(१०) शनि व राहु की युति हो तो २४ घण्टे के अन्तर्गत ही आर्डनरी में १-१॥) टके की, आयरन में =)-≡) आने की व काली मिर्च में २-३) टके की तेजी आती है यह योग उसी समय ही अपना प्रभाव दिखायगा जब कि शनि व सूर्य वृश्चिक या मकर राशि गत हो।

(११) जिस समय सूर्य एवं चन्द्र का प्रति योग हो उसी समय ही शनि व केतु की युति हो तो आर्डनरी में १-१॥) टके की, आयरन में =)-≡) आने की व काली मिर्च में २-३) टके की तेजी २४ घण्टे में आती है।

(१२) हर्शल एवं शनि की युति २४ घंटे के अन्तर्गत ही आर्डनरी में १॥)-२) टके की आयरन में ।) आने की व काली मिर्च में ३-४ टके की तेजी लाती है ।

(१३) प्लूटो व शनि की युति हो तो २४ घन्टे के अन्तर्गत ही आर्डनरी में १॥)-२) टके की आयरन में ≡)-।) आने की व काली मिर्च में ३-४) टके की तेजी आती है । इस योग का प्रभाव उसी समय पूर्ण समझना चाहिए जब कि चन्द्र तुला या मीन राशि गत हो अन्यथा इस योग का प्रभाव कम समझें ।

(१४) शनि के साथ सूर्य, मंगल, राहु, हर्शल, प्लूटो में से कोई एक ग्रह ३०° या ६०° अंश का दृष्टि योग बनाए तो २४ घंटे के अन्तर्गत आर्डनरी में १॥)-२) टके की आयरन में ≡)-।) आने की व काली मिर्च में ३-३॥) टके की तेजी आती है ।

(१५) शनि के साथ पाप ग्रह (सूर्य, मंगल, राहु, हर्शल प्लूटो) में से कोई एक ग्रह १३५° या १५०° अंश का दृष्टि योग बनाए तो आर्डनरी में १॥-२) टके की, आयरन ।)-।~) आने की व काली मिर्च में ३-४) टके की तेजी २४ घण्टे में करता है ।

(१६) शनि के साथ कोई भी क्रूर ग्रह ४५° अंश का दृष्टि योग बनाए तो आर्डनरी, आयरन एवं काली मिर्च में ६ घण्टे के अन्तर्गत साधारण तेजी आती है ।

(१७) शनि के साथ सूर्य, मंगल, राहु, हर्शल, प्लूटो में से कोई ग्रह ९०°, १२०°, १८०° अंश का दृष्टि योग बनाए तो क्रम से ६,९,१२ घण्टे के अन्तर्गत ही आर्डनरी, आयरन व काली मिर्च में क्षणिक तेजी करके मंदी का रुख दिखायेगा ।

(१८) पुनर्वसु नक्षत्र पर सूर्य शनि दोनों हों एवं ज्येष्ठा नक्षत्र पर चन्द्र हो तो आर्डनरी, आयरन व काली मिर्च में तेजी होती है।

(१९) सूर्य एवं शनि दोनों पुनर्वसु नक्षत्र पर हों तथा चन्द्र मूल नक्षत्र पर हों तो आर्डनरी, आयरन तथा काली मिर्च में तेजी आती है।

(२०) सूर्य पुनर्वस नक्षत्र पर शनि के साथ एवं चन्द्र शतभिषा नक्षत्र में परिभ्रमण करता हो तो आर्डनरी, आयरन एवं काली मिर्च में तेजी आती है।

(२१) पुष्य नक्षत्र का सूर्य, शनि के साथ का एवं चन्द्र पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र का हो तो आर्डनरी, आयरन व काली मिर्च में तेजी आती है।

(२२) पुष्य नक्षत्र में सूर्य व शनि तथा रोहिणी नक्षत्र में चन्द्र हों तो आर्डनरी, आयरन व काली मिर्च में तेजी आती है।

(२३) वृषभ राशि गत सूर्य तथा वृश्चिक या मकर राशि गत चन्द्र हो तो आर्डनरीं, आयरन व कालीं मिर्च में तेजी आती है।

(२४) सूर्य, चन्द्र व शनि—तीनों ग्रह एक साथ वृश्चिक राशि गत हों तो आर्डनरीं, आयरन एवं कालीं मिर्च में तेजीं आती है।

(२५) मेष या वृश्चिक राशि गत चन्द्र व शनि तथा कर्क राशि गत सूर्य हो तो आर्डनरीं, आयरन व कालीं मिर्च में तेजीं आती है।

(२६) मकर या कुम्भ राशि गत चन्द्र व शनि दोनों हों एवं सिंह राशि गत सूर्य हो तो आर्डनरी, आयरन व काली मिर्च में तेजी आती है।

(२७) मेष अथवा सिंह राशि गत चन्द्र व शनि हो एवं वृश्चिक राशि गत सूर्य परिभ्रमण कर रहा हो तो आर्डनरी, आयरन व काली मिर्च में तेजी आती है।

(२८) सिंह राशि गत सूर्य चन्द्र व शनि तीनों ग्रह एक साथ हों तो आर्डनरी, आयरन व काली मिर्च में तेजी आती है।

(२९) सिंह या वृश्चिक राशि में शनि चन्द्र परिभ्रमण करे और मकर राशि गत सूर्य हो तो आर्डनरी, आयरन व काली मिर्च में तेजी आती है।

लम्बी रुखी मंदी—

(१) शनि कन्या, कर्क, मियुन में से किसी राशि गत बुध, गुरु, शुक्र व नेपच्यून में से किसी दो, तीन या चार ग्रहों के साथ हो तो क्रमशः आर्डनरी में १२-१३-१५) टकों की आयरन में २)-२॥) ३) टके की व काली मिर्च में २०-२५-३०) टके की मन्दी २१ या ३१ दिन के अन्तर्गत आती है।

(२) शुभ ग्रह की जिस राशि गत श्रावण या भाद्रपद की शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा को चन्द्र ग्रहण पड़े उसी राशि गत शनि भी हो तो दो मास के अन्तर्गत आर्डनरी में ३०-३५) टके की आयरन में ४-५) टके की तथा काली मिर्च में ७०-७५) टके की मंदी आती है।

(३) शनि व गुरु – दोनो मार्गी अवस्था के कन्या, मीन या मिथुन राशि गत सूर्य के साथ हों तो ४० दिन के अन्तर्गत आर्डनरी में ४५) टके की आयरन में ६) टके की तथा काली मिर्च में ६०) टके तक की मंदी आती है।

(४) कन्या, कर्क, कुम्भ में से किसी एक राशि गत शनि मार्गी शुक्र, गुरु चन्द्र एवं बुध सभी ग्रह ८° से २०° तक की सम अंशों में प्रति योग करें तो २१ दिन के अन्तर्गत आर्डनरी में २०) टके की आयरन में ३) टके की तथा काली मिर्च में ४५) टके की मंदी आती है।

(५) शनि के साथ ९०°, १२०° या १८०° अंश का योग कन्या या कर्क राशि गत का गुरु या नेपच्यून ६° या ८° अंश का बनाए तो आर्डनरी में २२) टके की आयरन में ३।।) टके की एवं काली मिर्च में ४६) टके की मंदी २० दिन के अन्दर ही आती है।

(६) शनि २° अंश का गुरु या नेपच्यून के साथ मिथुन राशि गत हो एवं २०° अंश का बुध कर्क राशि गत हो तो आर्डनरी में १८) टके तक, आयरन में २।।) टके की एवं काली मिर्च में ३५) टके की मंदी १४-१५ दिन के अन्तर्गत आती है।

(७) कन्या राशि गत शनि शुक्र के साथ कर्क राशि गत बुध तथा मीन राशि गत गुरु या नेपच्यून हो तो आर्डनरी में १५) टके से २०) टके तक आयरन में २) टके से ४) टके तक एवं काली मिर्च में ३० टके से ४५) टके तक की मंदी २१ दिवस में आती है।

(८) मिथुन राशि या कन्या राशि गत शुक्र के साथ शनि हो और चन्द्र, बुध, गुरु कर्क राशि में हों तो १ मास के अन्तर्गत आडंनरी में ४५) टके की, आयरन में ६) टके की तथा काली मिर्च में ६५) टके तक की मंदी आती है।

(९) गुरु ४° अंश का मीन राशि गत हों तो बुध एवं शनि का संयोग जैसे ही मीन राशि गत होगा वैसे ही १५ दिवस में आडंनरी में २३) टके की, आयरन में ३।) टके की एवं काली मिर्च में ४८) टके की मन्दी आती है।

(१०) मीन राशि गत शनि, शुक्र के साथ हो एवं कर्क राशि गत चन्द्र बुध व गुरु हों तो १५ दिवस में ही आडंनरी में २०) टके की आयरन में २।।) टके की एवं काली मिर्च में ३५) टके की मन्दी आती है।

(११) चन्द्र, बुध, गुरु, नेपच्यून एवं शनि – ये पाचों ग्रह मार्गी अवस्था के कर्क, कन्या, कुम्भ में से किसी राशि गत भ्रमण कर रहे हो तो १० दिन के अन्तर्गत ही आडंनरी में १२) टके की, आयरन में १।।) टके की व काली मिर्च में २६) टके की मंदी आती है।

(१२) मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, कुम्भ में से किसी राशि गत गुरु व शनि दोनों एक साथ उदय हों तो आडंनरी में २२) टके की आयरन में २) टके की एवं काली मिर्च में ४०) टके की मन्दी ११ दिन के अन्तर्गत आती है।

(१३) किसी भी मन्दी कारक राशि में जिस में कि शनि हों उसमें शुक्र के उदय होते ही १०-११ दिन के अन्तर्गत ही आडंनरी

में ७-८) टके की आयरन में १॥)-२) टके की एवं काली मिर्च में १६-१७) टके की मन्दी आती है।

(१४) गुरु, शुक्र, शनि व नेपच्यून—ये चारों ग्रह मिथुन या धनु राशि गत एकत्र हो तो आर्डनरी में १०) टके की आयरन में २) टके की काली मिर्च में १८) टके की मन्दी २० दिन के अन्दर आती है और यदि ये चारों ग्रह मार्गी हों तो आर्डनरी, आयरन एवं काली मिर्च में क्रमशः २०)-४)-३६) टके की मन्दी उक्त अवधि में होती हैं तथा यदि ये चारों ग्रह मार्गी एवं उदयावस्था के हों तो आर्डनरी, आयरन और काली मिर्च में यही मन्दी इतने ही अवधि में क्रमशः २५)-५)-४५) टके की विचारें।

(१५) तुला राशि गत मार्गी २६° अंश के गुरु के साथ शनि २०° अंश का हो तो आर्डनरी में १२ टके की आयरन में १॥) टके की एवं काली मिर्च में २३) टके की मन्दी १३ दिन में होती है।

(१६) शनि एवं मंगल मन्दगामी गति के मिथुन राशि गत हों तथा मंदगामी गति का भी शुक्र कर्क राशि गत हो तो १५ दिन के अन्तर्गत ही आर्डनरी में १५-२०) टके की आयरन में २-३) टके की तथा काली मिर्च में ३०-३५) टके की मंदी होती है।

(१७) कर्क राशि गत गुरु शनि के साथ नेपच्यून १२०° अंश का योग बनाते हों तो १ मास के अन्तर्गत ही आर्डनरी में २५-२६) टके की आयरन में ३-४) टके की तथा काली मिर्च में ५०-५५) टके की मन्दी आती है।

(१८) शनि मिथुन, कर्क, सिंह में से किसी राशि गत गुरु बुध के साथ हो और उसी राशि की संक्रांति ४५ मुहुर्ती पड़ जाय तो आर्डनरी में १०-१२) टके की, आयरन में १॥)-२) टके की व काली मिर्च में २०-२२) टके की मन्दी १०-१२ दिन में होती है।

(१९) शनि, गुरु और नेपच्यून कन्या राशि गत सूर्य के साथ हो तो १५ दिन के अन्तर्गत आर्डनरी में १६-१७) टके की, आयरन में २॥-३) टके की एवं काली मिर्च में ३०-३१) टके की मंदी आती है।

(२०) कन्या राशि गत शनि बुध के साथ एवं मिथुन राशि गत सूर्य हो तो १५-१६ दिन के अन्तर्गत ही आर्डनरी में ८-९) टके की आयरन में १) टके की तथा काली मिर्च में १६-१७) टके की मंदी आती है।

(२१) धनु राशि गत शनि, कन्या राशि गत बुध, शुक्र एवं मिथुन राशि गत सूर्य हो तो २१ दिन के अन्तर्गत ही आर्डनरी में १५-१७) टके की, आयरन में १॥)-२) टके की तथा काली मिर्च में ३०-३५) टके की मन्दी आती है।

(२२) मिथुन राशि गत शनि २२° से २८° अंश तक का हो एवं कर्क या मीन राशि गत गुरु हों तो १० या १२ दिन के अन्तर्गत ही आर्डनरी में ६-७) टके की आयरन में ॥=)-॥।) आने की तथा काली मिर्च में १०-१२) टके की मंदी आती है यह मंदी तभी आयेगी जब कि उपरोक्त ग्रह के साथ बुध का ९०° अंश योग बन रहा हो अन्यथा इस योग का कुछ भी प्रभाव नहीं होगा।

(२३) भाद्रपद सुदी पूर्णिमा को खग्रास चन्द्र ग्रहण हो और उसी समय शनि मार्गी अवस्था का धनु राशि गत हो तो १५ दिन के अन्तर्गत आर्डनरी में ७-८) टके की, आयरन में ।।।)-।।।=) आने की तथा काली मिर्च में १५-१६) टकों की मंदी आती है।

(२४) शनि, मार्गी गुरु-शुक्र ६° अंश से २४° अंश के अन्तर्गत के धनु राशि गत हों और सूर्य मिथुन, कर्क, कुम्भ, मीन में से किसी राशि गत हो तो आर्डनरी में २०-२२) टके की आयरन में ३-४) टके की एवं काली मिर्च में ३०-४०) टके की मंदी २१ दिन के अन्तर्गत होती है। यह योग तभी पूर्ण प्रभाव दिखायेगा जब कि उक्त ग्रह परस्पर केन्द्र त्रिकोण हों अभाव में साधरण मंदी समझें।

(२५) शनि मार्गी एवं उदयावस्था का बुध, गुरु, नेपच्यून के साथ मिथुन, कर्क व कन्या में से किसी राशि गत हो तो आर्डनरी में १०-१२) टके की आयरन में १-१।।) टके की एवं काली मिर्च में २०-२२) टके की मंदी १०-१२ दिन के अन्तर्गत आती है।

साप्ताहिक मंदी—

(१) गुरु शनि का प्रति योग मिथुन, कर्क, कन्या, तुला और मीन में से किसी राशि गत हो और मिथुन, कन्या, तुला, कुम्भ मीन में से किसी राशि गत सूर्य २४° से २८° अंश तक का हो तो २ दिन के अन्तर्गत ही आर्डनरी में ६-७) टके की, आयरन में ।।)-।।।) आने की तथा काली मिर्च में १०-१२) टके की मंदी आती है।

(२) किसी मास के शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा १ घडी से ६ घड़ी तक की हो और उस दिन चन्द्र शनि एक राशि गत हों तो आर्डनरी

में ४) टके को आयरन में ।।।) आने की व काली मिर्च में ८-९) टके की मंदी २-३ दिन के अन्तर्गत आती है।

(३) शनि चन्द्र एक साथ हों और शुक्ल पक्ष की द्वितीया की वृद्धि हो तो आर्डनरी में २-३) टके की आयरन में ।=)-।≡) आने की व काली मिर्च में ५-६) टके की मंदी २ दिन में आती है।

(४) शनि, शुक्र, गुरू, बुध—ये चारों ग्रह एक साथ मार्गी हो तो आर्डनरी में ५-६) टके की, आयरन में ।।।)-।।।=) आने की व काली मिर्च में १२-१३ टके की मंदी ७ दिन के अन्तर्गत आती है।

(५) शनि मिथुन, कर्क या मीन में से किसी राशि गत हो तो उस राशि में गुरु के प्रवेश करते ही ५ दिन के अन्तर्गत ही-आर्डनरी में ४-५) टके की आयरन में ।।)-।।=) आने की व काली मिर्च में ८-१०) टके की मंदी आती है।

(६) मिथुन, कर्क या कन्या राशि गत बुध गुरु एक साथ उस समय मार्गी हो जिस समय शनि उस राशि गत हो तो आर्डनरी में ८-९) टके की, आयरन में ।।।)-।।।=) आने की व काली मिर्च में १७-१८) टके की मंदी ६-७ दिन में आती है।

(७) सूर्य के साथ मिथुन राशि गत जब भी बुध, गुरु शनि एकत्र हो जाय तो ७ दिन के अन्तर्गत ही आर्डनरी में ५-६) टके की आयरन में ।।)-।।=) आने की व काली मिर्च में ८-१०) टके की मंदी आती है।

(८) मंगल उस राशि गत पश्चिम में अस्त हो जिस राशि गत शनि हो एवं बुध मार्गी, नेपच्यून वक्री मिथुन या कर्क राशि गत

सूर्य के साथ हो तो ३ दिन के अन्दर ही आर्डनरी में ६)-७) टके की, आयरन में ||=)-|||) आने की व काली मिर्च में १३-१४) टके की मंदी आती है।

(९) बुध, गुरु, शनि में से कोई भी ग्रह २४° अंश का हो एवं उसी समय ही चन्द्र दर्शन शुक्ल पक्ष की द्वितीया को ४५ मुहूर्ती हो जाय तो ४ दिन के अन्तर्गत ही आर्डनरी ५-६) टके की आयरन में |||)-|||=) आने की काली मिर्च में ११-१२) टके की मंदी आती है।

(१०) कन्या या तुला राशि गत सूर्य बुध व शनि एक साथ हों तथा कन्या राशि गत गुरु १८° से २४° अंश तक का हों तो आर्डनरी में ११) टके की, आयरन में १) टके की तथा काली मिर्च में १८) टके की मंदी ७ दिन में आती है।

(११) शनि कर्क राशि गत २२° अंश का हो तो ३ दिन के अन्तर्गत आर्डनरी में ५-६) टके की, आयरन में ||=)-|||) आने की व काली मिर्च में १२-१३) टके की मंदी आती है।

(१२) शनि व शुक्र के साथ मिथुन या कन्या राशि गत सूर्य त्रिकोण योग बनाते हों तो ७ दिन के अन्तर्गत आर्डनरी में १०-१२) टके की आयरन में १-११) टके की व काली मिर्च में २०-२२) टके की मंदी होती है।

(१३) मिथुन, कर्क, कन्या, तुला या मीन में से किसी राशि गत गुरु, बुध ९०° या १२०° अंश का योग शनि के साथ बनाते हों तो ७ दिन के अन्तर्गत आर्डनरी में ८-१०) टके, आयरन में ||=) |||) आने की व काली मिर्च में १५-१६) टके की मंदी आती है।

(१४) गुरु शनि का १८०° अंश का योग मेष, तुला, कुम्भ, मीन में से किसी भी राशि गत हो और चन्द्र भी उक्त राशियों में से किसी भी राशि में हो तो ७ दिन के अन्तर्गत ही आर्डनरी में ५-७) टके की आयरन में ।।।)-।।।=) आने की व काली मिर्च में १२-१३) टके की मंदी आती है।

(१५) शुक्र, गुरु, शनि एक साथ १८०° अंश का योग बनाते हों तो ५ दिन के अन्तर्गत आर्डनरी में ५-६) टके की, आयरन में ।।)-।।=) आने की व काली मिर्च में ६-१०) टके की मंदी आती है।

(१६) कर्क राशि गत गुरु व शनि वृश्चिक राशि गत जिस सप्ताह में परिभ्रमण करें तो उस सप्ताह में आर्डनरी में ७) टके की आयरन में ।।।) आने की तथा काली मिर्च में १२) टके की मंदी होती है।

(१७) कर्क राशि में गुरु व शनि कन्या राशि गत शुक्र व बुध तथा मार्गी नेपच्यून किसी राशि गत—ये ग्रह जिस दिन १८०° अंश का योग बनावें तो उस दिन ७ दिन के अन्दर ही ८-६) टके की आर्डनरी में ।।।)-।।।=) आने की आयरन में तथा १६-१७) टके की मंदी काली मिर्च में आती है।

(१८) मीन राशि गत गुरु व शनि एक साथ २८° अंश पर चलें तो २ दिन के अन्तर्गत ही आर्डनरी में ५-६) टके की व ।।)-।।=) आने की आयरन में तथा ६-१०) टके की काली मिर्च में मंदी आती है।

(१९) शनि व नेपच्यून धनु राशि गत १८° से २४° अंश तक के हों एवं तुला राशि गत के गुरु के साथ जिस दिन चंद्र योग

हो तो २४ घंटे में आर्डनरी में १–१।।) टके की आयरन में =)-≡) आने की व काली मिर्च में २-३) टके की मंदी आती है।

(१२) मिथुन राशि गत गुरु के साथ शनि हो तो शनि व नेपच्यून की युति एवं प्रति युति २४ घंटे के अन्तर्गत आर्डनरी में १–१।।) टके की, आयरन में =)-≡) आने की तथा काली मिर्च में २-३) टके की मन्दी लाती है।

(१३) बुध शनि की प्रति युति हो तो २४ घण्टे के अन्तर्गत आर्डनरी में १–१।।) टके की आयरन में =)-≡) आने की व काली मिर्च में २-३) टके की मन्दी आती है।

(१४) गुरु, शनि, नेपच्यून की युति २४ घन्टे के अन्तर्गत आर्डनरी में १।।)-२) टके की, आयरन में ≡)-।) आने की व काली मिर्च में ३-४) टके की मंदी लाती है।

(१५) मार्गी नेपच्यून, गुरु की युति शनि के साथ हो तो २४ घन्टे में आर्डनरी में १-१।।) टके की आयरन में =)-≡) आने की व काली मिर्च में २-३) टके की मंदी आती है।

(१६) शनि के साथ चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, नेपच्यून में से कोई एक ग्रह ९०°, १२०°, १८०°, अंश का दृष्टि योग बनाएं तो २४ घन्टे के अन्तर्गत आर्डनरी में १-१।।) टके की, आयरन में =)–≡) आने की व काली मिर्च में ३-४) टके की मन्दी आती है।

(१७) शनि के साथ सौम ग्रह (चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, नेपच्यून) में से कोई भी एक ग्रह ३६°, ७२°, १४४° अंश का दृष्टि योग बनाए तो १२ घन्टे के अन्तर्गत आर्डनरी में १।।)-२) टके की, आयरन

में ≈)–≋) आने की व काली मिर्च में ३-४) टके की मंदी आती है।

(१८) शनि के साथ कोई भी शुभ ग्रह ५५° अंश का दृष्टि योग बनाए तो आर्डनरी, आयरन व कालो मिर्च में ६ घन्टे में साधारण मन्दी आती है।

(१९) शनि के साथ कोई भी ग्रह ३०°, ६०°, १५०° अंश का दृष्टि योग बनायें तो आर्डनरी, आयरन व काली मिर्च में क्रमशः ६-९-१२ घण्टे में क्षणिक मंदी आकर पुनः भाव बढ़ते है।

(२०) आश्लेषा नक्षत्र पर सूर्य व शनि हों एवं पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र पर चन्द्र हो तो आर्डनरी, आयरन व काली मिर्च में मंदी आती है।

(२१) सूर्य व शनि आश्लेषा नक्षत्र पर हो तथा चन्द्र उत्तरा षाढ़ा नक्षत्र में हो तो आर्डनरी, आयरन व काली मिर्च में मंदी आती है।

(२२) मघा नक्षत्र में सूर्य व शनि हो तथा अश्विनी नक्षत्र में चन्द्र हो तो आर्डनरी, आयरन व काली मिर्च में मन्दी आती है।

(२३) मघा नक्षत्र का सूर्य व शनि और पुष्य नक्षत्र का चन्द्र आर्डनरी आयरन व काली मिर्च में मन्दी लाता है।

(२४) मिथुन राशि गत सूर्य तथा कन्या या तुला राशि गत का चन्द्र व शनि आर्डनरी, आयरन व काली मिर्च में मन्दी लाता है।

(२५) कन्या राशि गत शनि व चन्द्र एक साथ होकर १८०° अंश का योग जिस दिन बनावें उसी हीं दिन आर्डनरी आयरन व काली मिर्च में मंदी आती है।

(२६) मिथुन या कर्क राशि गत सूर्य हो एवं मिथुन, कर्क कन्या, तुला अथवा मीन में से किसी राशि गत शनि व चन्द्र हो तो आर्डनरी, आयरन, काली मिर्च में मन्दी आती है।

(२७) मिथुन या मीन राशि गत सूर्य व गुरु तथा कन्या या मीन राशि गत चन्द्र व शनि हो तो आर्डनरी, आयरन व काली मिर्च में मन्दी आती है।

(२८) सूर्य चन्द्र व शनि कर्क तुला या मीन में से किसी राशि गत हो तो आर्डनरी, आयरन व काली मिर्च में मन्दी आती है।

(२९) कर्क राशि गत शनि के साथ वृषभ या कुम्भ राशि गत का चन्द्र प्रति युति करे तो आर्डनरी, आयरन व काली मिर्च में मंदी आती है।

सूचना—उपरोक्त तेजी-मन्दी के लम्बी रुखी, साप्ताहिक एवं दैनिक योगों का प्रभाव उतने ही अवधि में कुछ कम परसन्टेज से निम्न वस्तुओं पर पड़ेगा जितने समय एवं जितने परसन्टेज से आर्डनरी, आयरन एवं काली मिर्च में पड़ता है।

ताबां, कोयला, शीशा, जस्ता, टीन, रांगा, गन्ना, तिल्ली, काली सरसों, विजली का सामान, चित्र, रंग, लकड़ी का सामान, उच्च किस्म की सिल्क, तेल, लोहे का सामान, कोयले के शेअर्स, पुष्प, नीलम, तेल—सरसों-तिली-अरन्डी-मूंगफली, दाल चीनी, लौंग, पीपर काला नमक, मुनक्का, किसमिस, काड़ी शील्ड, कस्तूरी, निगर शील्ड, अमचूर, चिलगोजे, सीमेएट, सीमेन्ट का सामान, ऊन, जूते, रील, कृषि सम्बन्धी यंत्र, संगमरमर, यंत्र आदि।

योग फल जानकारी—

इस पुस्तक में तेजी-मन्दी आदि के बहुत से योग दिए गए है पर वे इस पुस्तक में लिखे अनुसार ही सदा फल करेंगे ऐसा विश्वास न करना चाहिए। यद्यपि उन योगों में से अधिकांशतः योगों का बारम्बार परीक्षण भी किया जा चुका है जो अक्षरशः सत्य मिले हैं जिससे भविष्य में उनके मिलने की भी पूर्ण सम्भावना है। फिर भी कितने ही अदृश्य कारणों से विपरीत में कोई दूसरा योग बन जाने से ये कभी कम प्रभाव दिखायेंगे और कभी न भी प्रभाव दिखायें और सम्भव भी हो सकता है कि बिलकुल प्रतिकूल प्रभाव दिखायें। बहुत से योग स्वाभाविकता से कभी तो ठीक प्रभाव दिखाते है और कभी कुछ भी प्रभाव नहीं दिखाते हैं। कई योग अनिश्चित हैं, कई योग विरुद्ध में दूसरे प्रबल योग के बन जाने से अपना कुछ भी प्रभाव नहीं दिखा सकते हैं आदि-आदि कारणों से योगों के मिलने का पूर्ण विश्वास नहीं रखा जा सकता है अतः व्यापार करने वालों को केवल इन योगों के भरोसे पर ही बैठे न रहना चाहिए किन्तु सम्हाल के साथ अपनी योग्यता, बौद्धिक चतुराई एवं अनुभव के साथ व्यापार करना चाहिए।

अधिकांशतः देखने में आया है कि अमुक योग बना देख कर व्यापारी या ज्योतिषी तेजी-मन्दी का अनुमान लगा लेते हैं परन्तु जब उनकी समझानुसार उक्त योग का फल नहीं मिलता तो हताश होकर उक्त योग को अप्रभाव कारक मानने लगते हैं परन्तु योग का प्रभाव न होने का कारण कभी-कभी यह भी होता है कि उसके

विरुद्ध अर्थात विपरीत उन्हीं दिनों में कोई दूसरा योग बन जाता है जो उस योग के प्रभाव को नष्ट कर देता है जिसके प्रति उन व्यापारियों या ज्योतिषियों का ध्यान नहीं जाता या नहीं पहुँचता जिससे वे धोखा उठा जाते हैं। अतः इस विपत्ति से बचने के लिए जिस वस्तु की तेजी-मन्दी ज्ञात करनी हो तो उसके तेजी करने वाले योग एवं मन्दी करने वाले योग अलग-अलग छांट लेना चाहिये एवं वे योग इससे पूर्व में किस प्रकार का प्रभाव दे चुके हैं ? वर्तमान में वे योग पूर्ण बने हैं या अपूर्ण और कितने प्रबल हैं तथा उनसे कोई विपरीत योग तो नहीं बना है आदि-आदि बातों पर बिचार कर अपना अनुमान स्थिर करना चाहिए।

बहुत से शास्त्रीय योग भी हमने इस पुस्तक में लिखे हैं जिनके परीक्षण का अवसर हमें अभी तक नहीं मिल सका है परन्तु वे योग हमारे मतानुसार उपयोगी जान पड़ते हैं अतः उनका भी अनुभव करके देखना चाहिए।

कुछ योगों का स्थिर बाजार में सही प्रभाव मिलता है परन्तु जब घट-बढ़ विशेष रूप से चल रही हो तो उनका फल नहीं मिलता है ऐसी परिस्थिति में यह स्मरण रखना चाहिए कि तेजी के वक्र में मंदी के योगो का एवं मन्दी के वक्र में तेजी के योगों का फल पूर्ण नहीं मिलता परन्तु यदि योग पूर्ण प्रबल का है तो वह अपना प्रभाव अवश्य दिखायेगा।

कुछ योगों के साथ हमने अवधि एवं टकों का भी उल्लेख किया है अतः व्यापारी एवं ज्योतिषयो को चाहिये कि वे पहिले

इस बात की अच्छी तरह जांच करें कि वे योग कब और किस प्रकार एवं कितने बलाबल के होकर उक्त अथवा कितना प्रभाव दिखा चुके हैं तथा कब नहीं दिखा चुके उसके पश्चात भविष्य के लिए कोई अनुमान स्थिर करें। यह सिद्धान्त लगभग सभी योगों के लिए है जो योग बारम्बार सही मिले उन पर विश्वास किया जा सकता हैं और जो कम बार मिले तो उसके सम्बन्ध में सावधानी वर्तें यहां यह भी स्मरण रखना चाहिए कि पूर्व में बारम्बार सही मिलने वाला योग भी कभी दूसरे प्रबल कारणों से नहीं भी मिलता है।

इस पुस्तक में लिखे गये योगों को आधार मान कर अबुद्धिमता से व्यापार करने वालों की लाभ हानि की जिम्मेवारी हमारी नहीं हैं।

किसी भी योग का फल उसके बनते ही होने लगे ऐसा नहीं समझना चाहिये कभी योग के प्रारम्भ में, कभी मध्य में और कभी अन्त में फल मिलता है एवं कभी उसके साथ चन्द्र या अन्य ग्रहों की युति होने पर उसका फल मिलता है।

नक्षत्र मण्डल विचार—

प्राचीन दैवज्ञों ने नक्षत्र मण्डल चार माने हैं जिनको क्रम से यथावत नीचे दे रहे हैं—

(१) अग्नि मण्डल के नक्षत्र—कृतिका, भरणी, पुष्य, विशाखा पूर्वा फाल्गुनी, पूर्वा भाद्र, मघा ये अग्नि मण्डल के नक्षत्र हैं इनका फल आधे मास में होता है।

(२) वायु मण्डल के नक्षत्र—मृगशिर, पुनर्वसु, अश्विनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, उत्तरा फाल्गुनी, इन नक्षत्रों का फल १ मास में होता है।

(३) वरुण मण्डल के नक्षत्र—आर्द्रा, अश्लेषा, उत्तरा-भाद्र, रेवती, शतभिषा, पूर्वाषाढ़ा, मूल इन नक्षत्रों का फल शीघ्र ही होता है।

(४) माहेन्द्र मण्डल के नक्षत्र—ज्येष्ठा, अनुराधा, रोहिणी धनिष्ठा, श्रवण, अभिजित, उत्तराषाढ़ा ये माहेन्द्र मन्डल के नक्षत्र हैं इनका फल ७ दिन में होता है।

आग्नेय वरुण तथा वायु व माहेन्द्र मण्डल के मिलने से फल की मंदता हो जाती है।

गण मण्डल विचार—

गण तीन प्रकार के होते हैं जो निम्न हैं—

(१) देवगण—अश्विनी, मृगशिर, रेवती, हस्त, पुनर्वसु, अनुराधा, श्रवण, स्वाति ये देवगण के नक्षत्र हैं।

(२) मानव गण—पूर्वा फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वा भाद्र, उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तरा भाद्र, रोहिणी, आर्द्रा, भरणी ये मानव गण के नक्षत्र हैं।

(३) राक्षस गण—कृत्तिका, मघा, अश्लेषा, विशाखा, शतभिषा, चित्रा, ज्येष्ठा, धनिष्ठा, मूल, ये राक्षस गण के नक्षत्र हैं।

वक्री मार्गी ग्रह अवधि—मंगल ६० दिन, बुध २२ दिन, गुरु १२० दिन, शुक्र ५२ दिन, शनि १३५ दिन, हर्शल १५० दिन नेपच्यून १५६ दिन, ये ग्रह उनके समक्ष दिए अवधि तक वक्री रहते हैं।

अतिचारी मार्गी ग्रह अवधि—मंगल १५ दिन बुध, १० दिन गुरु ४५ दिन, शुक्र १० दिन, शनि १८० दिन, अतिचारी अपने मार्गी अवस्था में रहते हैं।

कौन ग्रह किसी राशि गत कब फल देता है—

सूर्य व मंगल किसी भी राशि गत हो तो ये ग्रह आदि में फल देते हैं, चंद्र व शनि किसी राशि गत हो तो अर्द्ध राशि भोगने पर फल देते हैं, बुध और शुक्र किसी राशि गत हों तो मध्य में फल देते हैं तथा गुरु राशि के उत्तरार्धं में फल देता है।

"कोष्टक राशि स्थित ग्रह फल अवधि"

ग्रह	राशि अवधि	फलावधि
सूर्य	एक राशि गत एक मास तक रहता है।	पहले ५ दिनों में फल देता है।
चन्द्र	एक राशि गत सवा दो दिन तक रहता है।	मध्य की ३ घड़ी में फल देता है।
मंगल	एक राशि गत ४५ दिन तक रहता है।	प्रथम ८ दिन में फल देता है।
बुध	एक राशि गत १८ दिन तक रहता है।	सर्व काल तक फल देता है।
गुरु	एक राशि गत १३ मास तक रहता है।	मध्य के दो मास में फल देता है।
शुक्र	एक राशि गत २५ दिवस तक रहता है।	मध्य के ७ दिन में फल देता है।

शनि	एक राशि गत ३० मास तक रहता है ।	आखिर के ६ मास में फल देता है ।
राहु-केतु	एक राशि गत १८ मास तक रहता है ।	अन्तिम के दो मास में फल देता है ।
हर्शल	एक राशि गत लगभग ७ वर्ष तक रहता है ।	प्रारम्भ के ६ मास में फल देता है ।
नेपच्यून	एक राशि गत लगभग १४ वर्ष तक रहता है ।	प्रारम्भ के ७ मास में फल देता है ।

व्यापार करने से पूर्व व्यापारी को सर्व प्रथम अपने अनुकूल व्यापारिक क्षेत्र का चुनाव अपनी रुचि से करना चाहिये उसके उपरांत आवश्यक है कि उस क्षेत्र के व्यापार में उसे किस स्थान (नगर) से लाभ है उसके लिये उसे निम्न विधि से जानकारी प्राप्त कर लेना चाहिये ।

नारायणोक्त कांकणी विचार द्वारा—अपने नाम के वर्ग को द्विगुणित करके ग्राम का वर्ग जोडकर उसमें ८ का भाग देने पर जो शेष आए तथा ग्राम के वर्ग को द्विगुणित करके उसमें नाम के वर्ग को जोडकर ८ का भाग देने पर जो शेष आये वह शेष वर्ग वाले शेष से अधिक हैं तो उस नगर में व्यापार करने से लाभ होगा एवं कम है तो हानि होगी एवं बराबर है तो लाभ-हानि का कोई अर्थ हीं नहीं ।

नारायणोक्त कांकणी से वर्ग नम्बर इस प्रकार है:—

अ	क	च	ट	त	प	य	श
१	२	३	४	५	६	७	८

उदाहरण—मानो गंगा प्रसाद शंकर लाल नामक फर्म को मुरार केन्ट (ग्वालियर) में व्यापार करना है तो नारायणोक्त कांकणी में विचार करने से मुरार प वर्ग में आया जिसका नम्बर ६ है और फर्म के प्रथम नाम अर्थात गंगा प्रसाद क वर्ग में आया जिसका नम्बर २ है।

नामांक २×२=४ द्विगुणित करने से। ४+६=१० ग्राम के वर्ग को जोड़ने से।१०÷५= शेष २

ग्रामांक ६×२=१२ द्विगुणित करने से। १२+२=१४ नाम के वर्ग को जोड़ने से। १४÷८ = शेष ६

निष्कर्ष—नाम के वर्ग से ग्राम का वर्ग अधिक है अतः गंगा प्रसाद शंकर लाल मुरार मन्डी से व्यापार में लाभ प्राप्त कर सकते हैं इसी प्रकार अन्य स्थानों का फर्म के अनुसार लाभ- हानि का अनुमान कर लेना चाहिए।

इस पुस्तक में तेजी-मंदी की जानकारी के लिए क्रम से राशि, ग्रह, क्रान्ति, शर, राशि चार, नक्षत्र चार, अंशात्मक योग आदि ३४ विधान यथा क्रम निम्न ढंग से दिए गए हैं—

(१) राशियों से, (२) ग्रहों से, (३) तिथियों से, (४) वारों से, (५) नक्षत्रों से, (६) योगों से, (७) महीनों से, (८) चन्द्र दर्शन से, (९) सर्वतो भद्र चक्र से, (१०) नवमांशों से, (११) ग्रहो के उदयास्त से, (१२) ग्रहो के वक्री मार्गी से, (१३) सूर्य से, (१४) चन्द्र से, (१५) मंगल से, (१६) बुध से, (१७) गुरु से, (१८) (१९) शनि से, (२०) राहु-केतु से, (२१) तिथि क्षय व वृद्धि से,

(२२) अगस्त से, (२३) ग्रहों के शरों से, (२४) पाश्चात् त्रयोदश योगों से, (२५) चन्द्र-सूर्य ग्रहणों से, (२६) अमावस्या व पूर्णमासी से (२७) ग्रह अंशों से, (२८) मिश्रित योगों से, (२९) चांस विधि द्वारा, (३०) वायदा बाजार में रुई, (३१) वायदा बाजार में सोना-चांदी, (३२) वायदा बाजार में अरहर मटर, गुवार, जूट, (३३) वायदा बाजार में अलसी अरन्डा मूंगफली, (३४) वायदा बाजार में आर्डनरी, आयरन, काली मिर्च।

इनके द्वारा प्रत्येक वस्तु की तेजी-मंदी का विचार सूक्ष्म से सूक्ष्म करने पर अचूक स्पेशल-चांस निकाले जाते हैं जो दैनिक साप्ताहिक, और पाक्षिक लाइन के होते हैं।

जिस मास की तेजी मंदी जानना हो उस समय तेजी मन्दी के दोनों योगों को एक पट्टी पर बराबर लिखते चले दोनों का योग करके दो से भाग दो, लब्धि अंक को तेजी के गिनती अंक में जोड़ो तथा मन्दी के अंक में भी जोड़ो दोनों की बाहुल्यता पर विचार करके देखो कौन अधिक है जिस पक्ष के अंक अधिक हों वही लाइन प्रबल रहेगी यहां केवल वस्तु का प्रधान, उप प्रधान ग्रह तथा सहायक एवं उपसहायक ग्रहों के निष्कर्ष से दे रहे हैं।

अचूक चांस के स्पष्ट करने की विधि जानने के लिए निम्न बातों की जानकारी पहिले करना चाहिए—(१) वस्तु की राशि और उसका स्वामी, (२) जिस मास की तेजी मन्दी की लाइन लम्बी रुख की देखनी हो उस मास के दृष्य गणितानुसार दैनिक स्पष्ट ग्रह, (३) तेजी के बिचार में वस्तु के स्वामी ग्रह से सूर्य, मंगल, शनि, राहु, हर्शल और प्लूटो में कोई एक ग्रह आगे या

पीछे ३३ अंश के अन्तर्गत हो, और मन्दी के विचार में वस्तु के स्वामी ग्रह से चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र व नेपच्यून में से कोई एक ग्रह आगे या पीछे ३३ अंश के अन्तर्गत हो तो वह ग्रह उस वस्तु का उप प्रधान ग्रह मना जायगा।

(४) वस्तु का स्वामी किस ग्रह से स्थान सम्बन्ध कर रहा है वह ग्रह उस वस्तु का सहायक ग्रह माना जायगा (५) वस्तु का स्वामी जिस ग्रह से तेजी के विचार में प्योरलल, कञ्जक्शन, सेमी सिक्सटाइल, सिक्स टाइल, क्विंटल, सस्की क्वड्रेट, क्विंकक में से कोई एक दृष्टि योग और मन्दी के विचार में सेमीस्क्रायर, स्क्वायर, ट्राइन वाई क्विंटल, अपोजीसन में से कोई एक दृष्टि योग बनाए वह ग्रह उस वस्तु का उपसहाक ग्रह माना जायगा।

इन तेजी कर्त्ता व मंदी कर्त्ता पांचों अधिकारियों को ध्यान पूर्वक निकालना चाहिए निकालने के उपरान्त पुनः परीक्षण कर लेना चाहिए कि कोई भूल तो नहीं रह गई है। इन पंचाधिकारियों में कौन ग्रह अधिक बलवान है इसका निर्णय निम्न प्रकार से करें—

पंच वर्गी बलम्—(१) स्थान बल—सूर्य वस्तु ग्रह से, ९, चं० ३, मं० ६, बु० १, गु० ११, शु० ५, श० १२, इन स्थानों में ५ कला का बलप्रदान करते हैं।

(२) **स्वोच्च बल**—सू० १।५, चं० २।४ मं० १।८।१०, बु० ३।६, गु० ४।९।१२ शु० २।७।१२, श० ७।१०।११ इन स्थानों में ५ कला का बल देते हैं। (३)पुरुष स्त्री ग्रह बल—तेजी के विचार में पुरुष ग्रह बल (सू. मं. गु.) ४।५।९।१०।११।१२ वें स्थान में ५ कला का बल देते हैं तथा मंदी के विचार में स्त्री ग्रह बल (चं.

बु. शु. श.) १।२।३।७।८।६ वे स्थान में ५ कला का बल देते हैं।
(४) दिन रात्रि बल—दिन के समय में पुरुष ग्रह ५ बल देते हैं।
(५) दृष्टिवल—६।५वे ४५ कला, ३रे ४० कला, ११ वें १० कला ४।१० वें १५ कला, १।७ वें पूर्ण कला (६० कला) दृष्टि वल देते हैं।

उपरोक्त पंचवर्गी वलम् से पांचों अधिकारियों के वलों को अलग-अलग जोड़ कर देखें किसके बल अधिक हैं जिसके बल अधिक होंगे वही ग्रह उस वस्तु की तेजी मंदी की अचूक लाइन का उच्चाधिकारी होगा।

उच्चाधिकारी ग्रह वस्तु ग्रह का मित्र हो तो प्रबल लाइन का पूर्ण प्रभाव दिखायेगा और यदि सम हो तो १।२ आधा प्रभाव दिखायेगा तथा शत्रु हो तो चौथाई प्रभाव दिखायेगा एवं वह ग्रह अस्तंगत या हीन वली हो तो कुछ भी प्रभाव नहीं दिखायेगा।

मित्र-शत्रु जानकारी:—वस्तु के ग्रह से ३।५।६।११ राशि पर जो ग्रह हो वह मित्र और २।६।८।१२ वें में जो ग्रह हो वह सम और १।४।७।१० वें में जो ग्रह हो तो उसे शत्रु समझना चाहिये।

सूचना—यहां यह ध्यान रखना चाहिये कि उच्चाधिकारी ग्रह यदि तेजी की लाइन में है और वह कोई मंदी का प्रवल योग बना रहा है तो उस अवधि में आकर उच्चाधिकारी ग्रह मंदी का रिये-क्शन देकर पुनः तेजी की ओर बढ जायगा तथा मंदी को प्रबल लाइन में यही उच्चाधिकारी ग्रह यदि कोई तेजो का प्रबल योग बनाता होगा तो उस अवधि में तेजी का रियेक्शन देकर पुनः मंदी को ओर बढ़ जायगा।

कुछ पाठकों की रुचि के लिए यहां अमेरिकन रुई के फीचर्स के कुछ ध्रुवांक दे रहे हैं जिससे वे फीचर्स क्लोजिंग का नम्बर प्राप्त कर सकने में समर्थ हो सकें। रुई के अमेरिकन क्लोजिंग फीचर्स ज्ञात करने का ध्रुवांक यंत्र—

तिथि अंक—	१	२	३	४	५	६	७	८
	२८	३५	३६	४१	५२	६७	२९	२८
	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
	२१	३२	४२	४४	३५	३८	४५	

वारांक—रविवार ३६, सोमवार ८५, मंगलवार ७२, बुधवार ४७, गुरुवार २२, शुक्रवार २५, शनिवार २४,

नक्षत्रांक—अश्विनी १५, भरणी २५, कृतिका ३५, रोहिणी २६, मृगशिर २८, आर्द्रा २६, पुनर्वसु १८, पुष्य ८५, अश्लेषा ७२, मघा ३६, पूर्वा फाल्गुनी ३४, उत्तराफाल्गुनी २८, हस्त ३५, चित्रा ३२, स्वाति ३७, विशाषा २२, अनुराधा २९, ज्येष्ठा २२, मूला २४, पूर्वाषाढा २८, उत्तराषाड़ा ७२, श्रवण ७२, धनिष्ठा ४२, शततारा ४४, पूर्वाभाद्र ३८, उत्तराभाद्र ३५, रेवती ५२।

विधि—(१) जिस दिन का क्लोजिंग फीचर्स देखना हो उस दिन की तिथी, वार, नक्षत्र के अंको को जोडकर के ९ का भाग दें, शेष में से जो बचे उससे निम्न प्रकार के तीन या चार अंक ज्ञात करना चाहिये। एक शेष बचे तो १।२।६।९, दो शेष बचें तो २।३।७।१२, तीन शेष बचें तो ३।४।८।७, चार बचें तो ४।५।०।१,

पांच शेष बचें तो ५।६।१, छः शेष बचें तो ६।७।२।३, सात शेष बचें तो ७।८।३।११, आठ शेष बचें तो ८।९।४।१, एवं शून्य शेष वचे तो ९।१।५ इस प्रकार से अंक ज्ञात हो सकते हैं।

(२) आए हुए फीचर अंक में तिथि व तारीख जोड़कर उसमें १५ का भाग दें, शेष अंक बचे उसको निम्न कोष्टक में देखकर उसके नीचे के अंकों में से कोई एक अंक आएगा।

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
२	८	९	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	०	१
९	२	३	४	५	६	०	१	२	३	४	५	६	७	८
५	०	१	५	७	४	३	४	७	४	१	५	२	१	०
६	५	६	७	८	९	७	८	९	०	१	२	३	४	५

(३) तिथि से तिथि को गुणा करके १२ का भाग दें जो शेष आए उसमें पुनः तिथि को जोड़ो, चैत मास से शुरु करके वर्तमान मास का अंक जोड़ो तदुपरांत १२ जोड़कर ३० का भाग दे जो शेष आए उसे फीचर्स का अंक समझना चाहिये।

(४) जिस दिन का फीचर्स अंक ज्ञात करना हो उस दिन की तिथि, बार, नक्षत्र व योग के अंको को जोड़कर उसमें गत दिन का फीचर अंक मिलाकर ११ का भाग दें जो शेष आये उसे ही फीचरांक समझें।

उपरोक्त ४ विधि फीचर्स अंक निकालने की दी गई है उनमें से परीक्षण करके देख लें जो विधि बारम्बार सही-सही निकले उसी पर ही विश्वास करें

(५) फीचर काट अंक कोष्टक:—

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
६	८	९	१	२	४	५	७	८	०
२	१	३	५	३	१	७	५	७	६

गत दिन जो फीचर अंक आया हो उस फीचर्स अंक को इस कोष्टांक में देखें उसके नीचे के अंक अगले दिन नही आवेंगे ।

अनायास धन प्राप्ति

अनायास धन प्राप्ति मनुष्यों को व्यापार द्वारा किस प्रकार से होती है इसका पूर्ण विवेचन व्यापारी भाइयों के लाभार्थ यहां दे रहे हैं । अनायास धन प्राप्तिः प्रत्येक प्राणी को दैव द्वारा होती है इसी दैव का उपनाम भाग्य भी कहते हैं, इसकी परिभाषा आठ प्रकार की है। दैव ग्रहों के द्वारा ही उत्पन्न होता है। सबसे पहिले व्यापारी वर्ग को भाग्य की रूप रेखा ग्रहों द्वारा जान लेनी चाहिये । उसी ग्रह के द्वारा अनायास धन प्राप्ति होती है।

(१) (शनि) स्वोपार्जित धन प्राप्तिः व्यापारी कार्य स्थिरः, मशीनरी, कारखाने, मिल्स, छापेखाने, चल कार्य, वायदा, तिल-तेल उड़द, कालीमिर्च, सरसों के व्यापार से अनायास लाभ देता है। शेयर्स, फीचर का अधिष्ठाता है मास जनवरी, मार्च, सितम्बर तारीख ८।१७।२६ को विशेष शुभ फलकारी है।

(२) (राहु) वैद्यक तथा ज्योतिष, मंत्र साधना प्रेतकार्य जूट पाटम्बर, जवाहरात, चांदी-सोना-गिलट के व्यापार से लाभ देता है। वायदा, अरण्डा अलसी, मटर, अरहर, सोना, रुई के वायदे के

व्यापार से अनायास लाभ होता है फरवरी, अप्रेल, अक्टूबर ता० १।१०।१६।२८ को विशेष लाभकारी होता है।

(३) (चंद्र) कृषि कर्म-वस्त्रादि व्यापार, सुगंधी वस्तु का व्यापार, चीनी, बिजली के सामान के क्रय-विक्रय से लाभ देता है। वायदा के व्यापार में, चांदी, रूई, फीचर, मास, मई, जून, नवम्बर ता० २।११।२०।२६ को विशेष लाभकारी होता है।

(४) (सूर्य) राजयोग-राजमंत्री, राजकार्य, व्यापार उद्योग कारक होता है। पत्थर, मिट्टी, चूने का कार्य, रंग के व्यापार से जमीदारी, जागीरदारी, सत्ताधारी, बिजलीघर वगैरा ठेकेदारी से लाभ देता है, स्थिर कर्म, धातु मारण, शोधन, मोटर बस इत्यादि कार्यों से लाभ देता है। सट्टे के कार्य में मूंगफली, तारामीरा, तोरिया, सोना, गुड़, अरहर, बारदाना से लाभ देता है। मास अप्रेल, अक्टूबर, जुलाई ता० १।१०।१६।२८ में विशेष लाभकारी होता है।

(५) (शुक्र) स्थिर व्यापार, सोना, चाँदी का कार्य, हीरा मोती रूई सूत कपड़ा, चीनी, सुगंधी का कार्य-स्वतंत्र-विद्या-नाटक, सिनेमा, गांधर्वविद्या, पेंटर्स, से विशेष लाभ कारक है। सट्टे के व्यापार में विशेष, रूई चांदी शेयर्स, रेशमी कपडे का व्यापार रंगीन सूती कपडे से लाभ होता है- मास-दिसम्बर, फरवरी, अगस्त ता. ६।१५।२४ विशेष शुभ होती है।

(६) (गुरु) सलाहकार, बैरिस्टर, कृषिकर्म, बगीचा, फलों का व्यापार औषधी निर्माण, सोना, ईख, गुड़ शकर-का व्यापार, सर्राफी सट्टा, शेअर्स चांदी, सोना, भूमिगत द्रव्य पुत्र मित्र से अनायास, धन

प्राप्ति करता है लाटरी रेस तथा धान्य सुवर्ण की वस्तु के व्यापार से विशेष लाभ करता है मास जनवरी, अगस्त, नबम्बर ता० ३। १२।२१।३० विशेष फलकारी हैं। वायदा, सोना, शेयर्स, मूंगफली चना, चने की दाल, अरहर, पीली सरसों के कारोबार से धन को देता है।

(७) (बुध) शिक्षक, लेखक, बुकसेलर्स, ग्रन्थकार, वकील कार्य से लाभ करता है। व्यापार में विशेष मूंग, मसूर, घीरत, चांदी, सोना, रुई, गुड़ शक्कर के वायदे से अनायास धन प्राप्तिः सट्टे के कार्य—रुई -बारदाना, चांदी से धन लाभ कराता है मास फरवरी अप्रेल, जून ता० ५।१४।२३ में नाज की खत्ती भरने से विशेष लाभ को देता है।

(८) (मंगल) का गुण धर्म, स्थिर कन्ट्रेक्टर, डाक्टर, सेनापति मिलिट्री ऑफीसर व्यापारी सप्लाईज कार्य रसायनज्ञ, दांत का डाक्टर, सुवर्ण शोधन, शस्त्र निर्माण, गृहनिर्माण कार्यों से लाभ को देता है। (व्यापार) अलसी, गुड़ सरसों, रुई, अरन्डा, बारदाना हैसीयन के व्यापार से भूमिगत द्रव्य से अचानक लाभकारी होता है रेस सट्टा लॉटरी, वस्तु, धान्य संग्रह से ऊनी कपड़े के व्यापार करने से धन का लाभ कराता है मास मई, जून, दिसम्बर ता० ६।१८।२४ विशेष महत्वकारी व्यापार के लिये समझो।

अनायास धन प्राप्तिः लक्षण:—

लक्ष्मी स्थानं त्रिकोणं च । विष्णु स्थानं च केन्द्रकम् ।
तयोः संबंध मात्रेण । कोटयाधीशो नरो भवेत् ॥

स्थान	राशि	ग्रह	कारक
(१) धन स्थान	वृषभ राशि	(शुक्र)	चांदी रुई से अचानक धन प्राप्तिः
(२) लाभ स्थान	कुंभ राशि	(शनि)	शेयर्स लाटरी से धन प्राप्तिः
(३) दशम स्थान	मकर राशि	(शनि)	सरसों अरंडा अलसी से धन प्राप्ति
(४) चतुर्थ स्थान	कर्क राशि	(चंद्र)	चांदी रुई फीचर से धन प्राप्ति
(५) पंचम स्थान	सिंह राशि	(सूर्य)	रेस लाटरी भूमिगत द्रव्य प्राप्ति
(६) नवम स्थान	धनु राशि	(गुरु)	सोना, गुड़ लाटरी से धन प्राप्ति
(७) दशम स्थान	मेष राशि	(मंगल)	भूमि गत द्रव्य, सोना से धन प्राप्ति

अचानक धन प्राप्तिः के विचार विमर्श में "पंचमं नवमं चैव विशेष धन मुच्यते" इस वाक्यानुसार मनुष्यों के शुभ कर्मों द्वारा ही शुभ योग जन्मकाल में आकर स्थित होते है। सबसे पहिले वायदे के व्यापार में प्रवृत्त होने के पहिले यह देखें कि सट्टे के व्यापार में

लाभ देने वाले (बुध मंगल शुक्र गुरु चन्द्र सूर्य) पंचम नवम स्थान में हो तो अचानक सट्टे से लाभ अवश्य होगा। यदि लक्ष्मी स्थान त्रिकोण ५।९ वें में (चन्द्र बुध) (चन्द्र मंगल) (चन्द्र शुक्र) (चन्द्र सूर्य) अर्थात (रवि बुध) (रवि मंगल) (रवि शुक्र) यह दो ग्रहों के योग पंचम तथा नवम में हो तो सट्टे से अचानक द्रव्य लक्ष संख्यात्म अवश्य ही प्राप्त होता है देखो सेठ गोविन्दराम सेकसरीया को कुंडली में (बु. गुरु) का योग तुला राशि में पड़ा है तुला का पति शुक्र है यह ग्रह रुई का आदि ग्रह है बुध व्यापारिक गुरु के साथ शुभ योग करता है। इस योग से करोड़पति रुई और फीचर के कार्य से ही बना (श. मं.) के कर्क गत होने से अनेक कारखानों का स्वामी हुआ इसी प्रकार अन्य योग इसी प्रकार प्रत्येक कुंडली में विद्वानों को देखने चाहिए।

अनायास धन प्राप्ति के योग तथा उनके द्वारा व्यापार (चांदी रुई) वायदा के व्यापार में धन प्राप्ति इन योगों द्वारा होती हैं। धन स्थान, लाभ स्थान एवं पंचम नवम स्थान में (चं. शु.) का योग बृषभ, तुला, कर्क राशि में हो तो अचानक वायदे के व्यापार में दस लाख संख्यात्मक द्रव्य प्राप्ति समझो। यदि इस योग को शनि, मंगल पूर्ण दृष्टि से देखता हो, वा युति करते हो तो वायदे के व्यापार से धन तो मिलेगा किन्तु बाद में इस व्यापार में धन हानि होकर निकल जायगा।

२. (लॉटरी, रेस, शेयर्स) पंचम अष्टम द्वितीय स्थान में (गुरु, शुक्र बुध मंगल शनि, चन्द्र) उच्च स्वगृही हो तो उत्तम लाभ मित्र क्षेत्री साधरण लाभ होता है विशेषः—वृषभ का शुक्र धन

वा अष्टम में लाटरी से कन्या का बुध धन में, धन का गुरु पंचम में वा अष्टम हों तो रेस लगाने से मोटा लाभ होता है। तथा रवि मंगल, मेष सिंह, वृश्चिक राशि के धन वा अष्टम भाव में हो तो शेयर्स के खरीदने बेचने से लाखों का लाभ होता है।

३. (तिलहन गुड़, सोना) गुरु, बुध, मंगल यह तीनों ग्रहों का योग धन स्थान एवं लाभ स्थान में मेष कन्या मीन राशि में हो तो व्यापार वायदे का दिन पर दिन लाभकारी होता जावेगा और नुकसान न होकर लाखों रुपये का अचानक धन प्राप्त हो जावेगा यदि राहु इन के साथ योग करता हो तो आया हुआ धन निकल जावेगा।

४. बारदाना पाट काली मिर्च—(शनि, सूर्य, बुध) नवम एकादश स्थान में हो तो व्यापार वायदे का इन वस्तुओं के माफिक होकर दो लाख का लाभ होजायगा यदि इन ग्रहों के साथ केतु हर्शल का योग हो तो कमाई तो होगी किन्तु घाटे में धन बराबर हो जायगा इसके लिये स्थिर लक्ष्मी घर में सदैव रहें ऐसा तान्त्रिक धनदा देवी का पुरश्चरण कराना ही श्री प्राप्ति एवं स्थिर रहने का लक्षण समझो—

५. भूमिगत द्रव्य लाभः—धनेश लाभ में लाभेश धन में विशेष करके मंगल मकर मेष वृश्चिक में हो उस पर गुरु की दृष्टि हो तो उसे अवश्य भूमि से अकल्पित धन का लाभ होता है। यदि शनि दृष्टि हो तो सर्व भू देवताओं की बलि देने पर धन का लाभ होता है। इस कार्य में विशेष यक्षराज कुबेरजी की आराधना श्रेयकर है।

धन तथा धन प्राप्ति किस ग्रह से होगी ।

सबसे प्रथम व्यापारी को जन्म कुंडली से "धन सहम" साधन करना चाहिये जन्म लग्न स्पष्ट में जन्म चन्द्र राश्यादि जोड़कर उसमें जन्मकाल का रवि स्पष्ट हीन करने से धन सहम बनता है। यह जिस भाव में पडे उसी भाव का स्वामी वायदे के व्यापार का कारक ग्रह समझना उसी ग्रह की दिशा वस्तु के व्यापार से अनायास धन की प्राप्ति समझो इसी धन सहम को जातक की कुंडली में लक्ष्मी चिन्ह समझें।
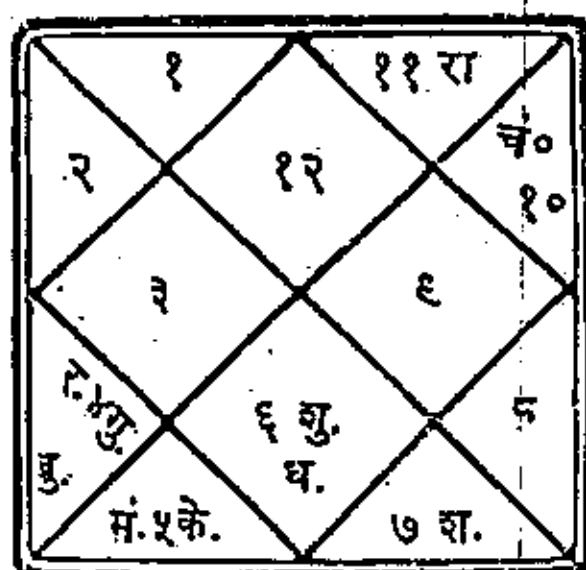
जन्म लग्न: ११।२३।४६।२५
जन्म चंद्र+ ६।२२।१०।१०

६।१५।५६।३५
जन्म रवि: ३।२०।४०। ४

धन सहम तथा
लक्ष्मी चिन्ह: ५।२५।१६।३१

इस प्रकार धन सहम सप्तम स्थान में स्थिर हुवा धन सहम स्थित (शुक्र) ही व्यापार का अधिष्ठाता ग्रह हुवा सप्तमेश बुध पंचम स्थान में उच्च के गुरु के साथ युक्त है अतः शुक्र की वस्तु (चांदी रुई) का व्यापार (बुध गुरु) कर्क राशि के योग से बुध व गुरु उच्च का होने से गुरु बलवान हुआ कर्क पति चन्द्रमा भी चांदी रुई का ग्रह होने से विशेष लाभकारी सिद्ध हुवा अतः गुरु की दिशा (दक्षिण) बम्बई नगर में रुई चांदी के व्यापार से सन १९४१

से १९४९ तक आठ वर्ष में कई लाख रुपये का अचानक लाभ इस कुंडली के स्वामी को हुवा इसी प्रकार अन्य कुंडली से देखें— साथ साथ इस कुंडली में धन हानिः कारक योग पड़ा है। लाभेश शनिः अष्टम में तुला का बलवान पड़ा है धन स्थान पर दृष्टिः रखता है। इस कारण सं २००५ में जब शनि परिभ्रमण में सिंह के १५ अंश पर आते ही, "रुई और चांदी से-दस लाख का घाटा लगा" हमारी सलाह से विपरीत कार्य किया फिर पूर्ण विश्वास रखकर श्रीचक्र षोड़शी यंत्रराज का विधिवत् अनुष्ठान कराया और यंत्र-राज को कोश में स्थापित करने से सं० २००६ में दस लाख वापिस आगये और धन हानिः का पीछे कोई कारण आजतक प्राप्त नहीं हुवा, बारदाने का शनि से संबंध है इसलिए कांकणी विचार से शोधकर कलकत्ते में बारदाने में ४५) की मंदी और २५) की तेजी का दो तरफा चांस आया इक तरफा से घाटा पूरा हो गया इसलिए जो व्यापारी भाई-बिना शोधन कराये बायदा के व्यापार में पैर रख देते हैं वह भारी गलती करते हैं। बगैर अनायास धन प्राप्तिः का योग बिना, किसी भी प्रकार से सट्टे से लाभ नहीं होता है।

अनायास धन प्राप्ति व्यापार द्वारा

व्यापारियों को चांदी, सोना, रुई, गुड़, सरसों, अरहर, अरंडा तथा स्थिर कार्य करने वाले क्लाथ मर्चेन्ट एवं अन्य सभी व्यापार से व्यापारी पूर्व जन्म के शुभ कर्मों द्वारा धन तो कमा लेता है किन्तु उसको स्थिर रखना महान कठिन है। क्योंकि भाग्यवानों को बिना चांस के भी अनायास धन प्राप्त हो जाता है किन्तु उसे स्थिर रखना

उसके बस की बात नहीं है इसलिये व्यापारियों को, घाटा लगना ही धन हानिः एवं दिवालिया का कारण होता है । इसलिए मैं व्यापारी भाइयों के लाभार्थं व्यापार में घाटा न आवे और सात पीढी तक लक्ष्मी उस घर में निवास करें, दिन दूनी रात चौगनी बढती अपने आप होती रहे उस उपाय को व्यापारियों के लाभार्थं यहां प्रकाश करता हूं ।

अचानन—धन प्राप्तिः व उसके स्थिर रहने का उत्तम प्रयोगः
श्री चक्र षोडशी श्री विद्या तंत्र !

सृष्टिः के आदि में श्री विष्णु सृष्टि को उत्पन्न करके भी संतुष्ट न हुवे, मनका क्षोभ किसी प्रकार दूर न हुआ तब कैलाश पर्वत के शिखर पर एकाग्र मन से श्री विष्णु सदाशिव की आराधना करने लगे तया कुछ कालोपरांत सदाशिव प्रसन्न होकर विष्णु जी के पास आकर बोले कि विष्णु जी आपको सृस्टि उत्पन्न करके शांति न मिली इसका कारण मेरी माया है । शांतिसे सुर असुरों की एकता करके समुद्र मंथन का उद्योग करो आपके मन को शांति देने वाली आदि शक्ति चतुर्दश भुवनों को ऐश्वर्यं देने वाली "लक्ष्मी" आपको प्राप्त हो जायगी किन्तु सहसा लक्ष्मी आपको वरण करने को तय।र न होगी क्योंकि आप चतुर्दश भुवनों को रचने वाले मर्यादा पुरुषोत्तम है । आदि शक्ति लक्ष्मी चतुर्दश लोकों की भोग लक्ष्मी हैं । इसलिये परिणय संस्कार करके सात वचनों में श्री चक्र तत्व लक्ष्मी जी को प्रदान करोगे तव लक्ष्मीजी आपके वामाङ्ग आना स्वीकार करेंगी । इन वचनों को श्रवण करके विष्णुजी

सदाशिव की स्तुति करके अपने लोक को गये. वहाँ पर जाकर उद्योग करके समुद्र मंथन किया और जग-जननी लक्ष्मीजी को प्राप्त करके अत्यन्त प्रसन्न हुए। विष्णु के रचे भये चतुर्दश लोकों को ऐश्वर्य प्रदान करने वाला "श्रीचक्र तत्व" विष्णुजी ने चतुर्दश लोकों की राज्य लक्ष्मी को दिया, इस तत्व को पाकर लक्ष्मीजी अति प्रसन्न हुई और विष्णुजी की सेवा पतिव्रता वृत्ति धारण कर करने लगीं, "श्री चक्र तत्व" अनेक तंत्रों में मिलता है। किंतु पूर्ण विधान के साथ हस्त लिखित लक्ष्मी यामल" तंत्र में है। यह तंत्र का मिलना बहुत ही दुर्लभ है भारतवर्ष में इस तंत्र की हस्त लिपि प्राप्त करने की हमने बहुत ही कोशिश की। सन १९३२ में एक बंगाली सज्जन जो कालीघाट में रहते हैं उनसे बड़ी सेवा से हमें प्राप्त हुई है, जो मूल संस्कृत में अति जीर्णाऽवस्था में हमने देखी और नकल करके पढी। रावण द्वारा परास्त होकर कुवेर जी भगवान शंकर जी से श्री चक्र तत्व प्राप्त करके आजन्म अखंड देव लक्ष्मी प्राप्त करने के लिए श्री चक्र षोडशी का पूजन और मंत्र साधना करते रहे।

श्रीचक्र षोड़शी विद्या के कुवेर ही ऋषि हुवे. कुवेर जी श्री चक्र के प्रभाव से देवताओं की संपत्ति के धननायक हुवे, आज भी पृथ्वी पर गुप्त धन भू गर्भ से बिना कुवेरजी की आज्ञा के कोई नहीं ले सकता है। कुवेरजी को सदैव लक्ष्मी स्थिर रखने की विधिः शिवजी ने प्रदान की है- लक्ष्मी चंचल हैं कभी असुरों के यहां कभी देवताओं के यहां जा विराजती है। इसको स्थिर रखने के लिये "श्रीचक्रतत्व" पहिले शिवजी ने विष्णुजी को प्रदान किया इससे

लक्ष्मी सदैव स्थिर होकर विष्णुजी के यहां निवास करती है। फिर शिवजी ने कुवेर के दुःख से दुःखी होकर अपना मित्र बनाकर "श्रीचक्रतत्व" से श्री लक्ष्मीजी वेस्टित करके सदा के लिये कुवेरजी के खजाने में स्थिर कर दिया है। वही श्री चक्रतत्व शिवजी ने पार्वती जी से कहा और वह शिववाणी "लक्ष्मीयामल" नामक तंत्र से लोक में प्रकाशित हुई है। वही तत्व हम व्यापारियों को घाटे से बचाने के लिये तथा स्थिर लक्ष्मी बढ़ाने की विधि हस्त लिखित "लक्ष्मीयामल" से समझ कर लिखते हैं। श्री चक्र में तीन लोक चतुर्दश भुवनों की रचना है नं० १ से १२२ तक-अंकों के रूप में भिन्न २ लोकों को ऐश्वर्य प्रदान करने वाली लक्ष्मी के बीज मंत्रों को अंकों के रूप में. प्रतिपादन किया है। जैसे नं० १ ऐं २ क्लीं ३ सौं: इसी प्रकार १२२ अंकों का वर्णबीज कोश है। इस चक्र को सर्वार्थ सिद्धिः योग में सुवर्ण तथा चाँदी वा तांबे के पत्र में "खुदवाकर" लाल चंदन के पाटे पर लाल ऊनी वस्त्र के ऊपर स्थापन करें। कर्त्ता पूर्वाभिमुख करके रेशमी लाल वस्त्र पहरकर लाल रंग के ऊनी आसन पर बैठकर, लाल कमलों के पुष्पों से हरे नारीयल के जल से वैदिक लक्ष्मी मंत्रों से षोडशोपचार से यंत्र-राज का पूजन करें पूजन करके मंत्र पुष्पाञ्जली हरे नारकेल का भोग लगाकर अपराध क्षमापन स्तुति करके, दुग्ध मिश्रित जल में पूजन किये हुवे यंत्रराज को कमलगट्टे के साथ कमल पत्र के आसन पर जल में प्रवेश करदें, पात्र तांवे का बड़ा होना चाहिये. धूप दीप बराबर स्थिर रखे पीछे लाल चंदन के पाटे पर रोली बिछाकर अनार की कलम से श्री चक्र यंत्र को बार बार लिखे

प्रत्येक अंक लिखने में बीजों का उच्चारण करता जाय। जब १ से १२२ अंक समाप्त होजाय तब फिर बिगाड़ कर पुनः पुनः लिखता जाय। छै घंटे में साधारण व्यक्तिः ४ घंटे में जानकार व्यक्तिः १००८ लिख सकता है। इसका पुरश्चरण तीन मास १० दिन में पूर्ण होता है। तद्दशांश हवन तर्पण करके ब्राम्हण भोजन एवं ७ लक्ष्मीजी के समान सुहाग वाली स्त्रियों को वस्त्र देकर भोजन करावें कमलों के पुष्पों की माला पहनावें। उनका लक्ष्मी जी के समान पूजन कर सुगंधि सहित दक्षिणा देकर आप प्रसाद पावें (यंत्र सिद्धि होजायगा) पीछे गुरु पुष्य नक्षत्र में फिर १०८ लिखकर पूजन करके अष्टगंध से भोज पत्र पर लिखे और पूजन करके सोना चांदी तांवा त्रिलोह के तावीज में भरके गुगल की धूप देकर बाहे हाथ में वा कंठ में धारण करें और पूजन किये हुवे तांवे के वा चांदी के वा सोने के यंत्र को जिसकी पूजन ३ मास १० दिन हुई है उसे कोश संग्रहालयः में स्थापित करेंगे उस मनुष्य के यहां लक्ष्मी स्थिर रूप से सौ पीढी तक हाथ बांधे खड़ी रहती है। और यंत्रों को शरीर पर बांधते ही अनायास धन का लाभ-रेश लॉटरी सट्टा-चांदी, सोना, रूई सर्व किस्म के वायदे के व्यापार से धन की प्राप्तिः होती है। राज दरवार से विजय। कारखाने ठप्प चल पडे भूमिगत द्रव्य की अनायास प्राप्तिः, उत्तम बुद्धि से उत्तम व्यापार कार्य होते रहेंगे। यह प्रयोग व्यापारी भाइयों के लाभार्थ गोपनीय श्री चक्रतत्व निरूपण किया है। साधन की विधिः संपूर्ण बतलाई है इस प्रयोग को स्वयं हमने एक बखत मूंग की दाल चावल खाकर तीन मास दस दिन तक किया है अनुभव सिद्धि प्रयोग है।

विश्वास पूर्वक करने से अवश्य मोटा धन लाभ हो जायगा जिन व्यापारी भाईयों से न हो सके। उन्हें हमारा सिद्धि किया हुआ श्री चक्र यंत्र की. २५) मनि. भेजने पर भोजपत्र पर अष्टगंध से लिखा प्राप्त हो जायगा तांबे पर खुदे पूजन किये हुये की भेंट ५१) रु० होगी मनिआर्डर मिलने पर भेजा जायगा।

जंत्र, तंत्र, मंत्रादि विचार

प्राचीन काल में हमारे देश में इस विद्या का बहुत ही महत्व था अब भी इस विद्या के ज्ञाता है किन्तु इन विद्याओं का रहस्य पहले जो देखने और सुनने में आया है वह अब प्राप्त नहीं होता है। रामायण में एक प्रसंग आता है कि महाराज दशरथ के तीन रानियां थीं किन्तु उनके एक भी पुत्र न था इस विद्या बल से ही हव्य तैयार करके अलग-अलग तीनों रानियों को दिया गया था जिससे महाराजा दशरथ को चार पुत्र रत्नों की प्राप्ति हुई थी।

इसी प्रकार प्राचीन तंत्र शास्त्री जंत्र तंत्र मंत्रादि से लक्ष्मी प्राप्ति, मोहन, उच्चाटन, और वशीकरण आदि क्रियाओं में जीवन डालकर उन्हें जागृति कला बनाने में प्रवीण थे। परन्तु साधन विधि को गुप्त रखते थे, यही कारण है कि मन की गुप्त शक्ति के विषय में हमारा तन्त्र शास्त्र मौन है। किन्तु पाश्चात्य मानस शास्त्र ने इस विषय पर बहुत ही अन्वेषण किया है।

प्राचीन ऋषि, मुनियों ने जप, योग, ध्यान करने की प्रणाली का जो आविष्कार किया है वह पूर्ण वैज्ञानिक है! उन्होंने तर्क वितर्क द्वारा पाश्चात्य विज्ञानों की भांति सिद्ध करके नहीं बतलाया

है क्योंकि उस समय का जगत् श्रद्धा विहीन न था इस कारण से उनको किसी प्रकार के विवेचन की आवश्यकता न थी।

हमारे प्राचीन शास्त्रानुसार ज्ञान की प्रथम सीढ़ी श्रद्धा है। अगम्य, को गम्य, अलभ्य को सुलभ्य, असाध्य को साध्य तथा मृत को जीवित करने वाली श्रद्धा ही है। विधि पूर्वक मंत्रों के प्रयोग का अभ्यास करने से अभिलाषित अमृतमय फल प्राप्त होता है।

मंत्र प्रयोग से लक्ष्मी प्राप्ति—

जिस व्यक्ति को दिन-रात्रि परिश्रम करने के उपरान्त भी धन संग्रह करने में सफलता न मिलती हो, या जिसको धन की चिन्ता अधिक रहती हो, आमदनी से व्यय अधिक हो अथवा धन के अभाव में कोई शुभ कार्य रुक गया हो तो उसे श्रद्धा पूर्वक निम्न यंत्र का जाप करना चाहिए—

"ओं श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः"।

जल पूरित ताम्र-कलश को निर्जन एकान्त शुद्ध स्थान में स्थापित करके रक्त सूत्र से परिवेष्टित करे। तदनन्तर उसका गन्ध पुष्पादि से पूजन करे। फिर श्री लक्ष्मी जी की मूर्ति का भी गन्ध पुष्प, धूप, दीपादि से पूजन करे और मिष्ठान्नादि शुद्ध, सात्विक वस्तुओं का भोग लगावे फिर एकाग्र चित्त से उसी स्थान में ब्रह्मचर्य पूर्वक एवं एकाहार तथा भू शयन पूर्वक २१ या ३१ या ४१ या ५१ दिन में पूर्वाभिमुख हो इस उपरोक्त मंत्र का पांच लाख जप करना चाहिए।

जप पूर्ण होने के बाद विधि पूर्वक शुद्ध घृत, जौ, तिल, चावल, खाण्ड, खोपरा व बादाम से दशांश हवन करना चाहिए। दशांश हवन के उपरान्त गौ घृत के साथ एक सहस्त्र कमल के फूलों का हवन कर देने से सब प्रकार की दरिद्रता से छुटकारा पाकर धन धान्य से पूरित हो जाता है।

यंत्र योग द्वारा निर्धन से महा धनी

"ओं श्रीं ऐं कांसोस्मितां हिरण्य प्रकारामार्द्रा ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्ती पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियं ऐं श्रीं ओं।"

इस यंत्र को एकाग्र चित्त से एकान्त एवं शुद्ध स्थान पर ब्रह्मचर्य पूर्वक ८ लाख जप करे। ध्यान निम्न लिखित है—

हाथों में वरद, अभय, शुक (तोता) एवं पुस्तक धारण किए हुये, कमल के मध्य में स्थित, दिव्य स्वरूपा, मुस्कराती हुई, चांदी के प्राकार (परकोटा) से घिरी हुई अलौकिक शक्ति का ध्यान करता हूं।

इस प्रयोग द्वारा निर्धन धनी और धनी महा धनी होता है।

मंत्र प्रयोग द्वारा कुल परम्परागत दारिद्र नाश

"ओं रं ह्रीं श्रीं रं क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठाम लक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिम समृद्धिञ्च सर्वां निर्णुद मे गृहात् रं श्रीं ह्रीं रं ओं।"

इस मंत्र का विधि पूर्वक फलाहार करता हुआ ११ लाख जप करे, अन्त में हवन करे, इससे दुर्भाग्य का नाश व सौभाग्य की वृद्धि और सम्पत्ति का लाभ होकर कुल परम्परागत दारिद्र दूर

होता है । इस मंत्र के जप के समय निम्न ध्यान करना चाहिए— 'मैं उस चन्द्र के समान मुखवाली, कमलवासिनी भगवती लक्ष्मी का ध्यान करता हूँ जो चारों हाथों में खड्ग, चक्र, कमल और वरद धारण किए हुए हैं—

कार्य सिद्धार्थ के लिए श्री तुलसीदासकृत रामायण का सम्पुट पाठ भी किया जाता हैं यदि व्यापार में विघ्न हानि होती हो तो रामायण की प्रत्येक चौपाई पर निम्न लिखित चौपाई का सम्पुट देकर नौ दिन या ग्यारह दिन अथवा इक्कीस दिन में रामायण का पाठ करे या करावे । सम्पुट चौपाई निम्न है—

"सकल विघ्न व्यापहिं नहिं ताही,
रामसु कृपा बिलोकहिं जाहीं ।"

जो सज्जन बेकार या बे रोजगार हों उनको चाहिए कि निम्न लिखित चौपाई का सम्पुट देकर रामायण का श्रद्धा पूर्वक ९ दिन या ११ दिन अथवा २१ दिन में पाठ करे या करावे तो अवश्य ही नौकरी या रोंजगार मिलेगा—

"विश्व भरन पोषन कर जोई ।
ताकर नाम भरत अस होई ॥
गई बहोर गरीब नेवाजू ।
सरल सबल साहिब रघुराजू ॥"

किसी भी मंत्र का बार बार जप या सम्पुट करने से उसकी शक्ति बढ़ती है । जैसे किसी व्यक्ति से कोई बात एक बार कहे तो उसका इतना प्रभाव नहीं होता जितना कि बार-बार बलवान्

शब्दों में उसी बात को कहने से होता है। अन्त में आपके बलवान् शब्दों से प्रभावित होकर वह आपकी बात मानने के लिए विवश हो ही जाता है। मंत्र जप तथा सम्पुट का यही रहस्य है।

दारिद्रय नाशक अंगूठी

शुक्ल पक्ष में रविवार या गुरुवार युक्त पुष्य नक्षत्र के दिन शुद्ध तांबा १२ भाग, चांदी १६ भाग, स्वर्ण १० भाग पृथक पृथक तारों को एकत्रित कर अंगूठी बनाले अर्थात भाग का अर्थ है रत्ती रत्ती या आधी-आधी रत्ती का हिस्सा करके अलग-अलग तार बनवावें। इसको पूजनार्चन के बाद जिसके घर में कोई बड़ा मनुष्य न हो वह दांए हाथ की तर्जनी में धारण करे, जिसके कोई बड़ा हो तो वह कनिष्ठिका या अनामिका में धारण करे।

जो लोग दारिद्रय से पीडित हों अथवा जिनकी जन्म पत्रिका में दारिद्रय योग पड़ा हो उनको यह अंगूठी अवश्य धारण करना चाहिए। प्रयोगानुष्ठान के अन्तर पूजनार्चन, होम विधि के समय धारण करने से विशेष फलदायक सिद्ध होती है।

यंत्र विधि द्वारा ग्रह शांति—

पीपल के पत्ते पर या भोज पत्र पर पीपल की जड़ से गोरोचन द्वारा एक वर्ग बनाए और उसमें चित्र के समान तीन रेखायें आड़ी एवं तीन रेखायें पड़ी खींचे और उसमें क्रम से

८	१ ह्रीं रवये	६
३	५	७
४	९	२

चित्रानुसार एक अंक से ९ अंक तक लिखे और मध्य में ह्रीं रवये लिखे और षोडशोपचार से पूजन करे यही क्रम २८ दिन तक करे

होता है । इस मंत्र के जप के समय निम्न ध्यान करना चाहिए—
'मैं उस चन्द्र के समान मुखवाली, कमलवासिनी भगवती लक्ष्मी का ध्यान करता हूँ जो चारों हाथों में खड्ग, चक्र ,कमल और वरद धारण किए हुए हैं—

कार्य सिद्धार्थ के लिए श्री तुलसीदासकृत रामायण का सम्पुट पाठ भी किया जाता हैं यदि व्यापार में विघ्न हानि होती हो तो रामायण की प्रत्येक चोपाई पर निम्न लिखित चौपाई का सम्पुट देकर नौ दिन या ग्यारह दिन अथवा इक्कीस दिन में रामायण का पाठ करे या करावे । सम्पुट चौपाई निम्न है—

"सकल विघ्न व्यापहि नहिं ताही,
रामसु कृपा विलोकहि जाहीं ।"

जो सज्जन बेकार या बे रोजगार हों उनको चाहिए कि निम्न लिखित चौपाई का सम्पुट देकर रामायण का श्रद्धा पूर्वक ९ दिन या ११ दिन अथवा २१ दिन में पाठ करे या करावे तो अवश्य ही नौकरी या रोजगार मिलेगा—

"विश्व भरन पोषन कर जोई ।
ताकर नाम भरत अस होई ।।
गई बहोर गरीब नेवाजू ।
सरल सवल साहिब रघुराजू ।।"

किसी भी मंत्र का बार बार जप या सम्पुट करने से उसकी शक्ति बढ़ती है । जैसे किसी व्यक्ति से कोई बात एक बार कहे तो उसका इतना प्रभाव नहीं होता जितना कि वार-बार बलवान्

शब्दों में उसी बात को कहने से होता है। अन्त में आपके बलवान् शब्दों से प्रभावित होकर वह आपकी बात मानने के लिए विवश हो ही जाता है। मंत्र जप तथा सम्पुट का यही रहस्य है।

दारिद्रय नाशक अंगूठी

शुक्ल पक्ष में रविवार या गुरुवार युक्त पुष्य नक्षत्र के दिन शुद्ध तांबा १२ भाग, चांदी १६ भाग, स्वर्ण १० भाग पृथक पृथक तारों को एकत्रित कर अंगूठी बनाले अर्थात भाग का अर्थ है रत्ती रत्ती या आधी-आधी रत्ती का हिस्सा करके अलग-अलग तार बनवावें। इसको पूजनार्चन के बाद जिसके घर में कोई बड़ा मनुष्य न हो वह दांए हाथ की तर्जनी में धारण करे, जिसके कोई बड़ा हो तो वह कनिष्ठिका या अनामिका में धारण करे।

जो लोग दारिद्रय से पीड़ित हों अथवा जिनकी जन्म पत्रिका में दारिद्रय योग पड़ा हो उनको यह अंगूठी अवश्य धारण करना चाहिए। प्रयोगानुष्ठान के अन्तर पूजनार्चन, होम विधि के समय धारण करने से विशेष फलदायक सिद्ध होती है।

यंत्र विधि द्वारा ग्रह शांति—

पीपल के पत्ते पर या भोज पत्र पर पीपल की जड़ से गोरोचन द्वारा एक वर्ग बनाए और उसमें चित्र के समान तीन रेखायें आड़ी एवं तीन रेखायें पड़ी खींचे और उसमें क्रम से

८	१ ह्रीं रवये	६
३	५	७
४	९	२

चित्रानुसार एक अंक से ९ अंक तक लिखे और मध्य में ह्रीं रवये लिखे और षोडशोपचार से पूजन करे यही क्रम २८ दिन तक करे

करे तदुपरांत भोज पत्र पर अष्टगंध से लिखे और त्रिलोह के तावीज में बन्द करके भुजा या गले में धारण करे तो ग्रह पीडा शांती होकर सुख प्राप्त होता है।

यंत्र विधि द्वारा सर्व कार्य सिद्धि

८	१५	२	७
६	३	१२	११
१४	९	१६	१
४	५	१०	१३

इस यंत्र को हल्दी से कागज पर चित्रानुसार एक वर्ग बना कर उसमें उस प्रकार के अंक लिखे नीचे की ओर उस पर अपना मनोरथ लिख दे पीछे इस यंत्र को रुई के साथ बत्ती बनाकर रविवार को दीपक में जलावे और हल्दी की माला से इस मंत्र को ग्यारह सौ जपे—ॐ ह्रीं हंसः। इस प्रकार सात रविवार करने वाला मनुष्य सर्व दुखों से मुक्त होकर अत्यन्त सुखों को भोगता है। इस यंत्र का दूसरा विधान इस प्रकार से है कि रविवार को प्रातःकाल स्नान करके थाली में इस यंत्र को लिखें उसके ऊपर फूल बत्ती का चौमुखा दीपक स्थापन करके पंचोपचार पूजन करे हाथ में थाली को उठाले और सूर्य के सन्मुख खडा होकर "ॐ ह्रीं हंस"—इस मंत्र को जपे और जैसे जैसे सूर्य फिरे उसी तरह आप भी फिरता जावे सूर्य के अस्त होने पर अर्घ देकर मिष्ठान्न भोजन करे पृथ्वी पर सोवे ब्रह्मचर्य का पालन करे इसी प्रकार सात रविवार करने से ऐसा कोई भी कार्य नहीं है जो सिद्ध न हो अर्थात श्री सूर्य

नारायण की कृपा से साधक के संम्पूर्ण कार्यों की सिद्धी होती है।

यंत्र विधि द्वारा इच्छा प्राप्ति—

व	व	व	व
प	प	प	प
द	द	द	द
ल	ल	ल	ल

इस इच्छा प्राप्ति कारक यंत्र को चित्रानुसार बेल पत्र पर १०८ बार रक्त चंदन से लिख कर श्रावण मास के ३० दिन शिवलिंग पर चढ़ावे तो श्री शिवजी प्रसन्न होकर धन सम्पत्ति सहित सर्व भोगों का अधिकारी बना देते हैं।

यंत्र विधि द्वारा वृद्धि —

प	ॐ	ठों
ह्रीं	लक्ष्मी देही	श्रीं
क	म	ह्रीं

इस वृद्धि यंत्र को दीपावली की रात्रि को लिख कर द्रव्य अथवा अन्न में धरे तो वृद्धि होय। इसका दूसरा विधान यह भी है कि इस यंत्र को दीपावली को लक्ष्मी पूजन से पहिले अनार की कलम द्वारा गोरोचन से भोजपत्र पर लिख कर पूजन के समय लक्ष्मी जी की प्रतिमा के नीचे रखे और रात्रि

भर घी का अखण्ड दीपक लक्ष्मी जी के पास प्रज्वलित रहने दे प्रातः काल ४ बजे पूजन किए हुए रुपयों के साथ में इस यंत्र को भी बांध कर रख देवे और उन पूजन किए हुए रुपयों को साल भर तक खर्च न करे तो सालभर के अन्तर्गत तक इस यंत्र के प्रभाव से दारिद्रय का शमन होकर धन की वृद्धि होती है और व्यापार में लाभ होता है यह परीक्षित प्रयोग है।

सूचना:—इस यंत्र को यदि द्रव्य (धन) में रखना हो तो बीच में केवल "लक्ष्मी" लिखे और यदि अन्न में रखना हो तो केवल 'देहि' लिखना चाहिए।

यंत्र विधि द्वारा सर्व सिद्धि प्राप्ति
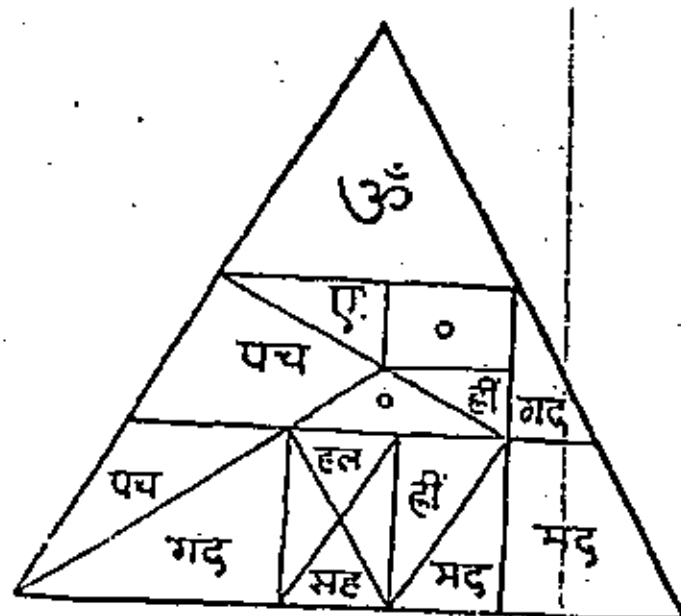
इस यंत्र को अनार की कलम से लाल चन्दन के पाटे पर गुलाल बिछाकर ११ हजार लिखे—यह विधि रात्रि के ८ बजे से

१२ बजे तक स्नान करके पीताम्बरी वस्त्र धारण करके एक हजार प्रति दिन लिखना चाहिये इस प्रकार ११ दिन करे। अलोना एक समय भोजन करे पृथ्वी पर शयन करे, मौन धारण करके ब्रह्मचर्य का पालन करे। ११ वें दिन रात्रि को ११ हजार समाप्त होने पर भोज पत्र पर अष्टगंध से अनार की कलम द्वारा लिख कर षोड्शोपचार से पूजन करके सोना चांदी व तांबा—त्रिलोहे के तावीज में मढ़ाकर गले में या दक्षिण भुजा पर बांधे तो सर्व कार्य सिद्धि होते हैं।

स्वास्तिक नवकोष्टक बीसा यंत्र

यंत्र विधि द्वारा सोते हुए भाग्य को जगाकर लाभ–सुख व विजय प्राप्ति——

इस यंत्र को अष्टगंध से भोज पत्र पर अनार की कलम से लिख कर धूप दीप दे दाहिनी भुजा में बांधे, तो सभी मनोरथ पूर्ण हो जाते हैं इस बीसा-यंत्र को पहिले एक लक्ष
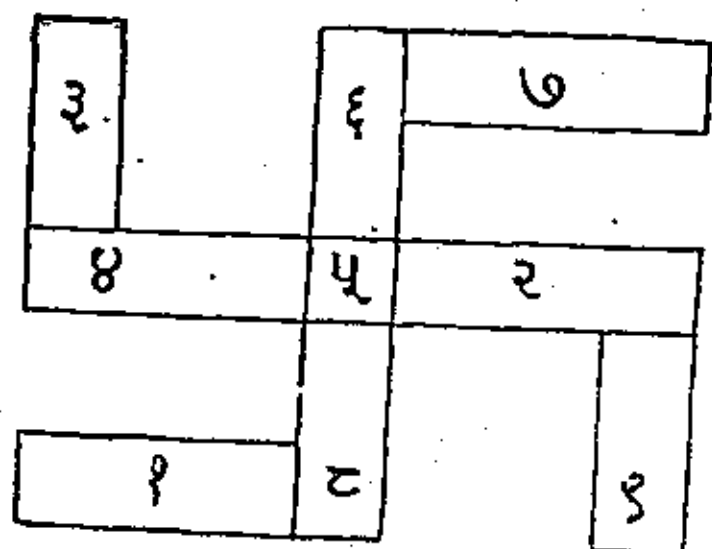
संख्या तक लाल चंदन के पाटे पर गुलाल बिछाकर अनार की कलम से लिखकर सिद्ध कर लेना चाहिये। विधि:—शुद्ध धुले हुए वस्त्र पहनकर नित्य कर्म करके सुबह ७ बजे से १२ बजे तक लिखने का प्रारंभ गुरु पुष्य नक्षत्र से करना। ६० दिन में संख्या पूर्ण करके

समाप्ति कर देना चाहिये । आहार-एक वक्त भोजन, पृथ्वी पर शयन, ब्रह्मचर्य पूर्वक रहने से सिद्ध हो जावेगा । इसके उपरांत भाग्योदय के लिये केवल गुरु पुष्य योग में १०८ लिखकर अंतिम भोजपत्र पर अष्ट गंध से लिखकर पूजन कर धारण करने से सर्व प्रकार के मनोरथ सिद्ध होते हैं ।

ग्रन्थकर्तुः प्रशस्तिः ।

एतस्य वंशे प्रथितो शिवप्रसाद गौड द्विजवर्य आसीत् ।
ग्रामे तु उदेई उरु प्रसिद्धः माधोपुरजिलान्तर्गत मत्स्यदेशे ।।
तस्यात्मजः तज्ज्येष्ठ पुत्र विद्वान् देवीप्रसाद नाम्नः ।
तत्सूनुर्दैवज्ञो गङ्गाप्रसादविज्ञः पशुपतेः पदपद्म भक्तः ।।
तेनेदं रचितं सतामति मुदे श्रीमद् व्यापार चिन्तामणिः ।
विज्ञव्रात कृतादरो गणितविज्ज्योतिर्विदां प्रीतये ।।
अब्दे (२०१५) परिमिते सिंहेऽर्कः नभस्यः मासे शुभे ।
प्रतिपदे रविवासरे सितदले समाप्तये मुरारिपुरे मध्यप्रदेशे ।।

❀ इति शुभम् ❀

मुद्रक—विजय प्रिंटिंग प्रेस, पाटनकर बाजार, लश्कर (म. प्र.)